अल्लाह के हुजूर
सच्ची तौबा करने की
रहनुमा किताब



अल्लाह
मेरी तौबा

मुअल्लिफ : अल्लामा आलम फकरी

-: नाशिर :-
मुहसिने आजम मिशन हेड ओफिस, अहमदाबाद-380028

अल्लाह के हुज़ूर सच्ची

तौबा करने की रहनुमा किताब

अल्लाह मेरी तौबा

आलम फक्री

हम शुक्र गुजार है फारूकिया बुक डीपो देहली के जिस ने करम फरमा कर इस किताब का हिन्दी एडीशन तय्यार करने की हमे इजाजत मरहमत फरमाई ।

इब्राहीम भाई वडीयावाला

मोहसिने आ'जम मिशन अहमदाबाद

किताब : अल्लाह मेरी तौबा

मुअल्लिफ : आलम हुसैन चमिया अल मा'रूफ आलम फकरी

टाइप व सेटींग : जनाब तौफीक अहमद अशरफी (बडौदा)

प्रुफ रीडींग व जेरे निगरां : खलीफए शैखुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला (अहमदाबाद)

सिने इशाअत : **फरवरी-2019**

-: नाशिर :-

मोहसिने आ'जम मिशन हेड ओफिस 2/B कीर्तिकुंज सोसायटी शाहे

आ'लम टोलनाका अहमदाबाद-380028

-: मिलने का पता :-

मक्तबए शैखुल इस्लाम, अलिफ किराना के सामने,

रसूलाबाद, शाहे आलम अहमदाबाद-380028

और मोहसिने आ'जम मिशन की तमाम ब्रान्चें

कोन्टेकट : +91-96242 21212

फेहरिस्त

दीबाचा

तौबा बडा अहम मौज़ूअ है । लिहाजा इस मौज़ूअ पर इल्म हासिल कर के अल्लाह के हुज़ूर सच्ची तौबा करना हर शख़्स के लिये अज हद जरूरी है। इस लिये ऐ गाफिल इन्सान! होश में आ वक्त को गनीमत जान, माजी को भूल जा, आज को देख हो सकता है कल तेरे लिये न आए। जो कुछ करना है आज कर। अभी वक्त है तौबा कर ले। रहमते ईजदी जोश में है। छुप छुप कर गुनाह करने वाले छुप के ही मुआफी मांग । सर को अल्लाह के हुज़ूर झुका दे । गिडगिडा के मुआफी मांग, जैसा कि मांगने का हक है। तेरे नदामत के आंसू तेरे धब्बों को धो डालेंगे। मत भूल कि तू इन्तिहाई आलूदा है। रात का पिछला पहर तेरे लिये मुनासिब है। अक्ल से काम ले, अभी कुछ वक्त में बाबे तौबा बन्द होने को है। फिर तेरी तौबा किसी काम न आएगी। जिसे तू आज शहद समझ रहा है कल तेरे लिये जह्‌र साबित होगा। येह रंगीनियां सिर्फ चार दिन के लिये हैं, येह कारोबार तुझे मंहगा पडेगा। उस वक्त तेरे तमाम वसाइल जवाब दे चुके होंगे, तेरा बोझ कोई दूसरा नहीं उठाएगा। आ मेरे साथ हो जा, मेरी तौबा में तू भी शरीक हो जा। हम दोनों गुनहगार हैं, हम ने गन्दगी से जनम लिया है। क्यूं बडाइयां मारता है ? इन्हें छोड कर अल्लाह के हुज़ूर झुक जा। यहां तक कि तू मिट्टी में समा जाए, फिर देख उस के रहमत के दरिया को ठाठें मारता देख । ऐ जिन्नो इन्सान ! मांगो, जो कुछ मांगोगे दिया जाएगा। गुलाम वोही बेहतर है जिस का मालिक उस पर राजी है। अल्लाह और रसूल मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुए रास्ते पर चल, इसी में तेरी खैर है, अपनी जबान और हाथ को सहीह तौर पर इस्ति'माल कर, अगर तू इज्जत व तौकीर चाहता है। तौबा को दिल और जबान पर रख। तू बार बार गुनाह की तरफ रागिब होगा। तेरे जमीर में गन्दगी है। इसे अल्लाह के पवित्र नाम से पाक कर, तौबा तेरे सब गुनाहों को खा जाएगी। रात के अन्धेरे में, दिन के उजाले में कसरत से तौबा कर, खुदा तेरी तौबा कुबूल फरमाएगा। तू कमजोर है, अपनी कमजोरी का ए'तिराफ कर, तू फलाह पाएगा।

खुश बख्त हैं वोह लोग जो सिराते मुस्तकीम को अपनाते हैं और अल्लाह के दिये हुए में से अल्लाह के नाम पर बनी नौए इन्सान की भलाई के लिये खर्च करते हैं। वोह अपने परवर दिगार के सामने अपने आप को अज्र के लिये खडा कर देते हैं, जाते किब्रियाई उन्हें कभी मायूस नहीं करेगी। इस लिये मेरे दोस्तो ! और बुजुर्गो ! अल्लाह की रहमत पर भरोसा करते हुए उस के हुजूर झुक जाओ, और अपनी गफ्लत से होशियार हो जाओ और उस वक्त के आने से पहले तौबा कर लो, जब कि येह खबर फेल जाए कि फुलां मरजुल मौत में मुब्तला हो गया है। घर वालों ने सोचा कि किसी अच्छे तबीब से इलाज करवाया जाए, तबीबों ने बडा जोर लगाया मगर सिह्हत याबी की कोई सूरत नजर न आई और उन्हों ने वुरसा से कह दिया कि अब सिर्फ मरीज के लिये दुआ करें। मगर वक्ते मुअय्यन है जो किसी से किसी सूरत में टलता नहीं।

मरीज को उम्मीद थी कि अभी मरने का वक्त नहीं, दुरुस्त हो जाओं फलां काम करना है, वोह करूंगा, फलां बच्चे या बच्ची की शादी करनी है इसे अन्जाम दूंगा। हत्ता कि जबान बात करने से जवाब दे गई। आखिर इस ने दूसरों को पहचानना छोड दिया, मौत का नर्गा शुरूअ हो गया। सांस लम्बे लम्बे शुरूअ हो गए हत्ता कि जिस्म से रूह परवाज कर गई, दुन्या की सोचें यहां पडी रह गईं। मौत से पहले तौबा की फुरसत ही न मिली, अब आखिरत की मनाजिल शुरूअ हो गईं जिन का मुआमला बडा कठिन है। इस लिये मेरे दोस्त ! तौबा कर, अपना मक्सदे हयात बना कर अल्लाह के हुजूर ता दमे आखिर अपने गुनाहों की मुआफी मांगता रह।

आखिर में अल्लाह के हुजूर दुआ गो हूं कि किताब के मुअल्लिफ जनाब आलम फकरी साहिब ने जो मेहनत की है अल्लाह इसे कुबूल फरमाए। और अल्लाह इन्हें जजाए खैर दे।

दुआ गो : हाजी अन्वर अख्तर

30 सितम्बर 1973 अमीर इदारा पैगामे कुरआन,

चाहमिरां लाहौर

दुआ गो : हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

जनवरी 2019 अहमदाबाद

अल्लाह मेरी तौबा

अल्लाह मेरी तौबा सो बार तौबा। फिरिश्ते में न था कि गुनाहों से बिल्कुल पाक होता। क्यूं कि मलाएका की फितरत पाकिजगी व बे गुनाही है। नस्ले शैतान से में नहीं कि हमेशा गुनाहों में फंसा रहता क्यूं कि मुखालिफते हक्क पर हमेशा कमरबस्ता रहना उसी का काम है। वोह खुद तो गुमराह है। लिहाजा वोह चाहता है कि सारी मख्लूक को ता कियामत गुमराह करता रहे। मगर में तो आबो गिल और तेरे अम्र का मुजस्समा हूं इब्ने आदम हूं, और नस्ले आदम का येही शेवा है कि गुनाहों को छोड कर तेरे हुजूर ताइब होती रहे, और तेरी बारगाह में अपनी जबीने शौक झुकाती रहे, क्यूं कि मेरे परवर दिगार ! तू अजिजुल गफ्फार है। शहनशाहे अर्जो समा है, बडा महेरबान और रहीम है बख्शिश और करम करने वाला है, हिक्मत वाला है, रऊफ है, हर इन्सान के दिली राजों को जानने वाला है, अपनी मख्लूक से महब्बत करने वाला है, तू उन का भी कारसाज और कफील है जो तुझे मानते ही नहीं। तू हमेशा से है और हमेशा काइमो दाइम रहेगा। हमें तूही जिन्दगी देता है और फिर मौत भी तेरी तरफ से है, मगर तू खुद हय्युल कय्युम है। मां के पेट मे शक्ल भी तेरे हुक्म से बनती है। या'नी तू बारियुल मुतसव्विर है। तेरी शान आली है और तेरी अजमत बे मिस्ल है जो काएनात के जर्रे जर्रे से इयां है। तू जातो सिफात में यक्ता और एक है। अव्वल भी तू और आखिर भी तू है। जो हमें जाहिर नजर आता है वोह भी तेरी कुदरत से है और जो हमारी आंखों से पोशीदा है वोह भी तू है, तू काजीयुल हाजात है, तू रब्बे अर्शे अजीम है, तू समीओ बसीर है, तू सत्तारो गफ्फार है, तूही मरीजों को शिफा देने वाला है और तूही मेरे लिये काफी है, हमीद भी तू मजीद भी तू। हमारे ऐबों पर पर्दा डालने वाला भी तू है, ऐ अल्लाह। जब मेरी जिन्दगी का हर तरह कारसाज तू है तो फिर मैं हर तरह तुझ ही से अपने गुनाहों की मुआफी चाहता हूं।

या इलाही येह औलादे आदम भी बडी अजीब है। जब तेरी इताअत पर आती है तो फिरिश्ते भी हेच हो जाते है। कदम कदम पर तेरे नाम पर जान फिदा कर देती है तेरे इश्क में घर बार मालो दौलत गोया के सब कुछ लुटा देती है, मगर जब तेरी नाफरमानी और सरकशी पर आती है तो ऐसे ऐसे गुनाह करती है जो तकाजाए बशरिय्यत को रौंद डालते हैं, गोया के इस दुखी इन्सानियत के जिस पहलू पर गौर किया जाए अक्सर लोग गुनाहों में मुब्तला नजर आते हैं। कोई खुदा से गाफिल है, कोई कुफ्रो शिर्क में मुब्तला है, कोई बुताने देर को पुज रहा है। जा बजा जमाने की शोरिशें सर उठाए बैठी हैं। कहीं कत्लो खता का बाजार गरम है, कही मैखानों के सागर अपना बातिल जोबन दिखला रहे हैं। कोई बज्मे रिन्दा सजा कर अपने नफ्स पर नाजां है, कोई ऐशो इशरत की बहारों में चश्मे जद का तमाशा बने हुए है, कोई जुल्मो तशद्दुद की दुन्या महवे फरैब है, कोई रिज्के हराम इकठ्ठा करने में इतना मगन है कि खुद को भुला हुवा है। कोई इश्के मजाज के नजारों में फंसा हुवा है। इमारत के ख्वाब ने खूब तम्अ व लालच भर रखा है, कोई मक्रो फरैब की शौला नवाजिया दिखा रहा है। कहीं इश्को महब्बत की दास्तानें फरोग पा रही है। कोई गरीबों के दिलों मे गुरूरो तकब्बुर के नश्तर लगा रहा है, कोई जामए शराफत की आड में सियाह कारियों मे मुस्तव्विर है, कोई मन्जिले ऐश की तमन्नाओ में उल्झा हुवा है। कोई तलस्सुम के अन्धेरों में भटक रहा है कोई लुबादाए तसव्वुफ औढ कर आ'ला व अदना को अपना गिरविदा किये बैठा हैं। कहीं हुस्न फरोशी के शरारे फेले है। कहीं राग व रंग लोगों के दिलो को मस्हुर किये बैठा है। गोया के हरसू बुराइयों की हंगामा आराई है, और उस से बचने का एक ही जरिया है और वोह येह है कि ऐ हजरत इन्सान! गुनाहों को छोड कर अल्लाह के हुजूर कह दे के अल्लाह मेरी तौबा।

तौबा जिन्दगी के रुख को मोड कर सीधे रास्ते पर उस्तुवार कर देती है। जिन्हें अल्लाह के हां खुसूसी कुरबत और बुलन्द मकाम

हासिल हुवा उन्हें उसी दरवाजे से गुजरना पडा और उन्हें दिलो जबान से ''अल्लाह मेरी तौबा'' कहना पडा है। जो तौबा कर गया वोह दीन व दुन्या में अल्लाह की रहमत से नवाजा गया। उस के साबिका गुनाह मुआफ हो गए।

तौबा इश्के मुस्तफा का जीना [सीढी] है। तौबा हुब्बे इलाही की कुन्जी [चाबी] है। आशिकों के दिलों का सोज है जो दरे इलाही पर झुका देता है। तौबा रूह की आवाज है, तौबा सोरीदा दिल का साज है। तौबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ का राज है, तौबा गौहरे नायाब है जो मुहिब्ब और महबूब के दरमियान हिजाबों को उठा देता है। तौबा नदामत की वोह आतिश है जो दामन के दाग जला कर खाकिस्तर कर देती है। तौबा दर्दमन्दी का फसाना है। तौबा पज मुर्दा लोगों के लिये खबरे बहार है। तौबा ईमान की तरो ताजगी है। तौबा नादानों के लिये तलाफी है तौबा निगाहे बेताब का नगमा है। तौबा जुर्मो का तिरयाक है। तौबा दिले मुज्तर की आहो फगां है। तौबा खुदा के हुजूर नफ्स की शरमिन्दगी है। तौबा जुल्मत कदा से निकलने का नक्कारा है। तौबा रिफ्अते परवाज का सहारा है। तौबा सुकूने कल्ब है। गोया कि तौबा माजी की बे ए'तिदालियों का इदराक है और उस के सिवा कोई चारा नहीं।

या इलाही मेरे गुनाह मुआफ कर दे और आबिदे सेहर खेज बना दे। मुझ पर राजे शौके नियाज आश्कार कर दे। मुझे गुलामिये मुस्तफा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरफराज कर दे। मेरे दिल की वीरान बस्ती को अपनी रहमत से आबाद कर दे और मुझे इस रास्ते पर हमेशा कायम रख जो हमें नबिये करीम ने बतलाया है। **आमीन**

﴾1﴿ कुफ्र से तौबा

सब से बडा गुनाह कुफ्र है, कुफ्र क्या है ? इन्कारे खुदा कुफ्र है, इन्कारे रसूल कुफ्र है इन्कारे कुरआन कुफ्र है। इन्कारे आखिरत कुफ्र है, इन्कारे मलाएका कुफ्र है। जब इन्सान कुफ्र में मुब्तला था तो खुदा ने इन्सान की हालते जार पर रहम खाया और अपने महबूब रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हादी बनाया। फिर रसूल ने तुझे बताया कि खुदा को एक मान, फिर बिन देखे तस्लीम कर के उस की हम्दो सना में गुम हो जा। फिर अल्लाह के रसूल ने तुझे मकामे रिसालत का राज बताया। तुझे कुरआन जैसी अजीम किताब का अतिय्या दिलवाया। तेरे सामने मौत और आखिरत का अकीदा खुला। तुझे खुदा की प्यारी मख्लूक मलाएका से मुतआरिफ करवाया और तुझे दा'वत दी कि अपने वहमो गुमान को छोड कर एक खुदा का पुजारी बन जा और साहिबे ईमान हो जा। कुछ ने मान लिया और दौलते ईमान को बसद उज्ज व नियाज कबूल किया। लेकिन ऐ अहले कुफ्र! तेरी अक्ल ने तुझे धोका दिया और तू आज तक ईमान व इस्लाम से महरूम है। गरचे तूने समुन्दर की तहों को चीर डाला है। जमीन के खजानों को खोल दिया है। कोहे दस्त को तूने जेरे नगीन कर डाला है। सालों के फासिलों को चश्मे जदन कर दिया है। गोया कि तन आसानी के लिये तू रात दिन मस्रूफे कार है। लेकिन मेरे दोस्त कारे जहां के साथ साथ जेवरे ईमान से भी आरास्ता होना चाहिये था और इस हकीर दुन्या के बदले में आखिरत का सौदा न करो।

ऐ दुन्या के भटके हुए इन्सानो ! क्यूं कुफ्र की वादियों में जकडे हुए हो ? क्यूं शैतान के मक्रो फरेब में मुब्तला हो ? याद रखो तुम्हारी फलाह कुफ्र में नहीं, तुम्हारी फलाह कुबूले इस्लाम में है, तुम्हारी फलाह ईमान में है, तुम्हारी आकिबत का सौदा कुरआन में है, तुम्हारी नजात गुलामिये मुस्तफा में है। नयाबते खुदा का राज इत्तिबाए किताबो सुन्नत में है। फिर मेरे दोस्त ! जब तू येह जान गया कि खुदा, रसूल और

कुरआन को माने बिगैर छुटकारा नहीं तो फिर तौबा में देरी कैसी ? आज ही खुदा के हुजूर सज्दा रेज हो और अपने मन से नदामत के आंसू बहा कर कुफ्र को छोड दे ।

कुफ्र ईमान की जिद है और ईमान से वोही शख्स महरूम रहता है जो शख्स कुफ्र से तौबा कर के अल्लाह की तरफ नहीं आता, कुफ्र सरासर जहालत है, क्यूं कि इन्सान अल्लाह की अता कर्दा ने'मतों को नहीं पहेचानता, इसी लिये इर्शादे बारी तआला है कि तुम अल्लाह के साथ कैसे कुफ्र करते हो हालां कि तुम कुछ न थे उस ने तुम्हें जिन्दगी अता की, फिर वोही तुम को मारेगा और वोही तुम को फिर जिन्दगी अता करेगा, और बिल आखिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे, तो अल्लाह का येह फरमान काफिरो को दा'वते फिक्र देता है, कि इन्सान जब हर लिहाज से जिन्दगी और मौत के लिये अल्लाह का मोहताज है तो वोह फिर अल्लाह का इन्कार क्यूं करे ? लेकिन येह नादान फिर भी तौबा कर के उस की तरफ रुजूए नहीं करता ।

काफिर खुदा की हिदायत से महरूम है और कुरआन में उन्हें बद तरीन मख्लूक करार दिया गया है, बेशक अल्लाह के नज्दीक जमीन पर चलने वाली मख्लूक में सब से बदतर वोह लोग हैं जिन्हों ने कुफ्र किया, येह लोग ईमान लाने वाले नहीं ।

फिर कुफ्र के बारे में फरमाया गया कि जिन लोगों ने कुफ्र का रवय्या इख्तियार किया उन के लिये दुन्या व आखिरत में सख्त अजाब है, तो कुरआन आज भी अहले कुफ्र को दा'वते हक्क देता है कि कुफ्र से तौबा कर के राहे हक्क की तरफ आ जाओ, क्यूं कि कुफ्र का अन्जाम बखैर तौबा ही में है ।

हिकायत

एक दफ्आ का जिक्र है कि एक इलाके में शमउन नामी एक शख्स रहता था, एक बार वोह बीमार पड गया और करीबुल मर्ग हो गया, हजरते हसन को उस की बीमारी का पता चला तो आप उस के पास

पहुंचे, आप ने देखा कि उस के पास आग सुलग रही है और वोह आग के धूएं से काला पड गया है, आप ने फरमाया कि खुदा से डर और मुसलमान हो जा, सारी उम्र आग और धूएं कि परस्तिश की, अब दीने इस्लाम को आजमा, शायद खुदा तुझ पर रहम फरमाए, शमउन बोला के दीने इस्लाम की सदाकत की कोई निशानी दिखाए, आप ने फरमाया देख तूने सत्तर बरस तक आग की पूजा की और मैं ने एक रोज भी इस को न पुजा, अब मैं और तुम दोनों इस में अपना अपना हाथ डालते हैं और फिर देखते हैं कि आग किस को जलाती हैं और किस को छोडती हैं, चाहिये तो येह कि तू इस का पुजारी है इस लिये वोह तुझे न जलाए और मैं उस का पुजारी नहीं इस लिये वोह मुझे जला दे, मगर मुझे अपने अल्लाह से उम्मीद है कि आग मुझ को हरगिज न जलाएगी। अगर तुम मेरे खुदा की कुदरत और उस आग की कमजोरी को देखना चाहते हो तो लो देख लो। येह कह कर आप ने अपना हाथ जलती आग में डाल दिया और देर तक उस में डाले रखा। शमऊन ने देखा कि आप का हाथ बिल्कुल नहीं जला। येह मन्जर देख कर शमऊन बेकरार हुवा और खुदा की महब्बत का नूर उस की पेशानी से चमकने लगा। और अर्ज करने लगा कि अब तक पूरे सत्तर बरस मैं ने इस आग की पूजा की है और अब चन्द सांस बाकी हैं तो इस में मैं आप के खुदा की क्या इबादत कर सकता हूं? हजरते हसन ने फरमाया तू इस की फिक्र न कर, कलिमा पढ ले तो मेरा खुदा तुझ से फौरन राजी हो जाएगा और पिछले सत्तर बरस की आग की सारी परस्तिश मुआफ फरमा देगा। शमऊन ने कहा अगर आप एक इकरार नामा लिख दें कि हक तआला मुझे अजाब न देगा तो मैं ईमान ले आता हूं। हजरते हसन ने एक इकरार नामा लिख दिया और शमऊन को दे दिया। शमऊन ने वोह इकरार नामा लिया और कलिमा पढ कर मुसलमान हो गया और फिर हजरते हसन को वसियत की, कि जब मैं मर जाऊं तो गुस्ल देने के बा'द आप खुद मुझे कब्र में उतारें और येह इकरार नामा मेरे हाथ में रखना। ताकि कल कियामत के दिन मैं येह दिखा कर अजाब से बच जाऊं। फिर कलिमए शहादत पढा

और शमऊन मर गया। हजरते हसन ने उस की वसियत के मुताबिक किया और बहुत से लोगों ने उस की नमाजे जनाजा पढी। उस रात हसन बसरी मुत्लक न सोए और सारी रात नमाज पढते रहे और अपने दिल में कहते रहे कि मैं ने येह क्या किया? मैं तो खुद अपनी जाएदाद पर कुदरत नहीं रखता फिर खुदा की मिल्क पर मैं ने कैसे मोहर कर दी? और इकरार नामा लिख दिया इसी खयाल में सो गए। तो शमऊन को देखा कि ताज सर पर रखे और नूरानी लिबास पहने बिहिश्त के बागों में टहेल रहा है। हजरते हसन ने दरयाफ्त किया कि ऐ शमऊन! क्या हाल है? उस ने कहा आप क्या पूछते हो? हक तआला ने मुझ पर बडा फज्ल फरमाया है और एक बहुत बडे महल में उतारा है और अपना दीदार भी अता फरमाया है और जो जो महेरबानियां मुझ पर फरमाई हैं, मुझ में ताकत नहीं कि बयान कर सकूं। ऐ हसन! अब आप के जिम्मे कुछ बोझ न रहा। आप का इकरार नामा बडा काम आया। अब येह लीजिये अपना इकरार नामा, क्यूं कि अब इस की जरूरत नहीं येह कह कर वोह इकरार नामा उस ने हजरते हसन बसरी को दे दिया। हजरते हसन बसरी जब बेदार हुए तो वोह इकरार नामा उन के हाथ में था। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

हिकायत

हजरते अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक दफ्आ जिहाद को गए। उस में आप एक काफिर से जंग कर रहे थे कि नमाज का वक्त करीब आ गया। आप ने काफिर से मोहलत चाही और नमाज अदा की। फिर जब उस काफिर की इबादत का वक्त हुवा तो उस ने भी मोहलत चाही। जब वोह बुत की तरफ इबादत के वास्ते मुतवज्जेह हुवा तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने सोचा कि उस वक्त उस पर हम्ला कर दूं तो फत्ह पालूंगा। चुनान्चे आप ने तल्वार खींची और उस पर हम्ला करने की खातिर उस के करीब पहुंचे ही थे कि एक आवाज सुनी कि ऐ अब्दुल्लाह! اَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا या'नी अहद पूरा करो कि उस से सुवाल किये जाओगे।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रोने लगे उस काफिर ने जो अब्दुल्लाह बिन मुबारक को देखा कि तल्वार खींचे हुए रो रहे हैं, तो वज्ह पूछी, आप ने सारा किस्सा सुनाया तो उस काफिर ने एक चीख मारी और कहा बडे शर्म की बात है कि ऐसे खुदा की नाफरमानी करूं जो दुश्मन की खातिर अपने दोस्त पर इताब कर रहा है और फिर मुसलमान हो गया।

हिकायत

हजरते अब्दुल वाहिद बिन जैद चिश्ती ने एक मरतबा फरमाया कि हम लोग एक मरतबा एक कश्ती में सुवार हो कर जा रहे थे कि हवा की गर्दिश ने हमारी कश्ती को एक जजीरे में पहुंचा दिया। हम ने वहां एक आदमी को देखा कि वोह कुफ्र में मुब्तला हैं, और एक बुत की पूजा कर रहा है। हम ने उस से पूछा कि तुम किस की पूजा करते हो ? उस ने बुत की तरफ इशारा किया। हम ने कहा कि तेरा मा'बूद खुद तेरा बनाया हुवा है और हमारा मा'बूद वोह है जिस ने हर एक को बनाया है और जो तूने अपने हाथ से बुत बनाया है वोह पूजने के लाइक नहीं है।

उस ने कहा तुम किस की परस्तिश करते हो ? हम ने कहा उस पाक जात की जिस का अर्श आस्मान के ऊपर है। उस की गिरफ्त जमीन पर है उस की अजमत और बडाई सब से बालातर है। कहने लगा तुम्हें उस पाक जात का इल्म किस तरह हुवा ? हम ने कहा उस ने एक रसूल (कासिद) हमारे पास भेजा जो बहुत करीम और शरीफ हैं। उस रसूल ने हमें येह सब बातें बताईं। उस ने कहा वोह रसूल कहां हैं ? हम ने कहा उस ने जब पयाम पहुंचा दिया और अपना हक पूरा कर दिया तो उस मालिक ने उस को अपने पास बुला लिया ताकि उस के पयाम पहुंचाने और उस को अच्छी तरह पूरा कर देने का सिला व इन्आम अता फरमाए। उस ने कहा कि उस रसूल ने तुम्हारे पास कोई अलामत छोडी है ? हम ने कहा उस मालिक का पाक कलाम हमारे पास छोडा है। उस ने कहा मुझे वोह किताब दिखाओ। हम ने कुरआने पाक ला कर उस के सामने रखा उस ने कहा मैं तो पढा हुवा नहीं हूं तुम इस में से मुझे कुछ सुनाओ।

हम ने एक सूरत सुनाई वोह सुनते हुए रोता रहा, यहां तक कि वोह सूरत पूरी हो गई। उस ने कहा उस पाक कलाम वाले का हक येही है कि उस की नाफरमानी न की जाए। उस के बा'द वोह कुफ्र से तौबा कर के मुसलमान हो गया, हम ने उसे इस्लाम के अरकान और अहकाम बताए और चन्द सूरतें कुरआने पाक की सिखाईं। जब रात हुई, इशा की नमाज पढ कर हम सोने लगे तो उस ने पूछा कि तुम्हारा मा'बूद भी रात को सोता है? हम ने कहा वोह पाक जात हय्यु कय्यूम है वोह न सोता है न उस को ऊंघ आती है (आयतुल कुरसी) वोह कहने लगा तुम किस कदर नालाइक बन्दे हो कि आका तो जागता रहे और तुम सो जाओ। हमें इस बात की बडी हैरत हुई। जब हम उस जजीरे से वापस होने लगे तो वोह कहने लगा कि मुझे भी अपने साथ ही ले चलो ताकि मैं दीन की बातें सीखूं हम ने उसे अपने साथ ले लिया। जब हम शहरे उबादान में पहुंचे तो मैं ने अपने साथियों से कहा येह शख्स नौ मुस्लिम है इस के लिये कुछ मआश का फिक्र भी करे। हम ने कुछ दिरहम चन्दा जम्अ किया और उस को देने लगे, उस ने पूछा येह क्या है? हम ने कहा कुछ दिरहम है। इन को तुम अपने खर्च में ले आना। कहने लगा لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه ! तुम लोगों ने मुझे ऐसा रास्ता दिखाया जिस पर खुद भी नहीं चलते। मैं एक जजीरे में था, एक बुत की परस्तिश करता था। खुदाए पाक की परस्तिश भी न करता था उस ने उस हालत में भी मुझे जाएअ और हलाक नहीं किया। हालां कि मैं उस को जानता भी न था। पस वोह उस वक्त मुझे क्यूं कर जाएअ कर देगा जब कि मैं उस को पहचानता भी हूं (उस की इबादत भी करता हूं) तीन दिन के बा'द हमें मा'लूम हुवा कि उस का आखिर वक्त है, मौत के करीब है हम उस के पास गए। उस से पूछा कि तेरी कोई हाजत हो तो बता। कहने लगा मेरी तमाम हाजतें उस पाक जात ने पूरी कर दीं। जिस ने तुम लोगों को जजीरे में मेरी हिदायत के लिये भेजा था। शैख अब्दुल वाहिद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फरमाते हैं कि मुझ पर दफ्अतन नींद का गल्बा हुवा। मैं वहीं सो गया तो मैं ने ख्वाब में देखा एक निहायत

सर सब्ज शादाब बाग है। उस में एक निहायत नफीस कुब्बा बना हुवा है। उस में एक तख्त बिछा हुवा है। उस तख्त पर एक निहायत हसीन लडकी कि उस जैसी खूब सूरत औरत कभी किसी ने न देखी होगी, येह कह रही है खुदा के वास्ते उस को जल्दी भेज दो। उस के इश्तियाक में मेरी बेकरारी हद से बढ गई हैं। मेरी जो आंख खुली तो उस नौ मुस्लिम की रूह परवाज कर चुकी थी। हम ने उस की तज्हीजो तक्फीन की और दफ्न कर दिया। जब रात हुई तो मैं ने वोही बाग और कुब्बा और तख्त पर वोह लडकी उस के पास देखी और वोह येह आयते शरीफा पढ रहा था।

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۚ

और फिरिश्ते उन के पास हर दरवाजे से आते होंगे...इलख

(पारह 13, सूरए रअद, आयत : 23)

और उन को सलाम करते होंगे (जो हर किस्म की आफत से सलामती का मुज्दा है) और येह उस वज्ह से कि तुम ने सब्र किया (और दीन पर मजबूत जमे रहे) पस उस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत बेहतर है।

हक तआला शानहू की अता और बख्शिश के करिश्मे हैं कि सारी उम्र बुत परस्ती की और उस ने अपने लुत्फो करम से मौत के करीब उन लोगों को जबरदस्ती कश्ती के बे काबू हो जाने से वहां भेजा। और उस को आखिरत की दौलत से माला माल कर दिया।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ.

ऐ मालिकुल मुल्क! जिस को तू देना चाहे उस को कोई रोकने वाला नहीं और जिस को तू न देना चाहे, उस को कोई देने वाला नहीं।

﴾2﴿ शिर्क से तौबा

खुदा की जात या सिफात में अजली या जावेदानी खुदा जैसा ठहराना शिर्क है, अल्लाह तआला को किसी से करार देना शिर्क है या किसी को उस से करार देना शिर्क है। किसी को उस का बाप या बेटा समझना शिर्क है किसी को उस की औलाद समझना शिर्क है, इस्लाम से पहले जहां काफिरों का कुफ्र उरूज पर था वहां मुश्रिकीन का शिर्क भी जोरों पर था, लोग खुदा को तो मानते थे लेकिन उस के साथ साथ कहीं मलाएका परस्ती थी, कहीं जिन्नात परस्ती थी, कहीं कवाकिब परस्ती थी। या'नी चांद और सूरज की पूजा की जाती थी, कहीं देवी और देवताओ के रूप में आबा परस्ती थी। हत्ता कि मुश्रिकीन के इलावा यहूदो नसारा भी मुब्तलाए शिर्क थे और अल्लाह ने कुरआने पाक में उन्हें बार बार दा'वत दी है कि शिर्क को छोड कर हक की तरफ आ जाओ। इर्शादे बारी तआला हुवा कि लोगों ने अल्लाह के इलावा कुछ ठहरा रखे है, उन से कहिये कि उन के नाम तो बता दो या फिर तुम वोह बात कहना चाहते हो जिसे खुद भी नहीं जानते। या'नी शिर्क करने वाले अल्लाह की हकीकत से बहुत दूर हैं, जो दिल में आता है उस गुमान की पैरवी कर लेते हैं।

कुरआने पाक में बेशुमार मकामात पर शिर्क की मजम्मत की गई है क्यूं कि शिर्क करने वालों के पास कोई दलील नहीं।

इर्शादे बारी तआला है कि जो कोई अल्लाह के साथ दूसरे मा'बूद को पुकारता है, उस के पास उस की कोई दलील नहीं।

फिर सूरए यूसुफ में हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام की जबान से बयान हुवा है, कि उन्हों ने कहा ऐ कैद खाने के साथियो ! तुम खुद ही बताओ कि बहुत से मुतफर्रिक रब बेहतर हैं या वोह एक अल्लाह जो सब पर गालिब है? उस को छोड कर तुम जिन की इबादत कर रहे हो, उन की हकीकत उस के सिवा कुछ नहीं कि बस चन्द नाम जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं, अल्लाह ने उन के लिये कोई सनद नहीं उतारी।

तो इस से मा'लूम होता है कि शिर्क की कोई अस्लियत नहीं। बल्कि एक और मकाम पर शिर्क को झूठ करार दिया गया है। फरमाया कि जिस ने खुदा का शरीक मुकर्रर किया उस ने बहुत बडा झूठ गढा। जो गुनाहे अजीम है बल्कि उसे जुल्मे अजीम भी कहा गया है। येही वज्ह है कि उस जुल्मे अजीम की वज्ह से आखिरत में मुश्रिकों का अन्जाम बहुत बुरा होगा। शिर्क करने वालों का आखिरी ठिकाना जहन्नम और दोजख है। इस लिये येह नाकाबिले मुआफी जुर्म है। क्यूं कि अल्लाह उसे हरगिज मुआफ नहीं करता जो किसी को उस के साथ शरीक ठहराए।

लिहाजा कुरआनी ता'लीमात हम से येही तकाजा करती हैं कि किसी सूरत में भी खुदा के साथ शिर्क नहीं होना चाहिये, लिहाजा दुन्या की उन कौमों को शिर्क से तौबा कर लेनी चाहिये जिन में आज भी शिर्क मौजूद है। ऐ यहूदियो और नस्रानियो ! तुम्हारे लिये अब भी बेहतर है कि जिन बातों में तुम शिर्क करते हो, उस को छोड कर खुदाए वाहिद के परस्तार बन जाओ और शिर्क से हमेशा के लिये तौबा कर जाओ।

हिकायत

किसी जमाने में एक इलाके में एक बादशाह था, उस के हां एक जादूगर था। जब जादूगर बूढा हुवा तो उस ने बादशाह से कहा कि अब मैं बूढा हो गया हूं और मेरी मौत का वक्त करीब आ रहा है। मुझे कोई बच्चा सोंप दो, मैं उसे जादू सिखा दूं। चुनान्चे एक जहीन लडके को वोह ता'लीम देने लगा। लडका उस के पास जाता तो रास्ते में एक नस्रानी आबिद का घर पडता, जहां वोह इबादत में, कभी वा'जो नसीहत में मशगूल होता, येह भी खडा हो जाता और उस के तरीकए इबादत को देखता और वा'ज सुनता। आते जाते यहां रुक जाया करता था जादूगर भी मारता और मां बाप भी, क्यूं कि वहां भी देर में पहुंचता और यहां भी देर में आता। एक दिन उस बच्चे ने आबिद के सामने येह शिकायत बयान की। आबिद ने कहा जब जादूगर पूछे, क्यूं देर लग गई तो कहना कि रास्ते में देर हो जाती है।

यूंही एक जमाना गुजर गया कि एक तरफ जादू सिखता था और दूसरी तरफ कलामुल्लाह और दीनुल्लाह सिखता था। एक दिन येह देखता है कि रास्ते में एक जबरदस्त हैबतनाक सांप पडा है, लोगों की आमदो रफ्त बन्द कर रखी है उधर वाले उधर और इधर वाले इधर हैं। और सब लोग इधर उधर परेशान खडे हैं, उस ने अपने दिल में सोचा कि आज मौकअ है कि मैं इम्तिहान कर लूं कि नस्रानी आबिद का दीन खुदा को पसन्द है या कि जादूगर का। उस ने एक पथ्थर उठाया और येह कह कर उस पर फेंका कि खुदाया तेरे नज्दीक आबिद का दीन और उस की ता'लीम जादूगर की ता'लीम से जियादा महबूब है तो तू उस जानवर को इस पथ्थर से हलाक कर दे। ताकि लोगों को उस बला से नजात मिले। पथ्थर के लगते ही वोह जानवर मर गया और लोगों का आना जाना शुरूअ हो गया, फिर जा कर आबिद को खबर दी उस ने कहा ऐ प्यारे बच्चे ! तू मुझ से अफ्जल है। अब खुदा की तरफ से तेरी आजमाइश होगी। अगर ऐसा हो, तो मेरी खबर न करना।

अब उस बच्चे के पास हाजतमन्द लोगों का तांता लग गया और उस की दुआ से हर किस्म के बीमार अच्छे होने लगे। बादशाह के एक नाबीना वजीर के कान में येह आवाज पडी वोह बडे तोहफे तहाइफ ले कर हाजिर हुवा। और कहने लगा, अगर तू मुझे शिफा दे दे तो येह सब मैं तुझे दे दूंगा, उस ने कहा शिफा मेरे हाथ में नहीं है। मैं किसी को शिफा नहीं दे सकता, शिफा देने वाला तो अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू है। अगर तू शिर्क से तौबा कर के उस पर ईमान लाने का वा'दा करे तो मैं उस से दुआ करूं। उस ने इकरार किया, बच्चे ने उस के लिये दुआ की, अल्लाह ने उसे शिफा दे दी।

वोह बादशाह के दरबार में आया और जिस तरह अन्धा होने से पहले काम करता था करने लगा और आंखें बिल्कुल रोशन थीं। बादशाह ने मुतअज्जिब हो कर पूछा कि तुझे आंखें किस ने दी ? उस ने कहा "मेरे रब ने" बादशाह ने कहा "हां" या'नी मैं ने दी हैं। वजीर ने कहा "नहीं नहीं मेरा और तेरा रब अल्लाह है" बादशाह ने कहा

''क्या तेरा रब मेरे सिवा कोई और है ?''वजीर ने कहा ''हां मेरा रब और तेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है जो हमारा खालिक और हमें पालने वाला है।''

बादशाह ने उसे मार पीट शुरूअ कर दी और तरह तरह की तक्लीफें और ईजाएं देने लगा और पूछने लगा कि तुझे येह ता'लीम किस ने दी ? आखिर उस ने बता दिया कि मैं ने उस बच्चे के हाथ पर इस्लाम कुबूल कर लिया है और कुफ्रो शिर्क से तौबा कर ली है 'तो बादशाह ने लडके को बुलाया और कहा अब तो तुम जादू में कामिल हो गए कि बीमारों को तन्दुरुस्त करने लग गए हो।

उस ने कहा 'गलत है' न मैं किसी को शिफा दे सकता हूं न मैं जादूगर हूं 'शिफा अल्लाह के हाथ में है। वोह कहने लगा' अल्लाह तो मैं ही हूं। उस ने कहा हरगिज नहीं, बादशाह ने कहा। फिर क्या तू मेरे सिवा किसी और को रब मानता है ? तो उस ने कहा हां मेरा रब और तेरा रब अल्लाह तआला है। उस ने अब बच्चे को तरह तरह की सजाएं देना शुरूअ कीं। उस बादशाह ने हुक्म किया कि उस को कश्ती में बिठा कर दरिया में डुबो दो कि उस ने हमारा नाम डुबो दिया और सात पुश्त को बट्टा लगा दिया। फिर उस को कश्ती में बिठा कर ले चले। अचानक कश्ती उलट गई सब डूब गए, अल्लाह के फज्लो करम से वोह लडका सहीह सलामत बच गया, फिर बादशाह के पास आ कर कहने लगा कि उस सच्चे खुदा ने मुझ को बचा लिया और झूठों को डुबो दिया। फिर तो बादशाह आपे से निकल गया और कहा कि ऊंचे पहाड की चोटी से उस को नीचे डाल दो ताकि उस के टुकडे टुकडे हो जाएं और उस का नामो निशान मिट जाए। जब पहाड पर ले गए, कुदरते खुदा से हवा का झोंका आया। वल्लाहु आलम, उन सब को हवा ने उडा दिया। और लडके को जरा हवा ने न सताया। फिर लडका ब खूबी सलामत बादशाह के पास आया। तब जल कर कहा जल्लादों को बुलाओ और इस की जिल्दो पोस्त उडा दो, लडके ने कहा क्यूं अपनी जान खोता है, जी जान को रोता है और बे फाएदे की हिमाकत भुगतता है। अगर तू और

तेरा सारा लश्कर जम्अ होगा, मेरा एक बाल बीका न होगा। उस मुसीबत से नजात मन्जूर है तो अपनी तदबीरें बालाए ताक रख और मेरे कहने पर ध्यान रख कि एक मैदान में सब को जम्अ कर और मुझ को सूली पर चढा और मेरे आगे येह कह कर तीर लगा कि तुझ को तेरे खुदाए बरहक के नाम से मारता हूं, फौरन मर जाऊंगा, पस बादशाह ने जो अपनी तदाबीर से आजिज आ गया था ऐसा ही किया वोह नादान, दाना लडके की हिक्मत से आगाह न था कि जब सारे लश्कर और अहले शहर के आगे येह बात कह कर तीर मारेगा तो बिला शक अपने दीन को छोड देगा और मेरे दीन को सच्चा बतावेगा। तो सब लोग उस के दीन से फिर जाएगें और मेरे हक मजहब पर ईमान लाएंगे। गो मैं जान से गया मगर जहान तो ईमान से रहा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि वोह लडका तीर से मारा गया लेकिन आधे से जियादा लोग कुफ्रो शिर्क से तौबा कर के अल्लाह पर ईमान ले आए, सब लडके के गम में जार जार रोते चिल्लाते थे।

जब येह हाल बादशाह ने देखा तो सख्त हैरान हो गया कि लडका तो मरा लेकिन सब को मार गया और मेरी बादशाहत और मिल्लत तहो बाला कर गया। उसी वक्त एक गढा चालीस हाथ गहरा खुदवाया और उस में जो लोग ईमानदार थे उन को जलाया। मगर एक औरत बच्चों वाली थी, उस को हर चन्द डराया कि तुझ को मअ तेरे बच्चों के जला देगे वरना इस्लाम से बा'ज आ। औरत ने कहा में हक से न फिरूंगी। खुदाए बरहक से मुंह न मोडुंगी, तू कुछ दर गुजर न कर जो जी चाहे सो कर। फिर एक एक कर के उस के बच्चों को आग में जलाया। मगर वोह कमाले आबो ताबे ईमानी से उफ न करती थी और रिजाए इलाही पर साबिरो शाकिर थी। जब सब औलाद उस की जला दी और गोद के बच्चे को भी जलाने का इरादा किया और जलती भुनती को और जियादा जलाया। आखिर वोह औरत थी और चन्द जिगर पारे उस के जल गए थे मगर उस ने आह न की। लेकिन गोद के लडके के जलने से

यका यक आग जिगर की भडक उठी, आपे से जाती रही। बेहोशी के आलम में करीब थी कि फरेबे शैतान खावे और दौलते ईमान से हाथ उठावे। अचानक अल्लाह ने उस गोद के बच्चे को गोया किया। उस के हिफ्जे ईमान का सामान किया उस ने ब-जबाने फसीह कहा कि ऐ मां ! तू कुछ तरद्दुद न कर। सब भाई मेरे जन्नत को गए। मैं भी जाता हूं। पस लडके की दिलदारी से उस की भडकी हुई आग बुझी। सब संग दिलों ने उस लडके को भी आग में डाला। तब औरत ने बेताब हो कर एक चीख मारी, उसी वक्त एक आग का शो'ला उठा और चालीस चालीस गज हर तरफ के काफिरों और मुश्रिकों को जला कर खाकिस्तर कर दिया। और बादशाह का मअ अमीर और लश्करे काफिर के नामो निशान न रहा कि कहां चला गया और जो ईमानदार उस जालिम के जुल्म से बचे थे, अल्लाह तआला की हिमायत से उन में से एक का भी बाल न जला।

﴾3﴿ कत्ल से तौबा

अव्वल तो कत्ल छुपता नहीं क्यूंकि उस की सजा उसे दुन्या में मिल जाती है। अगर किसी का गुनाह छुप ही जाए तो येह गुनाह उसे जहन्नम में ले जाएगा लिहाजा किसी मुसलमान का नाहक खून करना गुनाहे कबीरा है इसी लिये कुरआन में इर्शादे बारी तआला है कि जो कोई जान बूझ कर मुसलमान को कत्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है। हमेशा उस में रहेगा और उस ने उस पर गजब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बहुत बडा अजाब तय्यार कर रखा है। एक और मकाम पर इर्शाद हुवा कि उस नफ्स को कत्ल न करो जिस को अल्लाह ने हराम करार दिया है। इस से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआला ने इन्सानी जान को मोहतरम करार दिया है। और उसे सिर्फ उस सूरत में खत्म किया जा सकता है जिस में अल्लाह तआला ने हलाक करने की इजाजत दी है या'नी जिहाद में।

फिर इर्शाद हुवा कि जिस शख्स ने किसी को खून के बदले में या जमीन में फसाद फेलाने के सिवा और वज्ह से नाहक कत्ल किया तो उस ने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल कर दिया और जिस ने किसी को जिन्दगी बख्शी उस ने गोया तमाम इन्सानों को जिन्दगी बख्श दी, इस से मा'लूम हुवा कि अगर एक शख्स किसी को नाहक कत्ल करता है तो वोह दर अस्ल इन्सानी जान के एहतिराम और जज्बए हमदर्दी को खत्म करता है और येह जज्बए हमदर्दी खत्म करना नो'ए इन्सानी के कत्ल के मुतरादिफ है। इसी तरह अगर कोई एक शख्स की जान बचाता है तो वोह एहतिरामे जान और इन्सानी हमदर्दी के जज्बे को जिन्दा करता है और येह पूरी इन्सानियत की हयात व बका के मुतरादिफ है और उसी फल्सफए हयात के तहत इन्सानों को हुक्म दिया गया कि अपनी औलाद को मुफ्लिसी के बाइस कत्ल न करो। हम तुम्हें और उन्हें रिज्क देते है। फिर एक जगह इर्शाद हुवा कि अपनी जान को कत्ल न करो बेशक अल्लाह महेरबान है या'नी खुदकुशी की भी मुमानअत की गई है।

आखिरत में इस जुर्म की सजा के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि अगर तमाम जमीनो आस्मान वाले एक मुसलमान का खून करने में शरीक हो जाए, तो अल्लाह उन सब को मुंह के बल औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा। फिर फरमाया कि हर गुनाह के बारे में उम्मीद है कि अल्लाह तआला बख्श देगा लेकिन शिर्क की हालत में मरने वाले और किसी मुसलमान को जान बूझ कर कत्ल करने वाले को नहीं बख्शेगा।

अल्लाह तआला के इन इर्शादात और नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फरमूदात से मा'लूम हुवा कि कत्ल गुनाहे कबीरा है। और इस की दो सूरतें है। एक बिगैर इरादे के कत्ल है और दूसरा अमदन कत्ल है इन दोनों सूरतों में तौबा की नोइय्यत येह है।

बिगैर इरादे के कत्ल की तौबा येह है के वुरसा को खून बहा अदा किया जाए और अमदन कत्ल में किसास के बिगैर जुर्म की तलाफी

ना मुम्किन है। अगर वुरसा किसास से दस्तबरदार हो जाए और कातिल को मुआफ कर दें तो किसास साकित हो जाएगा और आखिरत में सजा न होगी अगर कातिल किसास या मुआफी से कत्ल के जुर्म की तलाफी न करेगा तो उस के बारे में वईद है कि जो किसी मुसलमान को जान बूझ कर कत्ल करेगा उस की सजा दोजख है वोह हमेशा उसी में रहेगा और उस का उस पर गजब होगा। उस पर ला'नत है और अल्लाह ने उस के लिये बडा भारी अजाब तय्यार कर रखा है कातिल को अगर दुन्या में इस्लामी कानून के मुताबिक सजा मिल जाए तो फिर आखिरत में उस को सजा न होगी क्यूं कि उस ने अपने किये की सजा दुन्या ही में भुगत ली।

रिवायत

हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : तुम से पहले लोगों में से एक शख्स था जिस ने निनानवे कत्ल किये थे। उस ने दुन्या के सब से बडे आलिम के मुतअल्लिक पूछगछ की, तो लोगों ने उसे एक राहिब का पता दिया। चुनान्चे वोह राहिब के पास आया और उसे कहा कि मैं ने निनानवे कत्ल किये है, क्या मेरी तौबा कुबूल हो सकती है ? राहिब बोला नहीं। और उस आदमी ने राहिब को भी कत्ल कर के सो कत्ल पूरे कर लिये, फिर उस ने दोबारा दुन्या के सब से बडे आलिम की तलाश शुरूअ की तो उसे एक आलिम का पता बताया गया। वोह आलिम के पास गया और कहा कि उस ने सो कत्ल किये है, क्या उस के लिये तौबा मुम्किन है ? आलिम ने कहा हां ! तेरे और तेरी तौबा के दरमियान कौन हाइल हो सकता है ! फुलां फुलां जगह जाओ। वहां अल्लाह तआला के नेक, इबादत गुजार लोग रहते हैं। तुम भी वहीं जा कर उन के साथ इबादत करो और फिर अपने वतन वापस न होना क्यूं कि येह बहुत बुरी जगह है।

चुनान्चे वोह चल पडा। जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई, लिहाजा उस के मुतअल्लिक रहमत और अजाब के फिरिश्तो का आपस में झगडा हो गया। रहमत के फिरिश्तो ने कहा येह ताइब हो

कर अपना दिल रहमते खुदावन्दी से लगाए आ रहा था, अजाब के फिरिश्तो ने कहा उस ने कभी कोई नेकी नहीं की । तब उन के पास आदमी की शक्ल में एक फिरिश्ता आया जिसे उन्हों ने अपना हकम तस्लीम कर लिया । उस फिरिश्ते ने कहा तुम जमीन नाप लो । वोह जिस बस्ती के करीब हो वोह उन्हीं में शुमार होगा । चुनान्चे उन्हों ने जमीन नापी और वोह नेकों की बस्ती के करीब निकला लिहाजा उसे रहमत के फिरिश्ते ले गए ।

एक रिवायत में है कि वोह एक बालिश्त नेकों की बस्ती के करीब था लिहाजा उसे भी नेकों में से कर दिया गया । दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने बुरों की बस्ती की जमीन की तरफ वही फरमाई । उस से कहा दूर हो जा और नेकों की बस्ती की जमीन से कहा तू करीब हो जा और फरमाया उन बस्तियों का फासिला नापो, तो फिरिश्तो ने उसे एक बालिश्त नेकों की बस्ती से करीब पाया और उसे बख्श दिया गया । (मुस्लिम)

﴾4﴿ जिना से तौबा

जिना निहायत ही बुरा फे'ल है और इस्लामी नुक्तए नजर से गुनाहे कबीरा है । बल्कि येह गुनाहे कबीरा होने के इलावा जुर्म भी है । इस लिये इस से बचना मुसलमानो का अव्वलीन फर्ज है । इस्लाम में जज्बए इताअते कुरआनो सुन्नत है । फिर खौफे खुदा है आखिरत की सजा है येह तमाम उमूर बार बार इन्सान को बाखबर करते है कि जिना और बद कारी ऐसे बडे गुनाह है जिन पर आखिरत में सख्त बा'ज पुर्स होगी और सख्त अजाब होगा । जिस वज्ह से उन उमूर के तहत इन्सान को हर मुम्किन तरीके से जिना से रोकने की कोशिश की गई है । अगर फिर भी कोई फर्द अपने नफ्सानी तकाजों को जाइज तरीके से पूरा करने के बजाए गैर इस्लामी रविश इख्तियार करे तो उस के लिये जिना की सख्त सजा रख दी है ताकि बुराई का कलअ कमअ हो जाए

और सख्त तरीन सजा से मुआशरे में लोगों के जेह्न में जिना के बुरे अन्जाम का ऐसा खौफ तारी रहे ताकि दूसरे लोग उस जुर्म के मुर्तकिब न हों। इसी लिये कुरआन पाक में जिना के बारे में फरमाया गया है कि उस के करीब तक न जाओ।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

और जिना के करीब तक न जाओ। बेशक वोह बे हयाई है और बहुत ही बुरा रास्ता है।

(पारह 15, सूरए बनी इसराईल, आयत : 32)

कुरआन में उसे बे हयाई करार दिया है। फहाशी येह है कि औरत की इस्मतो इफ्फत के लिये जो पाबन्दियां इस्लाम ने आइद की हैं उन से तजावुज किया जाए, उन हुदूदुल्लाह से तजावुज बे हयाई है। फिर इर्शादे बारी तआला है कि

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝

वोह हराम और बद कारियों से अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं।

(पारह 18, सूरए मुअमिनून, आयत : 5)

एक और आयत में इर्शादे रब्बानी है।

وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ

या'नी छोटे बडे जाहिर पोशीदा किसी भी गुनाह के करीब मत जाओ।

(पारह 8, सूरए अल अन्आम, आयत : 151)

यहां बडे से मुराद जिना और छोटे से मुराद बोसा लेना, बुरी नजर से देखना और छूना है। चुनान्चे हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है, हाथ जिना करते हैं पैर जिना करते हैं और आंखें जिना करती हैं। फरमाने इलाही है।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ

मोमिनों से कह दीजिये अपनी आंखें बन्द कर लें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें।

(पारह 18, सूरए नूर, आयत : 30)

अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दों और औरतों को हुक्म दिया है कि वोह हराम की तरफ न देखें और अपनी शर्मगाहों को इर्तिकाबे हराम से महफूज रखें।

कुरआन में जिन गुनाहों से बचने पर बहुत जोर दिया गया है उन में पहला गुनाह शिर्क है। दूसरा कत्ले नाहक और तीसरा गुनाह जिना है। अगर्चे इन के इलावा भी बहुत से कबीरा गुनाह हैं। जिन से बचना हर मुसलमान के लिये अज हद जरूरी है लेकिन इन तीन गुनाह के नताइज और असरात बहुत जियादा हैं, इस लिये इन से बचने पर जियादा जोर दिया गया है। हालां कि देखा जाए तो शैतान हर जमाने में उन तीनों कबाइर के जरीए इन्सानों से निहायत ही कबीह फे'ल करवा डालता है। जिस पर काइनात लरज उठती है, इसी लिये कुरआने पाक में इर्शादे बारी तआला हुवा कि

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ
وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾

और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और किसी ऐसे शख्स को जिसे कत्ल करना अल्लाह तआला ने मन्अ कर दिया है नाहक कत्ल नहीं करते और न वोह जिना करते हैं। और जो शख्स येह काम करेगा तो वोह जरूर गुनाह का बदला पाएगा।

(पारह 19, सूरए फुरकान, आयत : 68)

इस आयत से मा'लूम हुवा कि अल्लाह के नज्दीक कुफ्रो शिर्क और कत्ले नाहक की तरह जिना भी जुर्मे अजीम है। कत्ल की तरह जिना के मुफ्सिदात इतने हैं कि अल्लाह ने इसे कत्ल के बा'द बयान किया है। अगर जिना कत्ल के बराबर नहीं लेकिन उस से कम भी है। बहुत सी अहादीस में येही मजमून बयान हुवा है।

हदीस में है कि शिर्क के बा'द कोई गुनाह इस नुत्फे से बढ कर नहीं है जिस को कोई शख्स किसी ऐसे रेहम में रखे जो शरअन उस के लिये हलाल न था।

एक और हदीस में है कि जानी जब जिना करता है तो उस वक्त ईमान उस से निकल कर उस के सर पर साया बन कर खडा हो जाता है और जानी जब फे'ले जिना से फारिग होता है तो ईमान उस की तरफ पलट आता है। जिना हकीकतन ऐसा गुनाह है जिस से कौम की नस्ल खराब होने का खदशा रहता है, लिहाजा ऐसे मर्द और औरतें जो जिना में मुब्तला हों, और पकडे न गए हों तो ऐसे लोगों को अल्लाह के हुजूर ताइब होना चाहिये और आइन्दा इस फे'ले बद को हमेशा के लिये तर्क कर देना चाहिये। अगर जानी तौबा न करे तो आखिरत में उस को दर्दनाक अजाब दिया जाएगा। अगर जानी या जानिया पकडे जाए तो उन पर हद लगेगी और उन को सजा भुगतना पडेगी। दुन्या में सजा पाने या'नी संगसारी के बा'द आखिरत में उन को सजा न होगी। क्यूंकि उन्हों ने अपने किये की सजा दुन्या में ही पाई। चुनान्चे इर्शादे बारी तआला है कि

فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا

पस अगर वोह तौबा कर लें और इस्लाह कर लें, तो उन से मुंह फेर लो। बेशक अल्लाह तआला तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है।

(पारह 4, सूरए निसा, आयत : 16)

औरतों में से जो बे हयाई करें या'नी जिना करवाए और उन के बारे में गवाही मिल जाए तो ऐसी औरतों को घरों में बन्द कर दो, यहां तक कि उन को कैद में रखो कि वोह मर जाए या अल्लाह तआला उन के लिये कोई और बेहतर रास्ता निकाले। और जो मर्द ऐसा करे तो उन्हें ईजा दो। फिर अगर वोह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो उन से मुंह फेर लो। बेशक अल्लाह तआला तौबा कुबूल करने वाला है।

बा'ज सहाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मरवी है कि जिना से बचो, इस में छे मुसीबतें हैं। जिन में से तीन का तअल्लुक दुन्या से है और तीन का आखिरत से। (1) दुन्या में रिज्क कम हो जाता है (2) जिन्दगी मुख्तसर हो जाती है और (3) चेहरा मस्ख हो जाता है। (4) आखिरत में खुदा की नाराजगी (5) सख्त पुरसिश और (6) जहन्नम में दाखिल होना है।

रिवायत

फकीह अबुल्लैस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है, हजरते उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मरतबा हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में रोते हुए हाजिर हुए। आप ने दरयाफ्त फरमाया ऐ उमर ! क्यूं रोते हो ? अर्ज की, हुजूर ! दरवाजे पर खडे हुए जवान की गिरया व जारी ने मेरा जिगर जला दिया है । आप ने फरमाया, उसे अन्दर लाओ ! जब जवान हाजिरे खिदमत हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा ऐ जवान ! तुम किस लिये रो रहे हो ? अर्ज की हुजूर ! मैं अपने गुनाहों की कसरत और रब्बे जुल जलाल की नाराजगी के खौफ से रो रहा हूं। आप ने पूछा क्या तूने शिर्क किया है ? कहा नहीं या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या तूने किसी का नाहक कत्ल किया है ? आप ने दोबारा पूछा। अर्ज किया नहीं या रसूलल्लाह ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया अगर तेरे गुनाह सातों आस्मानों, जमीनों और पहाडों के बराबर हों तब भी अल्लाह तआला अपनी रहमत से बख्श देगा।

जवान बोला। या रसूलल्लाह मेरा गुनाह उन से भी बडा है। आप ने फरमाया तेरा गुनाह बडा है या कुरसी ? अर्ज की मेरा गुनाह ? आप ने फरमाया तेरा गुनाह बडा है या अर्शे इलाही ? अर्ज की मेरा गुनाह। आप ने फरमाया तेरा गुनाह बडा है या रब्बे जुल जलाल ? अर्ज की रब्बे जुल जलाल बहुत अजीम है ! हुजूर ने फरमाया बिलाशुबा जुर्मे अजीम को रब्बे अजीम ही मुआफ फरमाता है। फिर आप ने फरमाया, फिर तुम मुझे अपना गुनाह तो बतलाओ। अर्ज की, हुजूर ! मुझे आप के सामने अर्ज करते हुए शर्म आती है। आप ने फरमाया कोई बात नहीं, तुम बतलाओ अर्ज की हुजूर में सात साल से कफन चोरी कर रहा हूं। अन्सार की एक लडकी फौत हो गई तो मैं उस का कफन चुराने जा पहुंचा। मैं ने कब्र खोद कर कफन ले लिया और चल पडा। कुछ ही दूर गया था कि मुझ पर शैतान गालिब आ गया और मैं उलटे कदम वापस पहुंचा। और लडकी से बदकारी की। मैं गुनाह कर के अभी चन्द ही

कदम चला था कि लडकी खडी हो गई और कहने लगी ऐ जवान ! खुदा तुझे गारत करे, तुझे उस निगहबान का खौफ न आया जो हर मज्लूम को जालिम से उस का हक दिलाता है। तूने मुझे मुर्दो की जमाअत से बरहना कर दिया और दरबारे खुदावन्दी में नापाक कर दिया है । हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह सुना तो फरमाया दूर हो जा ऐ बद बख्त ! तू नारे जहन्नम का मुस्तहिक है।

जवान वहां से रोता हुवा और अल्लाह तआला से इस्तिगफार करता हुवा निकल गया जब उसे उसी हालत में चालीस दिन गुजर गए तो उस ने आस्मान की तरफ निगाह की और कहा। ऐ मुहम्मद व आदम व इब्राहीम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रब ! अगर तूने मेरे गुनाह को बख्श दिया है, तो हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबा को मुत्तलअ फरमा। वरना आस्मान से आग भेज कर मुझे जला दे और जहन्नम के अजाब से बचा ले। उसी वक्त हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام आप की खिदमत में हाजिर हुए और कहा आप का रब आप को सलाम कहता है और पूछता है कि मख्लूक को तुम ने पैदा किया है ? आप ने फरमाया नहीं। बल्कि मुझे और तमाम मख्लूक को अल्लाह ने पैदा किया है और उसी ने रिज्क दिया है। तब जिब्रईल ने कहा अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं ने जवान की तौबा कुबूल कर ली है। पस हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवान को बुला कर उसे तौबा की कुबूलिय्यत का मुज्दा सुनाया।

किस्सा एक फाहिशा औरत की तौबा का

हजरते हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि फरमाते हैं कि बनी इसराईल में एक फाहिशा औरत थी जो बहुत ही खूब सूरत थी। जब तक सो दीनार न ले लेती किसी को अपने पास न आने देती। उसे एक आबिद ने देखा और उस पर आशिक हो गया और मेहनत मजदूरी कर के सो दीनार जम्अ किये, फिर उस औरत के पास आया और कहा तेरा हुस्न मुझे भा गया था। मैं ने मेहनत मजदूरी कर के सो दीनार जम्अ कर लिये हैं। उस ने कहा ले आओ। वोह शख्स उस के यहां पहुंचा उस का

एक सोने का तख्त था जिस पर वोह बैठा करती थी, उसे भी उस ने अपने पास बुलाया। जब आबिद आमादा हुवा और उस के पास जा बैठा तो नागाह उसे अल्लाह के सामने कियामत के दिन खडा होना याद आ गया और फौरन उस के बदन में रेशा पड गया और कहा मुझे जाने दे, सो दीनार तेरे ही हैं। उस ने कहा तुझे क्या हो गया तूने तो कहा था कि मैं तेरे पसन्द आ गई और तूने मेहनत मजदूरी कर के दीनार जम्अ किये और जब मुझ पर कादिर हुवा तो येह हरकत की। कहा मुझ पर अल्लाह का खौफ तारी हो गया और अल्लाह के सामने जाने का अन्देशा गालिब आ गया। मेरे दिल में तेरी अदावत पैदा हो गई, अब तू अबगजुन्नास है मेरे नज्दीक। उस ने कहा अगर तू सच्चा है तो मेरा शौहर भी तेरे सिवा कोई नहीं हो सकता।

उस ने कहा मुझे निकल जाने दे। उस ने कहा मुझ से निकाह करने का वा'दा कर जाओ कहा अन्करीब हो जाएगा। फिर सर पर चादर डाली और अपने शहर को चला गया। वोह औरत भी तौबा कर के उस के पीछे उस शहर को रवाना हुई। उस शहर में पहुंची लोगों से उस आबिद का हाल दरयाफ्त किया। लोगों ने उसे बताया। उस औरत को मलिका कहते थे। आबिद से भी किसी ने कहा तुम्हें मलिका तलाश करती फिरती है। उन्हों ने जब उसे देखा, फौरन एक चीख मारी और जाने बहक तस्लीम की।

वोह औरत ना उम्मीद हो गई। फिर उस ने कहा येह तो मर ही गए। इन का कोई रिश्तेदार भी है। लोगों ने कहा इस का भाई भी फकीर आदमी है, कहने लगी इस के भाई की महब्बत की वज्ह से उस से निकाह करूंगी। चुनान्चे उस से निकाह किया जिस से सात लडके पैदा हुए। सब के सब नेक बख्त सालेह थे।

जिना से ताइब होने का समरा

का'बुल अहबार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है फरमाते हैं कि एक शख्स बनी इस्राईल का एक फाहिशा औरत के पास गया और वहां से निकल कर गुस्ल के वास्ते एक नहर में घुसा पानी ने उसे आवाज दी कि

ऐ शख्स ! तुझे शर्मो हया नहीं है, क्या तूने तौबा नहीं की थी कि मैं कभी ऐसा नहीं करूंगा ? वोह शख्स पानी में से घबराया हुवा निकला और कहता था कि मैं ने हमेशा अल्लाह तआला की नाफरमानी की है।

चुनान्चे एक पहाड पर पहुंचा, जहां बारह आदमी इबादत में मश्गूल थे। वोह शख्स भी उन ही लोगों के साथ रहा। हत्ता कि वहां कहत वाकेअ हुवा तो वोह लोग घास और चारा की तलाश में उस शहर पर आए। जब नहर के पास जाने लगे तो उस शख्स ने कहा। मैं तुम्हारे हमराह नहीं जाऊंगा, उन्हों ने कहा क्यूं ? कहा वहां मेरे गुनाह का जानने वाला है उस से मुझे शर्म आती है। चुनान्चे वोह लोग उसे छोड कर आगे बढे नहर ने आवाज दे कर कहा आबिदो ! तुम्हारा साथी क्या हुवा ? उन्हों ने कहा वोह कहता है कि यहां एक उस के गुनाह का जानने वाला है, उस से शर्माता है कि कहीं उसे देख न ले, कहने लगी سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! अगर तुम से कोई अपनी औलाद या अजीजो करीब पर गुस्सा होता है, फिर वोह अपने फे'ल से बा'ज आ जाए और तौबा कर ले तो क्या फिर उस से महब्बत नहीं करने लगता है ? तुम्हारे साथी ने भी तौबा की और मेरी पसन्द का काम करने लगा अब मैं भी उसे दोस्त रखता हूं, उसे ले आओ और खबर कर दो। और मेरे किनारे अल्लाह की इबादत करो। उन लोगों ने उसे खबर की। वोह भी उन के साथ नहर के किनारे पर आया और इबादते खुदा में मश्गूल रहा।

एक तवील जमाने तक वोह लोग वहीं मुकीम रहे। फिर उस शख्स का इन्तिकाल हो गया तो नहर ने आवाज दी, ऐ आबिदो ! ऐ खुदा के बन्दो ! इस को मेरे ही पानी से गुस्ल दे कर मेरे ही किनारे पर दफ्नाओ ताकि कियामत में भी मेरे ही पास से उठे। उन लोगों ने ऐसा ही किया। फिर सब ने कहा आज रात इसी की कब्र के पास सोए। सुब्ह ही उठ कर चलेंगे। चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया। जब सुब्ह करीब हुई तो उन सब की आंख लग गई। बेदार हो कर देखा तो उस की कब्र पर बारह सरो के दरख्त खडे हैं, पहला सरो उस के सर पर पैदा हुवा। उन्हों ने आपस में कहा येह सरो अल्लाह तआला ने इस लिये पैदा किये है कि

हम यहीं रहें, फिर उन्हों ने वहीं इकामत इख्तियार की और इबादत में मशगूल हो गए। जब उन में से कोई मर जाता तो उसी के पहलू में दफ्ना देते। हत्ता कि कुल मर गए। बनी इस्राईल उन की जियारत को जाया करते थे।

﴾5﴿ चोरी से तौबा

किसी चीज को उस के मालिक या साहिबे तसर्रुफ की इजाजत के बिगैर छुपा कर लेने को चोरी कहा जाता है येह बुरी हरकत है जो अल्लाह को नापसन्द है। चोरी के गुनाह और जुर्म होने की वज्ह येह है कि चोर दूसरे के माल को उस की इजाजत के बिगैर चुपके से अपने तसर्रुफ में ले आता है। दूसरे लफ्जों में उस का मतलब येह कि एक शख्स अपनी जाइज मेहनत से कमा कर जो हासिल करता है, दूसरा किसी जाइज मेहनत के बिगैर बिला वज्ह उस पर कब्जा कर के पहले की मेहनत को अकारत कर देता है। अगर उस की रोक थाम न की जाए तो किसी को अपनी मेहनत का फल न मिले। उस के इलावा उस एक बुराई में बहुत सी दूसरी बुराइयां भी शामिल हैं।

बिला वज्ह दूसरे के घर में दाखिल होना और उस की मिल्कियत का जाएजा लेना चोर के अन्दर के खबाइस को जाहिर करता है इस लिये चोरी बहुत ही बुरा फे'ल है।

हजरते उबादा बिन सामित से मरवी है कि एक दफ्आ हम लोग आं हजरत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे। आप ने फरमाया, हम से अहद करो कि तुम शिर्क, चोरी और बदकारी न करोगे। फिर आयत पढी, जो कोई येह अहद पूरा करेगा तो उस की मजदूरी खुदा के जिम्मे है और जो इन में से किसी एक का मुरतकिब हुवा और उस की सजा उस को दे दी गई तो उस के उस गुनाह का कफ्फारा हो गया। और अगर किसी ने उन में से किसी एक का इर्तिकाब किया और खुदा ने उस को छुपा दिया तो उस की बख्शिश खुदा के हाथ में है चाहे मुआफ करे चाहे सजा दे।

एक दफ्आ आं हजरत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चोर पर ला'नत भेजी। फरमाया अल्लाह तआला चोर पर ला'नत करे कि एक मा'मूली खोद या रस्सी चुराता है। फिर उस का हाथ काटा जाता है।

चोरी का गुनाह भी बन्दा इसी लिये करता है कि वोह खुदा के हाजिर नाजिर होने पर यकीन तो रखता है लेकिन कम अज कम येह कि फे'ल के इर्तिकाब के वक्त उस का यकीन मांद पड जाता है वोह समझता है कि जब बन्दे नहीं देखते तो खुदा भी हम को नहीं देखता। इसी लिये आं हजरत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया "जब चोर चोरी करता है तो उस में ईमान नहीं रहता।"

अल्लाह के नज्दीक चोरी बहुत बुरा जुर्म है। जिस बिना पर अल्लाह तआला ने उस की सजा बहुत शदीद रखी है। चुनान्चे इर्शादे बारी है कि।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

चोरी करने वाला मर्द हो या औरत उस का हाथ काट दिया करो, येह सजा उन के कस्ब करने के सबब से है येह अल्लाह की तरफ से ए'लान है और अल्लाह गालिब हिक्मत वाला है। फिर जो शख्स अपने किये हुए गुनाह पर तौबा करे तो अल्लाह तआला उसी की तौबा कुबूल कर लेता है। बेशक अल्लाह तआला मुआफ करने वाला महेरबान है।

(पारह 6, सूरए माइदह, आयत : 38-39)

इस आयत की रू से इस्लाम में चोरी की सजा हाथ काटना है। लेकिन चोरी के माल की हद मुकर्रर करने में फुकहाए किराम में इख्तिलाफ पाया जाता है। बा'ज फुकहा कहते हैं कि चोरी की चीज की कोई हद मुकर्रर नहीं। मगर शाफेइयों के नज्दीक चोरी के माल की हद 3 दिरहम है लेकिन हनफियों के नज्दीक 12 दिरहम है।

बहर कैफ चोरी के मुआमले में अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया है कि चोर को अपने फे'ल से तौबा करनी चाहिये। और जो शख्स उस गुनाह के बा'द तौबा करे और खुदा की तरफ झुक जाए तो अल्लाह तआला उसे मुआफ फरमा देता है। अलबत्ता चोरी का माल मालिक को वापस लौटाना चाहिये अगर तौबा करते वक्त चोर इस हैसियत में नहीं रहा तो उसे माल की पूरी कीमत अदा करनी चाहिये और मालिक को रिजामन्द करना चाहिये। चोरी पकडी जाने की सूरत में अगर चोर पर हद लागू हो गई और उस का हाथ काट दिया गया तो फिर भी चोर को अल्लाह के हुजूर तौबा करनी चाहिये ताकि आइन्दा चोरी न करे। अगर चोर को इस दुन्या में सजा न मिली और न ही उस ने चोरी से तौबा की तो आखिरत में उस को सजा मिलेगी लेकिन दुन्या में चोरी की सजा पाने के बा'द आखिरत में सजा न मिलेगी।

एक हदीस में है कि एक चोर हुजूर के सामने लाया गया जिस ने चोरी की थी। तो आप ने फरमाया क्या तुम ने चोरी की है? उस शख्स ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह! मैं ने चोरी की है। तो आप ने उस पर हुक्म सादिर फरमाया कि उसे ले जाओ और उस का हाथ काट दो। जब हाथ कट गया तो आप के पास आया, तो आप ने फरमाया कि तौबा करो। उस शख्स ने तौबा की तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि तुम्हारी तौबा अल्लाह के हां कुबूल हुई।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौर में एक औरत ने कुछ जेवर चुरा लिये, लोगों ने उस औरत को रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पेश किया तो आप ने उस का हाथ काट देने का हुक्म दिया। जब हाथ कट चुका तो औरत ने कहा या रसूलल्लाह! क्या मेरी तौबा हो गई तो आप ने फरमाया कि तुम पाक साफ हो गई हो। येह औरत मख्जूम कबीले की थी। चूंकि येह औरत बडे घराने की थी तो लोगों में तश्वीश फेली कि हाथ कटने के हुक्म से पहले हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस की सिफारिश की जाए। हजरते उसामा बिन जैद ने हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

से सिफारिश की तो आप को बहुत ना गवार गुजरा और गुस्से से फरमाया कि उसामा ! तू अल्लाह की हदों में से एक हद के बारे में सिफारिश कर रहा है। अब हजरते उसामा बहुत घभराए और कहने लगे मुझ से बडी खता हुई । मेरे लिये आप इस्तिगफार कीजिये । शाम के वक्त अल्लाह के रसूल ने एक खुत्बा दिया, जिस में अल्लाह तआला की हम्दो सना के बा'द फरमाया कि तुम से पहले लोग इसी खस्लत की बिना पर तबाह हुए कि उन में जब कोई बडे घराने का आदमी चोरी करता तो उसे छोड देते और जब कोई मा'मूली आदमी चोरी करता तो उस पर हद जारी कर देते । उस खुदा की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है अगर फातिमा बिन्ते मुहम्मद भी चोरी करती तो उन के लिये भी हाथ काटने का हुक्म होता ।

बसा औकात लोगों से ऐसा भी हो जाता है कि छोटी छोटी चीजें चुरा लेते हैं और वोह पकडे भी नहीं जाते, जैसे स्कूल में कोई तालिबे इल्म किसी दूसरे तालिबे इल्म की कोई चीज चुराले या दफ्तर से कोई शख्स कोई चीज चुरा कर घर ले आए या किसी कारखाने से कोई मजदूर कोई चीज चोरी कर ले तो इन सब सूरतों में आइन्दा चोरी से तौबा कर लेनी चाहिये और साबिका फे'ल की अल्लाह से मुआफी मांगनी चाहिये। अगर वोह अल्लाह से अपने जुर्म की मुआफी नहीं मांगेगा तो आखिरत में उसे उस चोरी की सजा जरूर मिलेगी और अगर उस ने मुआफी मांग ली तो अल्लाह उस का जुर्म मुआफ कर देगा और वोह सजा से बरिय्यु जिम्मा हो जाएगा ।

चोरी से तौबा का वाकिआ

एक बुजुर्ग फरमाते हैं कि मेरा काम चोरी करना और लोगों को लूटना था। एक रोज दरियाए दजला पर गया। वहां दो खजूर के दरख्त थे, एक तरो ताजा और एक खुश्क। मैं ने देखा कि एक परिन्दा तरो ताजा दरख्त से खजूरें तोडता है और फिर उड कर खुश्क खजूर पर चढ जाता है और वहां एक अन्धा सांप था। येह परिन्दा उस को खजूरें खिलाता

है । मैं ने दिल में कहा ऐ परवर दिगार ! येह सांप है कि नबिये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस के मारने का हुक्म दिया है तूने उस के खाना खिलाने के लिये एक परिन्दा मुकर्रर फरमा दिया है । हालां कि मैं तेरी वहदानियत की शहादत देता हूं । फिर भी मुझे डाकू बना दिया है । इतने में हातिफे गैबी ने आवाज दी कि मेरे बन्दे तौबा करने वालो के लिये मेरा दरवाजा खुला है येह सुनते ही उस ने अपनी तल्वार तोड दी । और तौबा तौबा पुकारने लगा और गैब से येह आवाजे आने लगी قَبِلْنَاكَ قَبِلْنَاكَ हम ने तुझे कुबूल किया, हम ने तुझे कुबूल किया ।

वोह बुजुर्ग फरमाते हैं कि इस के बा'द मैं अपने साथियों से अलग हो गया । जब उन्हों ने येह सुना कि में तौबा तौबा पुकारता फिरता हूं, उन्हों ने इस की वज्ह पूछी, तो मैं ने कहा कि अब मैं ने अपने खुदा से सुल्ह कर ली है । येह सुन कर साथियों ने कहा कि हम भी तुम्हारे साथ सुल्ह करते हैं । हम ने चोरी के कपडे अपने बदन से उतार दिये और मक्कए मुअज्जमा की तरफ रवाना हुए । रास्ते में हम एक गाऊं में दाखिल हुए । वहां एक बुढिया मिली उस ने कहा तुम्हारे साथ फुलां शख्स कुरदी है । मैं ने कहा वोह मैं ही हूं । उस ने कुछ कपडे ला कर कहा येह मेरे बच्चे के कपडे हैं । मैं आप पर इन को सदका करना चाहती हूं । क्यूं कि हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ख्वाब में हुक्म फरमाया कि येह कपडे फुलाने कुरदी को दे दो । चुनान्चे मैं ने वोह कपडे बुढिया से ले लिये और इन को अपने साथियों में तक्सीम कर दिया ।

हिकायत

हजरते हातिमे असम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक बार बल्ख शहर में वा'ज फरमा रहे थे आप ने अस्नाए वा'ज में फरमाया कि इलाही ! जो इस मज्लिस में सब से जियादा गुनहगार है उस पर अपना रहम फरमा और उस को बख्श दे । एक कफन चोर भी उस मज्लिस में मौजूद था । जब रात हुई तो कफन चोर कब्रिस्तान में गया और एक कब्र को खोदा । उस ने हातिफ से एक आवाज सुनी कि ऐ कफन चोर ! तू तो

आज दिन को हातिमे असम की मज्लिसे वा'ज में बख्श दिया गया है। फिर आज ही रात को दोबारा येह गुनाह क्यूं करने लगे हो ? कफन चोर ने येह आवाज सुनी तो रोने लगा और सच्चे दिल से ताइब हो गया।

हिकायत

हजरते राबिआ बसरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہا एक रात नमाज पढते पढते थक गईं और सो गईं। इत्तिफाकन उस रात आप के घर कोई चोर घुस आया। और आप के सामान की गठडी बान्ध कर उठाई और चाहा कि चल दे। मगर जब उस ने गठडी उठाई तो अन्धा हो गया और रास्ता न पाया। घभरा कर उस ने गठडी रख दी, गठडी रखी तो फिर बीना हो गया। उस ने फिर गठडी उठाई, तो फिर अन्धा हो गया। गर्ज दो तीन बार ऐसा ही हुवा। और फिर उस ने हातिफ से एक आवाज सुनी कि ऐ नादान ! अगर एक दोस्त सो रहा है तो दूसरा दोस्त जाग रहा है। बेवुकूफ ! राबिआ ने अपने आप को जब से हमारे सिपुर्द कर रखा है, उस वक्त से बेचारे इब्लीस को येह कुदरत हासिल नहीं कि वोह उस के पास फटके। फिर चोर बेचारे की क्या ताकत है कि उस के सामान के पास फटके ? आखिर अल्लाह से मुआफी मांगता हुवा वहां से चला गया।

निगाहे वली से एक चोर की तौबा का किस्सा

एक दफ्आ का जिक्र है कि हजरते अता अरजक रात को नमाज पढने की गरज से जंगल की तरफ चले। एक चोर रास्ते में आप से मो'तरिज हुवा। आप ने फरमाया ऐ अल्लाह ! तू जिस तरह चाहे मुझे इस से बचा ले। चुनान्चे फौरन उस के दोनों हाथ और दोनों पाऊं खुश्क हो गए। वोह फौरन रोने लगा और कहने लगा, फिर कभी ऐसा न करूंगा। आप ने छोड दिया। वोह शख्स आप के पीछे हो लिया और कहा में अल्लाह के वास्ते तुम से दरयाफ्त करता हूं कि तुम्हारा क्या नाम है ? फरमाया मेरा नाम अता है। जब सुब्ह हुई तो वोह शख्स लोगों से दरयाफ्त करने लगा कि तुम किसी ऐसे शख्स बुजुर्ग सालेह को भी

जानते हो जो रात के वक्त सेहरा में नमाज के वास्ते जाता हो ? लोगों ने कहा हां वोह अता सुलमी हैं। वोह अता सुलमी के पास पहुंचा और कहा मैं फुलां फुलां किस्से से तौबा कर के आप के पास हाजिर हुवा हूं। मेरे लिये दुआ फरमाइये। आप ने आस्मान की जानिब हाथ उठा कर दुआ फरमाई और रोते जाते थे। अरे भले मानस ! वोह मैं न था। वोह अता अरजक थे। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

रिवायत है कि हजरते शैख अबुल हसन नूरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गुस्ल के इरादे से पानी में घुसे। एक चोर आप के कपडे चुरा कर भाग गया। फिर एक साअत के बा'द देखा तो चोर कपडे लिये हुए चला आ रहा है और उस के हाथ खुश्क हो गए हैं। हजरत ने अपने कपडे पहन लिये। फिर फरमाया इलाही ! तूने मुझे मेरे कपडे लौटा दिये। उसी वक्त सहीह व सालिम हो कर चला गया। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

﴾6﴿ शराब से तौबा

शराब के असरात बहुत बुरे हैं, इस लिये अल्लाह तआला ने उस से मन्अ फरमाया है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ٘ وَاِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَاؕ

ऐ नबिय्ये पाक ! लोग आप से शराब और जूए के बारे में सुवाल करते हैं। फरमा दीजिये कि उन में बडा गुनाह है। अगर्चे उन में लोगों के लिये मन्फअत भी है लेकिन उन का गुनाह उन के नफ्ए से बहुत बडा है।

(पारह 2, सूरए बकरह , आयत : 219)

येह शराब की मुमानअत के मुतअल्लिक पहला हुक्म था। इस के जरीए लोगों को खबरदार किया गया कि शराब का इस्ति'माल अच्छा नहीं। उस के नुक्सानात बहुत जियादा हैं, लिहाजा इस आयत के नुजूल पर कुछ लोगों ने शराब पीना छोड दी, कुछ उसी तरह पीते रहे। हत्ता कि बा'ज औकात नशे की हालत में नमाज पढ लेते थे और कुछ का कुछ पढ

जाते थे। चुनान्चे उस पर वही का नुजूल हुवा जिस में नशे की हालत में नमाज अदा करने की मुमानअत कर दी गई।

नशे की हालत में नमाज पढने का एक वाकिआ येह है कि अब्दुर्रहमान बिन औफ ने दा'वत की लोग गए, खाना खाया और फिर शराब पी कर मस्त हो गए इतने में नमाज का वक्त आ गया। एक शख्स को इमाम बनाया उस ने नमाज में सूरए काफिरून को उलट पलट पढ दिया उस पर नशे की हालत में नमाज पढना मन्अ कर दिया गया।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ

ऐ इस्लाम के आशिको! नशे की हालत में नमाज के करीब तक न जाओ बल्कि नमाज उस वक्त अदा करो जब तुम जानो कि तुम नमाज में क्या कह रहे हो। (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 43)

नशे की हालत में इन्सान को येह याद नही रहता कि वोह अपनी जबान से क्या कह रहा है? लिहाजा इस आयत की रू से शराब की हुरमत का हुक्म पहले से जरा आगे बढा और नशे की हालत में नमाज की मुमानअत हो गई। दर अस्ल अरब लोग सदियों से शराब नोशी के आदी थे इस लिये मुमानअत के अहकाम ब-तदरीज नाजिल हुए। मुन्दरजा बाला आयत के नुजूल के बा'द शराब पीने वाले बहुत कम रह गए। उस के बा'द शराब की मुमानअत के बारे में कतई हुक्म नाजिल हुवा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝

ऐ ईमान वालो! बेशक शराब और जुआ और बुत और पांसे के तीर नापाक हैं, शैतान की कारस्तानिया हैं। सो उन से बचो। ताकि तुम फलाह पाओ।

(पारह 7, सूरए माइदह, आयत : 90)

शराब की हुरमत के बारे में येह तीसरा हुक्म है और इस हुक्म से शराब हमेशा के लिये हराम करार दे दी गई। जब इस आयत का नुजूल हुवा तो नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान करवा दिया कि आज से न कोई शराब पी सकता है और न बेच सकता है, बल्कि जिन

लोगों के पास शराब है वोह उसे जाएअ कर दें। चुनान्चे उस रोज से ले कर कियामत तक शराब हराम हो गई और अब कोई इसे किसी सूरत में भी जाइज करार नहीं दे सक्ता।

हजरते इब्ने अब्बास से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जो शख्स अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि न वोह शराब पीए और न उस मज्लिस में बैठे जहां शराब पी जाए।

बयान किया जाता है कि जब सहाबाए किराम में जज्बए इताअत हद दरजे तक रासिख हो गया, तो वोह नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर हुक्म के सामने सरे तस्लीम खम करने के लिये तय्यार थे। चुनान्चे जब इस आयत का नुजूल हुवा तो सहाबाए किराम हुक्म पाते ही अपने घरों में घुस गए और शराब के तमाम मटके तोड दिये। जहां कोई मय ख्वारी हो रही थी। जब वहां शराब की हुरमत का पैगाम पहुंचा तो उन्हों ने भी शराब गिरा दी। जामो मीना तोड दिये। मश्कों और मटकों में भरी हुई शराब उन्ढेल दी और येह अल्लाह का खास करम था कि मुमानअते शराब के उस हुक्म के बा'द किसी फर्द ने भी शराब नोशी की ख्वाहिश जाहिर न की। अल्लाह के हुक्म और नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरबियत का ए'जाज था कि नस्ल दर नस्ल चलने वाली बुराई चश्मे वाहिद में खत्म हो कर रह गई।

फरमाने नबवी है कि कोई जमाअत ऐसी नहीं है जो दुन्या में किसी नशा आवर चीज पर जम्अ होती हों मगर अल्लाह तआला उन्हें जहन्नम में जम्अ करेगा और वोह एक दूसरे को मलामत करना शुरूअ करेंगे, एक दूसरे को कहेगा ऐ फुलां! अल्लाह तआला तुझे मेरी तरफ से बुरी जजा दे। तूने ही मुझे इस मकाम तक पहुंचाया है और दूसरा उस से उसी तरह कहेगा।

बुरी महफिल इन्सान को ले डूबती है किरदार को दागदार करती है, बन्दे को फरेब के जाल में फंसा देती है। ऐ शराबी! जरा अपने माजी को याद कर कि जूंही तू आकिल और बालिग हुवा तुझे तेरी झूटी

तमन्नाएं, नाम निहाद करों फर, बे-सबात हुस्नो शबाब, तमए जाहो जलाल और हवसे मालो मनाल बज़्मे रिन्दा में ले गई, पुराने बादा ख्वारों ने तुझे खुश आमदीद कहा। नादान शराबी खुशी में झुम उठे कि एक और ना आकिबत अन्देश का हम में इजाफा हुवा। और तेरी जिन्दगी में शराब नोशी का आगाज हुवा। पहले तू तफरीह के तब्अ के लिये कुछ अर्सा जामो सुबुअ चला। फिर उसी तफरीह ने तुझे शराब नोशी का आदी मुजरिम बना दिया। ऐ शराबी ! तेरे आबा अमीरो कबीर थे। रईसे बे नजीर थे। तू रईस जादा था। तेरा लाखों का कारोबार था। सरमाया तेरे पास था, तू मेहनती था, दुन्यादार तुझे अच्छा ही समझते थे लेकिन जूंही तू शराब का आदी बना, रक्सो सुरूद की महफिल में गया, ताइफ खाने का दिलदादह हुवा। चन्द रोज के लुत्फो सुरूर की खातिर तूने अपनी आखिरत का सौदा कर डाला, अपना माल ऐशो इशरत की नज्र कर डाला। कारोबार तेरी अदम दिलचस्पी से तबाह व बरबाद हुवा। घर वाले हैरत में थे कि हमारा मआश दिन ब दिन तनज्जुल की तरफ क्यूं जा रहा है ? लेकिन एक रोज उन पर येह राज आशकार हुवा कि तू शराबी है। और तूने अपनी दुन्यावी जिन्दगी को शराब की नज्र कर डाला है। अब तू आहो फुगां के सिवा कुछ नहीं। तूने जितने मजे लूटने थे लूट लिये। अब तेरा शबाब ढक चुका है। सियाह रीश आधी से जियादा सफेद हो गई है। अब लोग तुझे दानिशमन्द कहें कि बे वकूफ ? क्यूंकि तूने खूद ही अपने नशीमन को अपने हाथों से जला डाला है। तू रुस्वाए जमाना बन गया कि तू शराबी है।

हजरते इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि उन्हों ने हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फरमाते सुना कि जब आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जमीन पर उतारा गया तो फिरिश्तों ने कहा "ऐ रब ! तू जमीन पर उस शख्स को अपना खलीफा बना कर भेज रहा है जो फसाद करेगा और खून बहाएगा और हम तेरी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं, लिहाजा हम इस मन्सब के जियादा हकदार हैं।" रब्बे जलील ने फरमाया बेशक में जानता हूं जो तुम नहीं जानते। उन्हों ने अर्ज

की, ऐ अल्लाह ! हम तेरी बनी आदम से जियादा इताअत करते हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया : तुम में से दो फिरिश्ते आएं ताकि हम देखें कि वोह कैसा अमल करते हैं ? उन्हों ने अर्ज की कि हारूत व मारूत हाजिर हैं। रब तआला ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम जमीन पर जाओ, और अल्लाह तआला ने जोहरा सितारे को उन के सामने हसीनो जमील औरत के रूप में भेजा। वोह दोनों उस के हां आए और उस से रफाकत का सुवाल किया मगर उस ने इन्कार कर दिया और कहा ब-खुदा उस वक्त तक नहीं जब तक तुम दोनों येह कलिमए शिर्क न कहो। उन्हों ने कहा ब-खुदा हम कभी भी अल्लाह तआला के लिये शरीक नहीं ठहराएंगे।

चुनान्चे वोह औरत उन के पास से उठ कर चली गई और जब वापस आई तो वोह एक बच्चा उठाए हुई थी, उन्हों ने उस से फिर वोही सुवाल किया। मगर उस ने कहा ब-खुदा उस वक्त तक नहीं जब तक तुम दोनों इस बच्चे को कत्ल न करो, उन्हों ने कहा ब-खुदा हम कभी भी इसे कत्ल नहीं करेंगे। फिर वोह शराब का प्याला ले कर लौटी और उन दोनों ने उसे देख कर फिर वोही सुवाल दोहराया। औरत ने कहा ब-खुदा उस वक्त तक नहीं जब तक तुम येह शराब न पीलो।

चुनान्चे उन्हों ने शराब पी और नशे की हालत में उस से जिमाअ किया और बच्चे को कत्ल कर दिया। जब उन का नशा उतरा तो औरत ने कहा ब-खुदा तुम ने ऐसा कोई काम नहीं छोडा जिस के करने से तुम ने इन्कार कर दिया था। नशे की हालत में तुम सब काम कर गुजरे।

तब उन्हें दुन्यावी अजाब और आखिरत के अजाब में से किसी एक को इख्तियार करने का हुक्म दिया गया और उन्हों ने दुन्यावी अजाब को पसन्द कर लिया।

शराब हर तरह से नुक्सान देह है इस लिये उस से तौबा कर लेनी चाहिये। चुनान्चे शराबी को बादा व मिना से मुंह मोड लेना चाहिये, लिहाजा ऐ भूले हुए दोस्त ! अपने दागदार दामन को ले कर बारगाहे रब्बुल इज्जत में आ कर ताइब हो जा। अपने गुनाहों पर नदामत के आंसू बहा और अपने दिल को हुब्बे इलाही से मख्मूर कर ले, अपनी आंखों

में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाते अक्दस का नक्शा जमा कर आशिके रसूल बन जा, अपने ईमान को पहाड की तरह मजबूत कर ले। इश्के मुस्तफा को शम्सो कमर की तरह रोशन कर ले बुरे आ'माल को छोड दे क्यूंकि शराब से तौबा किये बिगैर तेरा छुटकारा नहीं। मगर शराब से सच्ची तौबा किसी अल्लाह वाले की कुरबत के बिगैर हासिल न होगी। किसी वलिये कामिल की निगाह का असीर हो। फिर देख अल्लाह के इन्आम याफ्ता हजरात की सोहबत में तू गुनाहों से कैसे बचता है।

हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जिस ने दुन्या में शराब पी, अल्लाह तआला उसे जहन्नमी सांपों का जहर पिलाएगा, जिसे पीने से पहले ही उस के चहरे का गोश्त गल कर बरतन में गिर जाएगा और जब वोह उसे पीएगा तो उस का गोश्त और खाल उढड जाएगी। जिस से जहन्नमी अजिय्यत पाएंगे। शराब पीने वाले, कशीद करने वाले, निचोडने वाले, उठाने वाले, जिस के लिये लाई गई हो। और उस की कीमत खाने वाले, सब के सब गुनाह में बराबर के शरीक हैं। अल्लाह तआला उन में से किसी का नमाज रोजा और हज्ज कुबूल नहीं करता। ता आंकि वोह तौबा न करें। पस अगर वोह तौबा किये बिगैर मर गया तो अल्लाह तआला पर हक है कि उन्हें शराब के हर घूंट के इवज जहन्नम की पीप पिलाए। याद रखे हर नशा आवर चीज हराम है और हर शराब हराम है ख्वाह वोह किसी किस्म की हो।

हिकायत

हजरते सर्री सक्ती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शराबी को देखा, जो मदहोश जमीन पर गिरा हुवा था और अपने शराब आलूदा मुंह से अल्लाह अल्लाह कह रहा था। हजरते सिर्री ने वहीं बैठ कर उस का मुंह पानी से धोया और फरमाया, इस बे खबर को क्या खबर कि नापाक मुंह से किस पाक जात का नाम ले रहा है। मुंह धो कर आप चले गए आप के बा'द शराबी को होश आया तो लोगों ने उसे बताया कि तुम्हारी बेहोशी के आलम में हजरते सिर्री यहां आए थे और तुम्हारा मुंह धो कर

गए हैं शराबी येह सुन कर बडा पशेमान और नादिम हुवा और रोने लगा और नफ्स को मुखातब कर के बोला, बेशर्म ! अब तो सिर्री भी तुझे इस हाल में देख गए हैं। खुदा से डर और आइन्दा के लिये तौबा कर। रात को हजरते सिर्री ने ख्वाब में किसी कहने वाले को येह कहते हुए सुना कि ऐ सिर्री ! तुम ने शराबी का हमारी खातिर मुंह धोया, हम ने तुम्हारी खातिर उस का दिल धो दिया। हजरते सिर्री तहज्जुद के वक्त मस्जिद में गए तो उसी शराबी को तहज्जुद पढते हुए पाया। आप ने उस से पूछा कि तुम में येह इन्किलाब कैसे आ गया ? तो वोह बोला आप मुझ से क्यूं पूछते हैं जब कि अल्लाह ने आप को बता दिया है।

हजरते अबू उमामा से मरवी है वोह कहते हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे दुन्या के लिये रहमत और बरकत का सबब बना कर भेजा है। और मुझे जाहिलियत की तमाम बुरी रुसूम और तौर तरीकों को मिटाने का हुक्म दिया है और मेरे अल्लाह ने कसम खाई है कि मेरे बन्दों से जो बन्दा शराब का एक घुट भी पीएगा तो उस को दोजखियों के जिस्म से निकली हुई पीप पिलाऊंगा और जो शख्स मेरे खौफ से शराब पीना छोड देगा तो मैं उस को पाक हौजों से शराबे तहूर पीलाऊंगा। (मुस्नद इमाम अहमद)

अल्लाह के खौफ से शराब और नशे को छोडने का बहुत बडा अज्र है इस लिये शराब पीने वालों को चाहिये कि वोह अल्लाह के हुजूर उस गुनाह और जुर्म से तौबा करलें। वरना इस दुन्या और आखिरत में उन का अन्जाम बहुत बुरा होगा जिस का अन्दाजा इन्सान नहीं लगा सक्ता।

हिकायत

हजरते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक रास्ते से गुजर रहे थे आप ने एक शराबी को देखा जो शराब के नशे में गिरा हुवा था और बेहोशी के आलम में अपनी जबान से बहुत बक्वास कर रहा था। हजरते इब्राहीम उस के पास ठहर गए और फरमाया येह जबान तो जिक्रे हक के लिये थी, इसे कौन सी आफत पहुंची कि येह ऐसे बक्वास कर

रही है फिर आप ने पानी मंगवाया और उस का मुंह और उस की जबान धोने लगे और धो कर आगे तशरीफ ले गए। शराबी होश में आया तो लोगों ने उसे येह सारा किस्सा सुनाया। शराबी येह सुन कर कि हजरते इब्राहीम अदहम मेरा मुंह और जबान धो गए हैं, रोया और कहने लगा इलाही ! तेरे मक्बूल बन्दे की शर्म खा कर मैं सच्चे दिल से तौबा करता हूं, तू भी अपने मक्बूल बन्दे के तुफैल मुझे बख्श दे।

रात को इब्राहीम ने ख्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है कि ऐ इब्राहीम ! तूने उस शराबी का हमारी खातिर मुंह धोया, हम ने तुम्हारी खातिर उस का दिल धोया।

﴾7﴿ सूद से तौबा

सूद गुनाहे कबीरा है इसी लिये इस्लाम में सूद लेना हराम है। सूद दूसरे मुसलमान भाइयों की मजबूरियों से नाजाइज फाएदा उठाना है और एक तरह का जुल्म है जिस वज्ह से अल्लाह तआला ने उसे ना पसन्द करते हुए हराम करार दिया। कुरआन में सूद के लिये रिबा का लफ्ज इस्ति'माल हुवा है जिस के मा'ना इजाफे के है और येह लफ्ज दौलत के उस इजाफे पर इस्ति'माल किया जाता है। जो एक कर्ज देने वाला कर्ज लेने वाले से एक तै शुदा शरह से वुसूल करता है।

तुलूए इस्लाम के वक्त अरब में सूद का आम रवाज था और सूद वुसूल करने के मुख्तलिफ तरीके थे। उन का एक तरीका येह था कि जब किसी शख्स को नकद माल उधार देते तो उस से एक मुद्दत के लिये शरह तै कर लेते, अगर वोह मुद्दत गुजर जाती और अस्ल जर और सूद वुसूल न होता, तो फिर मजीद मोहलत दी जाती और सूद में इजाफा कर दिया जाता। सूद का दूसरा तरीका लेन देन था। एक शख्स किसी दूसरे के हाथ कोई चीज फरोख्त करता और अदाए कीमत के लिये एक मुद्दत मुकर्रर कर देता। अगर वोह मुद्दत गुजर जाती और कीमत अदा न होती तो फिर वोह मजीद मोहलत देने पर कीमत में इजाफा कर देता और येह एक तरह का सूद था। सूद की इन तमाम सूरतों से फित्ना फसाद पैदा होता इस लिये अल्लाह तआला ने उसे मन्अ फरमा दिया।

कुरआने पाक की मुन्दरजा जैल आयात सूद की हुरमत पर दलालत करती हैं।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ

अल्लाह सूद को घटाता है और सदकात को बढाता है। और अल्लाह को कोई ना शुक्रा बडा गुनहगार पसन्द नहीं।

(पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 276)

अल्लाह तआला ने इस आयत में लोगों को तरगीब दी है कि अल्लाह की राह में देने से दौलत घटती नहीं बल्कि बढती है और सूद में ब जाहिर दौलत बढती नजर आती है लेकिन इजाफा नहीं होता बल्कि दौलत घटती है। सदकात के जरीए दौलत मुआशरे के अफराद में गर्दिश करती है जिस से लोगों को वसाइले दौलत बढाने का मौकअ मिलता है लेकिन सूद में दौलत समेट कर चन्द हाथों में आ जाती है। जिस से उस की बढोतरी रुक जाती है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

ऐ ईमान वालो ! सूद दर सूद न खाओ। और अल्लाह से डरो ताकि तुम्हें फलाह हासिल हो।

(पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 130)

सूद ख्वार दिन रात सूद को बढाने के लालच में मगन रहता है जिस से आदमी में दौलत का तम्अ बे हद बढ जाता है और फिर वोह लोगों से सूद की रकम पर मजीद सूद हासिल करने के दरपे होता है। येह सूद की बहुत बुरी सूरत है। अल्लाह तआला ने इस से भी मन्अ फरमाया है।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ

जो लोग सूद खाते हैं, कियामत के दिन उन का हाल उस शख्स की तरह होगा जिसे शैतान ने छू कर मख्बूत बना दिया हो। येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ भी तो सूद ही के मानिन्द है और अल्लाह ने हलाल किया बैअ को और हराम किया सूद को। (पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 275)

येह हाल उन का इस वज्ह से होगा कि वोह कहते हैं कि तिजारत भी तो सूद ही की तरह है। हालां कि अल्लाह ने तिजारत को हलाल मगर सूद को हराम करार दिया है।

यहां सूद पर वईद बयान की गई है कि कियामत के रोज सूद खोर का हाल एक मख्बूतुल हवास शख्स की मानिन्द होगा। लिहाजा उस दौलत का क्या फाएदा जो इन्सान पर दीवानगी तारी करने का सबब बने।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا
بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ
اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो, और जो सूद बाकी रह गया है उसे छोड दो अगर तुम मोमिन हो। अगर ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उस के रसूल से लडने के लिये तय्यार हो जाओ और अगर तौबा कर लो तो तुम्हारा अस्ल माल तुम्हारा है। न तुम जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए।

(पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 278-279)

जिस वक्त सूद को हराम करार दिया गया तो अल्लाह तआला ने मोमिनीन को ताकीद की कि अगर किसी से सूद लेना हो तो उसे छोड दे और अगर ऐसा नहीं करते तो फिर तुम्हारा येह फे'ल अल्लाह और उस के रसूल के खिलाफ होगा।

सूद की बुराइयों को अगर गहरी नजर से देखा जाए तो सूद इन्सानियत की उस जुल्म सोज वादी में ले जाता है जहां इन्सान इन्सान का दुश्मन बन जाता है, जहां इन्सान जालिम दरिन्दा बन कर अपने ही इन्सान भाई का खून चुस्ता है। जहां दिलों में बुग्जो कीना जनम लेता है। जहां गैजो गजब की आग भडकती है, जहां फख्रो गुरूर सर उठाता है। जहां सूद खोर अपने जज्बए रहम को खुद ही कत्ल कर देता है जहां अद्लो इन्साफ कुछ हैसियत नहीं रखता, जहां इसारो एहसान की अख्लाकी पाबन्दियां तोडदी जाती हैं। तो जब सूद इतनी ला-इलाज अख्लाकी बीमारियां पैदा कर के बन्दे को खुदा से दूर कर देता है तो उस दौलत का

क्या फाएदा जो बन्दे और खुदा में दूरी का बाइस बने जो इन्सान को इन्सान का दुश्मन बना दे जो इन्सान की आकिबत को तबाहो बरबाद कर डाले। तो फिर सूद लेने वाले के लिये बेहतर येही है कि सूद से तौबा कर ली जाए और अपने किये पर खुदा के हुजूर मुआफी मांगी जाए और नदामत के आंसू बहाए जाए और बकिय्या जिन्दगी इत्तिबाए किताबो सुन्नत में गुजारी जाए।

आखिरत में सूद खोर अल्लाह तआला के गजब में रहेगा और अल्लाह तआला उस के कल्ब को आतिश से भर देगा। और जिस के शिकम में सूद के माल का खाना है उस ने नमाज पढी तो हरगिज कुबूल न होगी और जिस ने सूद का माल खुदा की राह में सदका दिया वोह हरगिज कुबूल नहीं और सूद खोर को अल्लाह नजरे रहमत से न देखेगा और उस से कलाम न करेगा और उस को दर्दनाक अजाब देगा। और जहन्नम में एक ऐसी वादी है। उस की बू से हर रोज सात मरतबा जहन्नम फरयाद करती है अगर उस में पहाड को डाला जाए तो उस की हरारत से जल कर राख हो जाए। ऐसी वादी में सूद खाने वालों, नमाज में सुस्ती करने वालों और नाप तोल में कमी करने वालों को हमेशा हमेशा के लिये रखा जाएगा।

हजरते इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उन्हों ने फरमाया सूद लेने वाला, सूद देने वाला, उस पर गवाह बनने वाले, उस की तहरीर करने वाले पर जब कि उसे मा'लूम हो कि येह तहरीर सूद के लिये हो रही है, जिस्म पर फूल गुदने वाले, फूल गुदवाने वाले पर, जो अपनी खूब सूरती के लिये ऐसा करता है, सदके से इन्कार करने वाला और बदवी जो हिजरत के बा'द फिर मुर्तद हुवा, सब मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जबान मुबारक से मल्ऊन करार पाए हैं। (अहमद)

हाकिम ने ब-सनदे सहीह रिवायत की है, हुजूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फरमाया कि चार शख्स ऐसे हैं जिन के लिये अल्लाह तआला ने लाजिम करार दिया है कि उन्हें जन्नत में दाखिल नहीं करेगा और न ही

वोह उस की ने'मतों से लुत्फ अन्दोज होंगे। शराबी, सूद खोर, नाहक यतीम का माल खाने वाला और वालिदैन का नाफरमान।

तबरानी ने कबीर में हजरते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया वोह दिरहम जो इन्सान सूद में लेता है, अल्लाह के नज्दीक हालते इस्लाम में 33 बार जिना करने से भी बदतर है।

अबू या'ला ने सनदे जय्यद के साथ हजरते इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है उन्हों ने हुजूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हदीस बयान करते हुए फरमाया कि किसी कौम का जिना और सूद खोरी जाहिर नहीं होते मगर वोह लोग अजाबे इलाही को अपने लिये हलाल कर लेते हैं (या'नी जो कौम जिना और सूद खोरी में मुब्तला है उस ने गोया अजाबे इलाही को दा'वत दी है)

अहमद ने येह हदीस नक्ल की है, ऐसी कोई कौम नहीं जिस से सूद चल निकले मगर वोह कहत साली में मुब्तला की जाती है। और जिस कौम में जिना की कसरत हो जाती है अल्लाह तआला उसे खौफ और कहते आम में मुब्तला कर देता है चाहे बारिश ही क्यूं न हो जाए।

अहमद ने एक तवील हदीस में, इब्ने माजा ने मुख्तसरन और अस्बहानी ने इस हदीस को बयान किया है कि हुजूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जब मुझे मे'राज में सैर कराई गई और हम सातवें आस्मान पर पहुंचे तो मैं ने ऊपर देखा तो मुझे बिज्ली की कडक और गरज, चमक नजर आई। फिर मैं ने ऐसी कौम को देखा जिन के पेट मकानों की तरह थे। और बाहर से उन के पेटों में चलते फिरते सांप नजर आ रहे थे। मैं ने पूछा, जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ! येह कौन है ? उन्हों ने जवाब दिया कि येह सूद खोर हैं।

तबरानी ने कासिम बिन अब्दुल्लाह अल वर्राक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि मैं ने हजरते अब्दुल्लाह बिन अबी औफा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सियारफा (जहां सूद वगैरा का कारोबार होता है) बाजार में देखा। वोह अहले बाजार से कह रहे थे ऐ अहले सियारफा ! तुम्हें खुश खबरी

हो । उन्हों ने कहा अल्लाह आप को जन्नत की खुश खबरी दे, 'ऐ अबू मुहम्मद ! आप हमें किस चीज की खुश खबरी दे रहे हैं ? आप ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सियारफा के लिये फरमाते सुना है कि उन्हें आग की बिशारत दे दो ।

तबरानी ने हदीस बयान की कि अपने आप को उन गुनाहों से बचा जिन की मगफिरत नहीं होती । खियानत ऐसा ही एक गुनाह है जो जिस चीज में खियानत करता है कियामत के दिन उसी के साथ लाया जाएगा । सूद खोरी, जो सूद खाता है । वोह कियामत के दिन पागल आसेब जदा उठाया जाएगा । फिर आप ने येह आयत पढी "जो सूद खाते हैं वोह उस शख्स की तरह खडे होंगे जिसे शैतान आसेब से बावला कर देता है ।"

अस्बहानी की हदीस है कि कियामत के दिन सूद खोर पागल की तरह अपने दोनों पहलू खींचता हुवा आएगा फिर आप ने येह आयत पढी "वोह उस शख्स की तरह खडे होंगे जिसे शैतान आसेब से पागल कर देता है ।"

इब्ने माजा और हाकिम की हदीस है । हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जो भी सूद से अपना माल बढा लेता है, आखिर कार वोह तंगदस्ती का शिकार बनता है ।

हिकायत

हजरते ख्वाजा हबीब अजमी बडे जलीलुल कद्र औलिया से हुए है तरीकत में आप हजरते ख्वाजा हसन बसरी के खलीफा थे । इब्तिदा में बहुत दौलत मन्द थे लेकिन सूद खोर थे हर रोज तकाजा करने जाते । जब तक वुसूल न कर लेते उसे न छोडते, एक रोज आप किसी मकरूज के घर गए लेकिन वोह घर पर मौजूद न था । उस की बीवी ने कहा कि उस के पास कर्जा अदा करने के लिये रकम मौजूद नहीं है । अलबत्ता एक बकरी जब्ह की थी । उस की गरदन मौजूद है । जो हम ने घर पर पकाइ है लेकिन आप उस औरत से बकरी का गोश्त जबरदस्ती ले आए और घर पहुंच कर बीवी से कहा कि येह सूद में मिला है इसे पका लो । बीवी ने कहा आटा और

लकडी भी खत्म है उस का भी बन्दो बस्त कर दो। आप दूसरे कर्जदारों के पास गए और येह चीजें भी सूद में ले आए। जब खाना तय्यार हो गया तो किसी सुवाली ने आवाज दी कि भूका हूं कुछ खाने को दो आप ने अन्दर ही से उसे झिडक दिया। साइल चला गया।

जब आप की बीवी ने हांडी से सालन निकालना चाहा तो देखा कि वोह खून ही खून है बीवी ने हैरान हो कर शौहर की तरफ देखा और कहा कि अपनी शरारतों और कन्जूसी का नतीजा देख लो। ख्वाजा हबीब अजमी ने येह माजरा देखा तो हैरत जदा रह गए। इस वाकिए ने आप की जिन्दगी में इन्किलाब बरपा कर दिया। उसी वक्त अपनी साबिका बे राह रवी से तौबा की। एक रोज बाहर निकले रास्ते में बच्चे खेल रहे थे उन्हों ने ख्वाजा साहिब को देख कर चिल्लाना शुरूअ कर दिया "हट जाओ हबीब सूद खोर आ रहा है। हम पर उस की गर्द भी पड गई तो हम भी ऐसे ही हो जाएंगे"। येह सुना तो तडप उठे, नदामत से सर झुका लिया। और कहने लगे ऐ रब ! बच्चो तक तूने मेरा हाल जाहिर फरमा दिया। ख्वाजा हसन बसरी की खिदमत में हाजिर हो कर तौबा की। सब कर्जदारों का कर्जा मुआफ कर दिया। अपना सारा मालो अस्बाब राहे खुदा में दे डाला। इबादतो जिक्रे इलाही में मस्रूफ हो गए और साइमुद्दहर और काइमुल्लैल रहने लगे। कुछ अर्से बा'द एक दिन फिर उन्हीं लडकों के पास से गुजर हुवा तो उन्हों ने आपस में कहा, खामोश रहो हबीबुल आबिद जाते हैं। येह सुन कर आप रोने लगे और कहा ऐ अल्लाह ! येह सब तेरी तरफ से है।

जब इस तरह इबादत करते एक रात गुजर गई तो एक दिन बीवी ने शिकायत की कि जरूरियात कैसे पूरी की जाएं। आप ने फरमाया कि अच्छे काम पर जाता हूं। मजदूरी से जो मिलेगा ले आऊंगा। चुनान्चे आप दिन भर घर से बाहर रह कर इबादत करते और शाम को घर वापस आ जाते। बीवी उन्हें खाली हाथ देखती तो कहती कि येह क्या मुआमला है ? आप फरमाते कि मैं काम कर रहा हूं। जिस का काम कर रहा हूं वोह बडा सखी है, कहता है वक्त आने पर खुद ही

उजरत दे दिया करूंगा। फिक्र न करो। लिहाजा मुझे उस से मांगते हुए शर्म आती है। वोह कहता है हर दसवें रोज में मजदूरी दिया करूंगा। चुनान्चे बीवी ने दस दिन तक सब्र किया।

जब आप दसवें रोज भी शाम को खाली हाथ घर वापस जाने लगे तो रास्ते में खयाल आया कि अब बीवी को क्या जवाब दूंगा ? उसी खयाल में घर पहुंचे, तो अजीब माजरा देखा, उम्दा उम्दा खाने तय्यार रखे हैं। बीवी आप को देखते ही बोल उठी कि येह किस नेक बख्त का काम कर रहे हो जिस ने रात की उजरत इस किस्म की भेजी और तीन हजार दिरहम नकद भी भेजे हैं और येह भी कहला भेजा है कि काम जियादा मेहनत से करोगे तो उजरत जियादा दूंगा। येह देख कर आप की आंखें अशक्बार हो गईं। खयाल गुजरा कि खुदाए पाक ने एक गुनहगार बन्दे की दस रोज की इबादत का येह सिला दिया। अगर जियादा हुजूरे कल्ब से इबादत करूं तो न जाने क्या कुछ दे। येह खयाल आते ही इलाइके दुन्या से बिल्कुल अलग हो गए और ऐसी इबादतें और रियाजतें कीं कि अस्रारे इलाही बे निकाब हो गए। इनायाते इलाही का नुजूल शुरूअ हो गया और आप को मुस्तजाबुद्दा'वात का दरजा मिल गया।

﴾8﴿ रिश्वत से तौबा

इस्लाम में रिश्वत लेना और देना कत्अन नाजाइज और हराम है क्यूं कि इस्लाम ने मालो दौलत के लेने और देने पर कुछ अख्लाकी, शरई और कानूनी पाबन्दियां आइद की हैं और ऐसे जराएअ से दौलत हासिल करने को हराम करार दिया है जिस से इन्सानियत पर जुल्म का रस्ता खुलता हो, लिहाजा इस्लाम में रिश्वत शरअन हराम और कानूनन जुर्म है।

وَلَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

और तुम आपस में एक दूसरे के माल बातिल तरीके से न खाओ और न उसे हुक्काम तक पहुंचाओ कि जिस से तुम लोगों के माल का एक हिस्सा गुनाह से खा जाओ और येह कि तुम जानते हो।

(पारह 2, सूरए बकरह, आयत : 188)

कुरआने पाक की येह आयत रिश्वत के हराम होने पर सरहन दलालत करती है, मुफस्सिरीन और अइम्मए किराम इस बात पर मुत्तफिक हैं कि इस आयत से वाजेह तौर पर रिश्वत की हुरमत का हुक्म साबित होता है । इस आयत के दो हिस्से हैं पहले में इर्शादे बारी तआला के मुताबिक दूसरे का माल बातिल तरीके से न खाने में बहुत वसीअ मफ्हूम पाया जाता है कि किसी सहीह हक्कदार का माल कोई दूसरा शख्स उसे नाजाइज जराएअ से हासिल कर के तसर्रुफ में न लाए जिस से हक्कदार की हक तलफी हो । जैसे चोरी, बे ईमानी, मिलावट । स्मगलिंग लूट घसूट, जखीरा अन्दोजी और रिश्वत वगैरा येह नाजाइज जराएअ मआशे बातिल के मफ्हूम में आते हैं ।

लेकिन आयत के दूसरे हिस्से में हुरमते रिश्वत का मफ्हूम बिल्कुल अयां है जिस में नाजाइज माल खाने का एक और जरीआ बयान किया गया है कि माल को हुक्काम तक न पहुंचाओ जिस से लोगों के माल का एक हिस्सा तुम गुनाह से खा जाओ और तुम को मा'लूम भी हो, उस का मतलब येह है कि जब माल हाकिमों और जजों तक उस गरज से पहुंचाया जाए कि उस माल के बदले में उन से नाजाइज मफाद हासिल किया जाए और हुक्काम वोह माल ले कर अपने फराइजे मन्सबी का नाजाइज इस्ति'माल करते हुए इन्साफ के तकाजे पूरे न करें । तो इस तरह हुक्काम का माल को खा जाना बातिल तरीके में शामिल है जो कि गुनाह है । और ऐसे गुनाह को रिश्वत कहा जाता है । क्यूंकि वोह काम जो हाकिम ने पैसे ले कर लिया है उस का औजाना तो वोह पहले ही तनख्वाह की सूरत में हुकूमत से वुसूल कर रहा है तो फिर उसे किसी फरीक से नाजाइज वुसूल करने और डाली लेने का कोई हक हासिल नहीं है ।

आयत के इस हिस्से में रिश्वत देने के लिये तुद्लू का लफ्ज इस्ति'माल किया गया है जो इद्लाउ से मुश्तक है । जिस के मा'ना डोल डालने और खींचने के हैं उसी ए'तिबार से बतौरे इस्तिआरा किसी चीज तक पहुंचने और किसी शै के डालने के इस्ति'माल होता है इमाम राजी ने इस लफ्ज की तशरीह करते हुए दो वुजूहात बयान की हैं । पहली वज्ह

रिश्वत जरूरत की रस्सी है पस जिस तरह पानी का भरा हुवा डोल रस्सी के जरीए दूर से खींच लिया जाता है। इसी तरह मक्सद बु'द का हुसूल भी रिश्वत के जरीए करीब हो जाता है। दूसरी वज्ह येह है कि जिस तरह हाकिम को रिश्वत दे कर बिगैर किसी ताखीर के फौरन मवाफिक फैसला करा लिया जाता है उसी तरह डोल भी जब पानी निकालने के लिये कूंएं में डाला जाता है तो निहायत तेजी के साथ बिगैर किसी ताखीर के चला जाता है।

अल मुख्तसर येह कि इस आयत से वाजेह तौर पर रिश्वत से मन्अ किया गया और जो लोग इस हुक्म की खिलाफ वरजी करें गोया उन्हों ने अल्लाह के अहकाम की परवा नहीं की तो ऐसे लोगों को दुन्या और आखिरत में रिश्वत लेने और देने का खम्याजा भुगतना पडेगा।

इस्लाम से कब्ल अरब के कबाइल में ऊंच नीच की बेहद तफरीक थी उन के उमरा और रूअसा अपने आप को दूसरे लोगों से बुलन्द और आ'ला तसव्वुर करते थे और अपनी दौलत मन्दी की बिना पर कानून को अपने हाथों में समझते थे। क्यूंकि वोह कानून की उस ना हमवारी के काइल थे। चुनान्चे जब कोई मुकद्दमा पेश आता और काहिनों के पास फैसला के लिये जाता तो दौलत मन्द अपने उन काहिनों और काजियों को कुछ नजराना या'नी रिश्वत पोशीदा तौर पर दे देते ताकि हालात उन की ख्वाहिश के मुताबिक हो जाएं। उस को हलवान कहा जाता था। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को कत्अन हराम करार दिया और लोगों को ऐसा करने से मन्अ किया।

इस्लाम से पहले अरब के यहूदियों में भी रिश्वत का रिवाज था। कानून की जद से बचने के लिये ए'लानिया रिश्वत दे देते थे। इस तरह रिश्वत लेने से काजी लोग इन्साफ के तकाजों को पूरा न करते। और तौरात के अहकामात पर पर्दा डाल देते थे। चुनान्चे तौरात के कवानीन में तहरीफ का बडा सबब येही रिश्वत खोरी थी।

फिर यहूद का येह तरीका भी था कि वोह दुन्या की मा'मूली दौलत के लालच में आ कर अल्लाह के अहकामात में रद्दो बदल कर देते

और उस का मुआवजा वुसूल करते। इब्ने जरीर ने कहा है कि यहूदी रईस जादे अपने उलमा को इस लिये रिश्वतें देते थे कि जो अहकामात तौरात में हैं वोह आम लोगों को न बताएं लेकिन कुरआने पाक ने उन की जाहिरदारी का पोल खोल दिया और ऐसी रिश्वत से मन्अ कर दिया। कुरआन में येही बात अल्लाह तआला ने यूं बयान फरमाई है।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ
وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ

और ईमान लाओ साथ उस के जो तुम पर नाजिल किया, जो तस्दीक करती है उस की जो तुम्हारे साथ है और उस का पहले इन्कार करने वाले न बनो और मेरी आयतों को थोडी कीमत के बदले में न बेचो और मुझ से डरते रहो।

(पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 41)

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ
مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا
يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

बेशक जो लोग किताब का नाजिल किया हुवा छुपाते हैं और थोडी कीमत वुसूल करते हैं। वोहीं लोग हैं जो अपने पेटों में आग खाते हैं। और कियामत के रोज अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दुख का अजाब है।

(पारह 2, सूरए बकरह, आयत : 174)

यहां येह बात वाजेह कर दी गई कि जो लोग अल्लाह के कानून के मुताबिक फैसला नहीं करेंगे बल्कि लोगों के नाजाइज मफाद की खातिर अल्लाह के कलाम को पसे पुश्त डालेंगे, आखिरत में उन का ठिकाना जहन्नम है।

कलामुल्लाह के बा'द अहादीस का दरजा है। अहादीस की रू से भी बातिल जराएअ से कस्बे मुआश की मुमानअत की गई है और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लामी जराएअ में रिश्वत लेने और देने को बहुत बुरा फे'ल करार दिया है बल्कि रिश्वत को ला'नतुल्लाह

कहा है ताकि कोई मुसलमान न रिश्वत दे और न ले। उन के इलावा रिश्वत लेने देने वाले के दरमियान वास्ते बनने वाले, सब उन्हीं जुमरों में आते हैं। हजरते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुजूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया। لَعْنَۃُ اللّٰہِ عَلَی الرَّاشِیْ وَالْمُرْتَشِیْ۔ रिश्वत देने और लेने वाले पर अल्लाह तआला की ला'नत बरस्ती है। (इब्ने माजा)

रिश्वत का लेन देन आम तौर पर जेरे नकद में होता है। बा'ज खुश फहम नकद नहीं लेते। खाने पीने या इस्ति'माल की चीजें ले लेते हैं। उन्हें भी ला'नतियों के जुमरे में शुमार किया गया है। हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ जो अशरए मुबश्शरा में से हैं, से रिवायत है की रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया। لَعَنَ اللّٰہُ الْاٰکِلَ وَالْمُطْعِمَ الرِّشْوَۃَ۔ अल्लाह तआला ने रिश्वत खाने और खिलाने वाले पर ला'नत फरमाई है। (कन्जुल उम्माल)

यहां येह बात जेह्न में रखनी चाहिये कि रिश्वत लेने और देने वाले पर तो अल्लाह की ला'नत है लेकिन उस शख्स पर भी अल्लाह की ला'नत है जो उन दोनों के दरमियान आलए्कार बने। गो दलाल ने कुछ भी फाएदा न उठाया हो। लेकिन वोह रिश्वत के मुआमले में मुआवनत करता है लिहाजा वोह भी उतना ही मुजरिम है जितने कि लेने और देने वाले हैं और उस का भी वोही हाल होगा जो राशी और मुरतशी का होगा। इस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हदीस येह है।

لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ الرَّاشِیَ وَالْمُرْتَشِیَ وَالَّذِیْ یَعْمَلُ بَیْنَہُمَا۔

नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फरमाई है रिश्वत देने वाले पर, रिश्वत लेने वाले पर और उस पर जो इन दोनों के दरमियान वासिता बन कर काम करे। (शर्हे इहयाउल उलूम)

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन इर्शादात से मा'लूम हुवा कि रिश्वत मूजिबे ला'नत है। ला'नत से मुराद अल्लाह की रहमतों बख्शिशों और करम नवाजियों से दूरी है। इस की मिसाल यूं है कि

अगर कोई बादशाह किसी को अपना मुसाहिब बनाए, खिल्अते शाही से नवाजे तो उस की कितनी खुश नसीबी है लेकिन साथ ही ताकीद कर दे कि फुलां काम न करना और फिर वाजेह भी करे कि उस काम में अगर तुम ने मेरे हुक्म की नाफरमानी की तो मैं तुम्हें अपने दरबार से निकाल दूंगा। अपनी कुरबत से हमेशा के लिये महरूम कर दूंगा उस के बा'द अगर वोह शख्स चोरी छुपे या जाहिरन वोह काम करे और बादशाह को पता चल जाए कि उस ने मेरे हुक्म की नाफरमानी की है तो ला मुहाला उस शख्स पर बादशाह का इताब होगा। और उसे हमेशा के लिये दरबार से निकाल देगा, अपनी मुसाहिबत से महरूम कर देगा। दरबार से येह रांदा जाना, कुरबत से दूरी, ए'जाजात से महरूमी, ला'नत कह लाएगी। ऐसे ही राशी और मुरतशी चूंकि अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी करता है। चुनान्चे अल्लाह उसे अपनी रहमत से निकाल कर दूर फेंक देता है। रहमत से दूरी, दुन्या की जिल्लत और आखिरत का अजाब है। इर्शादे बारी तआला है कि أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ ऐसे लोगों की सजा येह है कि उन पर अल्लाह की ला'नत है। (पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 87)

अल्लाह की येह ला'नत कभी मालो जर की सूरत में आजमाइश बनती है, कभी मुब्तलाए फित्ना करती है।

इर्शादे बारी तआला है कि जो लोग जहालत से बुरा काम कर बैठें और उस के बा'द तौबा कर लें तो उन को अल्लाह तआला मुआफ कर देता है। येह मुआफी सिर्फ हुकूक में मिलती है, हुकूकुल इबाद में नहीं। यूं तो तौबा गुनाहों को ऐसे खा जाती है जैसे रिया नेकियों को। मगर हुकूकुल इबाद के सिल्सिले में जबानी तौबा मुअस्सिर नहीं होती। इस के लिये अमली तौबा की जरूरत होती है कि जिन जिन से नाजाइज तरीके से माल हासिल किया गया हो, या जिन जिन का माल नाजाइज जराएअ से खाया गया हो। उन को उन का माल या उस की कीमत अदा की जाए या उन से उन का हक मुआफ कराया जाए। रिश्वत की तौबा येह है कि जिन से रिश्वत हासिल की गई है उन को वापस की जाए अगर उन का पता न हो या बहुत कोशिश के बा वुजूद उन का पता न चल सके

कि वोह कहां रहते हैं तो जितना जितना रूपया या माल जिस जिस से लिया था। उसी कदर रूपया या माल, अस्ल मालिकान की तरफ से खैरात कर दिया जाए ताकि आखिरत के मुआखजा से बच जाए, यहां तक कि अगर कोई मर जाए और उस की कमाई बैए बातिल या जुल्म या रिश्वत वगैरा की हो तो वारिसों को उस से बचना चाहिये। उस में से कुछ न लेना चाहिये, उन के लिये येही बेहतर है और उन मालो को उन के मालिकों को वापस कर दें। अगर उन को मा'लूम कर सकें, वरना खैरात कर दें। क्यूंकि जब वापस करना दुश्वार हो तो फिर हराम कमाई को खैरात कर देना ही उस का तरीका है उस बहाने से कि अब कुछ याद नहीं कि किस किस से कितना कितना लिया था, छुटकारा नहीं होगा इस लिये एहतियात इसी में है कि जिस कदर याद आए उस से कुछ जियादा खैरात कर दिया जाए ताकि गुनाह व अजाब का शुबा ही न रहे। मगर उस का खुद इस्ति'माल करना हलाल न होगा। ऐसा करने से हो सकता है कि अल्लाह वोह खैरात कफ्फारे के तौर पर कुबूल कर ले, लेकिन आइन्दा रिश्वत लेने से हमेशा के लिये तौबा कर ले और साबिका किये पर इस्तिगफार करे।

हिकायत

बनी इसराईल के जमाने में नामी गिरामी काजी थे जिन की खुदा ने जांच करना चाही। और दो आदमियों को भेजा, जिन में एक तो घोडी पर सुवार था, जिस की बछडी उस के साथ थी। दूसरा गाय पर सुवार था। गाय वाले ने घोडी की बछडी को बुलाया और वोह उस के साथ लग गई। उस पर घोडी सुवार बोला कि बछडी घोडी की है। दूसरा बोला नहीं। येह मेरी गाय की है। उस पर दोनो में झगडते हुए एक काजी के पास पहुंचे और दोनों ने अपने दा'वे के सुबूत में दलीलें पेश कीं। मगर गाय वाले ने पहले से काजी की मुठ्ठी गरम कर दी थी और रिश्वत के तौर पर उस की जेब में एक काफी रकम डाल दी थी। जिस का असर येह हुवा कि काजी साहिब ने फैसले में येह लिखा, कि बछडी गाय की है। फिर येह दोनों अदालत से निकल कर दूसरे काजी के

मोहकमे में गए। और उन्हें भी रिश्वत दे कर गाय वाले ने अपने ही हक में फैसला लिखवा लिया। फिर उन दोनों ने तीसरे काजी की अदालत में अपना मुकद्दमा पेश किया, जिस के जवाब में काजी साहिब बोले कि मुझे हैज आ रहा है, हैज से फरागत के बा'द तुम्हारा मुकद्दमा सुनूंगा। उस पर दोनों हैरत से बोले, भला मर्दों को भी कहीं हैज आता है ? उस पर नेक निहाद काजी ने बरजस्ता कहा, भला गाय भी बछडी जन सकती हैं ? जाओ ! रिश्वत दे कर गलत फैसला करवाने से तौबा करो।

﴾9﴿ झूट से तौबा

अजीज लोगो ! झूट से तौबा कर जाओ क्यूंकि येह अल्लाह को नापसन्द है, झूट का मतलब गलत बयानी और दरोग गोई है। या'नी अस्ल बात इस तरह नहीं होती जिस तरह बयान करने वाला करता है। इस तरह वोह दूसरों को धोका देता है, जो खुदा और लोगों के नज्दीक बहुत बुरा फे'ल है, झूट ख्वाह जबान से बोला जाए या अमल से जाहिर किया जाए वोह हर तरह बुराइयों की जड है और गुनाहे कबीरा है जो सिर्फ तौबा से मुआफ होता है इस लिये अव्वलीन फुरसत में झूट से तौबा लाजिम है।

इन्सान के दिल की बात खुदा के सिवा कोई दूसरा नहीं जानता, दूसरे तो सिर्फ वोही बात जानेंगे जो वोह जबान पर लाएगा। अब अगर कोई दिल की सहीह बात न कहे बल्कि जाहिर में कोई बनावटी तरीका इख्तियार करे तो वोह झूट कहलाएगा। कुरआने मजीद में झूट की बडी मजम्मत की गई है। जिन आयात में झूट बोलने से रोका गया है वोह हस्बे जैल हैं।

(1) فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ — तो बुतों की पलीदी से बचो और झूटी बात से इजतिनाब करो।

(पारह 17, सूरए अल हज, आयत : 30)

(2) اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ — बेशक अल्लाह उस शख्स को जो झूटा नाशुक्रा है हिदायत नहीं देता।

(पारह 23, सूरए अज्जुमर, आयत : 3)

(3) إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ

बेशक अल्लाह उस शख्स को हिदायत नहीं देता, जो बे लिहाज झूटा है।

(पारह 24, सूरए अल मुमिन, आयत : 28)

(4) أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَّشَإِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۗ إِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ

क्या येह लोग कहते हैं कि पैगम्बर ने खुदा पर झूट बान्ध लिया है। अगर खुदा चाहे तो ऐ मुहम्मद तुम्हारे दिल पर **अपनी रहमत व हिफाजत की** मुहर लगा दे, और खुदा झूट को नाबूद करता और अपनी बातों से हक को साबित करता है, बेशक वोह सीने तक की बातों से वाकिफ है।

(पारह 25, सूरए शूरा, आयत : 24)

(5) وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ إِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۗ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ

और यूंही झूट जो तुम्हारी जबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि येह हलाल है और येह हराम है, कि खुदा पर झूट बोहतान बान्धने लगो। जो लोग खुदा पर झूट बोहतान बान्धते हैं, उन का भला नहीं होगा (झूट का) फाएदा तो थोडा सा है मगर (उसी के बदले) उन को अजाबे अलीम (बहुत) होगा।

(पारह 14, सूरए अन्न नहल, आयत : 116-117)

(6) وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ

और उस शख्स से जियादा कौन जालिम है जिस ने खुदा पर झूट इफ्तिरा किया ? या उस की आयतों को झुटलाया। कुछ शक नहीं कि जालिम लोग नजात नहीं पाएंगे।

(पारह 7, सूरए अल अन्आम, आयत : 21)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى (7)
اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ
وَلَمْ یُوْحَ اِلَیْهِ شَیْءٌ وَّمَنْ
قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ
اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ
فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَاسِطُوْۤا اَیْدِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا
اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْیَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ
تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَیْرَ الْحَقِّ
وَكُنْتُمْ عَنْ اٰیٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

और उस से बढ कर जालिम कौन होगा जो खुदा पर झूट इफ्तिरा करे या येह कहे कि मुझ पर वही आई है हालां कि उस पर कुछ भी वही न आई हो। और जो येह कहे कि जिस तरह की किताब खुदा ने नाजिल की है उस तरह की मैं भी बना लेता हूं और काश तुम उन जालिम (या'नी मुश्रिक) लोगों को उस वक्त देखो जब मौत की सख्तियों में मुब्तला हो और फिरिश्ते उन की तरफ अजाब के लिये हाथ बढा रहे हों कि निकालो अपनी जानें आज तुम को जिल्लत के अजाब की सजा दी जाएगी इस लिये कि तुम खुदा पर झूट बोला करते थे और उस की आयतों से सरकशी करते थे।

(पारह 7, सूरए अल अन्आम, आयत : 93)

अहादीस में भी झूट से मन्अ किया गया है बल्कि बा'ज अहादीस में तो झूट पर आखिरत में सख्त सजा बयान की गई है।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया है कि

عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَاِنَّ الصِّدْقَ
يَهْدِىْ اِلَى الْبِرِّ وَالْبِرُّ يَهْدِىْ اِلَى
الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ
وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ
اللّٰهِ صِدِّيْقًا وَّاِيَّاكُمْ وَالْكَذِبَ
فَاِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِىْ اِلَى الْفُجُوْرِ

तुम सच बोलने को अपने ऊपर लाजिम कर लो, क्यूं कि सच्चाई नेकी की राह दिखाती है और नेकी जन्नत में पहुंचा देती है जो आदमी हमेशा सच बोलता है और सच ही का कस्द करता है वोह अल्लाह के नज्दीक बडा सच्चा लिखा जाता है और तुम झूट बोलने से हमेशा

وَالْفُجُوْرُ يَهْدِيْ إِلَى النَّارِ وَمَا يَزَالُ الْعَبْدُ يَكْذِبُ وَيَتَحَرَّى الْكِذْبَ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللّٰهِ كَذَّابًا۔

बचते रहो क्यूं कि झूट गुनाह की तरफ ले जाता है और गुनाह दोजख के रास्ते पर चलाता है या'नी दोजख में दाखिल करा देता है और जो आदमी हमेशा झूट बोलता है और झूट ही उस का मक्सद होता है तो वोह अल्लाह तआला के नज्दीक बडा ही झूटा लिखा जाता है।

झूट गुनाह के रास्ते खोलता है क्यूं कि एक झूट को छुपाने के लिये फिर कई मरतबा मजीद झूट बोलना पडता है। तो जूंही इन्सान झूट बोलता है तो गुनहगार होता चला जाता है। हत्ता कि उस का येह गुनाह उसे दोजख में ले जाता है।

ईमान और झूट दो मुतजाद चीजें हैं इस लिये इन दोनों का यक्जा जम्अ होना गैर मुमकिन है चुनान्चे नेक सालेह लोग कभी झूट नहीं बोलते ख्वाह उन्हें कितनी ही तक्लीफ क्यूं न उठानी पडे इस की ताईद इस हदीस से होती है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

لَا يَجْتَمِعُ الْكُفْرُ وَالْإِيْمَانُ فِيْ قَلْبِ امْرِءٍ وَّلَا يَجْتَمِعُ الصِّدْقُ وَالْكِذْبُ جَمِيْعًا وَّلَا تَجْتَمِعُ الْخِيَانَةُ وَالْأَمَانَةُ جَمِيْعًا۔

किसी के दिल में ईमान व कुफ्र इकठ्ठा जम्अ नहीं हो सकता अगर कुफ्र है तो ईमान नहीं और ईमान है तो कुफ्र नहीं। और झूट और सच भी इकठ्ठा जम्अ नहीं हो सकता। और खियानत व अमानत भी इकठ्ठी नहीं हो सकती। (अहमद)

आखिरत में झूट की बडी बडी सजाएं हैं, मे'राज वाली हदीस में आप ने फरमाया कि झूटे आदमी को मैं ने देखा कि उस के जबडे चीरे जा रहे हैं। कब्र में भी येही अजाब कियामत तक होता रहेगा।

झूट के मुतअल्लिक लोग एहतियात नहीं करते बल्कि अच्छे अच्छे लोगों का येह हाल है कि वोह बिला वज्ह झूट को बुरा नहीं जानते। जैसे अक्सर लोगों को देखा जाता है कि बच्चों को बहलाने के लिये उन से झूटे वा'दे कर लेते हैं और समझते हैं कि वोह उन वा'दों को थोडी देर में भूल जाएंगे। मगर झूट बहर हाल झूट है। इस्लाम ने इस झूट की भी इजाजत नहीं दी है। एक कमसिन सहाबी अब्दुल्लाह बिन आमिर कहते हैं।

دَعَتْنِي أُمِّي يَوْمًا وَرَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ فِي بَيْتِنَا فَقَالَتْ لَهُ تَعَالَ أُعْطِكَ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا أَرَدْتِ أَنْ تُعْطِيهِ قَالَتْ أَرَدْتُ أَنْ أُعْطِيَهُ تَمْرًا فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَا إِنَّكِ لَوْ لَمْ تُعْطِهِ شَيْئًا كُتِبَتْ عَلَيْكِ كِذْبَةٌ

एक दफ्आ मेरी मां ने मुझे बुलाया और हुजूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे घर तशरीफ रखते थे तो मां ने मेरे बुलाने के लिये कहा कि यहां आ तुझे कुछ दूंगी। हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया तुम इस को क्या देना चाहती हो। मां ने कहा मैं इस को खजूर दूंगी। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया हां अगर तुम इस वक्त इस को कुछ न देतीं तो येह झूट भी तुम्हारा लिखा जाता।

(अबू दावूद)

हंसी मजाक में भी झूट नहीं बोलना चाहिये। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया।

لَا يُؤْمِنُ الْعَبْدُ الْإِيْمَانَ كُلَّهُ حَتّٰى يَتْرُكَ الْكَذِبَ فِي الْمُزَاحَةِ وَالْمِرَاءَ وَإِنْ كَانَ صَادِقًا۔

कोई बन्दा पूरा मोमिन हो ही नहीं सकता यहां तक कि हंसी मजाक में झूट बोलना और झगडा करना छोड दे अगर्चे वोह फी नफ्सिही सच्चा हो। (अहमद)

या'नी हर सूरत में झूट बोलना और फुजूल झगडा करना बुरा है उस से ईमाने कामिल जाता रहता है। ऐसे ही वोह झूट जो महफिल में दूसरों को खुश करने के लिये बोला जाता है। उस से अगर्चे किसी को कोई नुक्सान नहीं पहुंचता बल्कि बा'ज मौकओं पर येह एक दिलचस्पी

की चीज बन जाता है ताहम इस्लाम ने उस की भी इजाजत नहीं दी। ताकि किसी सूरत में झूट की राह न निकले। तिरमिजी की एक रिवायत में है कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

وَيْلٌ لِّلَّذِيْ يُحَدِّثُ بِالْحَدِيْثِ لِيُضْحِكَ بِهِ الْقَوْمَ فَيَكْذِبُ وَيْلٌ لَّهٗ ۔

जो लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलता है उस पर बडे अफ्सोस की बात है। इस हदीस से मा'लूम हुवा कि जो शख्स लोगों को खुश करता है और झूट बोल कर अपनी आखिरत बरबाद करता है। झूट बोलना बडी खियानत की बात है क्यूंकि वोह खुदा का और लोगों का अमीन है तो उस को सच ही बोलना चाहिये, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ اَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَ لَكَ مُصَدِّقٌ وَّاَنْتَ لَهٗ بِهٖ كَاذِبٌ ۔

येह बहुत बडी खियानत की बात है कि तुम अपने भाई से कोई झूटी बात कहो। उस हाल में कि वोह तुम को सच्चा समझता हो।

(अबू दावूद)

झूट की एक सूरत येह भी है कि जब किसी को खाने के लिये या किसी और चीज के लिये कहा जाता है तो वोह तसन्नोअ और बनावट से येह कह देता है कि मुझे ख्वाहिश नहीं हालां कि उन के दिल में उस की ख्वाहिश मौजूद होती है तो येह भी झूट है। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से भी मन्अ फरमाया है।

चुनान्चे एक दफ्आ एक औरत ने आप से दरयाफ्त फरमाया।

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنْ قَالَتْ اِحْدَانَا لِشَيْءٍ تَشْتَهِيْهِ لَا اَشْتَهِيْهِ
يُعَدُّ ذٰلِكَ كَذِبًا قَالَ اِنَّ الْكَذِبَ يُكْتَبُ كَذِبًا حَتّٰى تُكْتَبَ الْكُذَيْبَةُ كُذَيْبَةً ۔

या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से कोई किसी चीज की ख्वाहिश रखे और फिर कह दे कि मुझे उस की ख्वाहिश नहीं, तो क्या येह भी झूट में शुमार होगा। इर्शाद हुवा कि हर छोटे से छोटा झूट भी झूट लिखा जाता है। (अहमद)

हिकायत

कहते हैं कि एक शख्स आं हजरत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया और अर्ज किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ में चार बुरी खस्लतें है। एक येह कि बदकार हूं। दूसरे येह कि चोर हूं, तीसरे येह कि शराब पीता हूं। चौथे येह कि झूट बोलता हूं उन में से जिस एक को फरमाइये आप की खातिर छोड देता हूं। इर्शाद हुवा कि झूट न बोला करो। चुनान्चे उस ने अहद किया। अब जब रात हुई तो शराब पीने को जी चाहा और फिर बदकारी के लिये आमादा हुवा तो उस को खयाल गुजरा कि सुब्ह को जब आं हजरत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूछेंगे कि रात को तुम ने शराब पी और बदकारी की, तो क्या जवाब दूंगा ? अगर हां कहूंगा तो शराब और जिना की सजा दी जाएगी। और अगर "नहीं" कहा तो अहद के खिलाफ होगा। येह सोच कर उन दोनों से बा'ज रहा। जब रात जियादा गुजरी और अन्धेरा छा गया तो चोरी के लिये घर से निकलना चाहा। फिर उस खयाल ने उस का दामन थाम लिया कि कल अगर पूछगछ हुई तो क्या कहूंगा। "हां" अगर कहूंगा तो मेरा हाथ काटा जाएगा और "ना" कहूंगा तो बद अहदी होगी। उस खयाल के आते ही उस जुर्म से भी बा'ज रहा। सुब्ह हुई तो वोह दौड कर खिदमते नबवी में हाजिर हुवा। और अर्ज किया या रसूलल्लाह ! झूट न बोलने से मेरी चारों बुरी खस्लतें मुझ से छुट गईं। येह सुन कर आं हजरत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत खुश हुए। मा'लूम हुवा कि सच्चाई तमाम नेकियों की जड है। किताबो सुन्नत से मा'लूम हुवा कि झूट बहुत बुरा गुनाह है जो इन्सान को खुदा और उस के रसूल से बहुत दूर कर देता है। येही वज्ह है कि दीनो दुन्या के लिये झूट सरासर नुक्सान और खसारे का सौदा है, लिहाजा मेरे दोस्त जरा सोच कि येह जिन्दगी चन्द रोजा है आखिर एक न एक दिन इस जहान से जाना पडेगा। फिर वोह बोला हुवा झूट किसी काम नहीं आएगा लिहाजा मेरे दोस्त ! तू जिन्दगी के जिस शो'बे में भी है उसे झूट की आमेजिश से पाकीजा कर ले और

आइन्दा झूट बोलने से तौबा कर ले और खुदा से पक्का वा'दा कर ले कि जिन्दगी भर झूट की राह इख्तियार न करूंगा।

﴾10﴿ गीबत से तौबा

राहे हक पर चलने के लिये गीबत से तौबा करना भी जरूरी है। गीबत का मतलब येह है कि किसी का जिक्र ऐसे बुरे अल्फाज से किया जाए जिस के सुनने से वोह नाराज हो। इस्लाम में गीबत हराम और गुनाहे कबीरा है। चुनान्चे इस के मुतअल्लिक इर्शादे बारी तआला है कि

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ

एक दूसरे की गीबत न करो। क्या तुम में से कोई अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसन्द करता है ? पस तुम उसे नापसन्द करते हो।

(पारह 26, सूरए अल हुजुरात, आयत : 12)

गीबत को मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ इस लिये करार दिया गया है कि मुर्दा गोश्त से निहायत ही बदबू और कराहत आती है इस लिये उसे खाने के लिये कोई रिजामन्द नहीं होता।

नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का खून, माल और इज्जत हराम है। इर्शादे नबवी है कि अपने आप को गीबत से बचाओ क्यूंकि जिना से गीबत बदतर है। क्यूंकि जानी गुनाह के बा'द तौबा करता है तो अल्लाह तआला कुबूल कर लेता है मगर गीबत का गुनाह उस वक्त तक मुआफ नहीं होता जब तक कि जिस की गीबत की जाए उस से मुआफी हासिल न की जाए।

फरमाने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है, गीबत येह है कि तू अपने भाई की उस चीज का जिक्र करे जिसे वोह नापसन्द करता है ख्वाह उस के बदन का कोई ऐब हो, नसब का ऐब हो, उस के कौलो फे'ल या दीनो दुन्या का ऐब हो यहां तक कि उस के कपडों और सवारी में भी कोई ऐब निकालेगा तो येह भी गीबत होगी। गीबत, नेक आ'माल

को तबाहो बरबाद कर देती है बल्कि येह नेकियों को इस तरह खा जाती है जिस तरह आग सूखी लकडी को जला देती है। उमूमन ऐसा होता है कि एक आदमी जिस से नाराज होता है उस की गीबत कर के उस की बुराइयों को उछालता है और लोगों में आम करने की कोशिश करता है ताकि वोह बदनाम हो। येह इन्सान की कम अक्ली होती है कि गीबत के जरीए इन्सान अल्लाह को नाराज कर लेता है और अपना ठिकाना दोजख में बना लेता है और अपनी नेकियां उसे दे देता है जिस की गीबत करता है। शबे मे'राज को नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक कौम से गुजर हुवा तो वोह अपने चेहरों को अपने नाखुनों से नोच रहे थे तो नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा कि येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया कि येह लोग गीबत करते थे और अपनी गरज की बिना पर दूसरों को बुरा कहते थे। एक दफ्आ का वाकिआ है कि हजरते आइशा सिद्दीका رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने एक औरत को जबान दराज कहा तो नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि तुम ने गीबत की।

एक दफ्आ का जिक्र है कि जनाब अबुल्लैस बुखारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हज के लिये घर से रवाना हुए और दो दीनार जेब में डाल लिये। रवाना होते वक्त कसम खाई कि अगर मैं ने मक्कए मुकर्रमा जाते या घर वापस आते हुए किसी की गीबत की तो येह दो दीनार अल्लाह के नाम पर सदका कर दूंगा। आप मक्का शरीफ तक गए और घर वापस आए मगर दीनार उसी तरह उन की जेब में महफूज रहे। उन से गीबत के मुतअल्लिक पूछा गया तो उन्हों ने जवाब दिया, में एक मरतबा की गीबत को सो मरतबा के जिना से बदतर समझता हूं।

जनाब अबू हफ्स अल कबीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कौल है कि मैं किसी इन्सान की गीबत करने को माहे रमजान के रोजे न रखने से बदतर समझता हूं। फिर फरमाया : जिस ने किसी आलिम की गीबत की, तो कियामत के दिन उस के चेहरे पर लिखा हुवा होगा। येह अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद है ऐसे ही एक दफ्आ बहुत से सूफिया

जम्अ हो कर कहीं दा'वत खाने जा रहे थे। हजरते इब्राहीम बिन अदहम को भी बुलवाया और वोह उस जमाअत में शामिल हुए। फिर एक और शख्स का इन्तिजार था। किसी ने उस के मुतअल्लिक कहा कि वोह बडा अमीराना मिजाज रखता है। बडी देर से आएगा। येह बात सुनते ही हजरते इब्राहीम बिन अदहम चुपके से चले आए कि यहां गीबत होती है। फिर अपने नफ्स को मलामत की कि तूने खाने की खातिर एक मुसलमान की गीबत सुनी फिर आइन्दा ऐसी दा'वत खाने से तौबा की जिस में मोमिन की गीबत हो।

जनाब अम्र बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मदीनए तय्यिबा में एक शख्स रहता था, जिस की बहन मदीने के नवाह में रहती थी। वोह बीमार हो गई तो येह शख्स उस की तीमारदारी में लगा रहा लेकिन वोह मर गई तो उस शख्स ने उस की तजहीजो तक्फीन का इन्तिजाम किया। आखिर जब उसे दफ्न कर के वापस आया तो उसे याद आया कि वोह रकम की एक थेली कब्र में भूल आया है। उस ने अपने एक दोस्त से मदद तलब की। दोनों ने जा कर उस की कब्र खोद कर थेली निकाल ली, तो उस ने दोस्त से कहा जरा हटना मैं देखूं तो सही मेरी बहन किस हाल में है ? उस ने लहद में झांक कर देखा तो वोह आग से भडक रही थी। वोह वापस चुप चाप चला आया। और मां से पूछा मेरी बहन में क्या कोई खराब आदत थी ? मां ने कहा तेरी बहन की आदत थी कि वोह हमसायों के दरवाजों से कान लगा कर उन की बातें सुनती थी और चुगल खोरी किया करती थी पस उस शख्स को मा'लूम हो गया कि अजाब का सबब क्या है। पस जो शख्स अजाबे कब्र से बचना चाहता है उसे चाहिये कि वोह गीबत और चुगल खोरी से परहेज करे।

हजरते का'ब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का कौल है। मैं ने किसी किताब में पढा है, जो शख्स गीबत से तौबा कर के मरा वोह जन्नत में सब से आखिर में दाखिल होगा और जो गीबत करते करते मर गया वोह जहन्नम में सब से पहले जाएगा। फरमाने इलाही है وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ हर पीठ

पीछे बुराइयां करने वाले और तेरी मौजूदगी में बुराइयां करने वाले के लिये जहन्नम का गढा है।

येह आयत वलीद बिन मुगीरा के हक में नाजिल हुई जो मुसलमानों के सामने हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसलमानों की बुराइयां किया करता था। इस आयत का शाने नुजूल तो खास है। मगर इस की वईद आम है।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि अपने आप को गीबत से बचाओ। येह जिना से भी बदतर है, पूछा गया, येह जिना से कैसे बदतर है ? तो आप ने फरमाया आदमी जिना कर के तौबा कर लेता है, अल्लाह तआला उस की तौबा कबूल फरमाता है मगर गीबत करने वाले को जब तक वोह शख्स जिस की गीबत की गई हो, मुआफ न करे, उस की तौबा कबूल नहीं होती, लिहाजा हर गीबत करने वाले के लिये जरूरी है कि वोह अल्लाह तआला के हुजूर शरमिन्दा हो कर तौबा करे ताकि अल्लाह के करम से फैजयाब हो कर फिर उस शख्स से मा'जिरत करे जिस की उस ने गीबत की थी। ताकि गीबत के अन्धेरियों से रिहाई हासिल हो।

फरमाने नबवी है कि जो अपने मुसलमान भाई की गीबत करता है अल्लाह तआला कियामत के दिन उस का मुंह दुबर की तरफ फेर देगा। इस लिये हर गीबत करने वाले पर लाजिम है कि वोह उस मजलिस से उठने से पहले अल्लाह तआला से मुआफी मांगले और जिस शख्स की गीबत की उस तक बात पहुंचने से कब्ल ही रुजूअ कर ले क्यूंकि गीबत के वहां तक पहुंचने से पहले जिस की गीबत की गई हो, अगर तौबा कर ली जाए तो तौबा कुबूल हो जाती है मगर जब बात उस शख्स तक पहुंच जाए तो जब तक वोह खुद मुआफ न करे तौबा से गुनाह मुआफ नहीं होता। लिहाजा जो शख्स अपने आप में गीबत की बुराई महसूस करता हो उसे उस से हमेशा के लिये तौबा कर लेनी चाहिये।

हिकायत

हजरते जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शख्स को देखा जो सुवाल कर रहा था। हजरते जुनैद के दिल में खयाल आया कि येह शख्स तन्दुरुस्त हो कर सुवाल कर रहा है हांला कि खुद कमा भी सकता है, शब को सोए तो ख्वाब में देखा कि एक ख्वाने सरपोश से ढका हुवा सामने रखा है और लोग कहते हैं कि खाओ। हजरते जुनैद ने सरपोश उठाया, तो देखा वोही साइल दुरवेश का मुर्दा उस में रखा हुवा है। जुनैद फरमाने लगे कि मैं मुर्दार खोर तो नहीं हूं, लोगों ने जवाब दिया तो फिर आप ने उस दुरवेश को दिन के वक्त क्यूं खाया था ? जुनैद फरमाते हैं। मैं समझ गया कि शायद येह इशारा उसी मेरे दिली खयाल की तरफ है। मैं मारे हैबत के जाग उठा और वुजू कर के दो रक्अत नमाज पढी और उस दुरवेश की तलाश में निकला। देखा कि वोह दरिया के किनारे बैठा हुवा है और साग, जो लोग धोकर चले गए हैं, उस के टुकडे पानी से चुन चुन कर खा रहा है। मैं उस के करीब पहुंचा तो उस ने सर उठाया और कहा ऐ जुनैद ! मेरे हक में जो तुम्हारे दिल में खयाल आया था, उस से तौबा कर ली ? मैं ने कहा हां। कहने लगा अब जाओ।

هُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ - या'नी खुदा अपने बन्दों की तौबा कुबूल फरमाता है। जुनैद ! अब दिल की हिफाजत करना।

﴾11﴿ जुल्म से तौबा

जुल्म का आम मतलब येह है कि किसी के साथ जियादती न की जाए या'नी किसी का जाइज हक अपनी ताकत या इख्तियारात के बलबूते पर न छीना जाए। इस्लाम अदलो इन्साफ का अलमदार है। इस लिये इस्लाम में इमारत, कुव्वत, नस्ली बरतरी, हुकूमत, साहिबे इख्तियार होने की सूरत में दूसरों के हुकूक को गसब करने का कोई जवाज नहीं बल्कि किताबो सुन्नत में उस की मुमानअत और मजम्मत की गई है बेशुमार लोगों को जुल्म की बिना पर इसी जहान में सजा मिल जाती है

। कुरआन शाहिद है कि बहुत से जालिमों की बस्तियों को उन के जुल्म की नुहूसत की वज्ह से हलाक कर दिया गया। चुनान्चे अल्लाह तआला ने मुन्दरजा जैल आयात में जुल्म की मजम्मत की है।

(1) أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا
لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ
مُبِينٍ ﴿٣٨﴾

कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाजिर होंगे। मगर आज जालिम खुली गुमराही में हैं।

(पारह 16, सूरए मरयम, आयत : 38)

(2) وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِثْلُهَا ۖ
فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى
اللَّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾
وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ
مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤١﴾ إِنَّمَا
السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ
النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

और बुराई का बदला उसी के बराबर बुराई है, तो जिस ने मुआफ किया और काम संवारा तो उस का अज्र अल्लाह पर है। बेशक वोह जालिमों को दोस्त नहीं रखता और बेशक जिस ने अपनी मज्लूमी पर बदला लिया उन पर कुछ मुआखजा की सूरत नहीं है। मुआखजा तो उन लोगों पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और जमीन में नाहक सरकशी फेलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अजाब है।

(पारह 25, सूरए अश्शूरा , आयत : 40-42)

(3) وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

अल्लाह तआला जुल्म करने वाली कौम को हिदायत नहीं देता।

(पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 258)

इन आयात से येह जाहिर होता है की अल्लाह तआला ने तीन किस्म के हुकूक मुकर्रर किये हैं। पहला हक खुदा का है कि उस खालिके काएनात की फरमां बरदारी की जाए और हर लिहाज से इताअत की जाए। दूसरा हक इन्सान के जिस्म का अपना हक है कि अपनी जान को उस राह पर नहीं चलाता। बल्कि गलत रास्ता इख्तियार करता है। तो ऐसा करना अपनी जान के साथ जुल्म होगा। तीसरा हक दूसरी मख्लूकात का है। अगर इन्सान दूसरों की हक तलफी करता है तो वोह

दूसरे के साथ जुल्म होगा। दुन्यावी मुआमलात में उमूमन तीसरी किस्म का जुल्म आम है जिस से दूसरी मख्लूकात की खुसूसन हक तलफी होती है। जुल्म ख्वाह कैसा ही क्यूं न हो, आखिरत में उस की सजा जरूर मिलेगी। हाकिमे वक्त की कुरसी पर बैठ कर रिआया के हुकूक अदा न करना जुल्म है। इन्साफ का तराजू हाथ में ले कर इन्साफ न करना जुल्म है। जानवर रख कर उन की खूराक का बन्दो बस्त न करना जुल्म है। नोकर रख कर उन के साथ इन्सानी तकाजों के मुताबिक हुकूक अदा न करना जुल्म है। जो लोग जालिम बन जाते हैं उन की फलाह न होगी। जालिम को दीनो दुन्या में खसारा ही खसारा है। इस लिये मेरे दोस्त! ऐसी बुराई से हर मुम्किन तरीके से तौबा कर लेनी चाहिये क्यूंकि इसी में नजात है।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी जुल्म की बहुत मजम्मत की है और उस से बचने का दर्स दिया है। लिहाजा एक मरतबा नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जुल्म कियामत के दिन अन्धेरों का बाइस बनेगा।

आप ने मजीद फरमाया कि जो शख्स एक बालिश्त जमीन जुल्म से हासिल कर लेता है, अल्लाह तआला उस के गले में सातों जमीनों का तोक डालेगा।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि पांच आदमी ऐसे हैं जिन पर अल्लाह तआला गजबनाक होता है। अगर वोह चाहे तो दुन्या में उन्हें गजब का निशाना बना दे। वरना आखिरत में उन्हें जहन्नम में डालेगा। हाकिमे कौम जो खुद तो लोगों से अपने हुकूक ले लेता है मगर उन्हें उन के हुकूक नहीं देता और उन से जुल्म को दफ्आ नहीं करता।

कौम का काइद, लोग जिस की पैरवी करते हैं और वोह ताकतवर और कमजोर के दरमियान फैसला नहीं कर सकता और ख्वाहिशाते नफ्सानी के मुताबिक गुफ्तगू करता है।

घर का सरबराह, जो अपने घरवालों और औलाद को अल्लाह की इताअत का हुक्म नहीं देता और उन्हें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं देता।

ऐसा आदमी जो उजरत पर मजदूर लाता है और काम मुकम्मल करवा के उस की उजरत पूरी नहीं देता और वोह आदमी जो बीवी का हक्के महर दबा कर उस पर जियादती करता है।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि बेशक अल्लाह तआला जालिम को मोहलत देता है यहां तक कि आखिर उस को अपनी पकड में ले लेता है और फिर उस का छुटकारा नहीं, फिर कुरआने पाक की येह आयत तिलावत की जिस में कहा गया है कि अल्लाह तआला ने उन बस्तियों को अपनी गिरफ्त में ले लिया जब कि वोह जालिम थीं।

हजरते अब्दुल्लाह बिन उनैस से रिवायत है कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फरमाते सुना कि कियामत के दिन लोग नंगे बदन, नंगे पाउं, सियाह चेहरों के साथ उठेंगे। पस मुनादी निदा करेगा जिस की आवाज ऐसी होगी जो दूरो नज्दीक यक्सां तौर पर सुनी जाएगी। मैं बदले देने वाला मालिक हूं। किसी जन्नती के लिये मुनासिब नहीं है कि वोह जन्नत में जाए बा वुजूद येह कि उस पर किसी जहन्नमी की दाद ख्वाही रहती हो। चाहे वोह एक थप्पड ही क्यूं न हो या उस से जियादा हो। और कोई जहन्नमी जहन्नम में न जाए दरां हालिया कि उस पर किसी का हक रहता हो, चाहे वोह एक थप्पड हो या उस से जियादा हो। और तेरा रब किसी एक पर भी जुल्म नहीं करेगा। हम ने अर्ज की या रसूलल्लाह ! येह कैसे हो सकेगा, हालां कि हम तो उस दिन नंगे बदन, नंगे पाउं होंगे, आप ने फरमाया नेकियों के साथ और बुराइयों के साथ मुकम्मल बदला दिया जाएगा और तुम्हारा रब किसी एक पर जुल्म नहीं करेगा।

हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि जो नाहक एक चाबुक मारता है कियामत के दिन उस का बदला दिया जाएगा।

हजरते अली से मरवी है कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि तुम अपने आप को मज्लूम की बद दुआ से बचाओ इस लिये कि जब वोह अल्लाह तआला से अपना हक मांगता है तो अल्लाह तआला किसी हक वाले के हक को नहीं रोकता।

हजरते अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि जो शख्स किसी मुकद्दमे में किसी जालिम की मदद करे तो वोह हमेशा अल्लाह के गजब में रहेगा, यहां तक कि उस से अलग हो जाए।

हजरते औस बिन शरजील से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया है कि जो शख्स जालिम के साथ उस को जालिम जानते हुए उस की मदद के लिये निकले, तो वोह हम से निकल गया।

हिकायत

किसरा ने अपने बेटे के लिये एक उस्ताद मुकर्रर किया जो उसे ता'लीम देता था और अदब सिखाता था। जब वोह बच्चा मुकम्मल तौर पर इल्मो फज्ल से बेहरावर हो गया तो उस्ताद ने उसे बुलाया और बिगैर किसी जुर्म और बिगैर किसी सबब के उसे इन्तिहाइ दर्दनाक सजा दी, उस लडके ने अपने उस्ताद के उस रवय्ये को बहुत बुरा समझा और दिल में उस की तरफ से अदावत पैदा हो गई, यहां तक कि वोह जवान हो गया। उस का बाप मर गया और बाप के बा'द बादशाह बन गया। बादशाही संभाल तेही उस ने उस्ताद को बुला कर पूछा आप ने फुलां दिन बिगैर किसी जुर्म और बिगैर किसी सबब के मुझे इतनी दर्दनाक सजा क्यूं दी थी? उस्ताद ने कहा ऐ बादशाह! जब तू इल्मो फज्ल के कमाल तक पहुंच गया तो मुझे मा'लूम हो गया कि बाप के बा'द तू बादशाह बनेगा मैं ने सोचा तुझे सजा का जाइका और जुल्म की तक्लीफ से मुवाफकत कर दूं ताकि तू उस के बा'द किसी पर जुल्म न करे। बादशाह ने कहा अल्लाह आप को जजाए खैर दे और फिर उन का वजीफा मुकर्रर कर दिया और उन के अखराजात की अदाएगी का हुक्म सादिर कर दिया।

हिकायत

एक बुजुर्ग शैख अब्दुल्लाह याफेई अपने सफर नामे में लिखते हैं। एक दफ्आ शहरे बसरा से निकल कर करया को जा रहा था। एक

रफीक ने खबर दी कि राह में एक रहजन रहता है। मुसाफिरों को लूट लेता है। येह कह कर उस ने मुझे हर चन्द आगे जाने से मन्अ किया लेकिन मैं ने उन के कहने पर कुछ इल्तिफात न किया। कोई दोसो कदम आगे बढा होंगा कि यका यक सामने एक जबरदस्त मुहीब सूरत मर्द जाहिर हुवा। रहजन ने आते ही हम दोनों पर हम्ला कर दिया और पहले ही हम्ले में मेरे रफीक को कत्ल कर डाला फिर मेरी तरफ लपका। मैं ने निहायत आजिजी से गिड गिडाना शुरूअ किया। और जो कुछ रूपिये पेसा मेरे पास था सब उस के हवाले कर दिया रहजन ने माल ले कर मुझ को छोड दिया लेकिन दोनों हाथों को मजबूत रस्सी से बान्ध कर जमीन पर डाल दिया। गरमियों के अय्याम थे, दोपहर का वक्त था, आफ्ताब की हरारत और धूप की शिद्दत से हाल तबाह था। गरज बहजार वक्तो मशक्कत खुद अपने हाथों को किसी तरह मैं ने खोल लिया और उस बयाबान को तै करने लगा। दिन भर चला, फिर भी कहीं रस्ते का पता न मिला, फिर रात कटी होगी कि आग की रोशनी दिखाई दी और मैं उसी तरफ चला। आग के पास पहुंचा तो वहां एक खैमा देखा। पियास से बेताब था, खैमे के दरवाजे पर खडे हो कर मैं ने जोर से पानी मांगा। किस्मत की बात कि येह खैमा उसी रहजन का था, जिस के जालिम हाथों से मैं ने दिन को रिहाई पाई थी। रहजन मेरी आवाज सुन कर बजाए पानी के बरहना तलवार हाथ में लिये हुए बाहर निकला और चाहा कि एक वार में मेरा काम कर दे। आमादए कत्ल देख कर उस की रहम दिल औरत ने दूर से गुल करना शुरूअ किया कि गरीब का खून इस मैदान में न गिराओ। अगर मारना है तो इस खैमे के पास से दूर हटा कर ले जा कर मारो। बीबी की येह फरियाद सुन कर रहजन घसीटता हुवा मुझ को दूसरे सुन्सान मकाम पर लाया। सीने पर चढ बैठा और गर्दन पर तलवार रख कर जब्ह करना चाहता था कि यका यक सामने के जंगल से एक हैबतनाक शेर बढता हुवा दिखाई दिया। रहजन खौफ के मारे दूर जा गिरा और हनूज संभला नहीं था कि शेर ने झपट कर चीर फार डाला। शेर की सूरत देख कर रहजन से पहले मैं बेहोश हो गया था। देर के बा'द जब होश

आया उस सुन्सान मैदान में सिवाए उस की मुर्दा ना'श के कोई और चीज नजर न आती थी। देर के बा'द सब वाकिआत मुझ को याद आए, फिर क्या था शुक्रे इलाही बजा ला कर हम्दो सना खुदा की करता हुवा रहजन के खैमे पर आया। उस की खूब सूरत बीबी मेरी सिम्त से खुश थी। आखिर मैं ने उस से निकाह किया और रहजन का कुल मालो मताअ मेरे हाथ आया और अल्लाह ने मुझ को उसी वक्त से फक्रो फाका से नजात दी। किसी ने सच्च कहा है, कि चाह कन रा चाह दर पेश उस का जुल्म उसी तरफ लौट आया।

हिकायत

वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं किसी जालिम बादशाह ने शानदार महल बनवाया। एक मुफ्लिस बुढया आई और उस ने महल के पहलू में अपनी कुटया बना ली जिस में वोह सुकून से रहती थी। एक मरतबा जालिम बादशाह ने सुवार हो कर महल के इर्द गिर्द चक्कर लगाया तो उसे बुढया की कुटया नजर आई, उस ने पूछा येह किस की है ? कहा गया येह एक बुढया की है और वोह इस में रहती है। चुनान्चे उस ने हुक्म दिया कि उसे गिरा दो, लिहाजा उसे गिरा दिया गया। जब बुढया वापस आई तो उस ने अपनी मुन्हदिम कुटया देख कर पूछा कि इसे किस ने गिरा दिया है ? लोगों ने कहा इसे बादशाह ने देखा और गिरा दिया। तब बुढया ने आस्मान की तरफ सर उठाया और कहा ऐ अल्लाह ! अगर मैं हाजिर नहीं थी तो तू कहां था ? अल्लाह तआला ने जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म दिया कि महल को उस के रहने वालों पर उलट दो। और ऐसा ही किया गया।

﴾12﴿ बेईमानी से तौबा

अमानत और दियानत का तकाजा है कि जिस का हक हो उसे दिया जाए अगर उस में खियानत की जाएगी तो बेईमानी होगी। इन्सान येह खयाल करता है कि बेईमानी से उसे जियादा मिलेगा लेकिन येह सिर्फ एक फरेब है जो इन्सान अपने आप ही को देता है।

ईमान का तकाजा है कि मुआमलात में सिर्फ अपना हक लिया जाए और दूसरों का हक जो अल्लाह और रसूल ने मुकर्रर किया है वोह दिया जाए। अगर इस शरई उसूल के खिलाफ फरेब या धोका धडी करेंगे तो वोह बेईमानी कह लाएगी। चुनान्चे इर्शादे बारी तआला है कि

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

ऐ ईमान वालो ! आपस में नाहक तरीके से माल न खाओ।

(पारह 4, सूरए निसा, आयत : 29)

अल्लाह तआला के फरमान में उन तमाम तरीकों की नफी कर दी गई है जो ईमानदारी के बर अक्स हैं या'नी आपस में माल खाने का जो भी नाहक तरीका है वोह बेईमानी होगा, लिहाजा धोका, फरेब, जुल्म, गसब, खियानत और मिलावट का शुमार इसी जुमरे में होता है। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बेईमानी को बहुत ही बुरी जाना है। एक मरतबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जिस ने हम पर हथियार उठाया और जिस ने हमारे साथ बेईमानी की वोह हम में से नहीं। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस हदीस में बडी जामेअ बातें हैं कि जो शख्स मुसलमानों पर दस्त दराजी करे और उन्हें धोका दे वोह मुसलमानों का साथी या दीनी भाई कैसे हो सकता है। मगर जूं जूं कुर्बे कियामत का दौर आएगा। मुसलमानों में येह दोनों जराइम जियादा होते जाएंगे लिहाजा उन से अल्लाह महफूज रखे।

एक मकाम पर नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जो कोई किसी मोमिन को नुक्सान पहुंचाए या उस के साथ धोका या'नी बेईमानी करे। वोह मल्ऊन है। इस हदीस में बेईमानी पर ला'नत की गई है जो खुदा की रहमत से दूरी है। नीज आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जो हमारे साथ धोके बाजी करे वोह हम में से नहीं। क्यूंकि मक्रो फरेब और धोके बाजी का ठिकाना जहन्नम है। एक दफ्आ का जिक्र है कि नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाजार से गुजर रहे थे, एक जगह गल्ले का एक ढेर देखा। आप ने उस में हाथ डाला तो मा'लूम हुवा कि अन्दर से गल्ला गीला है और बाहर

सूखा है । आप ने गल्ले वाले से पूछा कि येह क्या है ? उस ने अर्ज की, येह बारिश से भीग गया है आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि फिर तुम ने इसे उपर क्यूं नहीं रखा ताकि खरीद ने वाले देख लें, आप ने फरमाया कि जो धोका दे वोह हम में से नहीं । इस हदीस से मा'लूम हुवा कि नाकिस सौदा फरोख्त करना बेईमानी है या किसी सौदे की खामी को छुपाना भी बेईमानी है । बेईमानी की येह सूरत बहुत आम है, लोग दिखाते कुछ हैं और दे कुछ और देते हैं ।

बेईमानी से फाएदा या इजाफा कम होता है, लेकिन इन्सान थोडे से फाएदे की खातिर गुनाहों से अपनी आखिरत को बहुत वज्नी कर लेता है, लिहाजा बेईमानी का दीनो दुन्या में नुक्सान ही नुक्सान है । बेईमानी करने वाले जब बे नकाब हो जाते हैं तो उन की इज्जत हमेशा के लिये खाक में मिल जाती है, फिर ऐसी दौलत से क्या फाएदा जो दीनो दुन्या में जिल्लत और रुस्वाई का सबब बने । इस लिये मेरे अजीज ! अगर किसी शख्स में बेईमानी और धोके की बद आदत मौजूद हो । तो उसे फौरन अल्लाह के हुजूर तौबा कर लेनी चाहिये ।

﴾13﴿ कम माप तोल से तौबा

खरीदो फरोख्त और लेन देन जिन्दगी का अहम शो'बा है और उस शो'बे में अदलो इन्साफ, दियानतो सदाकत को काइम रखना इस्लाम का बुन्यादी मक्सद है, लिहाजा तिजारत में लेने और देने वाले के लिये जरूरी है कि वोह एक दूसरे का हक अदा करें सौदा बेचने वाले के लिये लाजिम है कि उस का नाप तोल पूरा हो । नाप तोल में कमी अल्लाह के काइम कर्दा निजामे अदल के खिलाफ है । इस्लाम का निजामे अदल एक फित्री कानून है जिस का मन्शा येह है कि जिस की जो चीज हो उसे दी जाए और येहीं वोह मीजान है जिसे अल्लाह काइम करना चाहता है । मगर जो शख्स अपनी अमली जिन्दगी में अल्लाह के इस निजामे अदल पर नहीं चलता तो वोह हकीकत में खुदा का हुक्म नहीं मानता और येह खसारे का सौदा है ।

अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में कई मकामात पर इस अम्र पर बहुत ही जोर दिया है कि नाप तोल को पूरा रखो। चुनान्चे, हर शख्स को इस उसूल पर कारबन्द होना चाहिये और जो दूसरे का हक हो उसे बिगैर किसी कमी के अदा करना चाहिये। पूरे नाप तोल के मुतअल्लिक अल्लाह का फरमान येह है

(1) وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ

और नाप तोल इन्साफ के साथ पूरा किया करो। (पारह 8, सूरए अन्आम, आयत : 152)

(2) اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝

खबरदार तुम तराजू में हद से जियादा तजावुज न करो। और इन्साफ के साथ दुरुस्त कर लो और तोल कम मत करो। (पारह 27, सूरए अर्रहमान, आयत : 8-9)

इन आयात से साफ जाहिर है कि जितने माल की कीमत वुसूल की जाए उतना ही दिया जाए। नाप तोल की कमी के बारे में कुरआने पाक में हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की कौम का किस्सा बयान किया है। जिस ने सब से पहले नाप तोल में कमी के बाइस दूसरों का हक मारना शुरूअ किया था। येह कौम अरबियुन्नस्ल थी और मदयन में आबाद थी। मदयन उस शाहराह पर था जो हिजाज से शाम और फिलिस्तीन को जाती थी। मदयन दर अस्ल एक कबीले का नाम था लेकिन जब वोह एक मकाम पर आबाद हो गया तो उस इलाके का नाम मदयन पड गया। मदयन के लोग मुजाहिर फितरत की पूजा किया करते और खुदा के साथ शिर्क करते थे हत्ता कि सारी कौम बुत परस्ती में मुब्तला थी। इस के इलावा उस कौम में बुरा रिवाज येह था कि वोह लेन देन और तिजारत में बेईमानी करते थे वोह जब किसी से माल खरीदते तो खरीदारी में अपनी मर्जी के बाट इस्ति'माल करते और जब किसी के हाथ माल फरोख्त करते तो बेचने के बाट और होते जो वज्न में अस्ल बाटों की निस्बत कम होते आखिर उन की बुराइयों की बिना पर अल्लाह तआला को उस कौम की हालते जार पर रहम आया और अल्लाह

तआला ने उस कौम को राहे हक पर लाने के लिये हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को उस कौम में पैगम्बर मब्ऊस फरमाया उन्हों ने कौम को राहे हक की दा'वत दी, आप ने उन्हें कुफ्रो शिर्क छोड कर खुदाए वाहिद की पूजा की तल्कीन की, उन्हों ने कहा ऐ मेरी कौम के लोगों ! एक खुदा की इबादत करो क्यूंकि उस के इलावा और कोई इबादत के लाइक नहीं । खरीदो फरोख्त में अपने नाप तोल को पूरा करो, अपने मुआमलात में बेईमानी से काम न लो । मैं अल्लाह का पैगम्बर हूं और मेरी नुबुव्वत को तस्लीम करते हुए जो मैं कहता हूं उस पर अमल करो, खुदा की जमीन में फित्ना फसाद न मचाओ । हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम को तमाम बुराइयों और खामियों से आगाह किया उस के जवाब में उन्हों ने कहा कि ऐ शुऐब ! हम तुम्हारी बातों को नहीं समझते । बल्कि कौम के सरदार गुस्से में आ कर आग बगूला हुए और हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे क्या तुम येह चाहते हो कि हम अपने बाप दादा के देवताओं को पूजना छोड दें, क्या तू येह चाहता है कि हम नाप तोल में कम करना छोड दें, अगर हम ऐसा करें तो हम गरीब और नादार हो जाएंगे । हत्ता कि कौम ने आप की एक न सुनी और बुरे कामों में आगे बढते गए । हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام के उस पैगाम को कुरआन में यूं बयान किया गया है ।

فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ

तो नाप तोल पूरा करो और लोगों को उन की अश्या मत घटा कर दो और जमीन में उस की इस्लाह के बा'द खराबी मत डालो । येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यकीन हो ।

(पारह 8, सूरए अल आ'राफ, आयत : 85)

इस आयत में वहीं अल्फाज हैं जिन के जरीए आप ने कौम को पूरे नाप तोल की दा'वत दी थी, फिर सूरए शुअरा में अल्लाह तआला ने उसी मजमून को दो बाराह दोहराया ताकि आने वाले लोग उस कौम के किरदार से नसीहत पकडें ।

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾

और पूरा दो नाप और नुक्सान देने वाले न बनो और तोलो सीधी तराजू से, और लोगों को उन की अश्या मत घटा कर दो और मुल्क में फसाद फेलाते हुए मत फिरो । (पारह 19, सूरए अश्शुरा, आयत : 181 ता 183)

हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام अरसए दराज तक कौम को दीने हक की दा'वत देते रहे, उस के साथ ही उन में जो नाप तोल कम करने की बुराई थी उस से रोकते रहे, आप उन्हें कहते थे कि अपना लेन देन पूरा और सहीह करो, तोल में अद्ल करो, बाट सहीह रखो, किसी को चीज कम न दो गोया कि आप ने राहे रास्त पर लाने की पूरी कोशिश की । कौम ने आप को बेशुमार तकालीफ दीं और तरह तरह से धम्कियां दीं लेकिन आप अपने मिशन पर काइम रहे और जब कौम ने आप को हर तरह से तंग कर दिया और हिदायत की तरफ न आए तो अल्लाह की तरफ से उस कौम पर नाराजगी का इज्हार हुवा और उस पर अजाब नाजिल किया गया । कौमे शुऐब पर अजाबे इलाही के वाकिए को कुरआने पाक में इस तरह बयान किया गया है ।

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّىْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

और नाप और तोल में कमी न करो । मैं तुम को आसूदगी में देखता हूं और एक घेर लेने वाले दिन की आफत से तुम को डराता हूं । और लोगो ! नाप और तोल को इन्साफ से पूरा करो और लोगों की चीजें उन को घटा कर मत दो और मुल्क में फसाद फेलाते मत फिरो ।

(पारह 19, सूरए हूद, आयत : 84 ता 85)

कौमे शुऐब पर नाप तोल में कमी के बाइस पहले जलजले का अजाब आया लोग खौफ से घबरा गए । अभी जलजला खत्म न हुवा था

कि लोगों पर तपिश का अजाब आ गया। तपिश इतनी शदीद थी कि उन की पियास न खत्म होती थी। मजबूर हो कर कौम ने शहर से बाहर भागना चाहा। लेकिन वोह जहां भी जाते उन्हें अजाबे इलाही से छुटकारा नहीं मिल सकता था। आखिर वोह शहर से बाहर निकले, उन्हों ने देखा कि आस्मान पर एक बादल का टुक्डा नुमूदार हुवा लेकिन देखते ही देखते उस बादल से आग बरसने लगी और जल्द ही सारी कौम हलाकत का शिकार हो गई। मगर शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथियों को अल्लाह ने बचा लिया। येह सारा अजाब जिन बुराइयों की बिना पर मिला था उन में एक बुराइ नाप तोल की कमी भी थी।

पैमाइश में कम मापने वाले तोल में कम बाट इस्ति'माल करने वाले का अन्जाम बहुत बुरा है। वोह लोग जो दूध नापते हैं तो कम नापते हैं, कपडा बेचते हैं तो उस की पैमाइश कम करते हैं, अश्याए खुरदनी बेचते हैं तो हकीर और मा'मूली से मिकदार में कमी कर लेते हैं। पेकिंग करते हैं तो मुकर्रर ता'दाद से कम पेकिंग करते हैं, गोया कि इन्सान जिन्दगी के बे शुमार लेन देन के मुआमलात में बेईमानी से काम ले लेता है उस का अन्जाम बहुत बुरा है। जो नाप तोल में कमी करता है वोह दर अस्ल अपने आप को हलाकत और बरबादी में मुब्तला करता है और अपने बुरे अन्जाम का खुद ही सामान पैदा करता है। वोह हकीर दौलत जो वोह कम तोल और कम नाप से कमाता है वोह उस के दीनो दुन्या को तबाह कर देती है। वोह क्या जाने कि तम्अ और लालच इन्सान को ले डूबता है। उस गुनाह और जुर्म का खम्याजा दुन्या में भी भुगतना पडता है जो दूसरों के लिये बाइसे इब्रत होता है। कम तोलने वालों के माल में अक्सर खसारा हो जाता है। दूध कम नापने वालों की अक्सर भेंसें मर जाती हैं। कम नाप तोल से कमाई हुई दौलत ऐशो इशरत और बुरे कामों की नज्र हो जाती है। अक्सर यूं भी हो जाता है कि इन्सान जिस औलाद का पेट पालने के लिये हराम जराएअ मआश इख्तियार करता है वोह औलाद नाफरमान और गुस्ताख हो जाती है और औलाद जिसे नादान इन्सान कम नाप तोल से हराम रोजी कमा कर खिलाता है और औलाद

को जवान कर के अपने बुढापे का सहारा बनाता है। वोह औलाद उलटा वालिदैन को मसाइब और मुश्किलात में डाल देती है। वोह बडे हो कर बद मआश, आवारा, बद चलन, किमार बाज, शराबी और बुरे इन्सान बन जाते हैं जो वालिदैन के लिये सहारे की बजाए वबाल बन जाती है और येह सब कुछ नाप तोल में कमी के बाइस होता है इस लिये जो हजरात इस गुनाह में मुब्तला हों वोह पहली फुरसत में अल्लाह के हुजूर तौबा कर लें ताकि उन की आखिरत संवर जाए।

﴾14﴿ जखीरा अन्दोजी से तौबा

जखीरा अन्दोजी को इस्लाम में एहतिकार कहा जाता है उस का लफ्जी मतलब जुल्म है लेकिन शरई इस्तिलाह में जखीरा अन्दोजी येह है कि किसी इस्ति'माल होने वाली चीज की फरोख्त को इस गरज से रोक लिया जाए कि वोह मेहंगी हो जाए और जब उस की किल्लत हो जाए तो मुंह मांगे दामों फरोख्त की जाए। चुंकि लोगों को उस की अशद जरूरत होती है तो वोह मजबूरन मेहंगे दामों पर खरीद ने के लिये मजबूर होते हैं। शरीअत में येह जाइज नहीं बल्कि ऐसा करना हराम और जुर्म है। लेकिन याद रहे कि फरोख्त की गरज से जम्अ शुदा स्टोक [STOCK] को एहतिकार नहीं कहा जाता। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जखीरा अन्दोजी से मन्अ फरमाया है और उस के मुतअल्लिक आप की अहादीस मुन्दरजा जैल हैं।

(1) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنِ احْتَكَرَ طَعَامًا اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا يُرِيْدُ بِهِ الْغَلَاءَ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ اللّٰهِ وَبَرِئَ اللّٰهُ مِنْهُ ۔

हजरते इब्ने उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जो शख्स चालीस दिन गल्ले का जखीरा करता है और उस के मेहंगा होने का इन्तिजार करता है वोह शख्स हक तआला से दूर हुवा और अल्लाह उस से बेजार हुवा।

इस हदीस में इस बात की वजाहत की गई है कि एहतिकार वोह है जिस में नरखों की गिरानी मत्लूब हो, ताकि चीज की कामयाबी से फाएदा उठाते हुए जियादा से जियादा नफ्अ कमाने की निय्यत हो और

जो शख्स इस निय्यत से जखीरा अन्दोजी करे वोह मोहतकिर होगा। और मोहतकिर अल्लाह की रहमत से दूर हो जाता है।

(2) عَنْ مَعْمَرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنِ احْتَكَرَ فَهُوَ خَاطِئٌ ؂

हजरते मा'मर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि एहतिकार या'नी जखीरा अन्दोजी करने वाला गुनहगार है।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फरमान की रू से जखीरा अन्दोजी गुनाह है क्यूं कि इजनास खुवरदनी का इस्ति'माल जिन्दगी की बका के लिये जरूरी है इस लिये कोई शख्स जरइ इजनास मेहंगा करने की गरज से खरीद कर रख ले तो उस से दूसरे लोगों का बुन्यादी हक गसब होगा जिस की बिना पर उसे गुनाह करार दिया गया है।

(3) عَنْ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْجَالِبُ مَرْزُوْقٌ وَالْمُحْتَكِرُ مَلْعُوْنٌ ؂

हजरते उमर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बयान करते हैं फरमाया कि गल्ला लाने वाला रोजी दिया जाएगा और एहतिकार करने वाला मल्ऊन है।

इस हदीस में येह बताया गया है कि अगर ताजिर नेक निय्यती से तिजारत करे तो उस के रिज्क में इजाफा होता चला जाता है और अगर जखीरा करने वाला हो तो उस पर खुदा की ला'नत पड जाती है और जिस पर खुदा की ला'नत पड जाए वोह आखिरत में सजा का मुस्तहिक होगा।

(4) وَعَنْ اَنَسٍ قَالَ غَلَا السِّعْرُ عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ سَعِّرْ لَنَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمُسَعِّرُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الرَّازِقُ وَاِنِّيْ لَاَرْجُوْا اَنْ اَلْقٰى رَبِّيْ وَلَيْسَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ يَطْلُبُنِيْ بِمَظْلِمَةٍ بِدَمٍ وَّلَا مَالٍ ؂

हजरते अनस से रिवायत है कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जमाने में गल्ला महंगा हो गया। सहाबा ने अर्ज की ऐ अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! भाव मुकर्रर कर दें नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया अल्लाह ही भाव मुकर्रर करने वाला है तंग करने वाला और फराख करने वाला है और रिज्क देने वाला है। मैं उम्मीद करता हूं कि मैं अपने रब को मिलूंगा उस हाल में कि तुम में से कोई भी मुझ से किसी खून या माल का मुताल्बा नहीं करेगा। (तिरमिजी, अबू दावूद)

लोग येह खयाल करते हैं कि जखीरा अन्दोजी का इलाज अश्या की कीमतें मुकर्रर करना है लेकिन इस हदीस में येह बताया गया है कि अश्या की कमी या कसरत का कन्ट्रोल अल्लाह के पास है उस की वज्ह येह है कि जिस फस्ल पर गल्ला अल्लाह की रहमत से जियादा पैदा होता है तो उस की कसरत के बाइस उस के नर्ख कम हो जाते हैं और अगर कम हो तो नर्ख जियादा हो जाते हैं। कीमतें मुकर्रर करने से खरीदार और फरोख्त करने वाले को दोनों सूरतों में नुक्सान हो सकता है। अगर ताजिरों को एक चीज जियादा कीमत से खरीदना पडे और कीमत मुकर्रर होने की वज्ह से कम कीमत पर फरोख्त करना पडे तो ताजिर पर जुल्म होगा और अगर ताजिर ने बहुत कम कीमत पर खरीदी हो। और मुकर्रर कीमत बहुत जियादा हो तो उस से खरीदार पर जुल्म होगा इस सूरत के पेशे नजर अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तिजारत में कीमतें मुकर्रर करने से मन्अ कर दिया है बल्कि तवक्कुल का दर्स दिया है जिस के तहत ताजिर को चाहिये के कम मुनाफा ले।

(5) وَعَنْ مُعَاذٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ بِئْسَ الْعَبْدُ الْمُحْتَكِرُ اِنْ اَرْخَصَ اللّٰهُ الْاَسْعَارَ حَزِنَ وَاِنْ اَغْلَاهَا فَرِحَ ؎

हजरते मुआज से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना कि एहतिकार करने वाला बन्दा बुरा है अगर अल्लाह तआला भाव सस्ता कर दे तो वोह बहुत गमगीन होता है। और अगर मेहंगा कर दे तो खुश होता है।

इस हदीस में जखीरा अन्दोजी का मिजाज बयान किया गया है कि जखीरा अन्दोज गिरानी से खुश होता है और भाव सस्ता होने से गमगीन होता है। अगर अल्लाह पर इस्तिकामते ईमान उस दरजे तक हो कि नफअ नुक्सान तो अल्लाह के हाथ में है तो फिर इन्सान हर हाल में अल्लाह पर राजी रहता है।

(6) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ طَعَامَهُمْ ضَرَبَهُ اللّٰهُ بِالْجُذَامِ وَالْاِفْلَاسِ ؎

हजरते उमर बिन खत्ताब से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना, फरमाते थे मुसलमानों के गल्ले को जो बन्द कर के बेचता है, अल्लाह तआला उस को जुजाम और इफ्लास पहुंचाता है। इस हदीस में नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गल्ला जखीरा कर के दूसरों को भूका मारने वालों के लिये जुजाम और इफ्लास में मुब्तला होने की खबर दी है। इन्सान ब जाहिर तो जखीरा अन्दोजी से फाएदा उठाने की सोचता है मगर ऐसे लोगों को जिन्दगी के किसी न किसी मोड पर ऐसा नुक्सान पहुंचता है कि अपने किये की सजा गुरबत, इफ्लास और बीमारियों की सूरत में पाता हैं।

नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उन अक्वालात से येह बिल्कुल अयां है कि इस्लाम में जखीरा अन्दोजी हराम है लेकिन उस के बा वुजूद ताजिर हजरात इस हरकत से बा'ज नहीं आते और अश्या को जखीरा कर के किल्लत के इन्तिजार में रहते हैं और मौकअ पा कर मुंह मांगी कीमत वुसूल करते हैं चुनान्चे ऐसे हजरात को इस फे'ल से तौबा कर लेनी चाहिये।

हिकायत

एक दफआ एक शख्स इजनासे खूरदनी की तिजारत शुरूअ की, कुछ अर्से के बा'द शैतान ने उस के जेहन में जखीरा अन्दोजी की ला'नत को सुवार कर दिया। चुनान्चे उस ने जखीरा अन्दोजी शुरूअ कर दी। फस्ल के मौकअ पर जमीनदारों की मजबूरियों से फाएदा उठाते हुए सस्ते दामों खरीद लेता। और जब उन इजनास की कीमत बढ जाती, तो मुंह मांगे दामों फरोख्त करता। अर्सए दराज तक यूंही करता रहा। हत्ता कि उस के पास अनगिनत सरमाया जम्अ हो गया। मगर थोडे अर्से के बा'द हालात ने रुख बदला और तिजारत में उसे खसारा शुरूअ हो गया। जो सौदा भी करता उस में घाटा उठाता, हत्ता कि जो दौलत जखीरा अन्दोजी से कमाई थी वोह उसी रास्ते निकल गई और खुद बीमार हो गया और बीमारी ने उस हद तक लागर कर दिया कि भीक मांगने तक

नौबत पहुंच गई लोग उस की हालते जार पर बडे हैरान हुए। कि येह शख्स इसी इलाके की एक मुअज्जज शख्सिय्यत शुमार किया जाता था जब कि आज येह भिकारी है। और हर कोई नफरत की निगाह से देखने लगा। एक रोज वोह मस्जिद की सिढियों पर बैठ कर भीक मांग रहा था कि एक अल्लाह के बन्दे का गुजर हुवा उस ने नजरे बातिन से उस का हाल मा'लूम किया और उसे कहा कि दौलत जखीरा अन्दोजी में नहीं है बल्कि अमारत और गुरबत अल्लाह की तरफ से है, तूने सोचा था कि जखीरा अन्दोजी ही से दौलत आ सकती है आज तेरी दौलत कहां है ? और तू बेयारो मददगार हो कर अल्लाह के नाम पर मांग रहा है अगर तू उस वक्त भी अल्लाह से राहे रास्त और जाइज तरीके से मांगता तो वोह तुम्हें हर सूरत तेरे मुकद्दर का रिज्क देता। अब तू सच्चे दिल से साबिका जिन्दगी पर तौबा कर बेहतर हो जाएगा। ताजिर उस के कहने पर मस्जिद में जा कर अल्लाह के हुजूर सज्दा रेज हुवा और बडी देर तक रोता रहा। हत्ता कि ताइब हो कर इबादत में महव हो गया। कुछ अर्से के बा'द उस की सख्ती मुआफ हो गई और उस की गुजर औकात का अल्लाह ने बेहतर जरीआ बना दिया।

﴾15﴿ जुए से तौबा

जुवा दौलत हासिल करने का वोह नाजाइज जरीआ है जिस में इस्लाम की तक्सीमे दौलत का बुन्यादी उसूल, हुकूक या मेहनत का ओजाना कार फरमा नहीं होता, बल्कि किसी इत्तिफाकी अम्र की बिना पर एक से जाइद आदमियों की दौलत फर्दे वाहिद के हाथ में चली जाती है। इस लिये इस्लाम में येह हराम और गुनाहे कबीरा है। जुवा खेल या लोटरी की सूरत में राइज है। उस में दो फरीक होते है और दोनों के दरमियान फैसला हार या जीत पर होता हैं। हारने वाले का सरमाया जीतने वाले के पास चला जाता है और येह सूरत इस्लाम में जुल्म के मुतरादिफ है इस लिये जुए को जरीअए मुआश बनाना हराम करार दिया गया है।

इस्लाम से पहले अरबों में शराब और जुवा खेलने का आम रवाज था बल्कि उसे मालदारी और इज्जत की अलामत खयाल किया जाता था। लेकिन जुवा आपस में फित्ना फसाद का बाइस बनता और पुश्त दर पुश्त झगडे जारी रहते इस तरह मुआशरे का अम्न खराब हो जाता उन के इलावा जुए की बेशुमार खराबियां थीं जिन की बिना पर अल्लाह तआला ने इस की मुमानअत का हुक्म दिया। शराब और जुए की मुमानअत के अहकामात का नुजूल ब-तदरीज हुवा। क्यूं कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मक्का से हिजरत कर के मदीना शरीफ गए तो वहां भी इस बुराई का रवाज था लेकिन कुछ सहाबा ऐसे थे कि जो फितरतन बुराइयों से इजतिनाब किया करते थे और वोह कभी शराब और जुए के करीब न गए। मदीनए तय्यिबा में पहुंचने के बा'द सहाबा को शराब और जुए और जहालत की रस्मों के बुरे असरात का बहुत एहसास हुवा तो हजरते उमर, मुआज बिन जबल और चन्द अन्सार सहाबा नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज किया कि शराब और जुवा इन्सानी अक्ल को खराब करते हैं और उस से माल बरबाद होता है लिहाजा उस के बारे में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या इर्शाद है ? इस सुवाल के जवाब में अल्लाह तआला की तरफ से मुन्दरजए जैल आयत का नुजूल हुवा जिस में शराब और जुए से रोकने के लिये इब्तिदाई हुक्म था।

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ

तुम से शराब और जुए का हुक्म पूछते हैं तुम फरमा दो कि उन दोनों में बडा गुनाह है और लोगों के लिये कुछ दुन्यवी नफ्अ भी है और उन का गुनाह उन के नफ्अ से बडा है।

(पारह 2, सूरए अल बकरा, आयत : 219)

इस आयत में बतलाया गया है कि लोगों अगर्चे तुम्हें शराब और जुए में जाहिरी तौर पर फाएदे नजर आते हैं या'नी शराब से सुकून

मिलता हुवा महसूस होता है और जुए से दौलत आती है लेकिन येह दोनों बहुत सी बुराइयां पैदा करने का सबब बनते हैं। जब बुराइयां और उलझनें पैदा हों तो फिर न सुकून मुयस्सर आता है और न ही दौलत आने के इम्कान रहते हैं उस की वज्ह येह है कि जुए के नतीजे में जो शख़्स हारता है उस के दिल में जीतने वाले के खिलाफ इन्तिकामी आग भडक उठती है जिस से झगडा और फसाद पैदा हो जाता है। तो लिहाजा जुए से फाएदा एक फरीक को हुवा वोह उसी के लिये बे सुकूनी और झगडे का सबब बनता। लिहाजा उस से बिल वासिता नुक्सान का अन्देशा हुवा। लिहाजा मुन्दरजए बाला हुक्म की बिना पर लोगों को तरगीब दी गई ताकि वोह शराब और जुवा तर्क कर दें। फिर जुए की कतई हुरमत के बारे में इस आयत का नुजूल हुवा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ
فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝

ऐ ईमान वालो ! शराब और जुवा और बुत और पांसे शैतान के गन्दे कामों में से हैं पस इन से बचते रहना ताकि तुम फलाह पाओ।

(पारह 7, सूरए अल माइदह, आयत : 90)

इस आयत की रू से चार चीजों को कतई तौर पर हराम कर दिया गया। एक शराब, दूसरे जुवा और तीसरे अन्साब या'नी जहां बुत पूजा के लिये रखे जाते थे और चौथे पांसे या'नी फालगीरी और कुरआ अन्दाजी। इन आ'माल को शैतानी अमल करार दिया गया। क्यूं कि इन तमाम से बुराइयां जनम लेती हैं और शैतान भी बुराई पैदा करने के लिये पेश दर पेश रहता है और इन चीजों के जरीए शैतान भी बुराई फेला ने का खूब मौकअ मिलता है। क्यूं कि शराब और जुए के जरीए वोह लोगों में दुश्मनी डलवा देता है और दुश्मनी की बिना पर लोगों को फसाद में मुब्तला कर के अल्लाह की याद से गाफिल कर देता है इस लिये उन्हें शैतानी आ'माल करार दे कर हमेशा के लिये तर्क करने की ताकीद की गई है। इसी लिये इर्शादे बारी तआला है।

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝۹۱

शैतान येही चाहता है कि तुम में शराब और जुए की बिना पर दुश्मनी और बुग्ज डलवाए और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोके, तो क्या तुम बा'ज आए।

(पारह 7, सूरए अल माइदह, आयत : 91)

जूए के लिये अरबी में मेसर का लफ्ज इस्ति'माल हुवा है और उस के मा'नी तक्सीम करने के हैं। जमानए जाहिलियत में मुख्तलिफ तरीकों से जुवा खेला जाता था। जूए की एक किस्म येह भी थी कि ऊंट जब्ह कर के उस के हिस्से तक्सीम करने में जुवा खेला जाता। बा'ज को एक या जियादा हिस्से मिलते, बा'ज महरूम रहते, महरूम रहने वालों को पूरे ऊंट की कीमत अदा करनी पडती गोश्त वगैरा फुकरा में तक्सीम कर दिया जाता। इस तक्सीम की मुनासबत से जुए को मेसर कहा जाता है। हर वोह खेल जिस में जुए की अलामत मौजूद हो वोह मेसर है। लिहाजा ताश के खेल में हार जीत पर शर्त लगाना जुवा है। ऐसे ही घोडों की दौड पर जीतने वाले घोडे के हक में शर्त लगाना जुवा है किसी चीज की टास पर शर्त लगाना जुवा है ऐसे ही घोडों चोसर और शत्रंज के खेल पर शर्त मुकर्रर कर के हार जीत की जाती है जिस का शुमार जुए में होता है। लोट्री वगैरा भी जुवा है ख्वाह किसी सूरत में हो। इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज पर शर्त मुकर्रर करना जिस में जीत और हार हो हराम है।

मगर याद रहे कि वोह खेल जिन में शर्त मुकर्रर नहीं वोह भी मन्अ हैं। मसलन शत्रंज, ताश चोसर, गंजिफा, बारा कुटी वगैरा सब मन्अ हैं क्यूं कि उन में दिल इस कदर लगता है कि खेलने वालों को येह खबर नहीं होती कि कितना वक्त उस में जाएअ किया और कितने वक्त की नमाज फौत हो गई। बसा औकात खेलने वालों को देखा होगा कि घर से किसी काम को निकले मगर रास्ते में शत्रंज देखने खडे हो गए तो सब कुछ भूल गए। फिर उस में दिल इस कदर लगता है कि वोह

और काम के नहीं रहते । लिहाजा ऐसे आदमियों के जाती कामों में खलल शुरूअ हो जाता है । चुनान्चे जो काम ऐसा हो जिस से यादे इलाही और जरूरी कामों से गफ्लत हो जाए वोह भी मन्अ है । अहादीस की रू से भी जुवा मन्अ और हराम है ।

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهٰى عَنِ الْخَمْرِ وَ
الْمَيْسِرِ وَالْكُوْبَةِ وَالْغُبَيْرَاءِ وَقَالَ كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ ۔

हजरते अब्दुल्लाह बिन अम्र से रिवायत है कि बेशक नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब, जुवा और नर्द खेलने और गबीरा से मन्अ किया है और आप ने फरमाया हर नशा आवर चीज हराम है । (अबू दावूद)

इस हदीस में भी तमाम उन चीजों को हराम करार दिया गया है जिन्हें अल्लाह तआला ने मजकूरा बाला आयात में हराम करार दिया है ।

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَاقٌّ وَلَا قَمَّارٌ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا مُدْمِنُ خَمْرٍ ۔

हजरते अब्दुल्लाह बिन अम्र से रिवायत है कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया मां बाप की नाफरमानी करने वाला जुवा खेलने वाला, एहसान जतलाने वाला और हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा ।

इस हदीस में फरमाया गया है कि जुवा उन अफ्आल से है जो इन्सान को जन्नत से महरूम कर देते हैं या'नी आखिरत में नजात हासिल नहीं होती । जुवा एक ऐसी ला'नत है कि मुआशरे में उस के मुआशी समाजी और मजहबी लिहाज से बेशुमार नुक्सानात हैं । एक बुन्यादी नुक्सान तो येह होता है कि जुए का आदी मेहनत कर के कमाने से महरूम हो जाता है । क्यूं कि उस की ख्वाहिश येही होती है कि बैठे बिठाए एक शर्त लगा कर दूसरे का माल चन्द मिनिट में हासिल कर ले जिस में न कोई मेहनत है न मशक्कत जुए का मुआमला अगर दो चार आदमियों के दरमियान हो तो उस में भी मुजर्रतें बिल्कुल नुमाया नजर आती हैं । लेकिन इस नए दौर में जिस तरह शराब की नई नई किस्में

और नए नए नाम रख लिये गए, सूद की नई नई किस्में और नए नए नाम इज्तिमाई तरीके बेंकिग के नाम से इजाद कर लिये गए हैं, इसी तरह किमार और जुए की भी हजारों किस्में चल गई हैं। जिन में बहुत सी किस्में ऐसी इज्तिमाई हैं कि कौम का थोडा थोडा रुपया जम्अ होता है और जो नुक्सान होता है वोह उन सब पर तक्सीम हो कर नुमाया नहीं रहता और जिस को येह रकम मिलती है उस का फाएदा नुमाया होता है। इस लिये बहुत से लोग उस के शख्सी नफ्अ को देखते हैं। लेकिन कौम की इज्तिमाई नुक्सान पर तवज्जोह नहीं रखते इस लिये उन का खयाल उन नई किस्मों के जवाज की तरफ चला जाता है हांला कि उस में वोह सब मुजर्रतें मौजूद हैं जो दो चार आदमियों के जुए में पाई जाती है और एक हैसियत से इस का जरर उस कदीम किस्म के किमार से बहुत जियादा और इस के खराब असरात दौरे रस और पूरी कौम की बरबादी का सामान हैं। क्यूं कि इस का लाजिमी असर येह होगा कि मिल्लत के आम अफराद की दौलत घटती जाएगी और चन्द सरमायादारों के सरमाए में मजीद इजाफा होता रहेगा। इस का लाजिमी नतीजा येह होगा कि पूरी कौम की दौलत समेट कर महदूद अफराद में मुर्तकिज हो जाएगी जिस का मुशाहदा सट्टा बाजी और किमार की दूसरी किस्मों में रोज मर्रा होता रहता है और इस्लामी मुआशियात का अहम उसूल येह है कि हर ऐसे मुआमले को हराम करार दिया जिस के जरीए दौलते मिल्लत से समेट कर चन्द सरमायादारों के हाथों में चली जाए जूए में चुंकि दो फरीक होते हैं और एक शख्स का फाएदा दूसरे फरीक के नुक्सान पर मौकूफ है। जीतने वाले का नफ्अ हारने वाले के नुक्सान का नतीजा होता है और जूए से दौलत में इजाफा नहीं होता बल्कि इस खेल के जरीए एक की दौलत सल्ब हो कर दूसरे के पास पहुंच जाती है, इस लिये किमार मजमूई हैसियत से कौम की तबाही का बाइस बनता है। क्यूं कि वोह इन्सान जिसे इसारो हमदर्दी का पैकर होना चाहिये, वोह एक खूंखार दरिन्दे की खासियत इख्तियार कर लेता है और दूसरे मुसलमान के नुक्सान में अपना नफ्अ समझने लगता है और अपनी पूरी

काबिलियत उस खुद गर्जी पर सर्फ करता है। इस तरह जुवारी की सलाहियतें खत्म हो जाती हैं। और मिल्लत को उन का कोई फाएदा नहीं पहुंचता। जूए का एक नुक्सान येह भी है कि येह बातिल तरीके पर दूसरे लोगों का माल हज्म करने का एक जरीआ है कि बिगैर किसी मा'कूल मुआवजे के दूसरे भाई का माल ले लिया जाता है जिसे इस्लाम ने नाजाइज करार दिया है। जूए में एक बडी खराबी येह भी है कि दफ्अतन बहुत से घर बरबाद हो जाते हैं। लखपती आदमी फकीर बन जाता है जिस से सिर्फ येही शख्स मुतअस्सिर नहीं होता जिस ने जूए में बाजी हारी हो बल्कि उस का पूरा घराना और खानदान मुसीबत में पड जाता है और अगर गौर किया जाए तो मुआशरे के दूसरे लोग भी मुतअस्सिर होते हैं क्यूं कि जिन लोगों ने उस से लेन देन किया होता है वोह भी उस की हार से नुक्सान उठाते हैं। जूए में एक नुक्सान येह भी है कि उस से इन्सान की कुव्वते अमल सुस्त हो कर बाजी जीतने पर लग जाती है और वोह बजाए उस के कि अपने हाथ या दिमाग की मेहनत से कोई कारोबार कर के दौलत हासिल करे। वोह सिर्फ दूसरे लोगों को हराने की सोच में लगा रहता है जिस से इन्सान जेहनी तौर पर मफ्लूज हो जाता है।

तो उन इन्फिरादी और इज्तिमाई नुक्सानात से मा'लूम हुवा कि जुवे की इन्तिहा जिल्लत और रुस्वाई है और तमाम बुराइयों का अन्जाम ऐसा ही है। इस लिये जो हजरात इस बुराई में खुदा न ख्वास्ता मुलव्विस हों। तो उन्हें जूए से तौबा कर लेनी चाहिये, क्या मा'लूम दूसरा सांस आएगा कि नहीं।

﴾16﴿ हुस्न परस्ती से तौबा

नजरे शहवत से हसीन चेहरों को देखना हुस्न परस्ती कहलाता है। येह एक ऐसा फे'ल है जो इन्सान को जिना तक ले जाता है इस लिये इस्लाम में इस की सख्त मुमानअत है। जो शख्स इस से बच जाए वोह बडा खुश किस्मत है।

नौ जवानों में हुस्न परस्ती का जज्बा आम होता है। खुसूसन तल्बा और तालिबात जवानी के मैदान में कदम रखते हैं तो वोह फित्नए नजर का शिकार हो कर एक दूसरे के साथ हुस्न परस्ती में फंस जाते हैं और आखिर बुरे नताइज बरआमद होते हैं। बुरी नजर से औरतों को देखने से बे शुमार बुराइयां पैदा होती हैं बल्कि बद नजरी तमाम फवाहिश की बुन्याद है। दानिशमन्दों ने नजर को इश्क का पैगाम रसां करार दिया है। क्यूं कि नजरें ही जब एक दूसरे को देख कर फरेफ्ता होती हैं तो फिर दिलो दिमाग में बुरे खयालात जनम लेते हैं जो इन्सान को औरत से जिन्सी मिलाप की तरफ रागिब करते हैं हत्ता कि जिना जैसे गुनाहे कबीरा में लोग मुलव्विस हो जाते हैं। लिहाजा इस्लाम ने हर बुराई की बुन्याद को जड से उखाडने के उसूल पेश किये हैं। निगाह पर इस्लाम ने अख्लाकी पाबन्दी आइद की है कि किसी को शहवत आमेज निगाहों से न देखो, निगाह को नीचा रखना फितरत और हिक्मते इलाही के ऐन मुताबिक है क्यूं कि औरतों की चाहत और दिल में उन की ख्वाहिशे फितरत का तकाजा है। इर्शादे बारी तआला है कि।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ

औरतों जैसी दिलकश चीजों पर इन्सान माइल हो जाता है।

(पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 14)

इस कुदरती तकाजे को पूरा करने का जाइज तरीका शादी है। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी नजर के फित्नों से बचने के लिये बहुत ताकीद की है। इस के मुतअल्लिक आप की अहादीस येह हैं।

(1) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ يَا عَلِيُّ لَا تُتْبِعِ النَّظْرَةَ النَّظْرَةَ فَاِنَّ لَكَ الْاُوْلٰى وَلَيْسَتْ لَكَ الْاٰخِرَةُ

हजरते बुरैदा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हजरते अली से फरमाया कि एक बार नजर उठने के बा'द दूसरी बार नजर नहीं उठनी चाहिये, पहली बार इत्तिफाक की नजर मुआफ है और दोबारा जाइज नहीं। (तिरमिजी)

(2) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ فَإِذَا خَرَجَتِ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ ۔

हजरते इब्ने मस्ऊद से रिवायत है कि वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि औरत सित्र है जब बाजार में निकलती है तो शैतान उस को घूरता है। (तिरमिजी)

(3) وَعَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَنْظُرُ اِلٰى مَحَاسِنِ امْرَاَةٍ اَوَّلَ مَرَّةٍ ثُمَّ يَغُضُّ بَصَرَهٗ اِلَّا اَحْدَثَ اللّٰهُ لَهٗ عِبَادَةً يَجِدُ حَلَاوَتَهَا ۔

हजरते अबू उमामा से रिवायत है वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं आप ने फरमाया किसी मुसलमान की हसीन औरत पर एक बार नजर पड जाए वोह अपनी नजर को उस से फेर ले तो अल्लाह तआला उस के लिये एक इबादत पैदा करेगा वोह उस का मजा पाएगा। (अहमद)

(4) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْمَرْاَةَ تُقْبِلُ فِيْ صُوْرَةِ شَيْطَانٍ وَتُدْبِرُ فِيْ صُوْرَةِ شَيْطَانٍ اِذَا اَحَدُكُمْ اَعْجَبَتْهُ الْمَرْاَةُ فَوَقَعَتْ فِيْ قَلْبِهٖ فَلْيَعْمِدْ اِلَى امْرَاَتِهٖ فَلْيُوَاقِعْهَا فَاِنَّ ذٰلِكَ يَرُدُّ مَا فِيْ نَفْسِهٖ ۔

हजरते जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया औरत शैतान की सूरत में आती है और शैतान की सूरत में जाती है। जब तुम को कोई महबूब लगे तो वोह अपनी औरत की तरफ कस्द करे उस से सोहबत करे तो येह उस के दिल में आई हुई चीज को दूर कर देगी। (मुस्लिम शरीफ)

हिकायत

वहब बिन मुनब्बेह कहते हैं कि बनी इसराईल में एक आबिद था कि उस के जमाने में कोई उस के मुकाबिल न था। उस के वक्त में तीन भाई थे उन की एक बहन भी जो बाकिरा थी, उस के सिवाए वोह और बहन न रखते थे। इत्तिफाकन उन तीनों भाइयों को कहीं लडाई पर जाना पडा। उन को कोई ऐसा शख्स नजर न आया जिस के पास अपनी बहन को छोड जाएं और उस पर भरोसा करें, लिहाजा सब ने इस राय पर इत्तिफाक किया कि उस को आबिद के सिपुर्द कर जाएं। वोह आबिद उन

के खयाल के मुताबिक तमाम बनी इसराईल में सका और परहेजगार था । चुनान्चे उस के पास आए और अपनी बहन को हवाले करने की दरख्वास्त की कि जब तक हम लडाई से वापस आएं, हमारी बहन आप के सायाए आतिफत में रहे। आबिद ने इन्कार किया और उन से और उन की बहन से खुदा की पनाह मांगी। वोह न माने, और इस्रार करते रहे कि उन की बहन को अपनी निगरानी में रखना मन्जूर कर लें । हत्ता कि आबिद ने उन की दरख्वास्त को मन्जूर कर लिया और कहा कि अपनी बहन को मेरे इबादत खाने के सामने किसी घर में छोड जाओ उन्हों ने एक मकान में उस को ला उतारा और चले गए। वोह लडकी आबिद के करीब एक मुद्दत तक रहती रही । आबिद उस के लिये खाना ले कर चलता था और अपनी इबादत खाने के दरवाजे पर रख कर कवाड बन्द कर लेता था और वापस अन्दर चला जाता था और लडकी को आवाज देता था वोह अपने घर से आ कर ले जाती थी।

रावी ने कहा कि फिर शैतान ने आबिद को नरमाया और उस को खैर की तरगीब देता रहा और लडकी का दिन में इबादत खाने तक आना उस पर गिरां जाहिर करता रहा कि कहीं ऐसा न हो कि येह लडकी दिन मे खाना लेने के लिये घर से निकले और कोई शख्स उस को देख कर उस की इस्मत में रखना अन्दाज हो, बेहतर येह है कि उस का खाना ले कर उस के दरवाजे पर रख आया करे। उस में अज्रे अजीम मिलेगा। गर्ज येह कि आबिद खाना ले कर उसी के घर जाने लगा । बा'द एक मुद्दत में फिर शैतान उस के पास आया और उस को तरगीब दी और उस बात पर उभारा कि अगर तू उस लडकी से बात चीत किया करे तो तेरी कलाम से येह मानूस हो। क्यूं कि उस को तन्हाई से सख्त वहशत होती है। शैतान ने उस का पीछा न छोडा हत्ता कि वोह आबिद उस लडकी से बात चीत करने लगा। अपने इबादत खाने से उतर कर उस के पास आने लगा। फिर शैतान उस के पास आया और उस से कहा कि बेहतर येह है कि तू इबादत खाने के दर पर और वोह अपने घर के दरवाजे पर बैठे और दोनों बाहम बातें करो ताकि उस को उन्स हो आखिर कार शैतान ने

उस को सोमा से उतार कर दरवाजे पर ला बिठाया। लडकी भी घर से दरवाजे पर आई। आबिद बातें करने लगा। एक जमाने तक येह हाल रहा, शैतान ने आबिद को फिर कारे खैर की रग्बत दी और कहा बेहतर है कि तू खुद लडकी के घर के करीब जा कर बैठे और हम कलामी करे उस में जियादा दिलदारी है। आबिद ने ऐसा ही किया। शैतान ने फिर तहसीले सवाब के रग्बत दी और कहा कि अगर लडकी के दरवाजे से करीब हो जाए तो बेहतर है ताकि उस को दरवाजे तक आने की भी तक्लीफ न उठानी पडे। आबिद ने येही किया कि अपने सोमए से लडकी के दरवाजे पर आ कर बैठता था और बातें करता था। एक अर्से तक येही कैफियत रही। शैतान ने फिर आबिद को उभारा कि अगर ऐन घर के अन्दर जा कर बातें किया करे तो बेहतर है ताकि लडकी बाहर न आवे और कोई उस का चेहरा न देख पाए गर्ज आबिद ने येह शेवा इख्तियार किया कि लडकी के घर के अन्दर जा कर दिन भर उस से बातें किया करता। और रात को अपने सोमए में चला आता। उस के बा'द फिर शैतान उस के पास आया। और लडकी की खूब सुरती उस पर जाहिर करता रहा, यहां तक कि आबिद ने लडकी के जानू पर हाथ मारा। और उस के रुख्सार का बोसा ले लिया। फिर रोज बरोज शैतान लडकी को उस की नजरों में आराइश देता रहा और उस के दिल पर गल्बा करता रहा, हत्ता कि वोह उस से मुलव्विस हो गया और लडकी ने हामिला हो कर एक लडका जना। फिर शैतान आबिद के पास आया और कहने लगा कि अब येह बताओ कि अगर इस लडकी के भाई आ गए और इस बच्चे को देखा तो तुम क्या करोंगे ? मैं डरता हूं कि तुम जलील हो जाओ या वोह तुम्हें रुस्वा करें। तुम इस बच्चे को लो और जमीन में गाड दो। येह लडकी जरूर इस मुआमले को अपने भाइयों से छुपाएगी। इस खौफ से कि कहीं वोह न जान लें कि तुम ने इस के साथ क्या हरकत की। आबिद ने ऐसा ही किया और लडके को जमीन में गाड दिया।

फिर शैतान ने उस से कहा कि क्या तुम यकीन करते हो कि येह लडकी तुम्हारी नाशाइस्ता हरकत अपने भाइयों से पोशीदा रखेगी।

हरगिज नहीं तुम इस को भी पकडो और जब्ह कर के बच्चे के साथ दफ्न कर दो। गर्ज उस आबिद ने लडकी को जब्ह किया बच्चे समेत गढे मे डाल कर उस पर एक बडा भारी पथ्थर रख दिया और जमीन को बराबर कर के अपने इबादत खाने में जा कर इबादत करने लगा। एक मुद्दत गुजरने के बा'द लडकी के भाई लडाई से वापस आए और आबिद के पास जा कर अपनी बहन का हाल पूछा। आबिद ने उन को उस के मरने की खबर दी, अफ्सोस जाहिर कर के रोने लगा। और कहा वोह बडी नेक बीबी थी, देखो येह उस की कब्र है, भाई कब्र पर आए और उस के लिये दुआए खैर की और रोए और चन्द रोज उस की कब्र पर रह कर अपने लोगों में आए।

रावी ने कहा, जब रात हुई और वोह अपने बिस्तरों पर सोए तो शैतान उस को ख्वाब में एक मुसाफिर आदमी की सूरत बन कर नजर आया। पहले बडे भाई के पास गया। और उस की बहन का हाल पूछा। उस ने आबिद का उस के मरने की खबर देना और उस पर अफ्सोस करना और मकामे कब्र दिखाना बयान किया, शैतान ने कहा सब झूट है, तुम ने क्यूं कर अपनी बहन का मुआमला सच मान लिया। आबिद ने तुम्हारी बहन से फे'ले बद किया। वोह हामिला हो गई और एक बच्चा जना। आबिद ने तुम्हारे डर के मारे उस बच्चे को उस की मां समेट जब्ह किया और एक गढा खोद कर दोनों को डाल दिया। जिस घर में वोह थी उस के अन्दर दाखिल होने में वोह गढा दाहनी जानिब पडता है। तुम चलो और उस घर में जा कर देखो। तुम को वहां दोनों मां बेटे एक जगह मिलेंगे जैसा कि मैं तुम से बयान करता हूं। फिर शैतान मंझले भाई के ख्वाब में आया, उस से भी ऐसा ही कहा, फिर छोटे के पास गया, उस से भी येही गुफ्तगू की। जब सुब्ह हुई तो सब लोग बेदार हुए और येह तीनों अपने अपने ख्वाब से तअज्जुब में थे। हर एक आपस में एक दूसरे से बयान करने लगा कि मैं ने रात अजीब ख्वाब देखा। सब ने बाहम जो कुछ देखा था बयान किया। बडे भाई ने कहा येह ख्वाब फकत एक खयाल है और कुछ नहीं, येह जिक्र छोडो और अपना काम करो। छोटा

कहने लगा कि मैं तो जब तक उस मकाम को देख न लूंगा, बा'ज न आऊंगा। तीनों भाई चले, जिस घर में उन की बहन रहती थी, आए। दरवाजा खोला और जो जगह ख्वाब में उन को बताई गई थी, तलाश की और जैसा उन से कहा गया था अपनी बहन और उस के बच्चे को एक गढे में जब्ह किया हुवा पाया, उन्हों ने आबिद से कुल कैफियत दरयाफ्त की। आबिद ने शैतान के कौल की अपने फे'ल के बारे में तस्दीक की, उन्हों ने अपने बादशाह से जा कर नालिश की आबिद सोमए से निकाला गया और उस को दार पर खींचने के लिये ले चले।

जब उस को दार पर खडा किया गया तो शैतान उस के पास आया और कहा कि तुम ने मुझे पहचाना ? मैं ही तुम्हारा वोह साथी हूं जिस ने तुम को औरत के फित्ने में डाल दिया यहां तक कि तुम ने उस को हामिला कर दिया और जब्ह कर डाला। अब अगर तुम मेरा कहना मानो और तुम मुझ को सज्दा किया करो तो मैं तुम को इस बला से नजात दूं। आबिद ने सज्दा किया। खुदा तआला से काफिर हो गया फिर जब आबिद ने कुफ्र बिल्लाह किया, शैतान उस को उस के साथियों के कब्जे में छोड कर चला गया। उन्हों ने उस को दार पर खींचा और वोह अपने अन्जाम को पहुंचा।

इस हिकायत से येह सबक हासिल करना चाहिये कि हुस्न परस्ती का अन्जाम बहुत बुरा होता है। दीनो दुन्या दोनों तबाह हो जाती हैं। इस लिये ऐसे बुरे अन्जाम वाले कामों से हमेशा के लिये तौबा कर लेनी चाहिये।

﴾17﴿ नाच और गाने से तौबा

इस्लाम में नाच गाने की कोई गुन्जाइश नहीं क्यूं कि रक्स और गाना दोनों शैतानी हथकन्डों में से हैं, जिस से शैतान इन्सान को राहे रास्त से गुमराह करता है इस लिये इस्लाम में नाच और गाना हराम है और उसे बतौरे पेशा इख्तियार करना भी हराम है नाच और गाना और हया सोज एकटिंग और उस किस्म के दूसरे बेहुदा का सनफी जज्बात को

उभारते हैं और तबीअत में जिन्सी मैलान उभारता है। इस लिये येह तमाम जिना के रास्ते के मुआविन हरबे हैं। और तरक्की पसन्द लोगों ने उसे फन या'नी आर्ट का नाम दे कर मुआशरे में दाखिल कर रखा है। इस से इस्लामी मुआशरे का तकद्दुस मजरूह होता है। येही वज्ह है कि इस्लाम ने निकाह के इलावा जिन्सी जज्बात को तस्कीन देने वाले तमाम जराएअ को हराम करार दिया है। चुनान्चे इर्शादे बारी तआला है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

और जिना के करीब न जाओ बेशक वोह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह है।

(पारह 15, सूरए बनी इसराईल, आयत : 32)

जिना फह्हाशी की इन्तिहा है इस लिये इसे बिल्कुल हराम करार दिया गया है और इस के साथ ही वोह तमाम जराएअ जिन से जिना जनम ले सकता है वोह भी हराम हो गए। नाच गाने से चूंकि बुराई को फरोग मिलता है इस लिये इस आयत की रू से इस्लाम में वोह भी हराम है।

एक और मकाम पर इर्शाद फरमाया गया है कि।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

और कुछ लोग खेल की बातें खरीदते हैं कि अल्लाह की राह से समझ के बिगैर बेहका दें और उसे हंसी बना लें। उन के लिये जिल्लत का अजाब है।

(पारह 21, सूरए लुक्मान, आयत : 6)

राहे हिदायत को छोड कर नाच गाने और खेल तमाशे की तरफ रागिब होना नादानी और दीन से दूरी है। इस तरह शैतान मुख्तलिफ मशागिल और तफरीहात में फंसा कर अल्लाह के दीन और उस की राह से बेहकाना चाहता है जो इन्सान के लिये आखिरत में बाइसे अजाब होगा। इस आयत में लफ्ज **लहवल हदीसि** आया है जिस का मतलब हर वोह चीज है जो अल्लाह की इबादत और उस की याद से गाफिल कर दे। मसलन फुजूल किस्सा गोई, हंसी मजाक की बातें, वाहियात मश्गले और गाना बजाना वगैरा सब **लहवल हदीसि** है।

हजरते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से इस लफ्ज की तशरीह पूछी गई तो आप ने तीन मरतबा कसम खा कर इर्शाद फरमाया : होव वल्लाहिल गिनाउ "खुदा की कसम इस से मुराद गाना है और राग रंग है"।

एक और हदीस में है कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने मजामीर या'नी आलाते मौसीकी को तबाह करने और तोड डालने के लिये मब्ऊस फरमाया है।

एक और जगह आप ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स गाने वाली लोंडी की मज्लिस में बैठ कर उस का गाना सुनेगा तो कियामत के रोज उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा।

हजरते सफ्वान बिन उमय्या से रिवायत है कि हम एक बार नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मज्लिस में थे, इतने में अम्र बिन कुर्रह ने आ कर अर्ज किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये अल्लाह तआला ने शकावत और बद बख्ती मुकर्रर फरमाई है कि मुझे बिगैर दफ बजाने के रिज्क नहीं मिल सकता। आप मुझ को गाने बजाने की इजाजत दे दें। मैं फोहश गाना नहीं गाऊंगा, नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में इर्शाद फरमाया कि मैं तुझे हरगिज इजाजत नहीं दूंगा। न तेरी इज्जत करूंगा और न ही तुझ को चश्मे अता से देखूंगा, ऐ खुदा के दुश्मन ! तू झूट बोलता है। अल्लाह तआला ने तुझे हलाल और पाक रिज्क अता फरमाया है और तू खुदा के रिज्क में हराम इख्तियार करता है। अगर मैं तुझ को इस से पेशतर मन्अ कर चुका होता तो इस वक्त तुझ से बुरी तरह पेश आता। यहां से चले जाओ और खुदा के सामने तौबा करो। याद रख अगर अब तूने ऐसा किया तो तुझ को दर्दनाक सजा दी जाएगी, तुझ को तेरे घर बार से निकाल कर शहर बदर कर दूंगा और तेरा साजो सामान मदीने के गरीबों में तक्सीम कर दिया जाएगा।

येह बातें सुन कर अम्र बिन कुर्रह निहायत ही अफ्सुर्दा हो कर वहां से उठ कर चला गया। जब वोह जा चुका तो हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया येही लोग आसी और नाफरमान हैं जो कोई इन में से बिगैर तौबा के मरेगा, हश्र में अल्लाह तआला उस को

नंगा कर के उठाएगा कपडे का एक टुकडा भी उन के जिस्म पर न होगा । और जब खडा होने लगेगा तो लड खडा कर गिर पडेगा ।

हजरते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गाने वाली लोंडियों के खरीद ने और बेचने और उन को गाने बजाने की ता'लीम देने से मन्अ फरमाया है । और इर्शाद फरमाया कि उन की कीमत खाना हराम है। और फिर ऊपर वाली आयत तिलावत फरमाई या'नी बा'ज लोग ऐसे हैं कि लह्व की बातें खरीदते हैं ताकि लोगों को खुदा की राह से गुमराह कर दें और उस को एक तमस्खुर समझें । ऐसे ही लोगों के लिये जिल्लत आमेज अजाब है ।

हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रिवायत किया कि हुजूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया है, मुझ को अल्लाह तआला ने दो आवाजों से जिन में हमाकत और फुजूर पाया जाता है मन्अ फरमाया है, एक नग्मे की आवाज, दूसरे मुसीबत में चीख कर रोने, मुंह पीटना, गिरेबान फाडने और शैतानी नौहा करने से मन्अ फरमाया है ।

हजरते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आं हजरत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद नक्ल करते हैं कि जब मेरी उम्मत पांच चीजों को हलाल समझने लगेगी तो उन पर तबाही नाजिल होगी ।

(1) जब उन में बाहमी ला'न ता'न आम हो जाए ।

(2) मर्द रेशमी लिबास पहनने लगें ।

(3) जब लोग गाने बजाने वाली और नाचने वाली औरतें रखने लगें ।

(4) शराबें पीने लगें ।

(5) और लज्जते हम जिन्स पर किफायत की जाने लगे ।

हजरते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आं हजरत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि आखिरी जमाने में कुछ लोग बन्दर और खिंजीर की शक्ल में मस्ख हो जाएंगे । सहाबा ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! क्या वोह तौहीदो रिसालत का इकरार करते होंगे ? फरमाया हां ! वोह (बराए नाम) नमाज, रोजा, और हज भी करेंगे, सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! फिर उन का येह हाल क्यूं होगा ? फरमाया वोह आलाते मौसीकी,

रकासए औरतों और तब्ला व सारंगी वगैरा के रस्या होंगे और शराबें पीया करेंगे और रात भर मस्रूफे लह्व रहेंगे और सुब्ह होगी तो बन्दर और खिंजीरों की शक्ल में मस्ख हो चुके होंगे ।

नाच और गाने की हुर्मत को जानते हुए भी बहुत से लोग इस ला'नत में मुलव्विस हैं और इसे जरीअए मुआश बनाने में फख्र महसूस किया जाता है। लेकिन मेरे दोस्त ! हकीकत के आगे आंखें बन्द कर लेना नादानी है। इस लिये नाचने गाने वाले हजरात को इस फन से तौबा कर के राहे रास्त पर आ जाना चाहिये।

हिकायत

एक दफ्आ का जिक्र है कि बसरे में एक निहायत खूब सूरत और निहायत ही शकीला और जमीला खुश इल्हान आवाज से गाने वाली औरत रहती थी उस के गाने की आवाज इतनी दिलकश और पुर कशिश थी कि जो उसे एक बार सुन लेता था, तो फिर उसे बार बार सुनने के लिये बेकरार हो जाता था। वोह अपने पास आने वालों को बडी दिलैरी से पेश आती कि उस का चर्चा बसरे की गली गली में था। उस का नाम शअवाना था। जहां कहीं खुशी की तकरीब होती तो उसे नाच गाने के लिये जरूर बुलाया जाता।

एक रोज वोह इत्तिफाक से एक मकाम पर मुजरा करने के लिये गई और लोंडियां भी उस के साथ थीं। बडे नाजो ना'म से उस ने मुजरा शुरूअ किया। गाने बजाने की महफिल जमाने की कोशिश की मगर कुछ देर के बा'द उस ने महसूस किया कि उस की महफिल में सामईन दिलचस्पी नहीं ले रहे बल्कि थोडे से फासिले पर एक मज्लिसे वा'ज गरम है लोग उस की तरफ हमा तन मुतवज्जेह हैं। बडा हुजूम है, एक बा-रीश [दाढी वाला] बा रो'ब [रोब वाला] चेहरा बुजुर्ग अल्लाह की बातें सुना रहे हैं और लोग बडी महब्बत से महव हैं बल्कि कुछ लोगों पर ऐसी हालत तारी थी कि लोग चीखें मार मार कर रो रहे थे । जब शअवाना के दिल में येह खयाल पैदा हुवा कि आज की कमाई तो गई। तो

उस ने एक लौंडी को मज्लिस में भेजा कि जाओ देख कर आओ, वहां क्या हो रहा है ? लोग मेरी तरफ आज मुतवज्जेह नहीं और उधर जियादा मुतवज्जेह क्यूं हैं ? जो लौंडी गई तो उस ने जा कर देखा कि मज्लिसे वा'ज पूरे जोबन पर है। अजाबे कब्र और हश्र का बयान हो रहा है और लोगों पर हालते रिक्कत तारी है। खौफे खुदा से कोई इधर गिर पडा है कोई उधर। लौंडी के कान में जब उस बुजुर्ग की आवाज पडी तो उस पर भी मस्ती तारी हो गई।

शअवाना ने उस लौंडी का इन्तिजार कर के फिर दूसरी लौंडी भेजी कि जाओ पता तो करो कि वहां क्या बात है ? जब दूसरी लौंडी मज्लिस में गई तो वोह भी वहीं की हो कर रह गई हत्ता कि उस ने तीसरी भेजी फिर चौथी भेजी ? लेकिन उन में से कोई भी वापस न आई। आखिर शअवाना ने सोचा खुद जाऊं, पता करूं कि वहां क्या बात है ? जिसे भेजा वही वापस न आया। येह सोच कर खुद तमाशा देखने के लिये मज्लिसे वा'ज में आ गई जब वोह आई तो बुजुर्गों की जबान पर था कि है कोई गुनहगार कि वोह इस वक्त खुदा के हुजूर तौबा करे तो वोह उसे मुआफ करे ख्वाह वोह शअवाना, गाने बजाने वाली जितना बदकार और गुनहगार ही क्यूं न हो। जब येह अल्फाज शअवाना के कान में पडे तो दिल पर तीर सा लगा कि मैं इतनी बदकार हूं, कि आज मेरी गुनहगारी की मिसालें सरे राह दी जा रही हैं। निगाहे वली ने उस का कल्ब फेर दिया और उस के दिल में खौफे खुदा पैदा हो गया। वोह अपने माजी पर लरज गई और कहने लगी हाए अफ्सोस ! मेरी साबिका जिन्दगी गुनहगारी में क्यूं गुजरी ? ऐ अल्लाह ! क्या मेरी नजात होगी और जार जार रोने लगी कि आखों से आंसूओं की बरसात जारी हो गई।

उस मर्दे कलन्दर ने कहा ऐ बीबी ! अल्लाह तआला की जात से नाउम्मीद न हो वोह बडा करीम है। आज सच्चे दिल से उस के हुजूर तौबा कर, वोह तेरे सब गुनाह मुआफ कर देगा। अगर्चे तेरे गुनाह शअवाना के मानिन्द बेहद्दो हिसाब क्यूं न हों ? फिर उस ने जोर से चीख

मारी और कहा हाए अफ्सोस ! कि वोह शअवाना मैं ही हूं कि जिस की बुराई जर्बुल मिष्ल बनी तो आज आप की जबान पर मेरा नाम आया।

घर वापस गई, सारा माल खुदा की राह में लुटा दिया, सब लौंडियां आजाद कर दीं, नाच गाने से हमेशा के लिये कनाराकशी इख्तियार कर ली। गोशा नशीन हो कर इबादते इलाही में मश्गूल हो गई। हत्ता की उसी हालत में दारे फानी से कूच कर गई। कुछ अर्से बा'द ख्वाब में एक शख्स ने उसे जन्नत में देखा और उस ने पूछा कि ऐ शअवाना ! तुझे येह मकाम कैसे मिला ? उस ने जवाब में कहा कि मुझे जो कुछ मिला है वोह सब तौबा से मिला है।

﴾18﴿ जादू से तौबा

इस्लाम में जादू हराम और गुनाहे कबीरा है क्यूं कि जादू में शैतानी ताकत से ऐसे काम करवाए जाते है जो खिलाफे शरअ होते हैं जिस से इस्लाम का जाबिता अद्ल गैर मुतवाजुन हो जाता है। जादू के जरीए ऐसे लोगों का बुरा चाहा जाता है जिन्हें मा'लूम तक नहीं होता। लेकिन सिफ्ली ताकत के जरीए उन्हें नुक्सान पहुंचा दिया जाता है जो सरासर जुल्म और जियादती होती है। इस लिये इस्लाम जादू का सख्त मुखालिफ है।

लिहाजा जो लोग जादू करते हैं और जो करवाते हैं खुद सीखते हैं और दूसरों को सिखलाते हैं वोह गुनहगार और मुजरिम हैं। इस लिये नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से सख्ती से मन्अ फरमाया है उस से इन्सान का दीनो दुन्या दोनों तबाह हो जाते हैं लिहाजा जो लोग इस बुरे फे'ल में मुलव्विस हों। उन्हें पहली फुरसत में इस से तौबा कर लेनी चाहिये। कुरआने मजीद में मुख्तलिफ मकामात पर जादू का जिक्र किया गया है बल्कि एक मकाम पर जादूगरों के शर से पनाह मांगने की तालीम दी है।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ — और पनाह मांगता हूं मैं गिर्हों में फूंकने वालियों के शर से ।

(पारह 30, सूरए अल फलक , आयत : 4)

गिर्हों में फूंकना जादू के तरीकों और उस की खुसूसियात में से है। हदीस में है। مَنْ نَفَثَ فِي عُقْدَةٍ فَقَدْ سَحَرَ وَمَنْ سَحَرَ فَقَدْ أَشْرَكَ ؕ जिस ने गिर्हों में फूंका उस ने जादू किया और जिस ने जादू किया वोह शिर्क का मुर्तकिब हुवा। (अत्तबरानी)

मुन्दरजा बाला आयत और हदीस से वाजेह हुवा कि इस्लाम ने जिस तरह नुजूमी के पास गैब और राज की बातें मा'लूम करने की गरज से जाना हराम ठहराया है, उसी तरह जादू सीखने या जादूगरों के पास किसी मरज के इलाज या किसी मुश्किल को हल करने के लिये जाना हराम करार दिया है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से अपनी बराअत जाहिर करते हुए फरमाया है। لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَطَيَّرَ اَوْ تُطُيِّرَ لَهُ اَوْ تَكَهَّنَ لَهُ اَوْ سَحَرَ اَوْ سُحِرَ لَهُ ؕ

वोह शख्स हम में से नहीं जो बुरा शुगून ले या उस के लिये बुरा शुगून लिया जाए जिस के लिये कहानत की जाए या जो जादू करे या जादू कराए। (अल बजाज)

इब्ने मस्ऊद फरमाते हैं कि जिस शख्स ने ज्योतिशी या साहिर या काहिन के पास जा कर सुवालात किये और उस की बातों को सच माना उस ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाजिल शुदा हिदायत से कुफ्र किया। (बजाज)

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مُدْمِنُ خَمْرٍ وَلَا مُؤْمِنٌ بِسِحْرٍ وَلَا قَاطِعُ رَحِمٍ ؕ जन्नत में शराबी दाखिल न होगा और न जादू पर ए'तिकाद रखने वाला और कत्ए रेह्मी करने वाला। (इब्ने हब्बान)

येह हुरमत सिर्फ जादूगर ही की हद तक नहीं है बल्कि उस में जादू पर ए'तिकाद रखने वाले उस की हौसला अफ्जाई करने वाले और जादूगर की बातों को सहीह समझने वाले भी शामिल हैं और येह हुरमत इस सूरत में और बढ जाती है जब कि जादू का इस्ति'माल ऐसे अगराज के लिये हो जो फी नफ्सिही हराम हैं मसलन मियां बीवी के दरमियान तफरीक पैदा करने, किसी को जिस्मानी नुक्सान पहुंचाने वगैरा के लिये हो।

﴿19﴾ मजाक उडाने से तौबा

शरीअत की रू से किसी का मजाक उडाने या किसी को ठठ्ठा करना या किसी की आवाज और लहजे की इस तरह नक्ल उतारना कि

लोग हंसें, जाइज नहीं क्यूं कि मजाक से उमूमन दूसरे इन्सान का दिल दुखता है जो रन्जिश और दिल आजारी का सबब बनता है और इस्लाम में दूसरों को रन्जिश पहुंचाना जाइज नहीं क्यूं कि मजाक में दूसरों की तजहीक होती है और मजाक करने वाले में खुफ्या तकब्बुर और गुरूर का अन्सर पाया जाता है जिस की बिना पर इस्लाम में येह हराम है इसी लिये अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में फरमाया है कि :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ

ऐ ईमान वालो ! न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उडाएं । हो सकता है कि वोह उन से बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उडाएं हो सकता है कि वोह उन से बेहतर हों ।

(पारह 26, सूरए हुजूरात, आयत : 11)

इस आयत से येह बात मा'लूम हुई कि किसी सूरत में भी दूसरों का मजाक न उडाया जाए क्यूं कि येह बात इन्सानी तअल्लुकात और भाई चारे पर असर अन्दाज होती है इस लिये अल्लाह तआला ने तमस्खुर की तमाम सूरतों को नाजाइज करार दिया है ।

दूसरों का मजाक न उडाने के बारे में नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि अगर कोई शख्स ऐसे गुनाह में किसी की गीबत करे जिस से वोह तौबा कर चुका हो तो गीबत करने वाला इस गुनाह में मुब्तला हो कर मरता है ।

और नीज फरमाया कि किसी की हवा खारिज होने पर नहीं हंसना चाहिये क्यूं कि नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ फरमाया है क्यूं कि जो बात खुद किसी से मुम्किन है तो इस की वज्ह से हंसने की क्या जरूरत है ? और फरमाया कि जो इस्तिहजा करता है और लोगों पर हंसता है, तो कियामत के दिन बिहिश्त का दरवाजा खोला जाएगा और उस से कहा जाएगा कि आ जाओ वोह करीब होगा तो दरवाजा बन्द कर लेंगे, फिर दूसरे दरवाजे पर बुलाया जाएगा वोह अन्दर जाने की उम्मीद में करीब होगा तो फिर उसी तरह दरवाजा बन्द हो जाएगा । हत्ता कि वोह

रंजो अलम में तरस्ता रहेगा। येह एक किस्म का उस के साथ मजाक होगा और उसे एहसास दिलाया जाएगा कि तू दूसरों से इस्तिहजा क्यूं किया करता था ?

अल्लाह तआला के नज्दीक इन्सान की खूबी ईमान व इख्लास और तअल्लुक बिल्लाह में है न कि शक्लो सूरत और जाहो माल में। हदीस में आया है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَلَا اِلٰى اَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَّنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَاَعْمَالِكُمْ

अल्लाह तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे माल को नहीं देखता बल्कि वोह तुम्हारे दिलों और आ'माल को देखता है। (मुस्लिम)

लिहाजा किसी मर्द या औरत का इस बिना पर मजाक उडाना दुरुस्त नहीं कि वोह जिस्म या खिल्कत की किसी खराबी या माली इफ्लास में मुब्तला है।

रिवायत है कि एक मरतबा हजरते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद की पिन्डली खुल गई। उन की पिन्डलियां बहुत दुब्ली पतली थीं, बा'ज लोग देख कर हंस पडे लेकिन नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

اَتَضْحَكُوْنَ مِنْ دِقَّةِ سَاقَيْهِ، وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَهُمَا اَثْقَلُ فِي الْمِيْزَانِ مِنْ جَبَلِ اُحُدٍ

क्या तुम इन की पिन्डलियों के दुब्ला होने पर हंसते हो ? कसम है उस जात की जिस के हाथ में मेरी जान है वोह मीजान में उहुद पहाड से भी जियादा वज्नी होगी।

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उन अहादीस से मा'लूम हुवा कि इस्लाम में किसी सूरत में भी हंसी मजाक जाइज नहीं। बल्कि इस से हर मुम्किन बचने की ताकीद की गई है। बल्कि येह एक ऐसा गुनाहे बे लज्जत है कि इन्सान महसूस भी नहीं करता कि मैं ने कोई गुनाह किया है। लेकिन इस का आ'माल नामा गुनाहों से सियाह हो जाता है लिहाजा जो लोग इस आदत में मुब्तला हों उन्हें चाहिये कि इस आदत से हमेशा के लिये तौबा कर लें।

मुआशरे में दूसरों की मजाक करने की रस्मे आम है। जिन्दगी के जिस शो'बे में भी कोई शख्स जो दूसरों की निस्बत कम हैसियत

रखता हो तो दूसरे इसे तरह तरह की बातें बना कर मजाक करते हैं, बुरे लफ्जों से पुकारते हैं, उल्टा सीधा दिल आजारी करने वाला नाम रख देते हैं। इस तरह बुग्ज और कीना जनम लेता है। मद्रसों में तालिबे इल्म उस्तादो की मजाक करते है और अस्ल नाम बिगाड कर तरह तरह के मजाहिया नाम रख लेते है ऐसे ही दफातिर और कारखानों में आपस में एक दूसरे को मजाक करते हैं, ऐसे ही महल्लों में और मसाजिद में लोग किसी इन्सान को तज्लील का निशाना बना लेते हैं, येह तमाम उमूर इस्लाम के जाबितए अख्लाक के मुनाफी हैं, लिहाजा दूसरों को मजाक और हंसी का निशाना बनाने से हमेशा के लिये तौबा कर लेनी चाहिये वरना इस का अन्जाम दीनो दुन्या में इब्रतनाक होगा। आज जो लोग अपनी कुव्वत, जवानी और दौलत पर फख्र करते हुए दूसरों को मजाक का निशाना बनाते हैं, एक वक्त आता है कि जब वोह बूढे हो जाते हैं तो फिर उन की भी मजाक करने वाले पैदा हो जाते हैं लिहाजा इस रस्म से हमेशा के लिये तौबा कर लेनी चाहिये, अल्लाह तौबा कुबूल फरमाए। आमीन

(20) मां बाप को सताने से तौबा

मां बाप को सताना बुरा फे'ल है। लेकिन उन्हें मारना या तक्लीफ देना उस से भी बुरा है इसी लिये इस्लाम ने मां बाप की नाफरमानी और ईजा रसानी को गुनाहे कबीरा और हराम करार दिया है। वोह औलाद जो बडी हो कर मां बाप की नाफरमानी करती है, बात बात पर उन्हें बुरा भला कहती है या मां बाप को गालियां निकालती है या अपने नाजाइज मुताल्बात पर उन्हें मारती पीटती है वोह नादान और बेवुकूफ है बल्कि अख्लाकी तौर पर मुजरिम है, औलाद को क्या मा'लूम कि जिस मां बाप की वोह बेइज्जती कर रही है उन्हों ने कितनी तकालीफ उठा कर उसे पाल कर जवान किया पढाया लिखाया, हस्बे तौफीक खिलाया पिलाया और पहनाया, नेक और सालेह बनाने की कोशिश की। औलाद मां की उस रात की तक्लीफ का बदला चुका नहीं सकती जब वोह अपनी औलाद के लिये पेशाब से गीले किये हुए कपडों पर खुद लेट कर उन्हें खुश्क जगह पर

डालती है। ऐसे ही इन्सान, वालिद की उस मशक्कत का क्या बदला चुका सकता है जिस कोफ्त से वालिद कमाकर अपनी औलाद की जरूरियात पूरी करता है, अल किस्सा, वालिदैन को औलाद की परवरिश के लिये बेपनाह मसाइब और परेशानियां बरदाश्त करना पडती हैं जिस की बिना पर अल्लाह तआला वालिदैन के एहतिराम और खिदमत को फर्ज करार दिया है इस सिल्सिले में कुरआने मजीद की आयात हस्बे जैल हैं।

(1) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ط
وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ط إِلَيَّ
مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

और हम ने आदमी को ताकीद की कि अपने मां बाप के साथ भलाई करो। और अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहा न मान मेरी ही तरफ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे।

(पारह 20, सूरए अल अनकबूत, आयत : 8)

इस आयत से येह बात अयां होती है कि वालिदैन की खिदमत जरूरी है अगर्चे वोह काफिर और मुश्रिक ही क्यूं न हों। लेकिन ईमान को छोड कर कुफ्रो शिर्क को तस्लीम करने के लिये उन की बात बिल्कुल न मानी जाए। बल्कि हक और सच पर डटे रहना चाहये।

(2) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ
أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَالُهُ فِي
عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ط
إِلَيَّ الْمَصِيرُ ۝

और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फरमाई। उस की मां ने उसे पेट में रखा कमजोरी पर कमजोरी झेलती रही और उस का दूध छुडाना दो बरस में है येह कि हक मान मेरा और अपने मां बाप का। आखिर मुझी तक तुझे आना है।

(पारह 20, सूरए लुक्मान, आयत : 14)

इस आयत में भी येही ताकीद की गई है कि मां बाप के साथ अच्छा

सुलूक किया जाए लेकिन इन दोनों में मां को फौकियत हासिल है। क्यूं कि मां ने अपने बच्चे को नव महीने मुश्किल सेह कर और सख्ती उठा कर अपने पेट में रखा और फिर उस के जनने की नाकाबिले बरदाश्त तक्लीफ को हंसी खुशी बरदाश्त किया। फिर बच्चे को अपनी छातियों से लगा कर अपना दूध पिलाया और उस की परवरिश की और हर किस्म की राहत कुरबान की और अपना हर आराम तर्क किया और अपनी हर खुशी निसार कर दी। इस लिये जन्नत को मां के कदमों में करार दिया गया है।

(3) وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسَانًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ

और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने मां बाप से भलाई कर उस की मां ने बेहद मुश्किल उठा कर उसे पेट में रखा फिर उठाने की तक्लीफ बरदाश्त की, फिर तक्लीफ से जना तीस महीने तक दुध पिलाया यहां तक कि बच्चा अपनी कुव्वत को पहुंचा।

(पारह 26, सूरए अहकाफ, आयत : 153)

यहां फिर पहले वाली बात की दोबारा ताकीद की गई है कि मां के साथ हर हाल में अच्छा सुलूक करो। इस लिये नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मां के मकाम को मद्दे नजर रखते हुए मां के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आने पर बहुत जोर दिया है।

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَّا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ اَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِيْ قَالَ اُمُّكَ قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ اُمُّكَ قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ اُمُّكَ قَالَ ثُمَّ مَنْ قَالَ اَبُوْكَ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ قَالَ اُمُّكَ ثُمَّ اُمُّكَ ثُمَّ اُمُّكَ ثُمَّ اَبَاكَ ثُمَّ اَدْنَاكَ اَدْنَاكَ ۔

हजरते अबू हुरैरा से रिवायत है कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ! सब से जियादा कौन लाइक है जिस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आऊं ? फरमाया तेरी मां, मैं ने कहा फिर कौन ? फरमाया तेरी मां, उस ने कहा फिर कौन ? फरमाया तेरी मां, उस ने कहा फिर कौन ? फरमाया तेरा बाप, एक रिवायत में है तेरी मां फिर तेरी मां, फिर तेरी मां, फिर अपने बाप के साथ एहसान कर फिर तेरे करीबी रिश्तेदार हैं और करीबी अजीज हैं। (बुखारी)

आं हजरत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : رِضَى الرَّبِّ فِيْ رِضَى الْوَالِدِ وَسَخَطُ الرَّبِّ فِيْ سَخَطِ الْوَالِدِ۔ **खुदा की खुश्नूदी बाप की खुश्नूदी में है और खुदा की नाराजगी बाप की नाराजगी में हैं।** (तिरमिजी) हजरते अबू उमामा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख्स ने अर्ज किया يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا حَقُّ الْوَالِدَيْنِ عَلٰى وَلَدِهِمَا قَالَ هُمَا جَنَّتُكَ وَنَارُكَ ؛

या रसूलल्लाह ! मां बाप का औलाद पर क्या हक है ? फरमाया वोही तेरी जन्नत हैं और वोही तेरी दोजख हैं। (इब्ने माजा)

या'नी मां बाप का औलाद पर बहुत हक है, उन के साथ नेकी करना और रंज न पहुंचाना, और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक हुसूले जन्नत का जरीआ है और उन्हें रन्जीदा करना दोजख में जाने का मूजिब है। इस लिये फरमाया कि तेरी मां जन्नत और दोजख दोनों ही हैं। और मां बाप को शफ्कत और रहमत और प्यार से देखने से मक्बूल हज का सवाब मिलता है। हजरते इब्ने अब्बास बयान करते हैं

اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قَالَ مَا مِنْ وَلَدٍ بَارٍّ يَنْظُرُ اِلٰى
وَالِدَيْهِ نَظْرَةَ رَحْمَةٍ اِلَّا كَتَبَ
اللّٰهُ لَهٗ بِكُلِّ نَظْرَةٍ حَجَّةً
مَبْرُوْرَةً قَالُوْا وَاِنْ نَظَرَ كُلَّ
يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ قَالَ نَعَمْ اَللّٰهُ
اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ ۔

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि मां बाप के साथ जो नेकी करने वाला फरजन्द अपने मां बाप को महब्बत की निगाह से देखता है तो खुदा उस के लिये हर मरतबा देखने के बदले में उस के आ'माल नामे में एक हज्जे मक्बूल का सवाब लिखता है, सहाबए किराम ने अर्ज किया अगर्चे वोह सो मरतबा देखे, आप ने फरमाया हां अल्लाह बहुत बडा और पाकीजा तर है। (मुस्लिम)

इस हदीस से बात मा'लूम हुई, कि अगर औलाद मां बाप को प्यार से देखे, तो हज्जे मक्बूल का सवाब पाएगी, दिन में सो मरतबा हज का सवाब मिलेगा, इताअत और खिदमत गुजारी का उस से भी कहीं जियादा सवाब है। हजरते इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फरमाया :

مَنْ أَصْبَحَ مُطِيعًا لِلّٰهِ فِي وَالِدَيْهِ
أَصْبَحَ لَهُ بَابَانِ مَفْتُوحَانِ مِنَ
الْجَنَّةِ وَإِنْ كَانَ وَاحِدًا فَوَاحِدًا
وَمَنْ أَمْسَى عَاصِيًا لِلّٰهِ فِي وَالِدَيْهِ
أَصْبَحَ لَهُ بَابَانِ مَفْتُوحَانِ مِنَ
النَّارِ وَإِنْ كَانَ وَاحِدًا فَوَاحِدًا
قَالَ رَجُلٌ وَإِنْ ظَلَمَاهُ قَالَ
وَإِنْ ظَلَمَاهُ وَإِنْ ظَلَمَاهُ وَإِنْ
ظَلَمَاهُ ؕ

जो शख्स अल्लाह के लिये अपने मां बाप की फरमां बरदारी में सुब्ह करता है जन्नत के दरवाजे उस के लिये खुल जाते हैं, अगर एक है तो एक दरवाजा खुल जाता है और जो शख्स उन की नाफरमानी में सुब्ह करता है दोजख के दरवाजे खुल जाते है। अगर एक है तो एक दरवाजा खुल जाता है। एक आदमी ने कहा अगर्चे वोह उस पर जुल्म करें ? फरमाया अगर्चे वोह उस पर जुल्म करें, अगर्चे वोह उस पर जुल्म करें। (बैहकी)

मां बाप के मकाम को मद्दे नजर रखते हुए अल्लाह तआला ने यहां तक हुक्म दिया कि उन को उफ तक न कहो।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا
تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ
لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا
جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ
ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

और तुम्हारे रब ने हुक्म फरमाया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर उन में से एक या दोनों तेरे सामने बुढापे को पहुंच जाएं तो उन्हें उफ तक न कहो और न ही उन्हें झिडको और उन से ता'जीम की बात कहो, और शफ्कत से उन के लिये आजिजी का बाजू बिछाओ और अल्लाह से इल्तिजा करो कि उन दोनों पर रहम फरमा जैसा कि उन्हों ने बचपन में मुझे पाला।

(पारह 15, सूरए बनी इसराईल, आयत : 23-24)

इस आयत से मा'लूम हुवा कि वालिदैन से सख्त कलामी से पेश आना अल्लाह को पसन्द नहीं चे जाए कि उन की बेइज्जती की

जाए। या उन की ईजा रसानी की जाए और उन्हें तरह तरह का दुख दिया जाए, लिहाजा अल्लाह के रसूल ने भी वालिदैन की नाफरमानी से मन्अ फरमाया है।

وَعَنِ الْمُغِيْرَةِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ عُقُوْقَ الْاُمَّهَاتِ وَوَأْدَ الْبَنَاتِ وَمَنْعَ وَهَاتِ وَكَرِهَ لَكُمْ قِيْلَ وَقَالَ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ وَاِضَاعَةَ الْمَالِ ؞

हजरते मुगीरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया, अल्लाह तआला ने माओं की नाफरमानी करना और लडकियों को जिन्दा गाडना तुम्हारे लिये हराम करार दिया है। बखीली और गदाई को तुम पर हराम किया है। और जियादा सुवाल करने और माल जाएअ करने को मकरूह करार दिया है। (मुस्लिम)

मां बाप को गाली देने से मन्अ फरमाया गया है बल्कि दूसरों के मां बाप को भी गाली नहीं देनी चाहिये।

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْكَبَائِرِ شَتْمُ الرَّجُلِ وَالِدَيْهِ قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَهَلْ يَشْتِمُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ قَالَ نَعَمْ يَسُبُّ اَبَا الرَّجُلِ فَيَسُبُّ اَبَاهُ وَيَسُبُّ اُمَّهٗ فَيَسُبُّ اُمَّهٗ ؞

हजरते अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : अपने मां बाप को गाली देना कबीरा गुनाह है सहाबा ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल ! कोई शख्स अपने मां बाप को भी गाली देता है ? फरमाया हां, दूसरे आदमी के मां और बाप को गाली देता है वोह उस के मां बाप को गाली देता है। (बुखारी)

मां बाप के साथ नेकी करने से और उन की खिदमत गुजारी करने से अल्लाह तआला दुन्या व आखिरत की मुसीबतों को दूर कर देता है। एक दफ्आ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वालिदैन की इताअत के सवाब को एक निहायत मुअस्सिर हिकायत में फरमाया कि तीन मुसाफिर राह में चल रहे थे कि उतने में मूसलाधार बारिश बरसने लगी। तीनों ने भाग कर एक गार में पनाह ली। कजारा एक चट्टान ऊपर से गिरी कि उस

से उस गार का मुंह बन्द हो गया, अब उन की बेकसी और बेचारगी और इज्तिराब और बेकरारी का कौन अन्दाजा कर सकता है ? उन को मौत सामने खडी नजर आती थी, उसी वक्त उन्हों ने पूरे खुशूअ और खुजूअ के साथ दरबारे इलाही में दुआ के लिये हाथ उठाए। हर एक ने कहा कि इस वक्त हर एक को अपनी खालिस नेकी का वासिता खुदा को देना चाहिये।

तो पहले ने कहा, बारे इलाहा तू जानता है कि मेरे वालिदैन बूढे थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे थे। मैं बकरियां चराया करता था और उसी पर उन की रोजी का सहारा था। मैं शाम को बकरियां ले कर जब घर आता तो दुध दोह कर पहले अपने मां बाप की खिदमत में लाता था, जब वोह पी चुकते तब मैं अपने बच्चों को पिलाता। एक दिन का वाकिआ है कि मैं बकरियां चराने को दूर निकल गया। लौटा तो मेरे वालिदैन सो चुके थे। मैं दूध ले कर उन के सिरहाने खडा हो गया न उन को जगाता था कि उन की राहत में खलल आ जाता। और न हटता था कि खुदा जाने किस वक्त उन की आंखें खुलें और दुध मांगें। बच्चे भूक से बिलक रहे थे मगर मुझे गवारा न था कि मेरे वालिदैन से पहले मेरे बच्चे सैर हों। मैं उसी तरह पियाले में दूध लिये रात भर उन के सिरहाने खडा रहा और वोह आराम करते रहे। खुदावन्दा तुझे मा'लूम है कि मैं ने येह काम तेरी खुशनूदी के लिये किया है, तू इस गार के मुंह से चट्टान को हटा दे येह कहना था कि चट्टान को खुद बखुद जुम्बिश हुई और गार के मुंह से थोडा सा सरक गई और उस के बा'द बाकी दो मुसाफिरों की बारी आई और उन्हों ने भी अपने कामों को वसीला बना कर दुआ की और गार का मुंह खुल गया और वोह सलामती के साथ बाहर निकल आए। (बुखारी)

मां की नाफरमानी की दुन्या में सजा

हजरते अब्दुल्लाह बिन अबी औफा फरमाते हैं कि, अल्कमा नामी एक शख्स जो नमाज रोजा का बहुत पाबन्द था, जब उस के इन्तिकाल का वक्त करीब आया तो उस के मुंह से बावुजूद तल्कीन के कलिमए शहादत जारी न होता था, अल्कमा की बीवी ने रसूलुल्लाह

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में एक आदमी भेज कर उस वाकिए की इत्तिलाअ कराई, आप ने दरयाफ्त फरमाया कि अल्कमा के वालिदैन जिन्दा हैं या नहीं ? मा'लूम हुवा कि सिर्फ वालिदा जिन्दा है और वोह अल्कमा से नाराज है। आप ने अल्कमा की मां को इत्तिलाअ कराई कि मैं तुम से मुलाकात करना चाहता हूं। तुम मेरे पास आती हो या मैं तुम्हारे पास आऊं ? अल्कमा की वालिदा ने अर्ज की, मेरे मां बाप आप पर फिदा हों। मैं आप को तक्लीफ देना नहीं चाहती बल्कि मैं खुद ही हाजिर होती हूं। चुनान्चे बुढिया हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में हाजिर हुई। आप ने अल्कमा के मुतअल्लिक कुछ दरयाफ्त फरमाया तो उस ने कहा अल्कमा निहायत नेक आदमी है लेकिन अपनी बीवी के मुकाबले में हमेशा मेरी नाफरमानी करता है इस लिये मैं उस से नाराज हूं। आप ने फरमाया अगर तू उस की खता मुआफ कर दे तो येह उस के लिये बेहतर है लेकिन उस ने इन्कार किया। तब आप ने हजरते बिलाल को हुक्म दिया कि लकडियां जम्अ करो और अल्कमा को जला दो। बुढिया येह सुन कर गभरा गई और उस ने हैरत से दरयाफ्त किया कि क्या मेरे बच्चे को आग में जलाया जाएगा ? आप ने फरमाया : हां ! अल्लाह के अजाब के मुकाबले में हमारा अजाब हल्का है खुदा की कसम ! जब तक तू इस से नाराज है न इस की नमाज कुबूल है न कोई सदका कुबूल है। बुढिया ने कहा मैं आप को और लोगों को गवाह करती हूं कि मैं ने अल्कमा का कुसूर मुआफ कर दिया। आप ने लोगों को मुखातिब करते हुए फरमाया : देखो अल्कमा की जबान पर कलिमए शहादत जारी हो गया है कि नहीं ? लोगों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्कमा की जबान पर जारी हो गया और कलिमए शहादत के साथ उन्हों ने इन्तिकाल किया। आप ने अल्कमा के गुस्ल व कफन का हुक्म दिया और खुद जनाजे के साथ तशरीफ ले गए अल्कमा को दफ्न करने के बा'द फरमाया : मुहाजिरीनो अन्सार में से **जिस शख्स ने अपनी मां की नाफरमानी की या उस को तक्लीफ पहुंचाई तो उस पर अल्लाह की ला'नत, फिरिश्तों की ला'नत और सब लोगों की ला'नत होती है खुदा तआला न उस**

का फर्ज कुबूल करता है न नफ्ल, यहां तक कि वोह अल्लाह से तौबा करे और अपनी मां के साथ नेकी करे और जिस तरह मुम्किन हो उस को राजी करे, उस की रिजा मां की रिजामन्दी पर मौकूफ है और खुदा तआला का गुस्सा उस के गुस्से में पोशीदा है। (तबरानी)

लिहाजा जो हजरात खुदा न ख्वास्ता अगर वालिदैन की नाफरमानी या ईजा रसानी में मुब्तला हों उन्हें चाहिये कि वोह सच्चे दिल से तौबा कर लें और हर मुम्किन तरीके से वालिदैन को राजी रखने की कोशिश करें क्यूं कि इसी में इन्सान की फलाह है।

हिकायत

एक ताबेई एक कबीले में से हो कर गुजरे। वहां एक कब्रिस्तान में देखा कि अस्र के वक्त एक कब्र शक हुई और उस में से एक आदमी निकला, जिस का सर गधे के सर जैसा था और बदन आदमी का सा। उस ने कब्र से निकल कर तीन दफ्आ गधे की मकरूह आवाज निकाली और फिर कब्र में घुस गया और कब्र बन्द हो गई, उन्हों ने उस शख्स की औरत से सारा हाल दरयाफ्त किया तो उस ने बताया कि येह शख्स शराब बहुत पीता था। और जब उस की मां उसे शराब पीने से रोकती तो उस से कहता क्यूं गधे की तरह हेचूं हेचूं करती हो ? एक दिन अस्र के वक्त उस का इन्तिकाल हो गया। अब हर रोज अस्र के वक्त उस की कब्र शक होती है और खुद गधे की तरह हेचूं हेचूं करता है।

इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि वालिदा को जदो कोब करने से इन्सान का मौत के बा'द बहुत बुरा हाल होगा। इस लिये वालिदैन की नाफरमानी से तौबा कर लेनी चाहिये।

﴾21﴿ वा'दा खिलाफी से तौबा

अल्लाह के हुजूर जब सच्ची तौबा की जाए तो उस वक्त वा'दा खिलाफी से भी तौबा करनी चाहिये क्यूं कि माजी में लोगों से या अल्लाह से जो वा'दा खिलाफियां हो गई हो उन सब की मुआफी मांगना जरूरी है। इस के साथ लोगों से भी माजिरत की जाए जिन के साथ वा'दा खिलाफी

की थी तो जियादा बेहतर है। वा'दे की पाबन्दी बुलन्द अख़्लाकी का मजहर है और जो हजरात अल्लाह के मुतलाशी हों उन के लिये वा'दे की पाबन्दी अज हद लाजिमी है क्यूं कि अल्लाह के बन्दे वा'दा खिलाफ नहीं होते।

लिहाजा मिल्लते इस्लामिया के अकाबिरीन या'नी उलमा, मशाइखे किराम, अदबा, असातिजा, फुज्ला और दानिशवरों को खास कर वा'दे की पाबन्दी पर कारबन्द रहना चाहिये क्यूं कि अवामुन्नास ने उन्हीं के कौलो फे'ल का तअस्सुर ले कर अमली जिन्दगी में इस्लामी उसूलों की पैरवी करना होती है। अगर वोही पाबिन्दये वा'दा पर अमल न करें तो फिर अवामुन्नास उन की पैरवी कैसे करें ? मजमूई तौर पर भी किसी कौम या फर्द की इज्जत का दारो मदार वा'दे की पाबन्दी और सच्चाई पर है। इसी लिये कुरआने पाक में पाबन्दिये वा'दा की बहुत ताकीद की गई है। और वोह आयात हस्बे जैल हैं

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ

ऐ ईमान वालो ! अपने वा'दों को पूरा करो। (पारह 6, सूरए माइदह, आयत : 153)

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا

और अहद पूरा करो, बेशक वा'दे की बा'ज पुर्स होगी।

(पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, आयत : 34)

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ

पस उस का असर उन के दिल में खुदा ने निफाक रखा उस दिन तक जब वोह उस से मिलेंगे। येह इस लिये कि उन्हों ने खुदा से वा'दा कर के खिलाफ वरजी की क्यूं कि वोह झूट बोलते थे। (पारह 10, सूरए तौबा, आयत : 77)

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ

और अल्लाह का वा'दा पूरा करो। जब कौल बान्धो। और कसमों को मजबूत करने के बा'द न तोडो और तुम अल्लाह को अपने ऊपर जामिन कर चुके हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है।

(पारह 14, सूरए नहल, आयत : 91)

वा'दे की चार सूरतें हैं, वा'दे की पहली सूरत तो वोह है जो रोजे अजल को अल्लाह और बन्दों की रूहों के दरमियान हुवा कि उसे अपना मा'बूद तस्लीम किया जाए। इस वा'दे का पूरा करना जिन्दगी का पहला फर्ज है। दूसरा वा'दा वोह है जो अल्लाह का नाम लेकर बैअत या इकरार की सूरत में किया जाता है। तीसरा वा'दा वोह है जो लोगों में आपस में होता है। वा'दे की चौथी सूरत हुकूक की है जो अल्लाह की तरफ से एक दूसरे के साथ मुकर्रर हैं उन का पूरा करना भी वा'दे की पाबन्दी में शामिल है।

वा'दा खिलाफी का मतलब

वा'दा खिलाफी का मतलब येह है कि किसी काम के करने का इकरार कर के उस को पूरा न किया जाए। अक्सर लोग इसे गुनाह नहीं समझते। हालां कि येह एक किस्म का झूट है जिस का शुमार गुनाहे कबीरा में है। कस्दन वा'दा खिलाफी पर गिरफ्त जियादा है और अगर किसी वज्ह से बिला निय्यत हो जाए तो उस पर गिरफ्त कम होगी। किसी कौम की इज्जत और बुलन्दी का राज इसी में है कि वोह वा'दा खिलाफ न हो क्यूं कि वा'दा एक कौल है जिस पर दुन्या जहान के कारोबार, तअल्लुकात और लैन दैन का दारो मदार है। गरज कि जिन्दगी का कोई शो'बा ऐसा नहीं है जिस में वा'दे का तअल्लुक न हो। इस लिये वा'दा कर के उसे पूरा करना तरक्की के राजों में से एक राज है।

अमली जिन्दगी में येह बात अक्सर मुशाहिदे में आती है कि कारोबारी हजरात लैन दैन में वा'दा खिलाफी करते हैं और उसे मा'मूली बात समझते हैं और गाहक का कोई काम अगर ऑडर पर तय्यार हो रहा हो तो ख्वाह मख्वाह उसे बार बार आने जाने की तक्लीफ देते हैं कि फुलां दिन आना तुम्हारा काम मुकम्मल कर के तुम्हारे सिपुर्द कर दिया जाएगा। जब गाहक किराया खर्च कर के या तक्लीफ उठा कर जाता है तो हंस कर या डांट डपट कर टाल देते हैं कि तुम फुलां दिन को आना फिर वोह उस दिन जाता है तो फिर किसी और वा'दे पर टाल देते हैं हत्ता कि लोगों को इस तरह से बेहद परेशानी का सामना करना पडता है। ऐसी वा'दा

खिलाफियों में मुआशरा बेहद आगे निकल चुका है लेकिन अपनी कुसूर की तरफ कोई तवज्जोह नहीं देता। और वा'दा खिलाफी को बुराई नहीं समझता। और कहता है कि कारोबार में येह तो मा'मूली चीज है।

इस छोटी सी बुराई की तरफ तवज्जोह न देने से इन्सान बेहद गुनहगार हो जाता है। और जब उसे अपने आ'माल की शामत में सजा मिलती है तो अल्लाह से गिला करने लगता है और कहता है कि मैं कौनसी बुराई करता हूं ? नमाजें भी पढता हूं रोजे भी रखता हूं और नेक काम भी करता हूं तो फिर मेरी शामत क्यूं ? मगर रिज्क कमाने के लिये लोगों से जो वोह वा'दा खिलाफियां करता हैं, उस की तरफ उस की निगाह नहीं पडती लिहाजा इस बुराई की तरफ खास तवज्जोह दे कर इस से तौबा कर लेनी चाहिये।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वा'दे का एक वाकिआ

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ اَبِي الْحَمْسَاءِ قَالَ
بَايَعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قَبْلَ اَنْ يُّبْعَثَ وَبَقِيَتْ لَهٗ بَقِيَّةٌ
فَوَعَدْتُّهٗ اَنْ اٰتِيَهٗ بِهَا فِيْ مَكَانِهٖ
فَنَسِيْتُ فَذَكَرْتُ بَعْدَ ثَلٰثٍ فَاِذَا
هُوَ فِيْ مَكَانِهٖ فَقَالَ لَقَدْ شَقَقْتَ
عَلَيَّ اَنَا هٰهُنَا مُنْذُ ثَلٰثٍ
اَنْتَظِرُكَ ۔

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिन्दगी का एक वाकिआ है कि आप एक मरतबा वा'दा पूरा करने की गरज से तीन दिन तक एक मकाम पर खडे रहे जो अबू दावूद की इस हदीस से वाजेह होता है। हजरते अब्दुल्लाह बिन अबी हमसा से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कुछ खरीदो फरोख्त की, अभी तक आप ने नुबुव्वत का दा'वा नहीं किया था कुछ कीमत बाकी रह गई मैं ने कहा आप इसी जगह ठहरें मैं अभी आता हूं मैं भूल गया तीन दिन के बा'द मुझे याद आया तो वोह अपनी जगह पर ही ठहरें हुए थे मुझे देख कर फरमाया तूने मुझे बडी मशक्कत में डाला है। मैं तीन दिनों से तेरा इन्तिजार कर रहा हूं। (अबू दावूद)

येह हदीस हमें येही दर्स देती है कि वा'दा करने में एहतियात से काम लेना चाहिये और अगर किसी से कोई वा'दा कर लो तो उसे पूरा करने की हर मुम्किन कोशिश करो।

छे चीजों की जमानत से जन्नत की जमानत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि छे चीजों की अगर कोई शख्स जमानत दे तो उसे जन्नत की जमानत दी जाती है उन छे चीजों में एक चीज वा'दा पूरा करने की जमानत है और उस के बारे में आप की हदीस हस्बे जैल है।

وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ اَنَّ
النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ
اَضْمِنُوْا لِيْ سِتًّا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَضْمَنْ لَكُمُ الْجَنَّةَ اُصْدُقُوْا
اِذَا حَدَّثْتُمْ وَاَوْفُوْا اِذَا
وَعَدْتُّمْ وَاَدُّوْا اِذَا اؤْتُمِنْتُمْ
وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ وَغُضُّوْا
اَبْصَارَكُمْ وَكُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ ۔

हजरते उबादा बिन सामित से रिवायत है नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया मुझे अपने नफ्स से छे बातों की जमानत दो। मैं तुम को जन्नत की जमानत देता हूं। जिस वक्त बोलो तो सच कहों, जब वा'दा करो तो पूरा करो, जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो अदा करो, अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करो, अपनी निगाहें नीची रखो ? अपने हाथ बन्द रखो। (अहमद)

मुनाफ्कत की अलामत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कौल है कि जिस शख्स में येह चार बातें हों वोह पक्का मुनाफिक है और जिस में कोई एक खस्लत हो उस में मुनाफिक की एक निशानी है जब तक उस को छोड न दे, जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में खियानत करे। जब बात करे तो झूट बोले जब वा'दा करे तो वा'दा खिलाफी, करे जब झगडे तो गालियां दे।

इस हदीस से येह बात साबित होती है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वा'दा खिलाफी को कितना बुरा समझा है।

मरने वाले के लवाहिकीन वा'दा पूरा करें

जो शख्स दुन्या से विसाल कर जाए अगर उस ने किसी शख्स के साथ लैन दैन का कोई वा'दा कर रखा हो तो उस के वुरसा को वोह वा'दा पूरा करना चाहिये ताकि मरने वाले पर हुकूकुल इबाद की अदाएगी का बोझ न रहे । इस के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वाकिआ येह है ।

عَنْ جَابِرٍ قَالَ لَمَّا مَاتَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَاءَ اَبَا بَكْرٍ مَالٌ مِنْ قِبَلِ الْعَلَاءِ بْنِ الْحَضْرَمِيِّ فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ مَنْ كَانَ لَهٗ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَيْنٌ اَوْ كَانَتْ لَهٗ قِبَلَهٗ عِدَةٌ فَلْيَاْتِنَا قَالَ جَابِرٌ فَقُلْتُ وَعَدَنِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ يُعْطِيَنِيْ هٰكَذَا وَهٰكَذَا فَبَسَطَ يَدَيْهِ ثَلٰثَ مَرَّاتٍ قَالَ جَابِرٌ فَحَثَا لِيْ حَثْيَةً فَعَدَدْتُهَا فَاِذَا هِيَ خَمْسُ مِائَةٍ قَالَ خُذْ مِثْلَيْهَا ۔

हजरते जाबिर से रिवायत है कि जिस वक्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफात पा गए और हजरते अबू बक्र के पास बहरैन के आमिल अला बिन हजरमी की तरफ से माल आया तो अबू बक्र ने कहा जिस किसी शख्स के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वा'दा किया हो या किसी ने आप से कर्ज लेना हो तो हमारे पास आए । हजरते जाबिर कहते हैं मैं ने कहा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे साथ वा'दा किया था कि ऐसे और ऐसे अपने दोनों हाथ खोल कर इशारा करते हुए फरमाया था, तुझ को माल दूंगा । हजरते जाबिर का कहना है कि मुझ को हजरते अबू बक्र ने लप भर कर माल दिया मैं ने उसे शुमार किया तो पांच सो दिरहम हुए तो आप ने फरमाया कि इस से दूगना और ले लो । (बुखारी)

हजरते अबू बक्र सिद्दीक ने वा'दा पूरा फरमाया

عَنْ اَبِيْ جُحَيْفَةَ قَالَ رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَبْيَضَ قَدْ شَابَ وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ يُشْبِهُهٗ وَاَمَرَ لَنَا بِثَلٰثَةَ عَشَرَ قَلُوْصًا فَذَهَبْنَا نَقْبِضُهَا فَاَتَانَا

हजरते अबू हुजैफा से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा है आप का रंग सुफेद था आप उम्र रसीदा थे, हसन बिन अली आप के साथ मुशाबहत रखते थे हम को आप ने तेरह ऊंटनियां दिये जाने का

مَوْتِهٖ فَلَمْ يُعْطُوْنَا شَيْئًا فَلَمَّا قَامَ اَبُوْ بَكْرٍ قَالَ مَنْ كَانَتْ لَهٗ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِدَةٌ فَلْيَجِئْ فَقُمْتُ اِلَيْهِ فَاَخْبَرْتُهٗ فَاَمَرَلَنَا بِهَا ؞

हुक्म दिया हम उन को लेने के लिये जाने लगे कि आप की वफ़ात की खबर आ गई हमें ऊंटनियां न मिल सकीं। जब हजरते अबू बक्र खलीफ़ा बने उन्हों ने कहा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अगर किसी शख्स के साथ वा'दा किया हो वोह हमारे पास आए। मैं उन की तरफ खडा हुवा और आप को खबर दी, आप ने वोह हमें दिये जाने का हुक्म दिया। (तिरमिजी)

इस हदीस में भी पहले वाली बात दोहराई गई है कि विसाल के बा'द वुरसा को मरने वाले के किये हुए वा'दों को पूरा करना चाहिये लेकिन बहुत कम लोग ऐसे हैं जो मरने वाले के सर से बोझ हल्का करते हैं।

वा'दे में निय्यत का दख्ल

वा'दा पूरा करने में निय्यत का बडा दख्ल है। जिस शख्स की निय्यत येह होगी कि वा'दा पूरा करेगा अगर उस से कुछ कोताही हो जाए तो उस पर वक्त पर वा'दा पूरा न करने का गुनाह न होगा इस के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हदीस हसबे जैल है :

عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ اَخَاهُ وَمِنْ نِيَّتِهٖ اَنْ يَّفِيَ لَهٗ فَلَمْ يَفِ وَلَمْ يَجِئْ لِلْمِيْعَادِ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ ؞

हजरते जैद बिन अरकम नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बयान करते हैं। फरमाया जिस वक्त कोई आदमी अपने भाई के साथ वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की है फिर किसी वज्ह से उस को पूरा न कर सके और वक्त पर न आए उस पर गुनाह नहीं है।

(अबू दावूद)

इन अहादीस से इस अम्र पर रोशनी पडती है कि वा'दा हर सूरत में पूरा करना चाहिये। साबिका जो वा'दा खिलाफी हो गई हो उस पर तौबा करनी चाहिये और आइन्दा वा'दे की पाबन्दी पर अमल पैरा रहना चाहिये।

हिकयाते तौबा

अल्लाह के बे शुमार सालेह बन्दों ने बुराइयों से तौबा कर के सिराते मुस्तकीम इख्तियार किया और उन के वाकिआते तौबा हमारे लिये बाइसे इब्रत और नसीहत हैं उन से हमें तौबा का दर्स मिलता है क्यूं कि नसीहत आमोज सच्ची हिकायात तारीखे इस्लाम का एक सुन्हेरा बाब हैं इस लिये इन्हें पढने से दिल तौबा की तरफ माइल होता है लिहाजा ऐसे सच्चे वाकिआत का पढना बडा सूदमन्द है इस जरूरत के पेशे नजर तौबा के मुतअल्लिक कुछ सच्ची हिकायात पेशे खिदमत हैं।

﴾1﴿ हजरते अबू लुबाबा की तौबा

तारीखे इस्लाम में हजरते अबू लुबाबा की तौबा का किस्सा बडा मश्हूर है क्यूं कि मस्जिदे नबवी में एक सुतून उन्ही के वाकिअए तौबा की निस्बत से सुतूने तौबा के नाम से मा'रूफ हुवा। हजरते अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्जिर उन लोगों में से थे जो बैअते उक्बा के मौकअ पर हिजरत से पहले मुसलमान हुए। फिर जंगे बद्र और जंगे उहुद और दूसरे गजवात में बराबर के शरीक रहे लेकिन गजवए तबूक के मौकअ पर बिगैर किसी शरई उज्र के गजवे में शामिल न हुए। जब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गजवए तबूक से वापस तशरीफ लाए तो उन पीछे रह जाने वालों के बारे में अल्लाह का हुक्म मा'लूम हुवा तो उस पर उन्हें सख्त नदामत हुई कब्ल उस के कि कोई बाजपुर्स होती उन्हों ने खुद ही मस्जिदे नबवी में अपने आप को एक सुतून से बान्ध लिया और दिल में इरादा किया कि जब तक रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुद उन की खता को अल्लाह से मुआफ करवा कर अपने हाथों से न खोलेंगे उस वक्त तक बन्धे रहेंगे। इस पर आप ने इर्शाद फरमाया कि जब तक अल्लाह मुझे हुक्म न फरमाए मैं उन का उज्र कुबूल नहीं करूंगा और न ही उन को खोलूंगा। चुनान्चे बारह दिन बा'द उन की तौबा कुबूल हुई और उन्हें खोला गया। उस मौकअ पर इस आयत का नुजूल हुवा।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَیِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝

और बा'ज वोह लोग हैं कि जिन्हों ने अपने गुनाहों का इकरार कर लिया उन का तर्जे अमल अच्छा और बुरा मिला जुला था करीब है कि अल्लाह तआला उन की तौबा कुबूल करे बेशक अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 102)

इस आयत के नाजिल होने में हजरते अबू लुबाबा की तौबा कुबूल होने की तरफ इशारा था तो उस पर अल्लाह के रसूल ने उन्हें मुआफ कर दिया। मुआफी पर उन्हों ने अपने घर का मालो मता जिस ने उन्हें अल्लाह की राह से रोका था अल्लाह की राह में दे दिया।

जब वोह लोग माल राहे खुदा में सदका देने के लिये ले कर हाजिर हुए तो उस पर नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इस आयत का नुजूल हुवा।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّیْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ۝ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ۝

ऐ नबी ! उन के माल में जकात ले लो जिस से तुम उन्हें पाकीजा कर दो और उन के हक में दुआए खैर करो। बेशक आप की दुआ उन के दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है क्या तुम्हें खबर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है और सदका खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और येह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला महेरबान है।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 103-104)

इस आयत से येह मस्अला भी वाजेह होता है कि तौबा के बा'द माल राहे खुदा में सदका करना रब्बुल आलमीन को पसन्द है और उस से दिल को पाकीजगी हासिल होती है।

﴾2﴿ हजरते का'ब बिन मालिक की तौबा

गजवए तबूक में पीछे रह जाने वालों में कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हों ने जिहाद में न शामिल होने की बिना पर न कोई बहाना बनाया और न अपने आप को सुतून से बान्धा। बल्कि जो अस्ल मुआमला था वोह साफ साफ बयान कर दिया। उन के मुआमले में हुक्म हुवा कि अल्लाह तआला के फैसले का इन्तिजार करो। हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी उस जमाअत से कतए तअल्लुक फरमाया। इर्शादे बारी तआला है।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ۝

और कुछ अल्लाह के हुक्म के इन्तिजार पर मौकूफ किये गए। अल्लाह ख्वाह उन पर अजाब करे या उन की तौबा कुबूल फरमाए और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 106)

उन लोगों में का'ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमय्या और मरारह बिन रबीअ शामिल थे। येह सब अन्सारी थे। हजरते का'ब बिन मालिक बे फिक्र थे कि हर तरह का सामान मौजूद है। जल्द ही जिहाद में शामिल हो जाऊंगा। आं हजरत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीस हजार मुजाहिदीन के हमराह मदीना से रवाना हो गए आप ने तबूक पहुंच कर दरयाफ्त फरमाया कि का'ब बिन मालिक को क्या हुवा ? एक शख्स ने जवाब दिया कि उस की ऐश पसन्दी और गुरूर ने उसे निकलने नहीं दिया। दूसरे शख्स ने जवाब दिया कि तूने बुरी बात कही। खुदा की कसम हम ने उस में भलाई के सिवा कुछ नहीं देखा। हजरते का'ब बिन मालिक बयान करते हैं कि जब नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तबूक से वापस तशरीफ लाए तो हस्बे मा'मूल आप ने पहले मस्जिद आ कर दो रक्अत नमाज पढी, फिर लोगों से मुलाकात के लिये बैठे। उस मज्लिस में मुनाफिकीन ने आ आ कर अपने उजरात लम्बी चौडी कसमों के साथ बहाने पेश करने शुरूअ किये येह 80 से जियादा आदमी थे। हुजूर ने एक एक की बनावटी

बातें सुनीं। उन के जाहिरी उजरात को कुबूल कर लिया और उन के अन्दर की बातों को खुदा पर छोड कर फरमाया खुदा तुम्हें मुआफ करे फिर मेरी बारी आई मैं ने आगे बढ कर सलाम अर्ज किया। आप मेरी तरफ देख कर मुस्कुराए और फरमाया तशरीफ लाए! आप को किस चीज ने रोका था ? मैं ने अर्ज किया खुदा की कसम अगर मैं अहले दुन्या में से किसी के सामने हाजिर हुवा होता तो जरूर कोई न कोई बात बना कर उस को राजी करने की कोशिश करता, बनानी तो मुझे भी आती हैं। मगर आप के मुतअल्लिक मैं यकीन रखता हूं कि अगर इस वक्त कोई झूटा उज्र पेश कर के मैं ने आप को राजी करने की कोशिश की तो अल्लाह आप को बा खबर कर देगा लिहाजा सच कहता हूं तो चाहे आप नाराज ही क्यूं न हों ? मुझे उम्मीद है कि अल्लाह मेरे लिये मुआफी की कोई सूरत पैदा कर देगा। हकीकत येह है कि मेरे पास कोई उज्र नहीं है जिसे पेश कर सकूं। में जाने पर पूरी तरह कादिर था।" उस पर हुजूर ने फरमाया : "येह शख्स है जिस ने सच्ची बात कही। अच्छा, उठ जाओ और इन्तिजार करो यहां तक कि अल्लाह तुम्हारे मुआमले में कोई फैसला करे" मैं उठा और अपने कबीले के लोगों में जा बैठा। यहां सब के सब मेरे पीछे पड गए और मुझे बहुत मलामत की, कि तूने कोई उज्र क्यूं न कर दिया ? येह बातें सुन कर मेरा नफ्स भी कुछ आमादा होने लगा कि फिर हाजिर हो कर बात बना दूं मगर जब मुझे मा'लूम हुवा कि दो और सालेह आदमियों मरारह बिन रबीअ और हिलाल बिन उमय्या ने भी वही सच्ची बात कही है जो मैं ने कही थी, तो मुझे तस्कीन हो गई और मैं अपनी सच्चाई पर जमा रहा।

उस के बा'द नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दे दिया कि हम तीनों से कोई बात न करे वोह दोनों तो घर बैठ गए, मगर मैं निकलता था, जमाअत के साथ नमाज पढता था, बाजारों में चलता फिरता था और कोई मुझ से बात न करता था। ऐसा मा'लूम होता था कि येह सर जमीन बिल्कुल बदल गई है, मैं यहां अजनबी हूं और इस बस्ती में कोई भी मेरा वाकिफ कार नहीं है। मस्जिद में नमाज के लिये जाता तो हस्बे मा'मूल नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम करता था। मगर बस इन्तिजार करता

रह जाता था कि जवाब के लिये आप के होंट जुम्बिश करें। नमाज में नजरें चुराकर हुजूर को देखता था कि आप की निगाहें मुझ पर कैसी पडती हैं ? एक रोज में गभराकर अपने चचाजाद भाई और बचपन के यार अबू कतादा के पास गया और उन के बाग की दीवार पर चढ कर उन्हें सलाम किया। मगर उस अल्लाह के बन्दे ने सलाम का जवाब तक न दिया। मैं ने कहा "अबू कतादा, मैं तुम को खुदा की कसम दे कर पूछता हूं कि क्या मैं खुदा और उस के रसूल से महब्बत नहीं रखता ?" वोह खामोश रहे। मैं ने फिर पूछा। वोह फिर खामोश रहे। तीसरी मरतबा जब मैं ने कसम दे कर येही सुवाल किया तो उन्हों ने बस इतना कहा कि "अल्लाह और उस का रसूल ही बेहतर जानता है" उस पर मेरी आंखों से आंसू निकल आए और मैं दीवार से उतर आया। उन्ही दिनों में एक दफ्आ बाजार से गुजर रहा था कि शाम के नब्तियों में से एक शख्स मुझे मिला और उस ने शाहे गस्सान का खत जरीर में लिपटा हुवा मुझे दिया। मैं ने खोल कर पढा तो उस में लिखा था कि "हम ने सुना है तुम्हारे साहिब ने तुम पर सितम [जुल्म] तोड रखा है, तुम कोई जलील आदमी नहीं हो, न उस लाइक हो कि तुम्हें जाएअ किया जाए। हमारे पास आ जाए हम तुम्हारी कदर करेंगे "मैं ने कहा येह एक और बला नाजिल हुई और उसी वक्त उस खत को चूल्हे में झोंक दिया।

चालीस दिन इस हालत पर गुजर चुके थे कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आदमी हुक्म ले कर आया कि अपनी बीवी से भी अलाहिदा हो जाए। मैं ने पूछा क्या तलाक दे दूं ? जवाब मिला नहीं, बस अलग रहो। चुनान्चे मैं ने अपनी बीवी से कह दिया कि तुम माइके चली जाओ और इन्तिजार करो यहां तक कि अल्लाह इस मुआमले का फैसला कर दे। पचासवें दिन सुब्ह की नमाज के बा'द मैं अपने मकान की छत पर बैठा हुवा था और अपनी जान से बेजार हो रहा था कि यका यक किसी शख्स ने पुकार कर कहा "मुबारक हो का'ब बिन मालिक" मैं येह सुनते ही सज्दे में गिर गया और मैं ने जान लिया कि मेरी मुआफी का हुक्म हो गया है फिर तो फौज दर फौज लोग भागे हुए आ रहे थे और हर एक दूसरे

से पहले पहुंच कर मुझ को मुबारक बाद दे रहा था कि तेरी तौबा कुबूल हो गई । मैं उठा और सीधा मस्जिदे नबवी की तरफ चला । देखा कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा खुशी से दमक रहा है। मैं ने सलाम किया तो फरमाया : "तुझे मुबारक हो, येह दिन तेरी जिन्दगी में सब से बेहतर है" मैं ने पूछा येह मुआफी हुज़ूर की तरफ से है या खुदा की तरफ से ? फरमाया : खुदा की तरफ से और येह आयात पढीं ।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

और उन तीनों पर भी अल्लाह महेरबान हुवा जिन को मौकूफ रखा गया था। यहां तक कि जब उन पर जमीन बावुजूद कुशादा होने के तंग हो गई और खुद भी तंग पड गए और वोह समझ गए कि अल्लाह के इलावा कहीं पनाह नहीं फिर (अल्लाह) उन पर महेरबान हुवा ताकि वोह उस की तरफ ताइब रहें। बेशक अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला और महेरबान है। ऐ ईमान वालो ! डरते रहो। (पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 118-119)

मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! मेरी तौबा में येह भी शामिल है कि मैं अपना सारा माल अल्लाह की राह में सदका कर दूं। फरमाया कुछ रहने दो कि तुम्हारे लिये बेहतर है । मैं ने इस इर्शाद के मुताबिक अपना खैबर का हिस्सा रख लिया। बाकी सब सदका कर दिया फिर मैं ने खुदा से अहद किया कि जिस रास्त गुजारी के सिले में अल्लाह ने मुझे मुआफी दी है उस पर तमाम उम्र काइम रहुंगा चुनान्चे आज तक मैं ने कोई बात जान बूझ कर खिलाफे वाकिआ नहीं की और खुदा से उम्मीद रखता हूं कि आइन्दा भी मुझे इस से बचाएगा।

﴾3﴿ हजरते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तौबा

हजरते अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा थे और आप कुफ्फारे कुरैश के उन दस

सरदारों में से थे जो गिरफ्तार कर के आप के रूबरू पेश किये गए थे। आप के कब्जे से काफी सोना बरआमद हुवा जो आप कुफ्फार के खाना खिलाने पर खर्च करने लिये हमराह लाए थे। जब आप से फिदया लिया गया तो उस सोने में से आप के दो भतीजों अकील और नौफल का फिदया भी वुसूल किया गया। हजरते अब्बास ने अर्ज किया कि मुझे इस हाल में छोडा जाएगा कि में बाकी उम्र कुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं? तो आं हजरत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि वोह सोना कहां है? जिस को तुम मक्कए मुकर्रमा से चलते वक्त छोड कर आए हो जो तुम्हारी बीवी ने दफ्न किया था। और तुम उन से कह आए थे कि मा'लूम नहीं मुझे क्या हादिसा पेश आए। अगर मैं जंग में काम आ जाऊं तो येह तुम्हारा है। हजरते अब्बास को येह सुन कर बहुत तअज्जुब हुवा और दरयाफ्त किया कि आप को येह सब कुछ कैसे मा'लूम हुवा? हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि मुझे मेरे रब ने खबरदार किया है। इस पर हजरते अब्बास ने अर्ज किया कि आप सच फरमाते हैं। मेरे राज से अल्लाह के सिवा कोई मुत्तलअ न था। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। और आज से मैं ने कुफ्र से तौबा की, चुनान्चे आप और आप के दोनों भतीजे मुशर्रफ ब इस्लाम हुए। हजरते अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने खालिस तौबा की जो कुबूल हुई। अल्लाह तआला ने आप के इस खुलूसे ईमान की बदौलत येह खुश खबरी सुनाई।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

ऐ नबी! जो कैदी तुम्हारे हाथ में हैं, उन से कह दीजिये कि अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल में भलाई जानी, तो जो तुम से फिदया लिया गया उस से बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा। और तुम्हें बख्श देगा, और अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

(पारह 10, सूरए अन्फाल, आयत : 70)

चुनान्चे जब कुछ अर्से बा'द बेहरैन का माले गनीमत आया जिस की मिक्दार अस्सी हजार थी तो हजरते अब्बास को इख्तियार दे दिया गया कि इस में से जितना चाहें ले लें। तो जितना उठ सका उन्हों ने ले लिया। फिर फरमाया कि इस से बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और इस से मगफिरत की उम्मीद रखता हूं।

﴾4﴿ गैर महरम का हाथ चूमने पर तौबा व इस्तिगफार

कल्बी की रिवायत के मुताबिक एकअन्सारी और एक सक्फी में गहरी दोस्ती थी वोह आपस में बहुत कम जुदा होते थे एक दफ्आ सक्फी रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद पर गया और अपने घर की निगरानी अन्सार के सिपुर्द कर गया। चुनान्चे वोह अन्सारी काम काज के लिये सक्फी के घर पर्दे के साथ जाते आते रहे एक दिन गोश्त या कोई और चीज सक्फी के घर देने गए सक्फी की बीवी ने अन्दर से लेने के लिये हाथ बढाया उन्हों ने उस का हाथ चूम लिया लेकिन इस वाकिए पर उन के दिल में फौरन नदामत हुई और जंगल में निकल गए अपने सर पर खाक डाली और मुंह पर तमांचे मारे। जब सक्फी जिहाद से वापस आया तो उस की बीवी ने शिकायत की। अन्सार पहाडों में तौबा व इस्तिगफार करता फिरता था। सक्फी उस को तलाश कर के सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में लाया। तो उस के हक में अल्लाह तआला ने येह आयतें नाजिल फरमाई।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۟ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ؕ

और जब वोह कोई बेहयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें, तो अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफी चाहें और अल्लाह के इलावा गुनाहों को बख्श ने वाला कौन है ? और अपने किये पर जान बूझ कर अड न जाएं। ऐसे हजरात के लिये उन के रब की बख्शिश और

जन्नतें बतौरे बदला हैं। जिन के नीचे नहरें बेहती हैं। हमेशा उस में रहेंगे और नेक काम करने वालों के लिये क्या अच्छा अज्र है।

(पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 135-136)

﴾5﴿ झूटी कसम और झूटी गवाही पर मुआफी का वाकिआ

अन्सार के कबीले बनी जफर के एक शख्स तमआ बिन उबेरक ने अपने एक यहूदी हमसाया के नकब लगा कर एक आटे का थैला और जिर्ह चोरी कर ली। और एक दूसरे यहूदी के घर अमानत रख आया। जब सुब्ह हुई और पता चल गया कि तमआ ने चोरी की है तो उस की कौम ने मश्वरा किया कि किसी तरह उसे रुस्वाई से बचाया जाए। चुनान्चे उन्हों ने यहूदी के खिलाफ झूटी कसमें खाईं। उस जाहिरी शहादत पर यहूदी को चोर समझ कर सजा मिल जाने का कवी इम्कान था। अल्लाह ने वही नाजिल फरमाई कि यहूदी बेगुनाह है इन्साफ का तकाजा पूरा किया जाए। चुनान्चे तमआ की कौम को अल्लाह तआला ने तम्बीह फरमाई कि तुम दुन्या में तो आज उस की तरफदारी कर रहे हो कियामत के दिन उस को अल्लाह तआला के अजाब से कौन बचाएगा ? इर्शाद फरमाया :

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝

सुनते हो तुम उन की तरफ से दुन्या की जिन्दगी में झगडते हो फिर उन की तरफ से कियामत के दिन कौन झगडेगा ? या उन का वकील कौन होगा ?

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 109)

लिहाजा उन्हें तौबा व इस्तिगफार की तरगीब दी गई। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ
اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ
يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝

और जो कोई गुनाह करे या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से बख्शिश चाहे, तो अल्लाह को बख्शने वाला महेरबान पाएगा और जो कोई गुनाह कमाए तो उस का वबाल उस की जान पर पडेगा और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और जो कोई खता या गुनाह करे, फिर तोहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने जरूर बोहतान और सरीह गुनाह अपने जिम्मे ले लिया।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 110-112)

इस से मा'लूम हुवा कि गुनाह छोटा हो या बडा, सच्ची तौबा के सिवा उस से नजात का कोई और इलाज नहीं है।

(6) अदालते मुस्तफा के फैसले को तस्लीम न करने का अन्जाम

हजरते अब्दुल्लाह बिन अब्बास फरमाते हैं कि एक मुनाफिक जिस का नाम बिशर था उस के और एक यहूदी के दरमियान झगडा था उस झगडे में यहूदी सच्चा था मुनाफिक झूटा था। यहूदी बोला चलो इस का फैसला हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से करवा लेते हैं मुनाफिक बोला इस का फैसला का'ब बिन अशरफ से करवाते हैं। यहूदी बोला कि तू अजीब मुसलमान है कि अपने नबी के पास चलने और फैसला करवाने से गुरेज करता है मुनाफिक शरमिन्दा हो कर यहूदी के साथ बारगाहे रिसालत में हाजिर हो गया रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों का बयान सुन कर यहूदी के हक में फैसला कर दिया। वहां से निकल कर मुनाफिक बोला कि मैं इस फैसले से राजी नहीं चलो येह फैसला हजरते अबू बक्र सिद्दीक से करवाएं। चुनान्चे दोनों बारगाए सिद्दीकी में हाजिर हुए हजरते अबू बक्र सिद्दीक ने दोनों की बात सुन कर यहूदी के हक में फैसला कर दिया। उस के बा'द फिर बिशर मुनाफिक बोला मेरी अब तक तसल्ली नहीं हुई लिहाजा अब येह फैसला हजरते उमर से करवाना चाहिये। चुनान्चे बिशर मुनाफिक यहूदी को हजरते उमर फारूके आ'जम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास ले गया। आप को जब मा'लूम हुवा कि हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुकद्दमे में यहूदी को सच्चा फरमा चुके हैं

तो आप ने फरमाया कि मैं अभी इस का फैसला करता हूं। येह कह कर आप मकान के अन्दर तशरीफ ले गए और तल्वार ला कर मुनाफिक को कत्ल कर दिया। और फरमाया कि जो अल्लाह और उस के रसूल के फैसले से राजी नहीं। उस का मेरे पास येही फैसला है। रब्बे जुल जलाल ने आप के इस अमल को पसन्द फरमाया और इर्शाद हुवा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾

ऐ ईमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और हाकिमों का जो तुम में हों। फिर अगर तुम में से किसी बात पर झगडा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुजूर रुजूअ करो। अगर तुम अल्लाह और कियामत के दिन पर ईमान रखते हो। येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा है। (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 59)

इस के वारिस हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में हाजिर हुए और हजरते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पर कत्ल का दा'वा किया और कहने लगे कि हम तो उन के पास महज सुलह कराने के लिये गए थे, वरना आप के फैसले से इन्कार न था। अल्लाह अलीमो बसीर ने उन के इस निफाक की हकीकत भी फाश कर दी, इर्शाद फरमाया :

फिर आएं तुम्हारे पास कसमें खाते हुए अल्लाह की कि हम को गरज न थी मगर भलाई और मिलाप की। येह वोह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिल में है तो तुम उन से चश्म पोशी करो। और उन्हें समझा दो। और उन के मुआमले में उन से बात कहो।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 63)

रसूल इसी लिये भेजे गए हैं की उन की इताअत की जाए। लेकिन अगर नाफरमानी करें और ताइब भी न हों बल्कि उस के बर अक्स झूटी कसमें खा कर तावीलें घडने लगें तो फिर ऐसों की मगफिरत का क्या इम्कान है। इर्शादे बारी तआला है कि

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا۝

और अगर जब वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो (ऐ नबी) ! तुम्हारे पास हाजिर हों और फिर अल्लाह से मुआफी चाहें और रसूल उन की शफाअत फरमाए तो जरूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला महेरबान पाएंगे ।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 64)

﴾7﴿ एक सहाबी की तौबा का किस्सा

इमामे बगवी से रिवायत है कि एक मरतबा हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबूक में खुत्बा इर्शाद फरमाया । उस में मुनाफिकीन की बद हाली और बुरे अन्जाम का जिक्र फरमाया येह सुन कर जुलास बिन सुवैद ने कहा कि अगर हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्चे हैं तो फिर हम लोग गधों से बदतर हैं । जब हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ लाए तो आमिर बिन कैस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जुलास का कौल बयान किया । जुलास ने इन्कार किया और कहने लगा कि आमिर ने मुझ पर झूट बोला । हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों को कहा के मिम्बर के पास कसम खाएं । दोनों ने कसम उठाई दोनों ने कसम खा लीं । फिर आमिर ने हाथ उठा कर बारगाहे इलाही में दुआ की या रब ! अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक नाजिल फरमा चुनान्चे येह आयत नाजिल हुई ।

अल्लाह की कसम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा और बेशक जरूर कुफ्र की बात कही और मुन्किर हो गए, मुसलमान होते हुए मुन्किर हो गए ।

मुजाहिद का कौल है कि जुलास ने इफ्शाए राज के अन्देशे से आमिर के कत्ल का इरादा किया था । एक और रिवायत येह है कि गजवए तबूक से वापसी पर तकरीबन बारह मुनाफिकीन ने हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर छुप कर हम्ला करने का कस्द किया था लेकिन बि फज्लिही तआला नाकाम रहे । अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया "और कस्द किया था

उस चीज का जो उन को मिली और उन्हें बुरा लगा येही न कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन्हें अपने फज्ल से गनी कर दिया "वोह लोग हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ से दौलत मन्द हो गए थे। इसी हालत में उन पर शुक्र वाजिब था। लेकिन उस खता के बावुजूद गफूरुर्रहीम ने ऐसे मुनाफिकीन को भी तौबा व इस्तिगफार का मौकअ अता फरमाया और इर्शादे बारी तआला हुवा कि।

अगर वोह तौबा करें तो उन का भला है और अगर मुंह फैरें तो अल्लाह उन्हें दुन्या व आखिरत में सख्त अजाब देगा और फिर जमीन में न कोई उन का हिमायती और न मददगार होगा।

चुनान्चे कहा जाता है कि जुलास येह बात सुन कर सिदके दिल से ताइब हुवा। और अर्ज किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह तआला ने मुझे तौबा का मौकअ दिया। आमिर बिन कैस ने जो कुछ कहा सच कहा। मैं ने वोह कलिमा कहा था और अब मैं तौबा करता हूं। हुजूर ने उन की तौबा कुबूल फरमाई। वोह तौबा पर साबित कदम रहे। और बिल आखिर अपनी जिन्दगी खिदमते इस्लाम में कुरबान कर दी।

(8) अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताखी पर गिरफ्त

गज्वए तबूक के लिये जाते हुए बा'ज मुनाफिकीन ने अज राहे तमस्खुर कहा कि इस शख्स या'नी रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखो कि शाम के महल्लात और रूम के शहरों को फत्ह कर लेने का ख्वाब देखता है। उन्हों ने रूमियों की जंग को अरबों की बाहमी जंग समझ रखा है। हमें यकीन है कि कल हम सब रूमियों के साम ने रस्सियों में बन्धे खडे होंगे। येह क्या रूम की तरबियत याफ्ता फौजों से जंग करेंगे ? उन्हों ने येह बातें मुसलमानों की हिम्मत शिक्नी की खातिर कीं। एक शख्स उन में से खुद तो न बोलता था मगर उन की बातें सुन कर हंसता था। हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब उन बातों का इल्म हुवा तो सख्त बा'ज पुर्स फरमाई। वोह कहने लगे कि हम तो रास्ता काटने के लिये दिल्लगी से ऐसा कह रहे थे। उस पर अल्लाह जल्ले जलालुहू ने येह आयात नाजिल फरमाईं।

मुनाफिकीन डरते हैं कि उन पर कोई सूरत ऐसी नाजिल हो तो उन के दिलों में छुपी बात जतावे आप कह दीजिये कि हंसी ठठ्ठा करते हो। अल्लाह जरूर जाहिर कर के रहेगा जिस का तुम्हें डर है और ऐ नबी अगर आप उन से पूछेंगे कि हम तो यूं ही बात चीत और दिल्लगी करते थे। आप कह दीजिये क्या तुम अल्लाह और उस के रसूल से हंसी करते थे !

(पारह 10, सूरए तौबा, आयत : 64-65)

इस से मा'लूम हुवा कि खुदा और उस के रसूल की शान में गुस्ताखी करना, और अहकामे इलाही का मजाक उडाना ख्वाह हंसी खेल ही के लिये क्यूं न हो। कुफ्र है। लेकिन उस मौकअ पर मुनाफिकीन येह शरारत अपनी दिलों की बीमारी की वज्ह से कर रहे थे। लिहाजा उन का राज फाश हो कर रहा। और इताब में गिरफ्तार हुए। इर्शादे बारी तआला हुवा।

"बहाने न बनाओ तुम काफिर हो चुके हो मुसलमान हो कर। अगर हम तुम में किसी को मुआफ भी कर दें तो औरों को अजाब देंगे। इस लिये कि वोह मुजरिम थे।" (पारह 10, सूरए तौबा, आयत : 66)

मुहम्मद बिन इस्हाक का कौल है कि उन में से उस शख्स ने जो महज हंसता था जिस का नाम यहया बिन सुमैर अश्जई था उस आयत के नाजिल होने पर तौबा व इस्तिगफार कर के अपनी खता की मुआफी चाही और येह दुआ की कि या रब अपनी राह में शहीद कर के ऐसी मौत दे कि कोई येह कहने वाला न हो कि मैं ने गुस्ल दिया, मैं ने कफन दिया। चुनान्चे उन की येह दुआ मक्बूल हुई। आप जंगे यमामा में शहीद हुए और पता ही नहीं चला। दूसरे साथी ताइब न हुए और अजाब के मुस्तहीक करार पाए। क्यूं कि सुन्नते इलाही येही है।

وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

और जो तुम में मुसलमान हैं उन के वास्ते रहमत हैं और जो रसूलुल्लाह को ईजा देते हैं उन के लिये दर्दनाक अजाब है।

(पारह 10, सूरए तौबा, आयत : 61)

﴾9﴿ हजरते ख्वाजा हसन बसरी की नसीहत से एक नौजवान की तौबा

बसरा का एक नौजवान था जो हमेशा अपने परवर दिगार की नाफरमानी करता था उस की वालिदा उसे बुरे कामों से रोकती थी मगर वोह बा'ज न आता था उस की वालिदा हजरते हसन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मज्लिसे वा'ज में हाजिर हुई थी और फिर वापस आ कर अपने लडके को वा'ज सुना कर डराती थी जब उस नौजवान की मौत का वक्त करीब हुवा तो अपनी वालिदा से अर्ज की कि तुम हजरते हसन बरसी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मेरे पास बुलाओ ताकि वोह मुझे तौबा करने का तरीका समझा दे। जब उस की वालिदा हजरते हसन बसरी की खिदमत में पहुंची और अपने बच्चे की दरख्वास्त पेश की तो उन्हों ने फरमाया कि मैं एक फासिक फाजिर के पास नहीं जाऊंगा और न ही उस का जनाजा पढ़ूंगा। वालिदा गमजदा हो कर वापस घर आई और सारा किस्सा अपने बच्चे को सुनाया। बेटे ने वालिदा को वसियत की कि जब में मर गया तू मेरी गर्दन में रस्सी डाल देना और मुझे मुंह के बल घर में घसीटते हुए येह कहना कि खुदा के नाफरमान बन्दों की येही सजा होती है और फिर घर में ही मेरी कब्र बनवाना ताकि दूसरे मुर्दों को मुझ से तक्लीफ न हो। उस के मरने के बा'द वालिदा ने जब उस की गर्दन में रस्सी डाली तो आवाज आई कि ऐ नौजवान की वालिदा ! अल्लाह के दोस्त के साथ नरमी का सुलूक करो फिर उसे घर में ही दफ्न कर दिया गया।

उस के बा'द हजरते हसन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ लाए और फरमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ख्वाब में फरमाया है कि ऐ हसन ! तूने मेरे बन्दे को नाउम्मीद कर दिया था। लेकिन मैं ने अपने बन्दे को बख्श कर जन्नत में मकाम अता फरमाया है।

दोस्तो ! जब बन्दा अपने मालिके हकीकी के दरबार में अपनी आजिजी और इन्किसारी का इजहार करता है तो अल्लाह तआला उस की दुआ कुबूल फरमा लेता है क्यूं कि अल्लाह तआला की रहमत जोश में आ जाती है और खुदाए عَزَّوَجَلَّ ने खुद फरमाया है لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ की अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो।

तो हमें बख्शिश की उम्मीद रखते हुए अपने मालिके हकीकी के हुजूर तौबा करनी चाहिये आजिजी और इन्किसारी का इजहार करते हुए अपने गुनाहों पर नदामत जाहिर कर के अल्लाह के हुजूर बख्शिश और रहमत के तालिब होना चाहिये तो फिर अल्लाह तआला बखुशी हमारी तौबा कुबूल फरमाएगा और जरूर हमें बख्श देगा।

(10) पांच तोहफे मआरिफ्त, महब्बत, तौहीद, ईमान और तौबा

शैख अबुल हसन शाजिली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फरमाते हैं कि मैं ने नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लैलतुल कद्र सत्ताईसवी रमजान शबे जुमुआ को ख्वाब में देखा फरमाया ऐ अली ! अपने कपडे पाक कर, तुझे हर लहजा अल्लाह तआला की जानिब से हिस्सा मिलता रहेगा मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह कौन से कपडे ? फरमाया : अल्लाह ने तुझे पांच कपडे अता फरमाए हैं एक खिल्अते मआरिफत और एक खिल्अते महब्बत एक खिल्अते तौहीद, एक खिल्अते ईमान, एक खिल्अते तौबा। पस जो अल्लाह से महब्बत रखे उस के नज्दीक सारी चीजें हकीर हो जाती हैं और जो अल्लाह की मआरिफत रखता है कुल चीजें नजर में आती हैं और जो अल्लाह की तौहीद रखता है वोह किसी को उस का शरीक नहीं बनाता और जो अल्लाह पर ईमान रखता है वोह हर शै से मामून और बे खौफ हो जाता है और जो तौबा रखता है वोह अल्लाह की नाफरमानी नहीं करता अगर कभी हो जाए तो फौरन उज्र ख्वाही करता है। जब मा'जिरत चाहे तो अल्लाह तआला मुआफ करता है। हजरते अबुल हसन फरमाते हैं उस वक्त मुझे अपने कपडों को पाकिजा रखने की मआरिफत हासिल हुई।

नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद कि जो शख्स अल्लाह से महब्बत रखता है सारी चीजें उस की नजर में हकीर हो जाती हैं। उस की वज्ह येह कि मुहिब महबूब के सामने खुद को कमतर समझता है और उस की तरफ से जो कुछ शिद्दत और मुश्किल पेश आती है वोह महबूब की रिजामन्दी के आगे बिल्कुल हकीर होती है और वोह आलम

में सारा जुहूर उसी महबूबे हकीकी का जानता है और महबूब का हर फे'ल महबूब होता है। और येह जो आप ने फरमाया कि जो अल्लाह की मआरिफत रखता है। हर चीज उस के सामने छोटी मा'लूम होती है उस की वज्ह येह है कि आरिफ बिल्लाह उस के जलालो अजमत व किब्रियाई और कुदरत का मुशाहिदा करता है जिस से उस की नजर में तमाम मख्लूकाते आम्मा की वक्अतो अजमत जाती रहती है लेकिन अल्लाह के बरगुजीदा अम्बिया व रुसूल और मलाएका के एहतिरामो ता'जीम में कोताही नहीं करता। और उस की अजमत उन की कद्र के मुवाफिक करता है मगर उस अजमत को अल्लाह की अजमत के आगे कुछ निस्बत नहीं। और आप ने जो येह फरमाया है कि जो अल्लाह की तौहीद को तस्लीम करता है वोह शिर्क नहीं करता। क्यूं कि शिर्क तौहीद के मनाफी है। यहां शिर्क से मुराद शिर्के खफी है जिसे सिर्फ आरिफ ही जानते हैं और उस से बचते हैं ताकि उन की तौहीदे हकीकी में कोई कमी पैदा न हो जाए और शिर्के जली उस को खासो आम सब जानते हैं और येह शिर्के जली दोनों तौहीदों में मुजिर है और मिन जुम्ला उन के जो सिर्फ तौहीदे खास को जरर पहुंचाती है वोह महब्बत गैरुल्लाह की है। जो गैर ही के सबब से हो। जैसे नफ्स की महबूबात और शहवाते मुबाह। जब उन से अल्लाह की इबादत की कुव्वत मत्लूब न हो। अगर महब्बते गैरुल्लाह की अल्लाह के वास्ते हो तो येह दोनों तौहीदों के लिये मुजिर नहीं है और नफ्स के बा'ज आ'माल में छुपे हुए अगराज होते हैं उसे अल्लाह वाले ही जानते हैं और वोही उस से महफूज रह सकते हैं जो अहले मकामातो अहवाल हैं। येह भी उन के नज्दीक शिर्के खफी है।

यहीं से बाजों ने कहा है जो जन्नत की तम्अ और दोजख के खौफ से अल्लाह की इबादत करे तो उन्हे भी अल्लाह से शिर्क या बल्कि इबादत उस वज्ह से करनी चाहिये कि वोही मा'बूद बनने के काबिल है अगर्चे दोजख व जन्नत कुछ भी न हों। उसी तरह लोगों के पास मरतबा पैदा करना और उन से डरना या उन से नफ्अ की उम्मीद रखना या जरर का ए'तिकाद रखना और मुसीबतों में उन से मदद मांगना येह सब उन के

नज्दीक शिर्क है और भी बहुत सी चीजें हैं जिन का बयान तवील है। और बा'ज ख्वाहीशाते नफ्स जो जाहिर शर्ह में मुबाह और मुस्तहब भी हैं। लेकिन जब आरिफ उन्हे बिगैर निय्यते सालेह के इस्ति'माल करता है तो अपने मरतबे से गिर जाता हैं। चुनान्चे शैख अबुल गैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आप को एक फकीर ने ख्वाब में पहाड पर देखा। फिर उस के बा'द पहाड के नीचे देखा। उस ने शैख से उस की वज्ह दरयाफ्त की। आप ने फरमाया ठहर जा। जब तीसरी बार ख्वाब देखे तो मुझ से कहो। मैं सब की ता'बीर इकठ्ठी बता दूंगा। एक साल के बा'द उस के फिर शैख को पहाड की चोटी पर देखा, जहां पहली मरतबा देखा था। उस ने शैख से बयान किया। आप ने फरमाया मेरा अल्लाह के नज्दीक एक मरतबा था। एक शब मैं ने अपनी बीवी से तक्बील की और मेरी निय्यत अल्लाह के वास्ते की न थी बल्कि सिर्फ शहवत की नजर से थी उस वज्ह से उस मरतबे से गिर गया जैसा कि तूने देखा था। फिर एक साल तक मेहनतो मशक्कत कर के में अपने कदीम मकाम पर पहुंच गया जैसा कि तूने देखा। खुदा उन से और सारे औलिया अल्लाह से राजी हो, और हमें भी उन की बरकत से मुस्तफीज करे। आमीन। आप ने येह जो फरमाया कि जो अल्लाह पर ईमान लाता है हर चीज से बे खौफ होता है उस की वज्ह येह है कि ईमान से ईमाने कामिल मुराद है और जब ईमाने कामिल हासिल होता है तो उसे तवक्कुले कामिल हासिल हो जाता है और उस के कल्ब पर अल्लाह का खौफ गालिब हो जाता है और उस की हैबतो जलाल व अजमतो किब्रियाई और कुदरतो कहर वस्तूते कल्ब पर मुस्तूली हो जाती है फिर तो आलमे वुजूद में अल्लाहु वाहिद साहिबुल अस्माउल हुस्ना वस्सिफातुल आ'ला व सुब्हानहू तआला के सिवा किसी को न अता करने वाला जानता है न रोकने वाला न नफ्अ देने वाला न जरर पहुंचाने वाला, न बुलन्द रुत्बा देने वाला, न पस्ती में गिराने वाला, न जुदाई डालने वाला, न मिलाने वाला। इस सबब से किसी से नहीं डरता और किसी से उम्मीद भी नहीं कर सकता और हर खैरो शर और नफ्अ व जरर उसी की

कजा व कदर से है। पस मख्लूकात की हरकातो सकनात और इरादात जहां भी हों और जिस वक्त हों उसी रब्बुस्समावाति वलअर्द की कजा से हैं।

इस बात को उलमा जाहिर दलाइले कातिआ अक्लिया व नक्लिया से जानते हैं और अहले बातिन दलाइले कातिआ यकीनिया से जो कि मुशाहिदातो मुकाशिफात से हासिल हुए हैं पहुंचाते हैं। जब येह मुशाहिदा कर चुके कि कुल काम उस की तरफ से हैं तो न गैर से डरते हैं न गैर की उम्मीद रखते हैं बल्कि उस से उम्मीद रखते हैं और बस। और आप ने येह जो फरमाया कि जो अल्लाह के वास्ते इस्लाम पर अमल करता है वोह उस की नाफरमानी नहीं करता और अगर कोई गुनाह हो जाता है तो तौबा करता है। और जब तौबा करता है तो तौबा कुबूल हो जाती है उस की वज्ह येह है कि जो हकीकतन इस्लाम पर अमल पैरा होता है वोह अपने नफ्स को अल्लाह के हुक्म के ताबेअ कर देता है और अपने आप को सिपुर्द कर देता है और उस की इबादत का ताबेअ हो जाता है। फिर उस की नाफरमानी नहीं करता। क्यूं कि नाफरमानी ताअत के मुनाफी है और इज्कान के भी मुनाफी है अगर कभी शैतान उसे बेहका ले तो वोह फिर अल्लाह से तौबा और इस्तिगफार करता है और उस की तरफ रुजूअ करता है और उस से उज्र ख्वाही करता है जब वोह सच्ची तौबा के साथ उज्र ख्वाही करता है तो हक तआला अपने फज्ल से उस की सच्ची तौबा कुबूल करता है और उस पर करम किया जाता है और उस पर मगफिरत की बारिश बरसाई जाती है लिहाजा हमेशा अल्लाह से येह मांगना चाहिये कि अल्लाह उसे साहिबे जूदो एहसान, ऐ साहिबे फज्ले अजीम ! हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अफ्जल रहमत और सलाम नाजिल फरमा। और हमें इन अक्वाल से मुत्तसिफ बनाया है और हमें हुस्ने अदब और नेक आ'माल की तौफीक अता कर और हम पर पूरी मगफिरत और कामिल तौबा नाजिल कर और अपना फज्ले रोशन अता फरमा क्यूं कि तू ही हम पर रहम करने वाला रब है।

﴾11﴿ चालीस साला नाफरमानी से तौबा

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जमाने में एक दफ्आ बनी इसराईल में कहत पड गया। लोगों ने जम्अ हो कर हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज किया कि नबियल्लाह अपने परवर दिगार से दुआ कीजिये कि हम पर बारिश बरसाए। आप उन के हमराह जंगल को चले सत्तर हजार आदमी थे बल्कि कुछ जियादा। आप ने दुआ फरमाई कि या इलाही ! हम पर बारिश नाजिल फरमा और अपनी रहमत नाजिल फरमा दे और दूध पीने वाले बच्चों और चरने वाले जानवरों और बूढे नमाजियों के तुफैल हम पर रहम फरमा। मगर आस्मान पहले से भी जियादा साफ और आफ्ताब पहले से भी जियादा गरम हो गया। आप ने उसी वक्त अर्ज किया कि इलाही अगर मेरी वजाहत आप के सामने गट गई है तो हजरत नबिये उम्मी मुहम्मद मुस्तफा के वसीले से इल्तिजा करता हूं जो नबिये आखिरुज्जमां होंगे कि हम पर बारिश बरसाई जाए। वही आई कि ऐ मूसा ! तुम्हारा रुत्बा मेरे नज्दीक नहीं घटा है और न तुम्हारी वजाहत कम हुई है लेकिन तुम में एक बन्दा है जो चालीस बरस से गुनाहों के साथ मेरा मुकाबला कर रहा है तुम लोगों में मुनादी कर दो ताकि वोह शख्स तुम में से निकल जाए उस की वज्ह से बारिश मैं ने रोक ली है। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज किया। इलाही ! में अब्दे जईफ अपनी कमजोर आवाज से उन सब को क्यूं कर मुत्तलअ करूंगा। हालां कि येह लोग कम जियादा सत्तर हजार आदमी हैं। हुक्म हुवा तुम आवाज दो हम पहुंचा देंगे। चुनान्चे आप ने खडे हो कर निदा की कि ऐ वोह गुनहगार बन्दे ! जो चालीस साल से गुनाहों के साथ अल्लाह तआला का मुकाबला कर रहा है हमारे दरमियान से निकल जा क्यूं कि तेरी वज्ह से हम से बारिश रोकी गई है। येह सुन कर वोह बन्दए गुनहगार खडा हुवा और चारों तरफ निगाह कर के देखा तो कोई निकलता हुवा नजर न पडा। समझ गया कि मैं ही मत्लूब हूं और जी में सोच ने लगा कि अगर लोगों में से मैं निकलूं तो सब के सामने रुस्वाई होगी और अगर उन के साथ ठहरा रहूं तो मेरी वज्ह से सब लोग बारिश से महरूम रहेंगे।

उसी वक्त कपडे में मुंह छुपा कर अपने अफ्आल पर नादिम हुवा और कहने लगा। इलाही ! मैं ने चालीस साल तक तेरी नाफरमानी की आज मैं तेरे हुजूर सच्ची चौबा करता हूं और मुझ से पर्दा रख हत्ता कि अपने दिल में बहुत नादिम हुवा आखिर अल्लाह तआला ने उस की तौबा कुबूल की और एक दम सुफेद अब्र का टुकडा जाहिर हुवा और बडी तेजी से बरसा। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज किया कि इलाही अभी तो हम में से कोई भी नहीं निकला फिर क्यूं कर तूने हम पर बारिश नाजिल फरमाई ? इर्शाद हुवा ऐ मूसा ! जिस की वज्ह से पानी रोका गया था अब उसी की वज्ह से बरसा है। हजरत ने अर्ज किया कि इलाही उस बन्दे को मुझे दिखा दे। फरमाया ऐ मूसा मैं ने नाफरमानी के जमाने में उसे रुस्वा न किया। अब फरमां बरदारी के वक्त उसे क्यूं कर रुस्वा करूंगा ?

﴾12﴿ अजाबे कब्र देखने पर अल्लाह के हुजूर बख्शिश की दुआ

जिबाल बैतुल मुकद्दस के एक सियाह से मरवी है कि मैं एक शख्स के यहां मेहमान हुवा उन्हों ने मुझ से कहा कि मेरे साथ चलो। हमारे हमसाये का भाई मर गया है उस की ता'जिय्यत कर आएं। मैं उन के साथ उस शख्स के यहां गया। वोह शख्स निहायत गमगीन और परेशान था किसी तरह उसे सब्र नहीं आता था। हम ने कहा ऐ शख्स ! खुदा से डर और यकीन के साथ जान ले के मौत एक ऐसा रास्ता है कि हमें जरूर उस पर चलना है और वोह सब पर आने वाली है। उस ने कहा कि मैं जानता हूं कि तुम ने जो कुछ कहा वहीं होने वाला है लेकिन मैं इस वज्ह से परेशान हूं कि सुब्हो शाम मेरे भाई के किस मुसीबत में गुजरते हैं हम ने कहा सुब्हानल्लाह क्या अल्लाह तआला ने तुम्हें गैब की खबर दे दी ! कहा नहीं ? लेकिन जब मैं ने उसे दफ्नाया और उस के ऊपर मट्टी डाल कर बराबर कर रहा था कि कब्र से आवाज आई। हाए मैं ने कहा मेरा भाई। मेरा भाई और कब्र खोलने लगा। लोगों ने कहा ऐसा मत करो। मैं ने कब्र बराबर कर दी और उठ खडा हुवा। इतने में फिर आवाज आई। मैं ने मेरा भाई मेरा भाई कह कर कब्र खोल ने का इरादा किया लोगों ने

कहा ऐसा न करो। मैं ने फिर कब्र बराबर की और उठने लगा तो फिर हाए की आवाज आई। मैं ने कहा वल्लाह मैं जरूर कब्र खोलूंगा। चुनान्चे मैं ने कब्र को खोला तो क्या देखता हूं कि उस की कमर में एक आग का तौक पडा है उस की हरारत से तमाम कब्र धक रही है। मैं ने उस तौक को दूर करने के इरादे से उस पर हाथ मारा तो मेरी ऊंगलियां अलग हो गईं। फिर उस ने अपना हाथ दिखाया जिस की चार ऊंगलियां जाती रही थीं। रावी कहते हैं कि मैं हजरते औजाई के पास गया और कहा ऐ अबू उमर ! यहूदी, नसरानी और कुफ्फार सारे मरते हैं उन में ऐसी अलामतें नहीं देखी गईं और येह शख्स तौहीदो इस्लाम पर मरा है और फिर येह अजाब देखा जाता है। फरमाया : हां वोह लोग तो पहले ही यकीनन अहले नार हैं इस लिये उन का हाल दिखाने की जरूरत नहीं और तुम्हें अल्लाह तआला अहले तौहीद में येह अजाब दिखाता है ताकि तुम इब्रत पकडो। ऐ अल्लाह ! हमारे गुनाहों से चश्मो पोशी कर और हमें बख्श दे और ऐ लतीफ ! हम पर लुत्फ कर और हमें तौबा के रास्ते पर गामजन रख।

(13) हजरते जुन्नून मिसरी

आप दूरवेशे कामिल थे। आप फरमाते हैं कि मैं ने तीस साल तक लोगों को दा'वते हक दी। मगर उस अर्से में सिर्फ एक शख्स ऐसा मिला जैसा मिलना चाहिये था एक शहजादा था। जो शानो शौकत के साथ मेरी मस्जिद के करीब से गुजरा मैं उस वक्त कह रहा था। कि उस कमजोर आदमी से जियादा और कोई अहमक नहीं जो एक ताकतवर से लडता है। येह बात सुन कर शहजादा मस्जिद के अन्दर आ गया और पूछा इस का क्या मतलब है ? मैं ने कहा इन्सान महज एक कमजोर हस्ती है जो खुदाए बुजुर्गो बरतर के साथ बर सरे जंग है।

इन अल्फाज के सुनते ही शहजादे का रंग फिका हो गया और मस्जिद से चला गया। दूसरे दिन फिर आया और मुझ से खुदा का रास्ता पूछा। मैं ने कहा कि एक रास्ता लम्बा है और एक छोटा। अगर छोटे रास्ते से जाना चाहते हैं तो दुन्या तर्क कर दो। गुनाह छोड दो और ख्वाहीशाते

नफ्सानी को तर्क कर दो। अगर लम्बे रास्ते से खुदा तक पहुंचना चाहते हो तो सिवाए जाते बारी तआला के और सब कुछ तर्क कर दो। शहजादे ने कहा कि लम्बा और तवील रास्ता इख्तियार करता हूं। अगले दिन वोह फिर आया और रियाजत में मश्गूल हो गया और आखिर कार अब्दाल के रुत्बे पहुंचा। जब हजरते जुन्नून मिसरीका मरतबा दरगाहे इलाही में बढ गया तो लोगों ने खलीफए वक्त को हालात से आगाह किया। खलीफा ने आप को पाबे जन्जीर दरबार में तलब किया रास्ते में एक औरत ने आप को देखा तो कहा खबरदार खलीफा से हरगिज न डरना। वोह भी तुम्हारी तरह एक बन्दा है जब तक खुदा की तरफ से हुक्म न हो, कोई बन्दा कुछ नहीं बिगाड सकता। खलीफा ने आप को जिन्दान [कैद] में भेजने का हुक्म दिया। आप चालीस दिन उन की कैद में रहे। उस दौरान हजरते बिशर हाफी की हमशीरा आप को हर रोज एक रोटी खाने के लिये पहुंचा देती थीं। जब आप को कैद खाने से निकाला गया तो वोह चालीस रोटियां बदस्तूर एक कौने में पडी थीं। हमशीरा हजरते बिशर हाफी ने कहा आप जानते थे कि येह रोटी हलाल कमाई की है। फिर भी आप ने नहीं खाई। आप ने फरमाया कि उन रोटियों में दारोगाए जेल का हाथ लग जाया करता था। इस लिये उन की तबीअत पाक न रहती थी।

जब आप नमाज के लिये खडे होते तो फरमाते। ऐ अल्लाह ! मैं किन कदमों से तेरी बारगाह में हाजिर हूं और किन आंखों से तेरे का'बे को देखूं और किस जबान से तेरा राज कहूं। और किस ने'मत से तेरा नाम लूं। जब कि महज बे माइगे का सरमाया ले कर तेरी दरगाह में हाजिर हुवा हूं।

आप फरमाते हैं कि सेहत थोडा खाने में है और रूह की सेहत थोडे गुनाह करने में। नीज आप ने फरमाया कि **अगर कोई शख्स बला में मुब्तला हुवा और सब्र करे तो तअज्जुब की बात नहीं। बल्कि तअज्जुब की बात येह है कि बला में मुब्तला हुवा और राजी हो। फरमाया कि जो चीज हक तआला से गाफिल कर दे वोह दुन्या है। आप फरमाते हैं कि हक तआला का महबूब बन ताकि वोह तुझ को सब से बे नियाज कर दे।**

﴾14﴿ एहसासे तौबा का एक वाकिआ

एक दफआ का जिक्र है कि एक नेक शख्स की एक मरतबा दीवार गिर पडी। मजदूरों के अड्डे पर गया कि किसी मजदूर को ला कर दीवार दुरुस्त कराऊं वहां जा कर देखा कि एक खूब सूरत नौजवान के सिवा और कोई मजदूर नहीं है। उस से कहा कि हमारी दीवार बना दो और मजदूरी अपनी ले लो। कहा बहुत अच्छा। मगर जो मजदूरी मुकर्रर हो जाए उस में फर्क नहीं होना चाहिये और हमारी ताकत से जियादा काम न लो। और नमाज के वास्ते पहले से इजाजत दे दो। मालिक ने कहा सब मन्जूर है फिर उसे घर ला कर काम बता दिया और खुद अपने रोजगार पर चला गया। शाम को देखा तो दो मजदूरों के बराबर काम किया था। बहुत खुश हो कर मजदूरी दे कर रुख्सत कर दिया। फिर सुब्ह को इन्तिजार किया। जब बहुत देर हो गई तो फिर मजदूरों के अड्डे पर गया मगर उसे दूसरों से दरयाफ्त करने पर पता चला कि वोह हर रोज मजदूरी नहीं करते बल्कि हफ्ते में एक दिन करते हैं और सात रोज खाते हैं। येह समझे कि कोई कामिलीन से हैं फिर उन के मकान पर गए। देखा तो बीमार हैं। और जमीन पर पडे हैं। उन का येह हाल देख कर बहुत अफ्सोस किया। फिर कहा आप मुसाफिर और बीमार हैं। मेरे हाल पर इनायत फरमाए और गरीब खाने पर तशरीफ ले चलें। उन्हों न जवाब दिया। बेहतर है मुझे कुछ न खिलाएं। चुनान्चे मकान पर आए तीन दिन तक ना कुछ खाया न पिया। न कुछ कलाम किया। चौथे रोज मुझ को बुला कर फरमाया कि मेरा वक्त करीब है। चन्द वसियतें करता हूं उन को बखूबी अदा करना। अव्वल येह कि मेरे गले में रस्सी बान्ध कर जमीन में खूब घसीटना और कहना कि जो कोई अपने मालिक की नाफरमानी करेगा उस का येही हाल होगा शायद रहमते इलाही जोश में आवे और मेरी मगफिरत फरमा दे। और इन्हीं कपडों में कफनाना बा'द उस के बादशाहे वक्त के पास जा कर येह अंगूठी और कुरआन शरीफ दे देना। और कहना कि जरा गफ्लत से

होशियार रहना। और सरवते दुन्या को ख्वाबो खयाल समझना। ऐसा न हो कि अचानक मौत आ जावे और सारा सामान गफ्लते खाक में मिल जावे। उस वक्त कोई तदबीर मुफीद न होगी। उस के बा'द उन की जान निकल गई। फिर वसियत के मुताबिक चाहा के गले में रस्सी डालें कि गोशए मकान से आवाजे गैब आई कि खबरदार! ऐसा न करना। औलिया अल्लाह अहले मगफिरत हैं न लाइके जिल्लत, फिर बखूबी दफ्ना दिया उस के बा'द अंगूठी और कुरआने मजीद ले कर बादशाह की सवारी जहां से जाती थी जा कर खडा हुवा कि दरबार में कौन जाने देगा? फिर दूर से अर्जो मारूज की। किसी ने न सुनी। नागाह बादशाह की नजर पड गई तो बुला कर पूछा। कि कौन है क्या मतलब है? अर्ज किया। इसी शहर का रहने वाला हूं। एक शख्स का पयाम और येह कुरआन शरीफ और अंगूश्तरी लाया हूं। बादशाह ने वोह दोनों चीजें ले कर कहा कि वोह शख्स कहां है और किस हाल में है? कहा वोह मर गया और दीवार बनाता था सुनते ही बादशाह रोने लगा यहां तक कि वोह बेहोश हो गया हैरानी थी कि इलाही येह क्या मुआमला है बहुत देर के बा'द जब होश आया कहा कुछ वसियत भी उस ने की है तो उस ने कहा कि उस ने येह कलिमात आप की जनाब में कहे हैं कि जरा ख्वाबे गफ्लत से बेदार रहना। मुबादा अचानत मौत आ जाए। फिर जब सामाने हश्रत और बादशाहत बालाए ताक रह जाए फिर तो बादशाह का येह हाल था कि कपडे फाडता और सर में खाक डालता था और कहता था ऐ मेरे नासेह! ऐ मेरे शफीक! फिर शब को चादर औढ कर मेरे साथ उस की कब्र पर गया फिर कब्र से लिपट कर बहुत रोता रहा। फिर फरमाया कि येह मेरा बेटा था। हमेशा शराबो कबाब में गिरफ्तार था अल्लाह की रहमत से इस ने तौबा कर के हिदायत पाई। एक मरतबा लह्व लअब में मश्गूल था और सब सामाने इश्रत मुहय्या था। कोई इधर कोई उधर नशे में बेहोश था। नागाह मक्तब से किसी लडके ने येह आयते करीमा सत्ताईसवें पारा सूरहे हदीद की पढी أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ या'नी क्या वक्त नहीं पहुंचा।

ईमान वालों को गिड गिडा दे उन के दिल अल्लाह की याद से। उस के दिल पर जा लगी और सब ऐशो इश्रत छोड कर तौबा की राह इख्तियार की। फिर उस लडके के पास आ कर कहा कि हां आया वक्त कि अल्लाह की याद से दिल थर्रा गए और अपना काम कर गए। फिर तर्के लिबास किया। और चला गया जब तलाश किया कहीं पता न लगा। आज पता लगा तो जख्म कारी दिल पर लगा।

﴾15﴿ तौबा का इब्रतनाक वाकिआ

नक्ल है कि एक मरतबा हजरते जुन्नून मिसरी मुतफक्किर हो कर दरिया के किनारे पर खडे थे। देखा कि बडा बिच्छू दौडता दरिया के किनारे पर आया और एक मेन्डक फौरन दरिया से निकल कर उस को ऊपर सुवार कर के पर ले किनारे ले चला। येह अजीब मुआमला देख कर हजरते मिसरी भी उस किनारे पर गए। फिर वोह जल्दी से उतर कर एक दरख्त के नीचे गया। वहां एक सांप सोते मुसाफिर की छाती पर बैठा था। चाहे कि उसे काट ले उस ने जाते ही सांप को डंक मारा। वोह मर गया। मुसाफिर बच गया। फिर जल्दी से बिच्छू उसी तरह अपने मकान को चला गया मैं ने जाना येह आदमी कोई कामिल है कि इनायते इलाही ने इस कदर उस की हिफाजत फरमाई कि एक मूजी को दूसरे मूजी से खत्म करवाया और उसे बचाया। इस की मुलाजिमत हासिल करना चाहिये। जब उस के नज्दीक गया चाहा कि कदम आगे बढाऊं उस ने आंख खोल दी देखा तो कोई शराबी सा है। मुझ को कमाले तअज्जुब हुवा कि अल्लाह अल्लाह इस का येह हाल है। और इनायते खुदा का वोह हाल अल्लाह की तरफ से गैबी आवाज आई कि ऐ जुन्नून ! हैरान क्यूं हुए हो कि येह भी हमारा बन्दा है अगर्चे गन्दा है। अगर हम सिर्फ नेकों ही की हिफाजत करें तो बुरों की हिफाजत करने वाला कौन है ? पस जो जनाबे बारी हैं राजी करता है फिक्ले बारी उस की दस्तगीरी करता है। जैसा कि जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी जो गिरया जारी के जरिये गुनाह से बेजारी चाहता है अल्लाह

तआला उस को कुबूल फरमाता है। येह सुनते ही हजरते जुन्नून पर हालते जज्बो जुनून की तारी थी। कि घूमते थे और कहते थे। अफ्सोस ऊपर हाल इस गाफिल के कि रहमते इलाही उस जोशो खरोश से उस की हमदोश हो और वोह बेहोश ख्वाबे खरगोश में मदहोश। जब शाम हुई और हवा सर्द चली उस गफ्लत जदा के हक में सुब्ह हुई। नींद से चोंका और जुन्नून को बैठा देखा। मुतहहीरो नादिम हो कर कहा ऐ मुक्तदाए वक्त ! तुम यहां कहां ?। फरमाया तू अपना हाल बयान कर। कहा मेरा हाल आप पर बखूबी रोशन है फिर मैं ने उस को वोह सांप दिखाया। देखते ही थर्रा गया। जब सब किस्सा सुनाया रो चला कर सर में खाक डाल ने लगा। चीखें मारता, कपडे फाडता जंगल को चला गया और नफ्स को बहुत ला'नत मलामत करता था कि जब बुरों के हाल पर इस कदर करम है तो नेक लोगों पर किस कदर इनायत होगी फिर अल्लाह के हुजूर सच्ची तौबा की और ताइब हो कर इबादत में मस्रूफ हो गया और कुछ अर्से के बा'द अल्लाह ने और करम किया तो वोह मुस्तजाबुद दा'वात हो गया जिस बीमार को दम करता तन्दुरुस्त हो जाता और ता दमे आखिर अल्लाह का एहसान मन्द रहा।

﴾16﴿ ऐश परस्ती से तौबा का वाकिआ

बयान किया जाता है कि एक मरतबा मन्सूर बिन आद बसरा में जा रहे थे कि एक अजीमुश्शान मकान देखा जो बहुत मुकल्लिफ और सोने चांदी के नक्श से मुनक्कश था। उस का सेहन बहुत और वसीअ है और सदहा दरबान दरवाजे पर टेहल रहे हैं और मकान के अन्दर शाही तख्त बिछा है और एक खूब सूरत जवान उस पर जल्वा अफरोज है और चारों तरफ खुद्दाम खुश अन्दाम और खुश कलाम मुअद्दब दस्त बस्ता खडे थे। मन्सूर का कहना है कि येह देख कर मेरी अक्ल दंग रह गई चाहा खुद अन्दर जा कर हकीकत दरयाफ्त करूं। मगर दरबानों ने जाने न दिया। इत्तिफाकन वोह किसी मश्गले में मश्गूल हुए तो मैं फौरन मकान के अन्दर चला गया। यका यक अमीर ने औरतों को बुलाया और सब हवा

ख्वाहों को रुख्सत फरमाया उन के आते ही सारा मकान ऐसा रोशन हो गया कि जैसे रात को आफ्ताब निकल आए और सदहा लोन्डियां बांदियां उन के साथ कोई खुश्बू लगाती दिल उल्झाती जुल्फ सुल्झाती हुई सर गरदान व हैरान आईना दिखाती, खुश्बू लगाती। हर एक किसी न किसी काम में मस्रूफ थी फिर वहां कोई मर्द जात न रही। सिर्फ मैं अपनी जान पर खेल कर येह खेल तमाशा देखता रहा। अचानक बादशाह की नजर मुझ पर पडी। आतिशे गजब सुलग गया। मानिन्द शो'लए अफ्रोख्ता हो कर कहा कि तेरी सर पर मौत खेलती है जो तुझ को महले सरा में खेल तमाशे के हीले से लाई है मैं खौफ से कांप गया। खुशामद से जान को बचाया कि आतिशे गजब को आजिजी का पानी बुझाता है। जब उस का गुस्सा कम हुवा। कहा तू कौन है कहां से आया ? अर्ज किया खतावार हर सजा के सजावार हूं तबीब हूं अमराजे दिल का मुआलजा करता हूं। फरमाया इधर आओ। और कुछ कलामे हक सुनाओ। तब मैं ने निडर हो कर साफ साफ हुक्मे हाकिमे हकीकी का बयान शुरूअ किया। ऐ बादशाह ! तेरे पास औरतों का हुजूम है मुल्क में जालिमों की धूम है क्या नहीं जानता कि इस वबाल से तेरा नामए आ'माल माला माल होगा और सख्त गुनहगारी में मुब्तला होगा। जरा होश पकड। इस कदर मस्ती हुकूमत से न अकड। खुदा को न भूल। खुदी के नशे से इस कदर न फूल। इन्साफ के दिन हर जबरदस्त जेरे दस्त होगा। और जेरे दस्त जबरदस्त से। दूध पानी से और पानी दूध से जुदा होगा। और दोजख ऐसी जबरदस्त आवाज करेगी। कि पथ्थर पानी हो जाएगा। नेकू कार सुर्ख रू और बदकार सजा वार होंगे फिल हकीकत दुन्या और मुआमलाते दुन्या दिल लगाने के काबिल नहीं। तू औरतों की महब्बत में चूर है हूराने बिहिश्ती से दूर अगर जन्नत की ने'मतों का मजा चख्ता और हूराने जिनान को एक नजर देखता वल्लाह लज्जते दुन्या व महब्बते जिनान में हरगिज गिरफ्तार न होता और मरने के बा'द अगर इन औरतों को देखे तो बद बू के सिवा कुछ हुस्नो जमाल भी न पाएगा बल्कि नफरत आ जावे पस इन की सोहबत से दर गुजर और हूराने बिहिश्ती को तलब कर कि खिल्कत उन के मुश्को काफूर

व जा'फरान से है वोह जमाले बा कमाल न किसी आंख ने देखा न कान ने सुना गोया ला'लो याकूत है या मोती व मरजान हैं कि चमक रहे हैं। पस येह बातें सुन कर लोट पोट हो गया। और कहा ऐ तबीब ! तेरी बातें मेरे जी में कारगर हो गईं। फिर कहो शायद बुराई से नजात पाऊं और राहे रास्त पर आऊं। कि मैं बहुत बडा गुनहगार हूं क्या अजब है कि गफूरुर्रहीम अपने फज्लो करम से बख्श दे मैं ने कहा हकीकत में वोह बडा रहीमो करीम है। फिर जार जार रोता था। और कपडे बदन के फाडता था और अल्लाह के हुजूर सच्ची तौबा की। आखिर महल को छोड कर चलने लगा तो औरतों ने कहा कि इस हाल में हम तुम्हारे शरीक हैं। अब क्या मुक्तजए मुरव्वत है कि तुम जाते हो और हम को छोड जाते हो फिर सब ने रात को लिबासे शाही दूर किया। और भेस बदल लिया। फिर रात ही रात सब को साथ ले कर चला गया। अर्से के बा'द जो मैं उस महले सराए को गया तो उजाड पडा देखा। कि दिन में डर मा'लूम होता था। फिर ताइदे इलाही से इत्तिफाकन बैतुल्लाह को गया। देखूं तो अब्दुल मलिक मौजूद है और तवाफे का'बा में मस्रूफ। मुझ से सलामु अलैक की मैं हाल उन का देख कर बहुत खुश हुवा। मैं ने कहा औरतें कहां है ? कहा हाजिर हैं। फिर वोह सब आईं और बन्दगी में मुस्तअद पाईं। मुझ को देख कर बहुत खुश हुईं और कहा अल्लाह तआला ने हमारे दिल की मुराद पूरी की। जो तुम्हारी जियारत नसीब हुई हजरत हम से गुनहगारों को भी अल्लाह तआला बख्शेगा कि जानो माल सब उस की महब्बत में खो दिया। फरमाया बिला शक अल्लाह तआला अपने ता'बेदारों को बख्शेगा फिर जोशो खरोश में आ कर एक ना'रा मारा और जाने हक तस्लीम की। अब्दुल मलिक येह हाल देख कर बहुत गमगीन हुए। कि अफ्सोस ऐसे वक्त में मुझ से अलग हुए। फिर बखूबी कफना दफ्ना दिया। उस के बा'द वोह भी रहलत कर गया। उस को भी कफना दिया। लोगों ने बहुत अफ्सोस किया। मैं ने उस की कब्र पर वा'ज किया और लोगों को अजाबे कब्र से डराया और जन्नत के आराम का मुज्दा सुनाया।

﴾17﴿ अल्लाह की नाफरमानी से तौबा

हजरते सर्री सक्ती बहुत बडे औलियाए कामिल थे। चुनान्चे पीर हजरत पीराने पीर हैं और इमामुल औलिया इन का लकब था और बगदाद शरीफ में अक्सर वा'ज फरमाया करते थे। हजारों आदमी हिदायत पाते। एक मरतबा अहमद बिन यजीद खलीफए वक्त मअ अपने गुलाम तुर्की व रूमी बडे तजको शान से आए और एक तरफ मज्लिसे वा'ज में बैठ गए। हजरत फरमा रहे थे कि हजरते आदम से ले कर ता ईंदम कि आठ हजार बरस हुए होंगे कोई मख्लूकात में इन्सान से जईफ तर और नाफरमानी जनाबे बारी में दिलैर तर और हीलागर जुम्ला काएनात से मुअज्जम तर जनाबे बारी ने पैदा नहीं किया। चुनान्चे हजारों तरह से रब्बुल इज्जत ने उस की नजाते दारैन के वास्ते समझाया और सदहा तरीके से अल्लाह वालों ने समझाया बूझाया मगर उस के एक कारगर न हुवा येह सुनते ही अहमद बिन यजीद के तीर सा जिगर में पार हो गया रोते रोते बेहोश हो गया जब कुछ इफाका हुवा गिरता पडता अपने घर गया वहां न कुछ खाया न पिया न कुछ कलाम किया। दूसरे दिन फिर तन्हा आ कर चुपके से बैठ गया। वा'ज सुनता रहा। बा'दे वा'ज के जब सब आदमी चले गए हजरते सर्री सक्ती की खिदमत में अर्ज किया कि या हजरत आप का वा'ज मेरे कारगर हो गया। और तीर सा [तीर की तरह] जिगर के पार हो गया। और बिल्कुल महब्बते दुन्या की जी से निकल गई और अजमते हक जी में समा गई अब दुन्या और अहले दुन्या की सूरत से नफरत और वहशत आती है। और कोसों जी भागता है। सच है लज्जते ईमानी जी जान में समा जाती है तो सब तरफ से दिल मस्रूर हो जाता है जैसा जनाबे मौलाना इर्शाद फरमाते हैं।

चूं अजां इक्बाले शिरें शुद दहान सरो शुद बर आदमी मुल्क जहान

फिर जंगल को चले गए। थोडे दिन के बा'द एक औरत रोती चिल्लाती हजरत की खिदमत में आई कि या हजरत मेरा बेटा खुश रू

खुश खू खूब सूरत खूब सीरत नाजुक अन्दाम दिल आराम आप के वा'ज में अव्वल मरतबा बडी कर्रो फर से आया फिर यहां से फकीर हो कर गया। दोबारा सब सामाने रियासत और हश्मत का फेंक कर आया। तीसरी बार जो आया उस का फिर पता न पाया कि क्या हुवा और कहां गया ? येह कहती थी और जार जार रोती थी। और खडे बैठे को रुलाती थी। हत्ता कि हजरत को भी निहायत रिक्कत थी। मा'लूम हुवा कि अहमद बिन यजीद की मां है। फरमाया ऐ नेक बख्त सब्र कर और करार पकड। जिस वक्त वोह यहां आवेगा फौरन इत्तिलाअ होगी। हजरत के इर्शाद से उस बेचेन के जी को टक चैन हुवा और दिले बेकरार ने जरा करार पकडा। फिर घर को चली गई थोडे दिन बा'द रात को हजरत के दरवाजे की किसी ने कुंडी खटकाई। फरमाया कौन है कहा अहमद बिन यजीद है खादिम को इर्शाद किया दरवाजा खोल दे। और उस की मां को जल्द बुलाले फिर उस ने आ कर हजरत से सलाम अलैक की। आप ने बा'द जवाब के फरमाया तेरा क्या हाल है जो ऐसा हकीर और ख्वार जार है ? कि कमर झुक गई सूरत बदल गई। कहा ऐ इमाम ! मैं बहुत खुश हूं तुम ने मुझ को दुन्या से छुडाया और खुदा से मिलाया तुम्हारे एहसान किस दिलो जान से बयान करूं अल्लाह तआला तुम को इस की जजा देगा नागाह उस की मां और जोरू लडके रोते चिल्लाते आ गए उस का हाल देख कर निहायत परेशान हाल हो गए। इस कदर रोते चीखें मारते थे कि दरो दीवार को रुलाते थे आदमी का तो क्या जिक्र है फिर मादरे मुश्फिका ने कहा ऐ मेरे जिगर पारे ! क्या इन बच्चों के हाल पर भी रहम नहीं आता क्या हो गया क्या तेरे जी में समा गया ? फिर हर तरह से मिन्नतो खुशामद की कि किसी धब से घर तक चले। हरगिज न माना। तंग हो कर हजरत की खिदमत में अर्ज करने लगा कि या हजरत ! येह क्या बला मेरे पीछे लगा दी कि मुझ को जान छुडाना मुश्किल हो गया फरमाया मैं ने अपना वा'दा पूरा किया है फिर औरत मायूस हो कर कहने लगी हाए मेरी जवानी क्यूं कर कट गई कहा तुझ को इख्तियार है जो तेरा जी चाहे सो कर। मेरे

खयाल में न पड । मैं खुदी से गुजर गया खुदा की महब्बत में हिल मिल गया । बोली अपने बेटे को साथ लो कहा बहुत अच्छा । फिर लडके के रेशमी कपडे उतारने शुरूअ किये और उस के हाथ में जम्बील देने का कस्द किया तब मां ने वावेला कर के लडके को ले लिया । कहा आइन्दा तुम को इख्तियार है मेरे पास तो मेरी सूरत हो कर रहेगा । येह हाल देख कर हर कसो नाकिस जार जार रोता था । गोया हश्र बरपा था । फिर जंगल को चला गया । और सब को रोता चिल्लाता छोड गया और राहे खुदा से न मुंह मोडा । बा'द दो बरस के हजरत के पास एक आदमी आया कि आप को अहमद बिन यजीद ने बुलाया है कि उस का वक्त आखिरी है आप उस के हमराह गए । देखें तो एक कब्रिस्तान शोतरया में एक जानिब को तंग तारीक जगह में पडे हैं और ऐसे कलिमात कहते है कि भलाई चाहने वालो भलाई करना । फिर आप सुब्ह तक वहां रहे फिर मकान को आए कि तजहीजो तकफीन करें । देखा तो हजारों आदमी शहर से आते है मुतहय्यिर हो कर कहा । खैर है बोले खैर है रात को आवाजे गैब आई कि जिस को नमाजे जनाजा औलिया अल्लाह की पढनी हो वोह मकबरा शोतेरया में सुब्ह को जावे उस वास्ते तमाम शहर वहां जाता है चुनान्चे कसरते हुजूम से करीब नमाजे अस्र के कफन दफ्न की नोबत पहुंची ।

﴾18﴿ तौबा का एक दिलचस्प वाकिआ

बाजो ने लिखा है कि एक मरतबा हजरते इब्राहीम अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गोरे खर के शिकार को गए । आप ही शिकार हो गए । बादशाही दुन्या की छोड कर बादशाही उक्बा की ली । या'नी गोरे खर के पीछे घोडा डाला और लश्कर से अलग हो गए । उस ने उलट कर ब जबाने फसीह कहा ऐ इब्राहीम अदहम ! तू इस काम के लिये पैदा नहीं हुवा जा अपना काम कर । पस इब्राहीम अदहम मुतहय्यिर हो कर गश खा कर घोडे से गिर पडे घोडा लश्कर को चला गया । लश्कर वालों ने घोडा खाली दिखा कर कहा कि बादशाह वल्लाहु आलम कहां मारा गया । रोते चिल्लाते सब तरफ धूंड कर बैठ रहे । कि कहीं पता न लगा । जब इब्राहीम

को होश हुवा। उठ कर जंगल को चले। चरवाहों से कहा हमारा लिबास अपने से तब्दील कर लो। उन्हों ने कहा हम तो सब गुलामे शाही हैं हम हरगिज लाइक लिबासे शाही के नहीं अल किस्सा बादशाह ने सब बकरियां उन को बख्श दीं। कि शायद अल्लाह तआला मुझ को भी ऐसे ही बख्श दे और उन का कम्बल आप ने औढ लिया। और सब लिबास अपना उन को दे दिया। फिर उन्हों ने अर्ज किया। ऐ बादशाह! क्या हाल हुवा तुम्हारा किस चीज ने बादशाहत छुडाई और फकीरी दिलाई। कहा गोरे खर के शिकार को आया था। खुद शिकार हो गया। और येह हाल किसी पर जाहिर न करना। तुम्हारे हक में अच्छा न होगा। फिर सब जंगल वाले रोते चिल्लाते थे और इब्राहीम उस मजमून के अश्आर पढते थे। कि इलाही! तेरी महब्बत दुर्रे यतीम के लिये अपनी औलाद यतीम की। अगर टुकडे टुकडे हो जाऊं तेरी जमाल के खयाल के सिवा किसी खयाल को जी राह न दूं। कि तेरे जमाल की दौलत से तमाम जी जान माला माल है और बाकी ख्वाबो खयाल बलो बाल है।

﴾19﴿ शौहर की नाफरमानी पर एहसासे तौबा

एक पीरे तरीकत के मुतअल्लिक कहा जाता है कि वोह अपनी बीवी पर आशिक थे। एक दिन वोह अपनी बीवी के हमराह घर में सोए हुए थे। कि यकदम उन पर एक खास हालत तारी हो गई। उन्हों ने उस हालत में जो कुछ कहा वोह बीवी सुनती रही और कुछ देर के बा'द जब उन्हें कुछ इफाका हुवा तो बीवी ने पूछा। हजरत आप की क्या हालत थी? उन्हों ने कहा तुम ने क्या देखा? बीवी ने कहा अच्छा ही देखा। उस के बा'द वोह बाहर निकली, उन्हों ने उसे जाने दिया। उस ने एक नोकर से कहा कि मेरी मां और बहन को बुलाला वोह बुला लाया, जब वोह आए तो उस ने उन से बयान किया कि मेरे शौहर को जुनून हो जाता है लिहाजा में हरगिज उस की बीवी बन कर नही रहूंगी। क्यूं कि वोह मजनून है मैं उस के साथ एक घर में नहीं रहूंगी। उस के रिश्ते दारों ने बहुत कुछ नसीहत की और वापस लौटाना चाहा मगर उस ने इन्कार किया। उन्हों ने

कहा घर ही में रहो ताकि हम उन से मिलें। जब हजरत साहिब को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने अपनी जौजए मोहतरमा से पूछा कि तुम्हारा क्या मक्सद है ? वोह कहने लगी जुदाई। वरना मैं अपना खून कर लूंगी। और तुम ही उस खून का सबब बनोगे। हजरत ने कहा एक हफ्ता सब्र करो उस ने कहा अच्छा। शैखे तरीकत को उस के फिराक का सख्त सदमा था और उसे बहुत कुछ दे कर राजी करना चाहता था। वोह नहीं मांनती थी। उन्हों ने रिश्तेदारों की एक जमाअत सिफारिश के लिये रवाना की उस ने उन की भी न मानी। जब उन्हें उस का अज्म मा'लूम हो गया तो उन्हें सख्त तश्वीश हुई और परेशानी लाहिक हुई। और उन की हालत मुतगय्यर हो गई और उन के दिल में तश्वीश पैदा हो गई और किसी को उस का मिटाने वाला न पाया। जब मोहलत के दिनों में से सिर्फ एक रात बाकी रह गई और उन की हालत नागुफ्ता बेह हो गई और जमीन मुझ पर तंग हो गई तो उन्हों ने अल्लाह की तरफ रुजूअ किया और अपना काम उस के सिपुर्द कर दिया कि जो कुछ वोह करे मैं उस पर राजी हूं। और येह दुआ पढने लगे।

اللهم يا عالم الخفيات ديا سامع الاصوات يا من بيده ملكوت لارض
ولسماوات و يا مجيب الدعوات استغيث بك واستجرت بك يا مجير اجرنى

3 मरतबा पढने के बा'द जब आधी रात गुजरी और किब्ले की जानिब, मुतवज्जेह हो कर बैठा था कि अचानक वोह घर में दाखिल हुई और उन के पाऊं चूमने लगी और कहा मैं खुदा के लिये तुम से सुवाल करती हूं कि मुझ से राजी हो जाओ और मैं अपने फे'ल से तौबा करती हूं और अल्लाह की तरफ रुजूअ करती हूं और उस से सुवाल करती हूं कि वोह मेरी तौबा कुबूल करे शौहर ने कहा जब तक मुझे उस की वज्ह न बताओगी मैं राजी नहीं होउंगा। उस ने कहा मैं रात अपने इरादे पर चली थी। एक शख्स मेरे ख्वाब में आया उस के एक हाथ में कोडा और दूसरे में छुरी थी और कहा अगर उस बात से तू रुजूअ न करेगी तो छुरी से जब्ह कर दूंगा फिर मेरी पुश्त पर तीन कोडे लगाए में डर कर उठ बैठी और उन कोडों की सोजिश मेरे कल्ब पर थी। फिर थोडी देर के बा'द सो गई तो फिर उस शख्स को

देखा उस के हाथ में कोडा और छुरी थी और कहा क्या मैं ने तुझे नसीहत नहीं की थी। मैं ने तुझे नहीं डराया और हुक्म नहीं किया और हाथ उठाया इतने में गभराकर मैं चोंक उठी और तुम्हारे पास दौडी आई ताकि तुम मेरी तौबा कुबूल कर लो और राजी हो जाओ और अल्लाह से मेरे लिये दुआ करो। फिर उस ने कपडा उठाया तो तीन जख्म थे तो उस पर खाविन्द ने कहा खुदाया मेरी बीवी की तौबा कुबूल कर ले। मैं तुझ से दुन्या और आखिरत में राजी हो गया। बीवी ने कहा मैं अपना महर अल्लाह के शुक्र में तुम्हें मुआफ करती हूं। और मेरे पास जेवर के बीस दिरहम हैं वोह भी और मेरा कपडा भी अल्लाह के शुक्र में फकीरों का है। जब सुब्ह हुई तो उस ने अपना अहद पूरा किया और खाविन्द ने भी सोचा कि अल्लाह ने अपने लुत्फो करम से जो कुछ मुझ पर इनायत फरमाई येह उस के फे'ल पर राजी रहने का नतीजा है और यकीन हो गया कि कुल काम अल्लाह सुब्हानहू के कब्जए कुदरत में है फिर वोह उस के साथ सात साल निहायत आराम से रहे और अल्लाह के हर फे'ल पर राजी था। फिर वोह बीवी मर गई। मौत के बा'द उन्हों ने बीवी को ख्वाब में देखा कि निहायत खूब सूरत और उम्दा उम्दा जेवर और लिबास (जो वस्फ से बाहर हैं) पहने हुए नजर आई। उन्हों ने कहा खुदा तआला ने तेरे साथ क्या किया और तूने क्या पाया ? कहा तुम देख रहे हो। अब मैं तुम्हारी मुलाकात की मुन्तजिर हूं। जैसा तुम मुझ से राजी हुए खुदा तुम से राजी हो।

(20) अल्लाह के हुजूर मग्फिरत मांगने का वाकिआ

फुकरा में से एक फकीर से मरवी है। कि मैं औलियाए इरादत में एक शैख की खिदमत में गया और वोह मुझे खिदमत का हुक्म करते थे और मैं खिदमत से खुश होता था। एक दिन मुझे कसाई के यहां भेजा ताकि फकीरों के वास्ते गोश्त उठा लाऊं। चुनान्चे में ब कदरे जरूरत गोश्त खरीद कर उठा लाया और चलने के कस्द से फिरा ही था कि सामने से एक आदमी नजर आया जो एक लदे हुए जानवर हांके हुए ला रहा था। मुझे उस शख्स का धक्का लगा और में कसाई की दुकान के एक मेख पर

गिर पडा। और मेरा पहलू जख्मी हो गया। दूकानदार ने मुझे उस मेख पर से उठाया। लेकिन मुझे बहुत तक्लीफ हुई और जख्म पर पट्टी बन्धवा ही रहा था कि इतने में वोह गधे वाला और तीन आदमियों को साथ लिये हुए आ गया और कहा मेरा एक बटवा गिर पडा है जिस में दस दिनार थे और वोह मेरे सर पर था। वोह मुझे और कस्साब को और दो आदमियों को पकड कर कोतवाल के सामने ले गया और कहा इन्हों ने मेरा बटवा चुराया है। चुनान्चे मेरे सब साथियों को कोडे लगे और मुझे भी आखिर में पीटा गया और मार मेरे जख्म पर ही लग रही थी कि इतने में एक सिपाही की नजर उस बरतन पर पडा जिस में गोश्त था। देखा तो उस में बटवा पडा हुवा था। उस ने कहा येही चोर है कोतवाल ने कहा इस का हाथ काटा जाए। चुनान्चे उस के हुक्म से तेल गरम किया गया और मुझ पर एक मख्लूक जम्अ हो गई कोई मारता था कोई गालियां देता था और मैं चार आदमियों के बीच में था इतने में एक शख्स ने आवाज दी तेल गरम हो चुका चोर को हाजिर करो। मैं अपना काम अल्लाह के सिपुर्द कर चुका था। जिस के हाथ में हर शै की हुकूमत है। एक शख्स ने उस ने इस जोर से मेरे एक तमाचा मारा कि मेरे होश बिल्कुल जाते रहे उस वक्त भी मैं उस बला पर साबिर था और अपना काम अल्लाह ही के सिपुर्द करता था। फिर उस ने कहा ऐ चोर! ऐ डाकू! और मेरा हाथ पकड कर एक झटका दिया। जिस से मैं मुंह के बल जमीन पर सज्दे की हैसियत में गिर पडा। उस वक्त मैं ने नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप मुस्कुरा रहे हैं। मेरी तरफ देख रहे हैं। अभी वहां सीधा खडा भी न हो चुका था कि सारी मुसीबत मुझ से दफ्अ हो गई और एक शख्स ने चिल्ला कर कहा कि येह शख्स जिस को तुम ने गिरफ्तार किया है वोह शैख का खादिम है उस वक्त लोगों ने मुझे गौर से देखा और لا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم अब तो सब लोग मेरे पाऊं पर गिरने लगे और कोतवाल साहिब भी दौडते हुए आए और मेरा पाऊं चूमने लगा और कहा हजरत! खुदा के वास्ते अर्ज करता हूं कि मेरी खता आप मुआफ

करें। फिर बटवे वाला आ कर गिरया व जारी करने लगा और कहा हजरत मुझ से राजी हो जाए मैं ने कहा खुदा मुझे और तुझे मुआफ करे। येह एक आजमाइश थी जिस से मेरी पोशीदा जब्त की ताकत जाहिर हुई फिर बटवा खोला गया। मा'लूम हुवा कि वोह बोझ और बटवा दोनों शैख ही के वास्ते भेजा गया था, इत्तिफाकन उस वाकिए के वक्त शैख और जुम्लए फुकरा एक आपस की नज्अ के सबब इस्तिग्फार में मश्गूल थे और कोई बाहर न निकला। यहां तक कि मैं दरवाजे पर आ खडा हुवा। मेरे पास गोश्त और बटवा था मैं ने सारा किस्सा बयान किया। फरमाया : जिस ने सब्र किया उस ने जमाल और कमाल हासिल किया। फिर फरमाया : ऐ बेटे मैं भी फकीरों के साथ तेरी हालत देख रहा था। क्यूं कि उस का पहले से मुझे इल्म था। फिर फरमाया ऐ मुहम्मद ! येह वाकिआ तरीकत में तुम्हारे कामिल होने का सबब बन गया। अब जहां चाहो सफर करो। رضی اللہ تعالٰی عنہ ونفعنا بہ आमीन।

«21» अर्श का साया तौबा में है

हजरते शकीक बलखी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम ने पांच चीजें तलब कीं और इन्हें पांच चीजों में पाया। रोजी की बरकत तलब की वोह नमाजे चाश्त में मिली और कब्र को रोशनी तलब की उसे तहज्जुद की नमाज में पाया और हम ने मुन्कर व नकीर के सुवालात का जवाब तलब किया तो उसे किराअते कुरआन में पाया और हम ने पुल सिरात को पार होना तलब किया तो उसे रोजा और सदके में पाया और हम ने अर्श का साया तलब किया तो उसे तौबा में पाया। बा'ज उलमा फरमाते हैं हम ने मज्लिसे वा'ज के आखिर में दुआ की ऐ इलाही ! हम में जिस का कल्ब जियादा सियाह है और जिस की आंखें जियादा खुश्क हैं और जिस की मा'सियत का जमाना जियादा करीब है उस की मग्फिरत कर। हमारे नज्दीक एक शख्स मुखन्नस गुनहगार था उस ने खडे हो कर कहा येह दुआ फिर करो। क्यूं कि तुम सब में मैं ही जियादा सियाह कल्ब और खुश्क आंख और करीबुल मा'सियत हूं। मेरे वास्ते दुआ करो। अल्लाह

तआला मेरी तौबा कुबूल करे। वोह आलिम फरमाते हैं दूसरी शब मैं ने ख्वाब में देखा कि गोया मैं हक तआला के सामने खडा हूं। और इर्शाद हुवा कि मुझे येह अच्छा मा'लूम हुवा कि तुम ने मेरे और मेरे बन्दे के दरमियान सुल्ह करा दी। मैं ने तुझे और इस को और सारी मज्लिस वालों को मुआफ किया। नक्ल है कि एक शख्स ने एक बुजुर्ग को बा'दे वफात ख्वाब में देखा। पूछा अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या किया ? कहा अल्लाह तआला ने मेरा नामए आ'माल सीधे हाथ में दिया उस में मुझे अपनी एक लग्जिश नजर आई। मैं उस के पढने से शरमाया और कहा इलाही ! मुझे रुस्वा न कर। इर्शाद हुवा कि जब तूने येह फे'ल किया था और मुझ से नहीं शरमाया था। उस वक्त मैं ने तुझे रुस्वा न किया तो आज जब कि तू मुझ से शरमाता है मैं तुझे क्यू कर रुस्वा करूंगा। मैं ने तेरी लग्जिश मुआफ कर के अपनी रहमत से तुझे जन्नत में दाखिल किया। वोह ऐबों का ढांकने वाला हिल्मो करम वाला पाक है।

﴾22﴿ हजरत सय्यिद अहमद रिफाई का एक वाकिआ

हिकायत है कि एक शब हजरते सय्यिद अहमद रिफाई एक दरिया के किनारे पर गए देखा तो एक कश्ती जा रही थी आप उस में बैठ गए लेकिन उस में पहले से कोतवाल और दीवान के मुलाजिमीन सुवार थे उन के हमराह बेगारियों की एक जमाअत थी और उन के पीछे एक सिपाही भी था। जब सिपाही ने हजरत को बैठा देखा तो कहा ऐ शैख ! चलो हमारे साथ आप साथ हो गए उस ने आप को भी बेगारियों में दाखिल किया। हजरत उन के हमराह गए और करिया ब जरिया में सुब्ह के वक्त पहुंचे। उस वक्त आप को एक फकीर ने देख लिया। वोह चिल्लाया और फरयाद करने लगा। इतने में बहुत से फुकरा उन के पास जम्अ हो गए और शोरो गुल मचाने लगे। जब कश्ती वालों को मा'लूम हुवा कि वोह सय्यिद अहमद हैं तो अपने किये पर बहुत नादिम और पशेमान हुए और गभराए और आप के पास हाजिर हो कर मा'जिरत करने लगे फरमाया साहिबो ! जो कुछ हुवा अच्छा ही हुवा। तुम्हारी हाजत पूरी हुई। हमें नेकी

मिली और कोई नुक्सान भी न हुवा और मैं तो घर में खाली बैठा रहता हूं और मैं बैठा कुछ काम नहीं करता तुम बेकार जईफों को पकडते हो या कारोबारी आदमियों को पकडते हो और उन के कामों से बीचारों को रोकते हो और गुनहगार बनते हो। इस के बा'द अगर कभी तुम्हें जरूरत पडे तो मुझे खबर करों में अपने थकने तक तुम्हारा काम करूंगा। फिर लौट जाऊंगा। उन्हों ने कहा हम अपने फे'ल से इस्तिगफार करते हैं। आप भी हमें अल्लाह के हुजूर से मुआफी करवा दीजिये। और हम से राजी हो जाइये। आप ने उन्हें सच्ची तौबा की तरफ माइल किया और कहा खुदा तुम से और हम से राजी होवे। फिर उन के लिये दुआ की और उन्हें रुख्सत किया। उस सिपाही ने जिस ने आप को पकडा था कही हजरत इन लोगों से आप राजी हो गए। और जो सब से बडा बद बख्त है उस का क्या हाल होगा? फरमाया : खुदा तुझ से भी राजी हो। उस ने कहा हुजूर मुझे भी तौबा कराइये और अहद लिया और कहा ऐ अल्लाह ! तू गवाह है कि हम दुन्या और आखिरत के भाई हैं। फिर लोग वासित को गए। उस सिपाही ने दुन्या दारों और बादशाहों की खिदमत तर्क की और हजरत सय्यिद अहमद के पास आ कर रहने लगा। और आप को इत्तिलाअ दी कि मैं ने मुलाजमत छोड दी है फिर अल्लाह तआला की इताअत में रहा और नेक बन गया।

﴾23﴿ हारूनुर्रशीद के जमाने में तौबा का एक वाकिआ

हारूनुर्रशीद के दौरे खिलाफत में एक बार बगदाद में बारिश रुक गई। हत्ता कि लोग हलाकी के करीब पहुंचे और सब लोग गुस्ल कर के पाक हुए और जंगल की तरफ निकले ताकि अल्लाह तआला से दुआ करें कि उन्हें किसी न किसी रोज बारिश अता करे। लेकिन पानी न बरसा। उस जमाने में कि वोह लोग रोज रोज जा जा कर सुवाल करते थे। एक शख्स जंगल के दरमियान से निकला गर्द आलूद बाल बिखरे हुए दो चादर औढे हुए और उन के साथ तीन कुंवारी कडकियां थीं जो बहुत खूब सूरत थीं और आ कर लोगों के एक जानिब खडा हुवा। और सलाम किया

लोगों ने जवाब दिया। उन्हों ने कहा ऐ कौम ! तुम्हें क्या हो गया है ? क्यूं यहां जम्अ हो रहे हो । कहा ऐ शैख ! हम ने अल्लाह से दुआ की कि हम पर बारिश बरसा दे लेकिन न बरसाया। कहा ऐ लोगों ! क्या वोह शहर से गाइब है जो तुम जंगल में आए हो ? क्या अल्लाह सुब्हानहू व तआला हर जगह हाजिर नहीं है ? क्या अल्लाह हक तआला ने अपनी मोहकम किताब में येह नहीं फरमाया है وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ या'नी अल्लाह तुम्हारे साथ है जहां कहीं तुम हो और अल्लाह तआला तुम्हारे अमल देखता है। हारूनुर्रशीद को इस की खबर हुई कहा येह कलाम ऐसे शख्स का है कि उस के और अल्लाह के दरमियान कोई राज है। फिर कहा उसे मेरे पास ले आओ। जब उन के पास लाया गया और एक ने दूसरे को सलाम किया तो हारुनुर्रशीद ने उस से मुसाफहा किया। और अपने आगे बिठाया और कहा ऐ शैख ! अल्लाह से दुआ करो कि हम पर पानी बरसाए। शायद तेरा उस के पास कुछ रुत्बा हो। येह सुन कर वोह मुस्कुराया और कहा क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे वास्ते अल्लाह से दुआ करूं ? कहा हां। तो सब लोग हमारे साथ अल्लाह से तौबा करें। लोगों में तौबा की निदा की गई। और सब ने तौबा की और अल्लाह की तरफ रुजूअ किया। फिर उस शैख ने आगे बढ कर दो रक्अत नमाज खफीफ पढाई और सलाम फेर कर अपनी लडकियों को दाएं बाएं खडा किया और हाथ फेलाए और आंसू जारी किये और दुआ की, अभी दुआ खत्म भी न होने पाई थी कि आस्मान पर अब्र घिर गया और बादल गरज ने लगा और बिजली चमकने लगी और बारिश ऐसी हुई कि गोया मश्क के धाने खोल दिये गए। उस से हारूनुर्रशीद बहुत खुश हुए और अरकाने दौलत तेहनियत के वास्ते जम्अ हुए। हारूनुर्रशीद ने कहा कि मेरे पास शैख सालेह को ले आओ। ढूंढा तो वोह उसी मकाम पर किचड में अल्लाह के वास्ते सज्दे में पडे हुए थे। लोगों ने लडकियों से पूछा कि वोह सज्दे से सर नहीं उठाते। उन्हों ने कहा की येही आदत है कि जब वोह सज्दा करते हैं तो तीन दिन तक सर नहीं उठाते। उस की हारूनुर्रशीद को खबर दे दी गई येह सुन कर

वोह रोए और कहा ऐ अल्लाह हम तुझ से सुवाल करते हैं और तेरे यहां सालिहीन को वसीला पकडते हैं कि तू उन्हें हम को अता करे और उन की बडी बडी बरकतें अपने फज्ल से हम पर बरसाए या अरहमर्राहिमीन आमीन। رضی اللہ تعالٰی عنہ ونفعنا بہ !

«24» किस्सा एक शहजादे की तौबा का

अहले मक्का के मर्दे कामिल फरमाते हैं कि मैं एक पहाड के गार में मुजर्रद रहता था। बसा औकात एक एक महीने या उस से कुछ कम जियादा मुकीम रहता था। लेकिन कोई आदमी वहां नजर न आता था। और मुबाह चीजों से अपना पेट भरता था। जब मुझे भूक लगती तो गार से निकल कर पहाड पर आता और बकदरे जरूरत खाता और फिर गार में लौट जाता। एक दिन दस्तूर के मुवाफिक जब मैं गार से निकला तो जंगल से एक सुवार को आते देखा। देखते ही मैं आंख बचा कर गार में दाखिल हो गया। एक साअत के बा'द मैं क्या देखता हूं वोह शख्स गार के दरवाजे पर खडा मेरा नाम ले कर पुकार रहा है। मैं सुन कर खडा हो गया और उस की तरफ चला। उस ने मुझे सलाम किया मैं ने दरयाफ्त किया क्या तू आदमी है ? कहा हां। मैं ने कहा कहां का बाशिन्दा है और तुझे मेरा नाम किस ने बताया ? कहां में शहजादा हूं। तीन दिन हुए शिकार को चला था अपने साथियों से जुदा हो कर जंगल में परेशान मारा मारा फिरता रहा और इस शिद्दत की पियास लगी कि करीबुल हलाक हो गया। अचानक मेरी बेखबरी में एक शख्स चादर औढे हुए मेरे पास आए उन के हाथ में एक कूजा था मुझे उस का पानी पिलाया और मुठ्ठी भर घांस मुझे दी। उसे मैं ने खाया वोह और तरकारियों से जियादा मजेदार थी जब मैं खा चुका तो मुझ से कहा ऐ मुहम्मद ! उस से पहले तुम ने कभी तौबा भी की है। मैं ने कहा मैं हजरत के हाथ पर अभी तौबा करता हूं चुनान्चे मैं ने उन के हाथ चूम कर उन के हाथ पर तौबा की और अपने पाऊं पर खडा हुवा और कहा ऐ हजरत ! आप अल्लाह तआला से दुआ फरमाइये कि वोह मुझे कुबूल कर ले। आप ने आस्मान की तरफ निगाह उठाई और

कहा ऐ रब्बे मुहम्मद ! अपने नबी हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत से मुहम्मद पर रहम कर और उस की तौबा कुबूल फरमा ले और मुहम्मद को कुबूल भी कर ले और उन के आंसू जारी थे और उन की उस दुआ की हलावत मेरे कल्ब में महसूस होने लगी और मैं ने अल्लाह तआला से वा'दा कर लिया कि मैं जिस से निकल चुका हूं। फिर अपनी मौत तक उस काम में वापस न जाऊंगा। फिर उन्हों ने मुझ से कहा सुवार हो जाओ। मैं ने कहा मैं सुवार नहीं होऊंगा। उन्हों ने मुझे कसम दी और कहा सुवार हो जाओ में सुवार हुवा वोह मेरे आगे आगे चलते थे फिर तुम्हारी जगह और नाम बता कर फरमाया। उन के पास बैठ। वोह तुझे नेकी की ता'लीम करेंगे मैं ने कहा घोडे का क्या करोगे मुझे उस की जरूरत नहीं है। चुनान्चे घोडे पर से उतर कर उसे छोड दिया और मैं उसे साथ ले कर गार में दाखिल हुवा और अपने खाने की चीजें मैं ने उस के सामने पेश कीं। उस ने उन में से खाया और रात तक हम दोनों बैठे रहे। फिर मैं ने कहा ऐ बेटे ! इबादत शिरकत के साथ ठीक नहीं होती हमारे करीब एक और गार था मैं ने उस की तरफ इशारा कर के कहा कि तू उस में जा बैठ। वोह शख्स उस में जा बैठा। मैं तीन दिन में उस से एक बार जा कर मिलता था। उसे भी भूक लगती तो गार से निकल कर मुबाह चीजें खाता और फिर गार में चला जाता। हमारे पास एक चश्मा भी था। घोडा भी दिन भर चरता और शाम के वक्त हमारे पास आ रहता एक दिन वोह जवान गभराया हुवा मेरे पास आया। मैं ने दरयाफ्त किया कि तेरा क्या हाल है ? कहने लगा कि मैं ने ख्वाब में देखा कि मेरे मां बाप पीछे तलाश में एक जगह से दूसरी जगह गश्त कर रहे हैं और उन के हाथों में दो चिराग जल रहे हैं। जब वोह मेरे करीब आते हैं तो एक शख्स जिस के हाथ में एक बहुत बडा हीरा है निकलता है और उन से कहता है कि मैं तुम से खुदा के वास्ते सुवाल करता हूं कि तुम अपने लडके से राजी हो जाओ और उसे खुदा के वास्ते छोड दो क्यूं कि वोह खुदा की तरफ भाग निकला है और मुझ से येह हीरा ले लो। वोह शख्स येही कहता रहा हत्ता कि उन्हों

ने कहा कि हम उस से राजी हैं और मुझ से कहा कि येह हीरा तेरे लिये बशारत है मैं इस हालत में बेदार हुवा। मैं ने कहा ऐ बेटे ! येह तुम्हारी तौबा का नतीजा है जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। मेरा कौल सुन कर वोह खुश हुवा और एक मुद्दत हम उसी हालत पर रहे। एक रात मैं ने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख्वाब में देखा आप मेरे मकान में दाखिल हुए और फरमाया कि तू और वोह जवान दोनों शहर में जाओ ताकि लोगों को तुम से नफ्अ हो और तुम्हें भी फाएदा पहुंचे। सुब्ह होते ही मैं उस जवान के पास गया और ख्वाब की खबर की उस ने कहा हजरत मैं ने भी रात ख्वाब देखा है कि मेरे हाथ में एक रस्सी है और एक खूब सूरत आदमी मेरे दाहिनी जानिब खडा हुवा उसे खोल रहा है और मुझ से कह रहा है कि जो कुछ तुम को हुक्म दें उस पर अमल कर। मैं ने कहा साहिब जादे ! उस पर खुदा का शुक्र है चुनान्चे मैं और वोह दोनों पहाड से उतर कर दियारे बकर के एक शहर में गए और घोडा भी हमारे पीछे पीछे चला और शहर की एक खानकाह में पहुंचे। उस के शैख का दो दिन पहले इन्तिकाल हो चुका था। जब उन लोगों की नजर मुझ पर पडी तो कहने लगे येही शख्स है। मैं खामोश रहा उन लोगों ने कहा या शैख ! क्या आप इस जगह रहेंगे ? फिर एक खूब सूरत शैख तशरीफ लाए और मुझे सलाम कर के कहने लगे। हजरत खुदा के वास्ते हमारे पास कियाम फरमाएं। मैं ने कहा अल्लाह को इख्तियार है। उस रोज एक फकीर हमारे यहां आया था तो उस को हम ने घोडा दे दिया और उस का किस्सा भी बयान कर दिया और मैं और वोह जवान उन के पास बीस बरस तक खानकाह में रहे। किसी को उस जवान का किस्सा मा'लूम न हुवा येह खबर हुई कि वोह कहां का रहने वाला है। हत्ता कि वोह मर गया। मैं उस के बा'द हज के इरादे से चला और मेरी निय्यत येह थी कि बैतुल्लाह की मुजावरत करूं। रावी कहते हैं कि शैख तीन साल मक्कए मुअज्जमा में रहे। उस के बा'द आप ने वफात पाई और बत्हा में दफ्न हुए।

رضی اللہ تعالیٰ عنہ ونفعنا بہ

«25» हजरते मालिक बिन दीनार से एक नौजवान की इल्तिजा

हजरते मालिक बिन दीनार फरमाते हैं मैं ने एक जवान को देखा कि उस के चेहरे नूरानी से दुआ की कुबूलियत के आसार जाहिर हैं और उस के रुख्सारों पर आंसू बेह रहे हैं। मैं ने उसे पहचाना कि बसरा में उसे मालदार देखा था मुझे उस की परेशान हाली पर सख्त रंज हुवा और उस हाल में देख कर रोने लगा उस ने भी मुझे देख कर पहचाना और रो दिया फिर उस ने मुझे सलाम किया और कहा मालिक खुदा के वास्ते अपने वक्ते खास खुलुव्वत में मुझे जरूर याद रखना और खुदा से मेरे हक में जौबा और मग्फिरत की दुआ करना। उम्मीद है कि तुम्हारी दुआ की बरकत से वोह रहीमो करीम मुझ पर रहम फरमाए और मेरे गुनाह मुआफ कर दे। मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फरमाते हैं कि वोह चल दिया और आंखों से आंसू रवां थे। जब हज का जमाना आया मैं मक्कए मुअज्जमा को रवाना हुवा और वहां पहुंचा। एक दिन मस्जिदे हराम में था कि लोगों के मज्मए पर नजर पडी और उस मज्मए में एक जवान नजर आया जो जारो कतार रो रहा था और उस के रोने की कसरत से लोग तवाफ से रुके हुए थे मैं भी लोगों के साथ ठहर कर उसे देखने लगा। मा'लूम हुवा कि येह तो मेरा दोस्त है मैं उसे पा कर बहुत खुश हुवा और उसे सलाम किया। कहा शुक्र खुदा का अल्लाह तआला ने तेरे खौफ को अम्न से बदल दिया और जो तेरी तमन्ना थी तुझे दे दी। मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं मैं ने कहा तुझे खुदा की कसम सच बता, तेरा क्या हाल है ? तू अपने हाल से मुझे मुत्तलअ कर जवाब दिया सब खैरियत है उस ने अपने फज्लो करम से मुझे बुलाया और मैं आया और जो कुछ मांगा सो पाया। मालिक फरमाते हैं मैं तवाफ में मसरूफ हुवा और वोह मुझे छोड कर चला गया। फिर मैं ने उसे न देखा और न कुछ खबर पाई।

«26» तौबा का बाइसे इब्रत वाकिआ

एक बुजुर्ग फरमाते हैं कि हम मदीनए मुनव्वरा में थे कभी कभी इन आयातो अलामाते खुदावन्दी का जो खुदा ने अपने खास बन्दों और

अपने दोस्तों को अता फरमाई हैं जिक्र करते थे। एक शख्स नाबीना हमारे करीब रहता था जो कुछ हम कहते वोह सुनता था, एक मरतबा वोह हमारे पास आया और कहा मुझ को तुम्हारी बातों से उन्स पैदा हो गया है। साहिबो ! मेरे बाल बच्चे थे मैं जानिबे बकीअ लकडी लेने गया। वहां एक जवान मिला। कमीज कत्तान का पहने हुए हाथ मैं मौती लिये मैं ने अपने जी में कहा येह माले मुफ्त हाथ से न जाना चाहिये और उस के कपडे उतार लेने का कस्द किया। मैं ने उस से कहा अपने कपडे उतार दे। उस ने कहा खुदा की हिफाजत में चला जा। मैं ने उस से दो मरतबा बल्कि तीन मरतबा येही सुवाल किया उस ने कहा तू मेरे कपडे जरूर लेगा मैं ने कहा हां जरूर लूंगा। फिर उस जवान ने अपनी दो उंगलियों से मेरी आंखों की तरफ इशारा किया दोनों आंखें निकल कर गिर पडीं। मैं ने कहा खुदा की कसम तुम कौन हो ? कहा में इब्राहीम खवास हूं मैं कहता हूं इब्राहीम खवास ने चोर को अन्धा होने की बद दुआ दी और इब्राहीम अदहम ने अपने मारने वाले के हक में जन्नत की दुआ की। वज्ह उस की येह है। शैख इब्राहीम खवास ने देखा कि चोर बिगैर अन्धा हुए तौबा न करेगा येह दुन्या का अजाब उस के हक में मुनासिब समझा और शैख इब्राहीम अदहम को उस मारने वाले को ईजा देने में उस का तौबा करना मा'लूम हुवा लिहाजा बराहे करम व जवां मर्दी उस के हक में नेक दुआ फरमाई। उन की दुआ की बरकत से उस शख्स को बरकतो खैर हासिल हुई और तौबा व इस्तिगफारो उज्र करता हुवा उन की खिदमत में हाजिर हुवा। इब्राहीम बिन अदहम ने फरमाया : वोह सर जो मोहताजी और उज्र ख्वाही का था मैं बल्ख में छोड आया। या'नी तकब्बुरे रियासत का गुरूर शराफत का मेरे दिमाग में उस वक्त था जब कि मदाने तकब्बुरो खुद बीनी में जब जाहो जिनत दुन्या के घोडे पर सुवार हो कर सल्तनते बल्ख में दौडता फिरता था और अब तो मेरे सर से येह सब निकल गया और ब इवजे तकब्बुरो खुद पसन्दी के जिल्लतो आजिजी व तवाजेअ ले ली और अहमकों की खिल्अत जो गुरूर के सूत से बनी गई थी मैं ने उतार

डाली । कमीनों का जेवर जो कि नुहूसतो हैरानी व शादमानी के ताने बाने से बनाया गया है उतार फेंका और ब इवज उस के मुझ को वोह खिल्अत अता हुवा है जिस में शराफते अबदी है और अहले तहकीक और साहिबाने खुजूअ के जोहदो परहेज के सूत से जो तौफीक के तकले पर कत्ता है । बनाया गया है । मुझ को वोह जेवर मरहमत हुवा है जिस को औलिया अल्लाह पहुंचते हैं और जेवरे मआरिफत के जवाहिर, अदब के याकूतों, नेक आदात के अहले तरीक से मुरस्सअ है और मुझ को शराबे महब्बत और मुशाहिदए जमाले दोस्त के फर्श पर बिठा कर पिलाई गई है जब कि मुझ को बादशाहे हकीकी का कुर्ब हासिल हो गया । अब मुझ को एक अदना खादिम की खता से जो मेरे लश्कर का सिपाही हो कर क्या परवाह है और जब की लैला अपने मजनूं की जानिब मुल्तफित हो कर उस के हाले जार पर मुतवज्जेह हो और अपने दोस्त को बुलन्द जगह इनायत करे । अपने कीमती जमाल को खूबी के मुशाहिदे में मश्गूल रखे तो उस वक्त अगर कुत्ता लैला के कबीले का भोंके या हम्ला करे मजनूं को क्या गम है ?

﴾27﴿ जिक्रो इस्तिगफार की जजा का किस्सा

हजरते शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि मैं एक दिन गाऊं के इरादे से चला राह में एक कमसिन नौजवान मिला जिस का जिस्म निहायत लागर गर्द आलूद था और बाल बिखरे हुए थे । फटे पुराने कपडे पहने हुए था और वोह सेहरा में बैठे हुए दो कब्रों के दरमियान की खाक में अपने रुख्सार मल रहा था और घडी घडी आस्मान की तरफ देखता भी जाता था और अपने होंट हिलाता जाता था उस के आंसू रुख्सारों पर जारी थे और जिक्रो इस्तिगफार और दुआ में ऐसा मश्गूल था कि कोई मश्गला उस को तस्बीहो तकदीस और तम्हीदो तम्जीद व ता'जीम से बा'ज नहीं रखता था । जब मैं ने उस जवान को इस हालत पर देखा तो मेरा कल्ब उस की तरफ माइल हुवा । और उस की मुलाकात को चला,

और मैं अपना रास्ता छोड कर उस की तरफ हुवा। उस ने जब मुझे अपनी तरफ आते देखा तो अपनी जगह से उठ कर भागने लगा। मैं फिर उस के पीछे भागा कि शायद मैं उसे पकड लूं लेकिन न हो सका। मैं ने कहा ऐ वलियुल्लाह! मुझ पर महेरबानी करो। उस ने कहा कसम है अल्लाह की हरगिज न करूंगा। मैं ने कहा खुदा के वास्ते ठहर जाओ। उस ने ऊंगली से इशारा किया, नहीं और जबान से अल्लाह कहा। मैं ने कहा अगर तेरा कौल सच्चा है तो अपनी सच्चाई जो अल्लाह के साथ है दिखा दे फौरन ही उस ने चिल्ला चिल्ला कर अल्लाह अल्लाह अल्लाह कहा और बेहोश हो कर गिर पडा। मैं ने करीब जा कर उसे हिलाया तो वोह मर गया था। मैं मुतफक्किर हुवा और उस हाल और सिद्क से मुतअज्जिब हुवा और जी में कहा यख्तस्सु बिरहमतिही मय्यशा या'नी अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत के साथ मख्सूस करे। फिर لا حول ولا قوة الا بالله العلى العظيم पढते हुए उस की तज्हीजो तक्फीन की तय्यारी की निय्यत से एक कबीला अरब की तरफ गया जब मैं वहां से लौटा तो वोह मेरी नजर से गाइब हो गया। मैं ने उसे बहुत ढूंढा लेकिन कुछ पता न मिला। न कोई खबर मिली। मैं ने जी में कहा येह जवान मुझ से गाइब हो गया। मुझ से पहले उस का सामान करने वाला कौन आ गया जो उसे उठा कर ले गया। इतने में एक शख्स को कहते हुए सुना ऐ शिब्ली! तू उस जवान की फिक्र से बच गया उस का काम फिरिश्तों ने किया तू अपने रब की इबादत में मश्गूल रह और सदका जियादा किया कर। क्यूं कि येह जवान भी इस मर्तबे पर एक दिन के सदके से पहुंचा है जो सारी उम्र में एक बार किया था। मैं ने कहा मैं खुदा के लिये तुझ से सुवाल करता हूं कि वोह क्या सदका था उस ने कहा ऐ शिब्ली! येह शख्स अवाइले उम्र में नाफरमान, गुनहगार, फासिक और जानी था। अल्लाह की जानिब से उसे एक ख्वाब नजर आया जिस से वोह गभराया और परेशान हुवा कि उस का जकर अज्दहा बन गया और उस के मुंह के अतराफ घेरा लगा कर बैठ गया। फिर उस अज्दहे के मुंह से शो'ले निकल कर उस के मुंह में जाने लगे और

वोह शख़्स जल कर कोएला हो गया। येह ख़्वाब देख कर गभराया हुवा ख़ौफ़ज़दा उठा और सब तअल्लुक़ात छोड कर भाग निकला और अपने रब की इबादत में मश्गूल हो गया उसे तअल्लुक़ात मुन्क़तेअ किये हुए आज बारा साल हुए और वोह इसी तरह तज़र्रुअ व ज़ारी और ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ में मस्रूफ़ था। कल एक साइल ने उस के पास आ कर एक दिन की ख़ूराक का सुवाल किया उस ने अपने कपडे उसे उतार दिये वोह साइल बहुत ख़ुश हुवा और हाथ उठा कर उस के लिये दुआए मग्फ़िरत की। हक़ तआला ने उस सदक़े की बरकत से जिस फ़क़ीर का जी ख़ुश हुवा उस की दुआ मक़्बूल की चुनान्चे हदीस शरीफ़ में वारिद है कि जो साइल सदक़े से ख़ुश हो कर दुआ करे उसे ग़नीमत जानो।

﴾28﴿ तीन डाकूओं का वाक़िआ

हज़रते अबू यज़ीद क़ुर्तुबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हम ने एक बार सफ़र किया और हमारे हमराह एक गाऊं के एक नेक आदमी थे। हम ख़न्दक़ पर पहुंचे जिस में बहुत से दरख़्त थे उस शख़्स को आसारे क़दीमा की वाक़िफ़िय्यत थी। उन्हों ने कहा येह ख़न्दक़ आबादी है। हम ख़न्दक़ में उतरे और सरअत से झपटते हुए ख़न्दक़ से दूसरी जानिब चले। जब हम ने दरख़्तों को क़त्अ किया और आप आगे बढे तो हम ने तीन आदमी हथियार बन्द देखे जो हम पर हम्ला करने के वास्ते उठ खडे हुए थे। हम जम्अ हुए और हम ने कहा क्या तजवीज़ करना चाहिये उसी बदवी ने कहा कि अपना काम अस्ल की तरफ़ राजेअ करो। क्या तुम अल्लाह की तरफ़ नहीं निकले हो ? हम ने कहा क्यूं नहीं ? कहा फिर अपना काम अल्लाह के सिपुर्द करो और मेरे पीछे चले आओ और तुम में से कोई दाएं बाएं न देखे चुनान्चे वोह शख़्स आगे हो चला और हम लोग सब उन के पीछे चले। और चोर रस्ते से हटे हुए हमारे बराबर चलते थे। हम चलने में उन से आगे निकल गए और वोह लोग हमारे मुहाज़ से पीछे रह गए मैं अपने साथियों से पीछे था। मैं ने पीछे फिर कर देखा तो मा'लूम हुवा कि उन्हों ने हम को अपने नेज़ों की नोक पर ले लिये है। मैं ने साथियों से कहा

इन लूटेरों ने तो हमें पा लिया और वोह शख्स बदवी इधर उधर नहीं देखता था। मेरी बात सुन कर वोह खडा हो गया और फिर के देखा। जब वोह लोग नजर आए तो कहा لا حولا ولا قوة الا باللہ العلی العظیم ऐ अल्लाह! इन शयातीन के शर हम से दूर कर दे मैं ने कहा देखो हम क्या करें ? उस ने कहा हम क्या करें ? मैं ने कहा येह चाश्त का वक्त है और नफ्ल नमाज में जमाअत जाइज है। मैं आगे बढ के तुम्हें नमाज पढाता हूं। उस वक्त वोह लोग आगे निकल जाएंगे। इन्शाअल्लाह तआला कहा ऐ अबू यजीद! हमें हाजत है कि हम उन से पोशीदा हो जावें मैं ने कहा तुम जानो। इतने में उन्हों ने हाथ उठा कर दो उंगलियों अंगूश्ते शहादत और वुस्ता से उन डाकूओं की तरफ इशारा कर के कहा खडे रहो। मैं ने उन्हें देखा कि खडे हो गए और कोई उन में से आगे न बढ सकता था न अपने साथियों से मिल सकता था। जो जहां था वहीं खडा रह गया। हम आगे चले और उस शख्स ने उस के बा'द कुछ न कहा। फिर जब हम एक दुर्रह में पहुंचे और दूसरी ऐसी जगह पहुंच गए जहां वोह हमें पकड नहीं सकते थे। वोह शख्स खडे हुए हम भी उन के साथ खडे हुए फिर कहा कि देखो इन शयातीन को कि अभी तक इस तरह खडे हैं। वल्लाह अगर अल्लाह का खौफ न होता तो इन्हें इसी हालत पर छोड कर चला जाता लेकिन ऐ अल्लाह! हमारा वाकिआ इन के लिये सबबे तौबा कर दे। फिर उन की तरफ इशारा किया जाओ। मैं ने देखा की वोह सब के सब जमीन पर बैठ गए और साथियों से बातें करने लगे। फिर जहां से आए थे वहीं लौट गए। बा'दे अजा अल्लाह तआला ने उन को तौबा की तौफीक दी और वोह ताइब हो गए।

﴾29﴿ नेक बन्दों के बारे में बद गुमानी पर तौबा

एक सालेह बुजुर्ग से रिवायत है कि मैं ने शैख अबुल फज्ल इब्ने जोहरी मिसरी की खबर सुनी और आप की जियारत के कस्द से अपने शहर से चला। जुमुआ के रोज शहरे मिसर में दाखिल हो कर शैख की मज्लिसे वा'ज में हाजिर हो कर सामेइन में शरीक हुवा मैं ने देखा कि शैख

निहायत खूब सूरत बलीग आदमी और लिबासे फाखिरा और उम्दा कपडे पहने हुए थे और इमामा खुश रंग और ऐसी ही एक चादर भी थी। उन की हिम्मत बढी हुई थी और कुब्बा कुशादा थी या येह कहा कि दुन्या उन के पास बहुत कुशादा थी। मैं ने अपने जी में कहा कि येह इब्ने जोहरी हैं जिन की निस्बत बहुत कुछ कहा जाता है और इन के सलाह और दीन परहेजगारी की शौहरत गश्त करती फिरती है और इन के सिफाते हमीदा और कुव्वते ईमानी और कमाले यकीन मश्हूर है और इन का येह लिबास और इन की हैअतो आराइश है मैं मुतअज्जिब रह गया और उन्हें उस हाल पर छोड कर चला गया जब में मिसर के कूचे और बाजारों से गुजर रहा था तो मैं ने एक औरत को चीखो पुकार मचाते हुए सुना। वोह रो रही थी। गिरया व जारी कर रही थी और कह रही थी। وامصيبتاه وابنتاه وافضيحتاه मैं उस के गुल पर रहम खा कर उस के पास गया और पूछा ऐ औरत! तुझे क्या हो गया है और तेरा क्या किस्सा है? उस ने कहा हजरत मैं एक पर्दा नशीन औरत हूं और मेरी एक लडकी के सिवा कोई औरत नहीं है और मैं ने बडी कोशिश से उस लडकी की परवरिश की और दिलो जान से उस की हिफाजत की। हत्ता कि वोह जवान हुई उस की एक नेक बख्त सालेह मुसलमान से उस की मंगनी की। जब मैं समझ गई कि वोह उस का हमसर और कुफू है तो उस के साथ मैं ने उस लडकी का अक्द कर दिया। आज उस की रुख्सत की रात है और आज ही उस पर जिन्न का असर हो गया है और उस की अक्ल जाती रही है मैं ने उस पर शफ्कत कर के कहा कुछ मत डर उस का इलाज कर देना मुझ पर है और उस की हालत की इस्लाह करना मेरे जिम्मे है لاحولا ولاقوة الا باالله العلى العظيم की बरकत से। येह सुन कर उस औरत की परेशानी कुछ दूर हुई और वोह मेरे आगे हुई मैं उस के पीछे पीछे हो लिया हत्ता कि वोह अजीमुश्शान खूब सूरत मकान में मुझे ले गई और अन्दर आने की इजाजत दी। मैं उस मकान में गया। देखा किस्म किस्म की चीजें जो बियाह शादी में और बच्चों वाले घरों में हुवा करती हैं वहां मौजूद थीं। उस ने मुझ से कहा बैठ

जाओ मैं बैठ गया। अचानक उस की लडकी नजर आई जो कभी दाएं और कभी बाएं तरफ देखती थी और उस पर खुदा के हुक्म से जिन्न का असर हो गया था और वोह बडी खूब सूरत थी। मैं ने कुरआन शरीफ की दस आयतें सातों किराअतों के साथ उस पर पढ कर दम कीं उस वक्त जिन्न फसीह जबान में जिसे नज्दीक और दूर के सब लोग सुनते थे कहने लगा ऐ शैख ! अबू बक्र तुम सातों किराअतों से कुरआन पढ कर हम पर फख्र न करो हम सत्तर किस्म के जिन्न हैं जो हजरते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैरे जातुल अलम के रोज मुसलमान हुए थे। आज हम शैख सालेह अबुल फज्ल इब्ने जोहरी के पीछे नमाजे जुमुआ अदा करने की गरज से आए थे जिन की तुम ने हकारत की और उन की निस्बत बद गुमानी की। खुदा से इस्तिगफार करो और अपनी गफ्लत का तौबा तौबा से तदारुक करो। हम इस रास्ते से जा रहे थे तो उस लडकी ने हम पर नजासत फेंकी जब की हम नमाज के लिये उस के घर पर से गुजर रहे थे चुनान्चे सब साथी बच गए और मेरे कपडे नजिस हो गए और हजरत शैख सालेह अबुल फज्ल के पीछे मैं नमाज पढने से महरूम रहा मैं ने गुस्से में आ कर येह किया जो तुम ने देखा। मैं ने कहा उस शख्स सालेह की हुरमत से जिन के पीछे तुम नमाज अदा करने आए थे उस पर से उतर जाओ। कहा बहुत अच्छा। जिन्न ने सुन लिया और मान लिया और उसी वक्त उस पर से उतर गया और वोह लडकी उसी वक्त अच्छी हो गई और मुंह पर उसी वक्त मुझ से शरमा कर बुरका डाल लिया। गोया उसे कुछ हुवा ही न था उस की वालिदा बहुत खुश हुई और कहा खुदा तुम्हें नेक जजा दे और जैसा कि तुम ने हमारी ऐब पोशी की। खुदा तुम्हारी ऐब पोशी करे फिर मैं उसी वक्त निकल खडा हुवा और अज्म हजरते सालेह की जियारत का कर लिया। जब मुझे शैख ने अपनी तरफ आते देखा तो मुस्कुरा कर फरमाया अहलन व सहलन। शैख अबू बक्र तुम्हें हमारी हालत का यकीन न हुवा। जब तक कि जिन्न ने येह खबर न दी थी। उन की येह बात सुन कर में बेहोश हो कर गिर पडा। फिर एक मुद्दत तक शैख

के यहां वा'ज सुनता रहा और उन की सोहबत में ही रह गया। और खानकाह के एक हुजरे में रहता था और अल्लाह से तौबा कर ली कि करामाते औलिया से कभी इन्कार न करूंगा।

﴾30﴿ बार बार तौबा का एक वाकिआ

सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जमाने में एक आदमी था जो तौबा कर के तोड देता था। अल्लाह तआला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ वही फरमाई कि उस शख्स से कह दो कि वोह आइन्दा तौबा कर के न तोडे वरना उस से नाराज हो जाऊंगा और उसे सख्त अजाब दूंगा। येह पैगाम सुन कर वोह शख्स चन्द रोज तो अपनी आदत के खिलाफ सब्र से रहा लेकिन फिर तौबा से गया और नाफरमानी पर उतर आया उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वसातत से फिर वही भेजी कि अल्लाह तआला अपने उस नाफरमान बन्दे से नाराज है। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से येह पैगाम सुन कर वोह अल्लाह का आसी बन्दा जंगल की तरफ निकल गया। और तन्हाई में यूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुखातब हुवा। क्या तेरे बख्शिश के खजाने खत्म हो गए ? या मेरी नाफरमानी से तुझे कोई नुक्सान पहुंचा है ? क्या तू अपने बन्दों पर बुख्ल से काम लेता है ? क्या कोई गुनाह तेरी अफ्वो करम से बडा है ? जब अफ्वो करम तेरी सिफ्त है। फिर तू मुझे नहीं बख्शेगा ? अगर तू अपने बन्दों को नाउम्मीद कर देगा तो वोह किस के दरवाजे पर जाएंगे ? तेरे दर से ठुकराए हुए किस की पनाह तलाश करेंगे ? ऐ इलाही ! अगर तेरी रहमत खत्म हो चुकी और तेरा अजाब मुझ पर लाजिम हो गया है तो अपने तमाम बन्दों के गुनाह मुझ पर डाल दे मैं उन सब के लिये अपनी जान कुरबान करता हूं।

उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत जोश में आई और मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जरिए उस आदमी को पैगाम भेजा कि "ऐ मेरे गुनहगार बन्दे ! तू मेरी रहमत से नाउम्मीद नहीं है अगर तेरी खताओं से जमीन और आस्मान के दरमियान की फजा भी भर जाए तो भी मैं तुझे बख्श दूंगा। क्यूं कि तू मेरी रहमते कामिला और अफ्वे आम का ए'तिराफ करता है।

﴾31﴿ बनी इस्राईल के एक शख्स की तौबा का वाकिआ

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि बनी इस्राईल में एक शख्स ने निन्नावे कत्ल किये। आखिर वोह तौबा की गरज से निकला और एक जाहिदो आबिद के पास हाजिर हुवा अपना हाल बता कर तौबा की कुबूलियत का रास्ता पूछा तो उस ने कहा कि तेरी तौबा कुबूल नहीं हो सकती उस ने आबिद को भी कत्ल कर दिया और फिर किसी अल्लाह वाले की तलाश शुरूअ कर दी चुनान्चे एक शख्स ने उसे कहा कि फुलां गाऊं चला जा कि वहां एक बुजुर्ग आलिम है जो तुझे तौबा का तरीका बतलाएगा। इस पर वोह उस गाऊं की तरफ रवाना हुवा। जब आधी मसाफत तै करली तो उस की मौत आ गई और उस ने अपना सीना उस गाऊं की तरफ झुका दिया।

उस वक्त रहमत और मौत के फिरिश्ते उस के पास जम्अ हो गए अजाब के फिरिश्तों ने उसे कातिल और मुजरिम ठहराया लेकिन रहमत के फिरिश्तों ने उसे ताइब बताया क्यूं कि वोह तौबा के लिये उस गाऊं की तरफ जा रहा था। चुनान्चे उस बस्ती और जिस बस्ती को जा रहा था दोनों का फासिला उस से नापने का हुक्म हुवा और साथ ही अल्लाह ने उस आलिम की बस्ती को करीब होने का हुक्म दिया चुनान्चे वोह उस बस्ती के बालिश्त भर करीब निकला इस तरह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की बख्शिश के सामान पैदा कर दिये और उस की रूह रहमत के फिरिश्ते ले गए।

(मिश्कात सफ्हा 203)

दोस्तो ! बेशक अल्लाह से बख्शिश तलब की जाए तो वोह अपने गुनहगार बन्दों को मुआफ फरमा देता है। ख्वाह उस के गुनाह से जमीनो आस्मान की फजा क्यूं न भरी हुई हो अल्लाह तआला को अपने बन्दे को बख्शने में कोई आर नहीं और वोह बख्शने पर आए तो खताओं के समुन्दर भी भरे हो तो बख्श देता है और ताइब को पाक कर देता है बशर्त येह कि तौबा सच्चे दिल से की जाए और महब्बते इलाही में दिल मौजजन हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बडाई और अजमत का दिल में खयाल रहे।

﴾32﴿ बच्चे के बचपन का नसीहत आमोज वाकिआ

हजरत बेहलूल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फरमाते हैं कि बसरे की राह में मुझे चन्द लडके मिले जो अखरोट और बादाम से खेल रहे थे उन से अलाहिदा एक लडके को देखा जो उन लडकों को देख देख कर रो रहा था। मैं ने अपने दिल में कहा शायद येह लडका उन के पास अखरोटो बादाम देख रो रहे हो मैं तुम्हें अखरोटो बादाम ले दूंगा तुम उन से खेलना। उस लडके ने मेरी तरफ सर उठा कर देखा और कहा ऐ कम अक्ल ! हम खेल कूद के लिये पैदा नहीं हुए। मैं ने कहा ऐ साहिब जादे ! फिर किस लिये पैदा हुए हैं ? कहा इल्म हासिल करने और खुदा की इबादत के लिये। मैं ने कहा येह कहां से तुम्हें मा'लूम हुवा। खुदा तुम्हारी उम्र में बरकत दे। कहा अल्लाह तआला फरमाता है : اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ "क्या तुम खयाल करते हो कि हम ने तुम को बेकार पैदा किया है ? और तुम लौट कर हमारे पास नहीं आओगे ? "मैं ने कहा साहिब जादे तुम तो मुझे अक्ल मन्द मा'लूम होते हो कुछ मुख्तसर सी नसीहत करो। क्या दुन्या चल चलाओ और कमर बस्ता आमादए सफर है। न दुन्या किसी के वास्ते रहने वाली है और न कोई शख्स दुन्या में बाकी रहेगा। दुन्या की जिन्दगी और मौत इन्सान के वास्ते ऐसी है जैसे दो घोडे तेज रफ्तार यके बा'द दीगर आने वाले हों ऐ दुन्या के फरेफ्ता ! दुन्या छोड और सामाने सफर इस में दुरुस्त कर। हजरत बेहलूल फरमाते हैं वोह लडका येह कह कर आस्मान की तरफ देखने लगा और हाथों से इशारा किया और आंसू उस के दोनों रुख्सारों पर मोतियों की लडियों की तरह गिरने लगे। येह अल्फाज कहने पर वोह लडका बेहोश हो कर गिर पडा। मैं ने उस का सर अपनी गोद में ले लिया और अपनी आस्तीन से उस के चेहरे की खाक साफ की। जब होश में आया मैं ने कहा साहिब जादे ! तुम्हें क्या हुवा है ? तुम तो अभी बच्चे मा'सूम हो। कोई गुनाह तुम्हारे नाम नहीं लिखा गया। कहा बेहलूल ! मुझे छोड दो मैं ने अपनी मां को देखा वोह आग जलाने में

जब तक छोटे छोटे तिन्के घास फूस बडी लकडियों में नहीं मिलाती आग रोशन नहीं होती। मैं डरता हूं कि अगर खुदा न ख्वास्ता दोजख के ईन्धन में छोटी लकडियों की जगह कहीं मैं न होऊं। फिर मैं ने कहा साहिब जादे तुम बडे ही अक्ल मन्द होशियार हो। मुझ को मुख्तसरसी कुछ और नसीहत करो। कहा अफ्सोस! मैं गफ्लत में रहा और मौत पीछे आ रही है आज न गया तो कल तो जरूर जाना है। दुन्या में अपने जिस्म तो नर्मो नफीस पोशाक में छुपाया तो क्या फाएदा? आखिर को मरने के बा'द गल सड कर खाक हो जाना है और कब्र में खाक का औढना और खाक का ही बिछोना है। हाए मरते ही सब खूबी हुस्नो जमाल जाता रहेगा और हड्डियों पर गोश्तो पोस्त का निशान तक न रहेगा। वाए सद वाए उम्र गुजर गई और कोई मुराद हासिल न हुई। न मेरे साथ कोई सफर का तौशा। और मैं अपने हाकिमो मालिक के रू बरू इस हाल में खडा होउंगा कि गुनाहो का बार सर पर होगा दुन्या में हजार पर्दों में खुदाए करीम की नाफरमानी कर के गुनाह किये। मगर कियामत में वोह सब आलिमुल गुयूब के सामने जाहिर होंगे क्या दुन्या में खुदा के गजब से बे खौफ हो कर गुनाह करता था? नहीं बल्कि उस की मग्फिरत और बुर्दबारी पर तक्या था वोह अर्रहमुर्राहिमीन चाहे अजाब दे चाहे महज अपने करम से दर गुजर फरमाए। हजरत बेहलूल फरमाते हैं जब वोह लडका वा'ज कह कर खामोश हुवा मैं बेहोश हो कर गिर पडा और वोह लडका चल दिया। जब मुझे होश आया तो उन लडकों में तलाश किया कहीं पता न पाया। लडकों से जब उस लडके का हाल दरयाफ्त किया तो बोले तुम नहीं पहचानते। मैं ने कहा नहीं, कहा येह लडका हजरते सय्यिदुना हुसैन इब्ने अली इब्ने अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की औलाद से है मैं ने कहा मुझे एहसास था कि येह किसी ऐसे ही बडे अजीमुश्शान दरख्त का फल होगा।

﴾33﴿ हजरते इमाम जा'फरे सादिक का एक वाकिआ

हजरते शफीक बल्खी फरमाते हैं कि मैं हिजरी 149 में हज के इरादे से घर से चला कादिसिया में पहुंचा तो वहां मैं ने लोगों की जिनत

और कस्रत देखी कि अचानक एक खूब सूरत नौजवान पर नजर पडी नफीस लिबास पहने था ऊपर से ऊनी चादर औढे हुए पाऊं में जूती लोगों से अलग बैठा था। मैं ने अपने दिल में कहा येह जवान सूफी है लोगों पर बार होगा मैं उस के पास जरूर जाऊं और उसे धमकाऊं मैं उस के करीब गया। जब उस ने मुझे मुतवज्जेह पाया कहा ऐ शफीक! गुमान करने से बचो। बा'ज गुमान गुनाह है और मुझे छोड कर चल दिया। मैं ने अपने जी कहा येह बुरा काम है उस ने जो मेरे जी में था कह दिया और मेरा नाम लिया। येह तो कोई मर्दे सालेह मा'लूम होता है। मैं उस से जरूर मिलूंगा और मैं उस से बद गुमानी साफ कराऊंगा। मैं उस के पीछे चल दिया मगर उसे न पाया और मेरी नजर से गाइब हो गया। जब हम मकामे वाकिसा में उतरे तो उस को नमाज में पाया। उस के आ'जा कांप रहे थे और आंसू जारी थे। मैं ने कहा येह तो वही मेरा दोस्त है। मैं उस से मिल कर अपना कुसूर बद गुमानी का मुआफ कराऊं। मैं ने कुछ देर सब्र किया और वोह फारिग हो कर बैठा। मैं उस की तरफ मुतवज्जेह हुवा। जब मुझे आते देखा कहा ऐ शफीक! येह आयत पढ। وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ ـ ـ الخ जो कोई तौबा करे और ईमान लाए और अच्छे अमल करे और राह पाए मैं उस के गुनाह बख्श देता हूं। फिर मुझे छोड कर चलता बना। मैं ने कहा येह जवान जरूर अब्दाल है मेरे दिल की बात दो मरतबा बयान कर दी। जब हम मिना में उतरे तो मैं ने उसी जवान को देखा हाथ पर कूजा लिये पानी के वास्ते खडा है उस के हाथ कूजा कूएं में गिर पडा मैं उस को देख रहा था। उस जवान ने आस्मान की तरफ नजर उठाई और कहा खुदावन्द! ऐ मेरे मालिक! तू खूब जानता है मेरे पास सिवाए इस के और कुछ नहीं मुझ से येह गुम न कर। शफीक फरमाते हैं खुदा की कसम मैं ने देखा कि कूंएं का पानी ऊपर तक उबल आया। उस जवान ने अपना कूजा ले कर पानी भरा और वुजू कर के नमाज के लिये खडा हुवा। नमाज अदा करने के बा'द रेत के एक टिले की तरफ गया और बालू [रेत] उठा उठा कर कूजे में भरता था और हिला हिला कर बार बार पीता था। मैं उस के पास गया

और सलाम किया। उस ने जवाब दिया। मैं ने कहा अपना झूठा मुझे इनायत कीजिये। कहा ऐ शफीक! खुदा की ने'मतें जाहिरी बातिनी हमेशा हमारे साथ हैं। अपने परवर दिगार के साथ नेक गुमान रखो फिर मुझ को कूजा दिया। मैं ने उस में से पिया, सत्तू और शकर उस में गुले हुए थे। खुदा की कसम उस से लजीज खुश्बूदार कभी चीज मैं ने पी होगी। मेरी भूक जाती रही और कई दिन तक वहां रहा। खाने पीने की ख्वाहिश न हुई फिर राह में मुझ को वोह जवान न मिला यहां तक कि काफिला मक्कए मुअज्जमा में दाखिल हुवा। एक रात मुत्तसिल पानी के कुब्बे के आधी रात के वक्त मैं ने नमाज पढते देखा। निहायत आजिजी से नमाज पढता था। रोने की आवाज सुनी जाती उसी हालत में तमाम रात गुजर गई। जब सुब्ह हुई अपने मुसल्ले पर बैठा तस्बीह पढता रहा फिर खडा हो कर नमाजे फज्र अदा की और सलाम फेर कर खानए का'बा का तवाफ किया और हरम से बाहर निकला। मैं उस के साथ हुवा उस के खादिमो गुलाम नजर आए रास्ते में जिस वज्अ से था यहां उस के खिलाफ पाया। लोग गिर्द जम्अ हो गए और सलाम करते थे मैं ने एक शख्स से जो उस के करीब था दरयाफ्त किया येह जवान कौन है? कहा हजरते इमाम जा'फरे सादिक हैं मुझे सख्त तअज्जुब हुवा कि बेशक येह अजीबो गरीब अल्लाह की इनायत उन्हें अता हुई हैं।

(34) बादशाही छोड फकीरी में नाम पैदा कर

हजरते इब्राहीम अदहम अपने जमाने के बहुत मुत्तकी बुजुर्ग थे। इब्तदा में आप बल्ख के बादशाह थे। बडी शानो शौकत से हुकूमत करते थे। एक रात जब कि अपने महल में महवे ख्वाब थे। आप के साथ अजीब वाकिआ पेश आया। आप ने देखा कि एक आदमी छत के ऊपर टहल रहा है पूछा तू कौन है? और यहां इस वक्त क्या कर रहा हैं? उस ने कहा आप का दोस्त हूं और यहां अपना ऊंट तलाश कर रहा हूं। आप ने फरमाया : येह कैसे मुम्किन है कि शाही महल्लात की छतों पर ऊंट आ जाएं। उस आदमी ने जवाब दिया भला येह कैसे हो सकता है कि जामा

अतल्स पहन कर ऐशो इशरत में खुदा मिल जाए ? उस जवाब से आप पर एक खौफ तारी हो गया।

दूसरे दिन आप दरबारे आम में तशरीफ फरमा थे अचानक एक बहुत बा रो'ब शख्स अन्दर दाखिल हुवा। दरबार में से किसी की जुरअत न हुई कि उस से इस तरह गुस्ताखाना तौर पर अन्दर आने की वज्ह पूछे। वोह आदमी तख्ते शाही तक पहुंच गया हजरते इब्राहीम अदहमने पूछा तू कौन है ? और यहां किस तरह आया ? उस ने कहा मैं इस सराय में जरा ठहरना चाहता हूं। आप ने फरमाया येह सराया नहीं शाही महल और दरबार है। उस आदमी ने कहा कि आप से पहले इस महल में कौन रहता था ? फरमाया मेरा बाप। फिर पूछा। तुम्हारे बाप से पहले कौन था ? फरमाया मेरा दादा। उसी तरह कई पुश्तों तक पहुंच कर उस ने पूछा आप के बा'द यहां कौन रहेगा ? फरमाया मेरी औलाद। फिर उस आदमी ने कहा जरा खयाल करो जिस मकाम में इतने आदमी आएं और जाएं किसी का मुस्तकिल कियाम न हो। फिर वोह मकाम सराय [मुसाफिर खाना] नहीं तो क्या है ? येह कह कर वोह शख्स बाहर आ गया। आप उस के पीछे दौडे और पूछा आप कौन हैं ? उन्हों ने जवाब दिया में खिज्र हूं।

येह सुनते ही आप का सुकून जाता रहा। आप बाहर हवा खोरी के लिये घोडे पर सुवार हो कर निकले उस वक्त आप ने आवाज सुनी कि "इब्राहीम उस वक्त से पहले जागो जब कि मौत के जरीए जगाया जाए। चुनान्चे आप तख्तो ताज से दस्त बरदार हो गए और सच्ची तौबा कर के अल्लाह की तलाश में निकल पडे और अपने गुनाहों पर रोते जाते थे। जंगलों और वादियों में से पा पियादा गुजर जाते थे और अल्लाह से मुआफी मांगते थे हत्ता कि चालीस साल तक आप गिरया व जारी करते रहे।

नक्ल है कि आप ने एक दुरवेश को देखा जो मुफ्लिसी की शिकायत करता जाता था आप ने फरमाया मा'लूम होता है कि तूने दुरवेशी मुफ्त में हासिल की है। दुरवेश ने पूछा क्या दुरवेशी को खरीदा भी जा सकता है ? फरमाया हां मैं ने दुरवेशी हुकूमते बल्ख के इवज खरीदी है।

आप फरमाते हैं कि जिस शख्स का दिल तीन हालतों में खुदा की तरफ हाजिर न हो तो येह इस बात की निशानी है कि उस पर दरवाजा बन्द किया जा चुका है। अव्वल तिलावते कुरआन के वक्त दुवुम नमाज के वक्त। सिवुम जिक्रे इलाही के वक्त।

रिवायत है कि आप से एक शख्स ने अर्ज किया कि ऐ शैख! मैं अपने आप पर बहुत जुल्म कर चुका हूं ? मुझ को कुछ नसीहत फरमाए। फरमाया अगर तुम मन्जूर करो तो कुछ बातें बताता हूं।

अव्वल येह कि जब हक तआला की नाफरमानी करो तो खुदा की दी हुई रोजी न खाओ। उस ने कहा फिर कहा से खाऊं ? जेबा नहीं कि जिस की रोजी खाओ उसी की नाफरमानी करो।

दुवुम येह कि जब गुनाह करने का इरादा करो तो खुदा की बादशाहत से बाहर निकल कर करो अर्ज किया। सारी काएनात उसी की है। कोई कहां जाए ? फरमाया येह मुनासिब है कि उस के मुल्क में रह कर गुनाह किया जाए ?

सिवुम येह कि गुनाह ऐसी जगह किया जाए जहां वोह देख न सके। कहा येह नामुम्किन है। वोह तो दिलों के भेद तक से वाकिफ है। फरमाया जब रिज्क उस का खाओ और उस के मुल्क में रहो तो फिर उस के सामने गुनाह करना कहा तक इन्साफ पर मब्नी है ?

चौथे येह कि जब मौत का फिरिश्ता आए तो उस से कहो जरा तौबा कर लेने की मोहलत दे दे अर्ज किया येह भी नामुम्किन है। वोह मेरा कहा न मानेगा। फरमाया जब येह हालत है तो उस के सामने आने से पहले तौबा कर लेनी चाहिये।

पांचवीं येह कि जब कब्र में मुन्कर नकीर आएं तो उन को बाहर निकाल देना। अर्ज किया मैं येह भी नहीं कर सकता। फरमाया फिर उन सुवालों का जवाब देने के लिये तय्यार रहो।

छट्टे येह कि कियामत के दिन हिसाब किताब के बा'द गुनहगारों को दोजख की तरफ भेजा जाएगा। तुम दोजख में जाने से इन्कार कर देना। अर्ज किया येह भी नामुम्किन है। फरमाया तो फिर गुनाह मत करो।

एक और रिवायत है कि लोगों ने आप से पूछा कि क्या सबब है अल्लाह हमारी दुआओं को कुबूल नहीं करता है ? आप ने फरमाया कि तुम खुदा तआला को जानते हो ? लेकिन उस की इताअत नहीं करते। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानते हो। मगर उन की पैरवी नहीं करते कुरआन पढते हो मगर उस पर अमल नही करते। अल्लाह तआला की ने'मत खाते हो मगर शुक्र नहीं करते। जानते हो कि दोजख गुनहगारों के लिये है मगर उस से जरा नहीं डरते। शैतान को दुश्मन समझते हो मगर उस से नहीं भागते। मौत को बरहक समझते हो। मगर कोई सामान नहीं करते। खवेशो अकारिब को अपने हाथों से दफ्न करते हो। लेकिन इब्रत नहीं पकडते। भला जो शख्स इस तरह का हो उस की दुआ क्यूं कर कुबूल हो सकती है ?

(35) अबू सुलैमान दारानी की तौबा का वाकिआ

अबू सुलैमान दारानी से हिकायत है। वोह फरमाते हैं कि मैं एक किस्सा ख्वां की मज्लिस में जाया करता था। उस के कलाम का मेरे दिल पर असर हुवा। मगर मज्लिस से उठ खडा हुवा तो मेरे दिल पर कोई असर न रहा। मैं दोबारा उस की मज्लिस में गया और उस का कलाम सुना तो मेरे दिल पर उस का असर रास्ते भर रहा। मगर फिर जाइल हो गया। तीसरी बार फिर गया तो उस का असर घर पहुंचने तक रहा। चुनान्चे मैं ने मुखालिफत के सारे आलात तोड डाले और तरीकत की राह पर लग गया।

उस के बा'द उन्हों ने यहया बिन मुआज को येह हिकायत सुनाई तो फरमाया। एक चिडिया ने करकी (कूंज) का शिकार कर लिया। चिडिया से उन की मुराद किस्सा ख्वां था और करकी से अबू सुलैमान दारानी।

अबू हफ्स हद्दाद से हिकायत की जाती है वोह फरमाते है कि मैं ने कई बार अपना पेशा छोडा मगर फिर वोही पेशा करने लग जाता। आखिर उस पेशे ने मुझे छोड दिया जिस के बा'द फिर मैं ने वोह काम नहीं किया।

3 तौबा

﴾1﴿ तौबा का मतलब

तौबा के लफ्जी मा'ना लौटने और रुजूअ करने के हैं लेकिन शरई इस्तिलाह में तौबा येह मफ्हूम है कि इन्सान अल्लाह तआला की नाफरमानी तर्क कर के इताअत की तरफ लौटे और इताअत येह है कि इन्सान अपनी अमली जिन्दगी में अहकामाते इलाहिया जो हमारे सामने शरीअते इस्लामिया की सूरत में मौजूद हैं, की ता'मील करे और नाफरमानी को तर्क करे।

﴾2﴿ हजरते अली का कौल

हजरते अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फरमाया कि हमारे लिये दो अमानतें हैं। एक पर्दा कर लिया या'नी हुजूर नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, और दूसरी कियामत तक हमारे साथ है या'नी तौबा। अगर येह भी न रहे तो हम हलाक हो जाएं। हजरते अली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के इस कौल से येह बात वाजेह होती है कि तौबा ही दर अस्ल इन्सान का जरीअए नजात है।

﴾3﴿ तौबा दर अस्ल गुनाह छोडने का वा'दा है

तौबा अस्ल में गुनाह न करने का एक मिसाक है जो इन्सान अल्लाह तआला के साथ करता है और साबिका गुनाहों को छोडने का वा'दा करता है। और आइन्दा गुनाह तर्क करने का इरादा करता है। येह वा'दा इन्सान अल्लाह से किसी वक्त भी कर सकता है, उम्र के किसी भी हिस्से में जिस वक्त इन्सान के दिल में गुनाह छोडने का एहसास पैदा हो जाए तो इन्सान अल्लाह से अपने किये हुए गुनाहों पर मुआफी मांगने के लिये तौबा की तरफ मुतवज्जेह होगा। और गुनाहों से बचने के लिये इन्सान अल्लाह से जो वा'दा करेगा। वोह वा'दा तौबा कहलाएगा।

﴾4﴿ तौबा की जामेअ ता'रीफ

मेरे खयाल के मुताबिक तौबा येह है कि इन्सान अपनी की हुई खताओं पर नादिम हो जो बुराई वोह कर रहा है उसे छोड दे और आइन्दा उस का इर्तिकाब न करे और जो बुराई कर चुका हो उस की तलाफी की कोशिश करे और अगर तलाफी की कोई सूरत मुम्किन न हो तो अल्लाह से मुआफी मांगे और जियादा से जियादा नेकियां करे ताकि अपनी बुराई के दागों को धो डाले । लेकिन तौबा उस वक्त तक हकीकी नहीं हो सकती जब तक कि वोह अल्लाह की रिजा की खातिर न हो किसी दूसरी वज्ह से किसी बुरे फे'ल को तर्क कर देना तौबा नहीं कहलाता । जो तौबा कर गया वोह तर गया । तौबा वोह दरवाजा है जिस में दाखिल होने से इन्सान अल्लाह की बारगाह में मर्दूद की बजाए महबूब, दुश्मन की बजाए दोस्त, दोजख की बजाए जन्नत का हकदार बन जाता है । तौबा गुनाहों का ऐसा तिरयाक है जो इन्सान को इस तरह मा'सूम और पाक कर देता है जैसा कि मां के पेट से उस ने अभी जनम लिया है, दुन्यावी शाहों के दरबारों में सदारत और वजारत के ऐवानों में, मक्तब और दर्सगाहों में, उमरा के दीवान खानों में, रुऊसा के रंग बिरंगे बाजारों में, दफ्तर और कारोबारी उमूर में उस शख्स को दुन्या वाले अच्छा ही समझ लेते हैं जो कोई खता करे लेकिन जल्द ही एहसासे नदामत के तहत वोह अपने शाह से, मालिक से, आका से, दोस्त से दुश्मन से अपनी खता की मुआफी का तलबगार बने उस का कुसूर अक्सर मुआफ कर दिया जाता है मगर दुन्या वाले फिर भी तंग नजर होते हैं और हो सकता है कि खता मुआफ न करें मगर बारगाहे रब्बुल इज्जत की रहमत इतनी वसीअ है कि वहां बडे से बडे मुजरिम को भी तौबा से पनाह मिल सकती है । अल्लाह के रहमो करम की येह कितनी बे नियाजी है कि ख्वाह कितना ही कोई खताकार, सियाहकार, बदकार या गुनहगार ही क्यूं न हो अगर अल्लाह के हुजूर में झुक जाए तो मुआफी जरूर मिल जाती है मगर येह नादान इन्सान तौबा की तरफ नहीं लौटता हत्ता कि मौत का बुलावा आ जाता है ।

मकामाते तौबा

हजरते दाता गंज बख्श ने फरमाया है कि तौबा के तीन मकाम हैं।

(1) **तौबा :** येह आम मोमिनीन का मकाम है और येह अजाब के खौफ के लिये है। और येह फवाहिश और कबीरा गुनाहों से होती है और बन्दा अल्लाह तआला के हुक्म की इताअत करते हुए उस की तरफ रुजूअ हो जाता है या'नी तौबा अल्लाह तआला की झिडकियों, तम्बीह और वईद से बचने और ख्वाबे गफ्लत से दिल की बेदारी और अपने हाल के ऐब को देखने से हासिल होती है क्यूं कि जब बन्दे को अपने बुरे अहवालो अफ्आल पर गौर करने की तौफीक हासिल होती है कि उन से खलासी की दुआ करे तो अल्लाह उस के लिये तौबा करना आसान फरमा देता है। हत्ता कि मा'सियत से रिहाई देता है और इबादत की हलावत तक पहुंचा देता है।

(2) **अनाबत :** येह औलिया अल्लाह और मुकर्रबाने हक का मकाम है। येह सगीरा गुनाह और फासिद अन्देशे से अल्लाह तआला की खालिस महब्बत रखने के बाइस उस की तरफ रुजूअ करना है येह तलबे सवाब के लिये है।

(3) **औबत :** येह अम्बिया व मुर्सलीन का मकाम है जैसे हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि तौबा मुझ पर आसान कर दी जाती है यहां तक कि मैं हर रोज सत्तर बार इस्तिगफार करता हूं, येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस लिये फरमाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी बुलन्द मकाम पर पहुंचते तो उस से नीचे के मकाम से तौबा फरमाते। येह फरमाने हक की रिआयत के लिये है। पस तौबा गुनाहे कबीरा से अल्लाह की फरमां बरदारी में दस्त बरदार होना है, अनाबत गुनाहे सगीरा से अल्लाह की महब्बत में उस की तरफ रुजूअ करना है और औबत अपने आप से मुंह मोड कर अल्लाह की तरफ रुजूअ करने का नाम है। अहकामे खुदा के पेशे नजर ख्वाहिश से रूगरदां होने वाले सगीरा गुनाहों और गलत खयालात से बच कर हक तआला की महब्बत

में तौबा करने वाले और खुदी को तर्क कर के जाते हक की तरफ रुजूअ करने वाले में बडा फर्क है। अहले तौबा अल्लाह तआला की तम्बीहात में ख्वाबे गफ्लत से दिल की बेदारी है और अपने उयूब पर नजर करने से हासिल होती है। जब इन्सान अपने अहवालो अफ्आल पर नजर करता है और उन से नजात का मुतमन्नी होता है तो बारी तआला अस्बाबे तौबा आसान फरमा देता है। गुनाहों की सियाह बख्ती से बचा कर उसे इताअत की हलावतों से आश्ना कर देता है।

तौबा गुनाह से नेकी की तरफ

या'नी जिन लोगों ने कोई बुरा फे'ल किया या अपनी जानों पर जुल्म किया तो उन्हों ने अल्लाह तआला को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफी मांगली।

तौबा नेकी से जियादा नेकी की तरफ

येह अहले हिम्मत खुसूसन औलिया अल्लाह के लिये खास है क्यूं कि वोह मा'सियत करते ही नहीं बल्कि वोह मा'मूली नेकी पर करार पकड ने और रास्ते में ठहर जाने को एक हिजाब खयाल करते हैं। इस लिये वोह जियादा नेकी की तरफ रुजूअ किया करते हैं। इस की मिसाल हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वाकिए से मिलती है कि सारा आलम तो अल्लाह तआला के दीदार की हसरत में है लेकिन मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दीदारे इलाही से तौबा की क्यूं कि दीदारे इलाही की आरजू खुद अपने इख्तियार से तलब की थी और फिर अपनी खुदी को तर्क कर के हक तआला की तरफ रुजूअ हो गए जो दरजए महब्बत में है।

बुलन्द मकाम पर ठहरने से तौबा

जैसा कि उलमा बयान फरमाते हैं कि हुजूर नबिये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मकामात हमेशा तरक्की पर थे। इस लिये आप जब किसी बुलन्द मकाम पर पहुंचते थे तो उस से नीचे के मकाम से इस्तिगफार करते और उस मकाम के देखने से भी तौबा फरमाते थे।

अहले सुन्नत वल जमाअत और जुम्ला मशाइखे मा'रिफत के नज्दीक अगर कोई शख्स एक गुनाह से तौबा करे और दीगर गुनाहों में मुब्तला रहे तो हक तआला उसे उस एक गुनाह से बचने का सवाब अता करता है और हो सकता है कि उसी बरकत से वोह बाकी गुनाहों से भी नजात हासिल करे मसलन एक शख्स शराब नोशी करता है और जानी भी है। वोह जिना से ताइब हो जाता है मगर शराब नोशी को तर्क नहीं करता उस की तौबा रवा है बावुजूद कि दूसरे गुनाह का इर्तिकाब अभी उस से सरजद हो रहा है। जब एक गुनाह से ताइब हो जाए तो उस पर कोई मुवाखजा उस गुनाह से मुतअल्लिक नहीं हो सकता और येही चीज उस तौबा की मुहर्रिक है इस तरह अगर कोई शख्स कुछ फराइज अदा करता है और कुछ नहीं करता, यकीनन उसे अदा कर्दा फराइज का सवाब होगा। जिस तरह गैर अदा कर्दा फराइज के बदले वोह अजाब का मुस्तहिक होगा अगर किसी गुनाह की कुदरत ही हासिल न हो या उस के अस्बाब ही मौजूद न हों मगर बन्दा तौबा करे तो वोह ताइब कहलाएगा क्यूं कि तौबा का एक रुक्न पशेमानी है। इस तौबा से उसे गुजिश्ता पर नदामत होगी। फिल हाल वोह उस गुनाह से ए'राज करता है और इरादा रखता है कि अगर अस्बाब मुयस्सर भी हों तो भी वोह हरगिज गुनाह में मुब्तला नहीं होगा।

वस्फे तौबा और सिह्हते तौबा के मुतअल्लिक मशाइख में इख्तिलाफ है, सुहैल बिन अब्दुल्लाह और उन के साथ एक जमाअत का खयाल है, तौबा येह है कि जो गुनाह सरजद हो चुका हो वोह हमेशा याद रहे या'नी इन्सान हमेशा उस के मुतअल्लिक परेशान रहे अगर बहुत से नेक अमल मौजूद हैं तो उन दो की बजाए तबीअत में उज्ब पैदा न हो, बुरे काम पर नदामत और पशेमानी, नेक आ'मल से जियादा अहम होती है। वोह शख्स मआसी को फरामोश नहीं करता, अपने नेक आ'माल पर कभी गुरूर नहीं हो सकता।

हजरते जुनैद और एक जमाअत का येह खयाल है, तौबा येह है कि तू अपने गुनाहों को भूल जाए क्यूं कि ताइब मुहिब्बे हक होता है। मुहिब्बे हक होने की वज्ह से साहिबे मुशाहिदा होता है और मुशाहिदे में गुनाह की याद जुल्म है। येह क्या कि कुछ गुनाह में गुजर गई, कुछ यादे गुनाह में मुशाहिदा में यादे गुनाह हिजाब की हैसियत रखती है।

इस इख्तिलाफ का तअल्लुक मुजाहिदे और मुशाहिदे के इख्तिलाफ से है और इस का मुफस्सल जिक्र मक्तबए सुहैलिया के बयान में मिलेगा। जब ताइब को काइम बखुद समझा जाए तो निस्याने गुनाह गफ्लत पर महमूल करना पडेगा अगर ताइब काइम बहक हो तो यादे गुनाह ब मन्जिले शिर्क है। अल गरज ताइब बाकियुल सिफत है तो उस के अस्रार का अकीदा अभी हल नहीं हुवा। अगर फानियुल सिफत है। तो अपनी सिफत का बयान रवा नहीं। चुनान्चे मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बाकियुल सिफत होने के आलम में कहा मैं तेरी तरफ रुजूअ करता हूं और रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फानियुल सिफत हो कर कहा मैं तेरी सना बयान नहीं कर सकता। मक्सूद येह है कि कुर्बे हक में वहशत का जिक्र तमाम तर वहशत है। ताइब को तो खुदी से भी दस्तबरदार हो जाना चाहिये। यादे गुनाह का क्या जिक्र, फिल हकीकत यादे गुनाह खुद गुनाह है क्यूं कि जब गुनाह बाइसे ए'राज है तो उस की याद भी बाइसे ए'राज होनी चाहिये, उसी तरह गैरुल्लाह का जिक्र भी हक तआला से ए'राज करना है। जिस तरह जुर्म का जिक्र है, उसी तरह जुर्म को फरामोश कर देना भी जुर्म है।

अक्सामे तौबा

हजरत फरीदुद्दीन मस्ऊद गंज शकर ने फरमाया है कि तौबा छे किस्म की है, अव्वल दिल की तौबा। दुवुम जबान की तौबा, तीसरी कान की तौबा, चौथी हाथ की तौबा, पांचवीं पैर की तौबा और छट्टी नफ्स की तौबा।

﴾1﴿ दिल की तौबा

वोह फरमाते हैं कि तौबा को दिल से तस्लीम नहीं कारोगे और जबान से तौबा का इकरार नहीं करोगे तो तौबा दुरुस्त नहीं होगी। इस लिये कि जब तक कोई दिल को दुन्या और उस की लज्जतों और उस की दोस्ती से और हसदो फोहश, रिया और लहव लअब की गन्दगियों से साफ न करे और सच्चाई के साथ इन मुआमलात से ताइब नहीं होगा उस की तौबा तौबा न होगी। जैसे कोई शख्स गुनाह करता जाए और तौबा भी करता जाए तो वोह तौबा तौबा न होगी, अपनी ख्वाहिशे नफ्सानी के मुताबिक गुनाह करे और फिर तौबा करे तो इस तरह की तौबा दुरुस्त न होगी। जब तक कोई खोट को दिल से बाहर नहीं निकालेगा और तमाम खराब मुआमलात को पूरी तौर पर दिल से दुरुस्त नहीं करेगा उस की तौबा दुरुस्त नहीं होगी। जैसा कि कलामे पाक में आया है "ऐ ईमान वालो ! तौबा करने में उज्लत करो और जब तौबा कर लो तो हमेशा अपने खुदा की तरफ मुतवज्जेह रहो या'नी हमेशा तौबा नुसूह करों।

और तौबा नुसूह से मुराद येही दिल की तौबा है। जब दिल को तुम ने इन दुन्यावी बुराइयों से साफ कर दिया तो येह तौबा होगी और फिर तुम मुत्तकी के बराबर हो जाओगे जैसा कि कहा गया है कि आदमी तौबा करता है तो वोह ऐसे गुनाह से पाक हो जाता है गोया उस से कभी गुनाह सरजद हुवा ही नहीं था। इस वज्ह से मुत्तकी और ताइब एक ही सफ में आ जाते हैं।

और फरमाते हैं कि अस्ल तौबा दिल की है अगर जबान से सो हजार मरतबा तौबा करो। लेकिन जब तक दिल से उस की तस्दीक नहीं होगी तो वोह तौबा हरगिज कुबूल नहीं होगी इस लिये जरूरी है कि तौबा के लिये जबान से इकरार करने के साथ दिल से तस्दीक की जाए बा'ज लोग ऐसे हैं जो जबान से तौबा करते हैं लेकिन दिल से नहीं करते, उन की मिसाल ऐसी है कि कोई बीमारी में मुब्तला हो और सुब्ह से शाम तक हाए

हाए और तौबा इस्तिगफार करता रहे लेकिन जूंही वोह तन्दुरुस्त हो जाए फिर दुन्या की गफ्लत और बद मस्ती पर उतर आए और तौबा का खयाल न रखे, अल्लाह और बन्दे के दरमियान हिजाब है जो दिल की गन्दगियों और आलाइशों की वज्ह से है और इन्सान तौबा के जरीए से इस हिजाब को दूर करता है तो फिर अल्लाह और बन्दे के दरमियान हिजाब नहीं रहता। चुनान्चे दिल को तमाम गन्दगियों और आलाइशों से पाक करना चाहिये ताकि वोह पर्दा दरमियान से उठ जाए, लज्जत और शहवत की बजाए मुशाहिदा और मुकाशिफा के मकाम पर पहुंच जाए।

﴾2﴿ जबान की तौबा

जबान की तौबा येह है कि हर ना मुनासिब कलिमे से जबान को दूर रखो। और बेहूदा गुफ्तगू न करो और वाहियात गुफ्तगू से तौबा करो। और दूसरी सूरत येह है कि वुजू कर के दो रक्अत नफ्ल पढो और किब्ला रू हो कर बैठ जाओ और इल्तिजा करो कि ऐ खुदावन्द ! मेरी इस जबान को बुरी बात कहने से बा'ज रख और इस की तौबा कुबूल कर और आइन्दा सिवाए अपने जिक्र के कोई दूसरी चीज जबान से न निकलने दे और ऐसी वाहियात बातें जिन में तेरी रिजामन्दी न हो मेरी जबान से न निकलें। जबान की हिफाजत से इन्सान हलाकत से बच जाता है।

हजरत ख्वाजा साहिब फरमाते हैं कि काजी हमीदुद्दीन नागोरी से मैं ने सुना है कि अल्लाह वालों में से एक दुरवेश से उन की मुलाकात हो गई। दस साल तक वोह उन की खिदमत में रहे और दस साल के अर्से में सिवाए एक बात के और कोई ना मुनासिब बात उन के मुंह से न सुनी। और वोह बात येह थी कि उन्हों ने अपने एक अजीज को समझाया था कि ऐ दुरवेश ! अगर चाहते हो कि सलामती के साथ उक्बा में जाओ तो ना जैबा बात बोलने से अपनी जबान को रोको। बस जैसे ही उन्हों ने येह जुम्ला कहा कि फौरन जबान को ऐसा काटा कि खून जारी हो गया और फरमाया कि तुझ को येह बोलने से क्या सरोकार था और उस एक

बात के कफ्फारे में बीस बरस तक बात नहीं की। फिर उन्हों ने फरमाया कि जिस दिन हक तआला ने चाहा कि बनी आदम के मुंह में जबान डाले तो उस ने जबान से फरमाया ऐ जबान ! खास कर तेरी तख्लीक से येह गरज है कि सिवाए मेरे नाम के तू और कुछ न बोले। तेरी जबान से सिवाए मेरे कलाम के कुछ न निकले और अगर इस के इलावा तू कुछ बोली तो खुद अपने साथ सारे आ'जा को भी मुसीबत में डालेगी और जबान की तख्लीक खास कलामे पाक की तिलावत के लिये हुई है।

फिर उन्हों ने फरमाया कि आदमी के आ'जा में से हर एक उज्व में शहवत और ख्वाहिश मिली हुई है जो कि हिजाब और आफ्त का बाइस है। जब तक इन शहवतों और ख्वाहिशों से कोई तौबा न करेगा और अपने तमाम आ'जा को ताहीर और पाक न रखेगा हरगिज वोह अपनी मन्जिल पर नहीं पहुंचेगा। फिर फरमाया कि इन आ'जा में से जिन का जिक्र किया गया है अव्वल नफ्स है कि उस में शहवत या'नी ख्वाहिशे नफ्सानी रखी गई है। दूसरे आंख है कि उस में देखने की ख्वाहिश पैदा की गई है। तीसरी कान है उस में सुनने का एहसास दिया गया है। चौथी नाक है कि उस में सूंघने की रग्बत है। पांचवीं तालू है उस में चखने की इश्तिहा है। छट्टे हाथ है कि उस में पकडने की सलाहियत है। सातवीं जबान है उस में खुशामद और सराहने की आदत है, आठवां दिल है कि उस में कोशिश करने और सोचने की ताकत है पस हक तआला के तलबगारों के लिये जरूरी है कि वोह उन सब चीजों के बुरे इस्ति'माल से तौबा करे ताकि खुदा तआला से उस की खुश्नूदी का पैगाम सुने। फिर उन्हों ने फरमाया कि तमाम सआदत और नेकियों का सरचश्मा येही है कि इन्सान अपने नफ्स का मालिक हो। ताकि उस की तबीअत पर शहवत की हुक्मरानी न हो और हक तआला से मदद मांगे कि वोह उन सिफ्रात से मुत्तसिफ हो, दुरवेश का अमल येही है और जब उस में हाल पैदा हो जाए तो येह दुरवेश का जोहर है। जब आलमे नूरानी से अस्रारो अन्वारे तजल्लिये इलाही का नुजूल होता है जब दिल जबान से और जबान दिल से मुवाफकत रखती है। तो अन्वारे

इश्क उस जगह सुकून पजीर हो जाते हैं। और अगर दिल और जबान एक दूसरे के मुवाफिक नहीं होते तो फिर अन्वारे महब्बत उसी जगह से वापस लौट जाते हैं और ऐसे दिल पर नाजिल होते हैं जिस की जबान के साथ मुवाफ्कत हो।

﴾3﴿ आंख की तौबा

आंख की तौबा के बारे में आप ने फरमाया कि आंख की तौबा येह है कि इन्सान नहा धो कर साफ सुथरा हो जाए, फिर दो रक्अत नफ्ल नमाज अदा करे और किब्ला रू हो कर बैठ जाए और दुआ के लिये हाथ उठा कर इल्तिजा करे कि खुदावन्दे तआला तमाम नादीदनी चीजों के देखने से मैं ने तौबा की। जिस चीज को देखने का तेरा हुक्म होगा उस के इलावा कोई नामुनासिब चीज नहीं देखूंगा।

फिर फरमाया के बार बार आंख को तमाम मम्नूआत और ख्वाहिशात से पाक रखो ताकि आंख की तौबा कुबूल हो। इस वास्ते कि येही आंख इन्सान को खुदा के हुजूर तक पहुंचाती है। येही आंख इन्सान को मुसीबत में फंसा देती है पस ऐ दुरवेश! इश्क की पहली मन्जिल आंख से शुरूअ होती है। इस लिये आदमी को चाहिये कि ऐसे मकाम के लिये जहा दीदारे इलाही की ने'मत हासिल होती है, कोशिश करे और हमेशा हक तआला के सिवा किसी को न देखे ताकि तबाह न हो।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा जैद के घर के सामने से गुजर रहे थे आप की नजरे मुबारक जैद पर पडी और आंख लब से गुजरी उस वक्त हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ लाए और फरमाया ऐ रसूलल्लाह! जैद की जबान और लोगों से बरतर होगी।

आंख की तौबा कई किस्म की है, एक तो हराम देखने से तौबा, दूसरे अगर किसी मुसलमान भाई के बारे में किसी को गीबत करते देख ले तो उस से तौबा कर कि क्यूं देखा और फिर जो देखा है उस को भी किसी से कहना नहीं चाहिये। तीसरी जब किसी को जुल्म करते देख ले

तो अपनी आंख को मलामत करे कि क्यूं उस जुल्म को देखा और उस के बा'द तौबा करे ।

﴾4﴿ कान की तौबा

कान की तौबा येह है कि तमाम नामुनासिब बातों के सुनने से तौबा करे और बेहूदा बात न सुने उस वक्त उस की तौबा होगी । फिर फरमाया कि ऐ दुरवेश ! इन्सान को सुनने की ताकत इस लिये दी गई है कि वोह खुदाए तआला का जिक्र सुने और जिस जगह अल्लाह पाक का कलाम सुने उस को कान में महफूज रखे कि क्या हुक्मे बारी होता है ? इस लिये उस को सुनने की ताकत नहीं दी गई हर जगह गाली गलोच, हंसी ठठ्ठा, गाना बजाना और नौहा व शुयून की आवाज सुनता फिरे । जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि जो शख्स मजकूरा बाला चीजों को सुनेगा और कान में रखेगा, कल कियामत के दिन उस के कान में सीसा पिघला कर डाला जाएगा ।

एक दफ्आ हजरते अब्दुल्लाह खफीफ किसी रास्ते से गुजर रहे थे कि नौहा की आवाज उन के कान में पडी । फौरन कान में उंगली डाल ली । जब घर आए तो खादीम से कहा कि थोडा सीसा पिघला कर लाओ, उन के हुक्म के मुताबिक लोग ले आए, आप ने फरमाया इस को मेरे कान में डाल दो, आज न सुनने के लाइक आवाज मेरे कान में पडी है, आज इस गुनाह का कफ्फार अदा कर लेता हूं । कल कियामत का अजाब मुझ पर न हो । आप फरमाते हैं कि फुकरा ने इसी वज्ह से अपने को दुन्या और उस की सोहबत से दूर रखा और गोशा नशीनी इख्तियार कर ली ताकि कुछ भी वाहियात न सुनें और येह कान की तौबा है ।

﴾5﴿ हाथ की तौबा

हाथ की तौबा येह है कि किसी न पकडने के लाइक चीज को हाथ में न पकडे और तमाम नामुनासिब चीजों के पकडने से तौबा कर ले हजरत साहिब फरमाते हैं कि ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख्तियार औशी की बदख्शां

में एक दुरवेश से मुलाकात हो गई उन का एक हाथ कटा हुवा था और वोह तीस साल से हुजरे में ए'तिकाफ किये हुए थे। ख्वाजा कुत्बुद्दीन ने उन से पूछा कि ऐ हजरत! आप के हाथ कटने का क्या माजरा है? उन्हों ने जवाब दिया कि एक मरतबा मैं किसी मज्लिस में हाजिर था। साहिबे मज्लिस का एक दाना गेहूं उन की इजाजत के बिगैर मैं ने उठा लिये और उस दाने को दो टुकडे कर दिया, जैसे ही दाने को मैं ने गिराया तो हातिफ की आवाज मेरे सर में गूंजी, कि ऐ दुरवेश! तुम ने येह क्या किया कि दूसरे आदमी के गेहूं का एक दाना उस की इजाजत के बिगैर दो टुकडे कर दिया। जैसे ही मैं ने येह बात सुनी, फौरन उस हाथ को काट कर बाहर फेंक दिया। ताकि दूसरी मरतबा कोई नामुनासिब चीज न उठाए। उस वक्त शैखुल इस्लाम ने आबदीदा हो कर कहा कि अल्लाह वालों ने ऐसा किया तब जा कर वोह मकाम पर पहुंचे हैं।

《6》 पाऊं की तौबा

पाऊं की तौबा येह है कि नामुनासिब जगह पर जाने से तौबा की जाए। और उस की ख्वाहिश पर पैर बाहर न निकाले। ताकि उस की तौबा तौबा हो।

ख्वाजा जुन्नून मिसरी एक मरतबा सफर कर रहे थे। सफर करते हुए वोह एक बयाबान में पहुंच गए। जहां एक गार था। उस गार में एक बुजुर्ग और साहिबे ने'मत दुरवेश से उन की मुलाकात हो गई। उस दुरवेश का एक पैर बाहर था और एक गार के अन्दर, और दोनों आंखें हवा में। गार के बाहर जो पैर था वोह कटा हुवा पडा था। ख्वाजा जुन्नून उन के और नज्दीक हो गए और सलाम के बा'द उन्हों ने पुछा क्या बात है जो इस पैर को आप ने काट दिया? उस बुजुर्ग ने जवाब दिया कि ऐ जुन्नून! मेरा किस्सा तवील है लेकिन पैर कटने का हाल अलबत्ता सुन लो। एक रोज गार से बाहर निकला हुवा था, एक औरत किसी जरूरत से गार के सामने से गुजरी, ख्वाहिशे नफ्सानी ने तकाजा किया

उसी वक्त उस औरत को पकड ने के लिये मैं ने इस पैर को बाहर निकाला। वोह औरत मेरे सामने से लापता हो गई। फौरन मैं ने इस पैर को काट कर बाहर फेंक दिया। पस ऐ दुरवेश! आज चालीस बरस हो गए कि में एक पैर पर खडा हूं। अकरम नदामत से हैरान हुवा कि कल कियामत के दिन क्या जवाब दूंगा ?

﴾7﴿ नफ्स की तौबा

नफ्स की तौबा येह है कि जिस में नफ्स को तमाम लजीज गिजा, शहवात और ख्वाहिशों से दूर रखना चाहिये और तमाम चीजों से तौबा करनी चाहिये और नफ्सानी ख्वाहिशात के मुताबिक काम नही करना चाहिये। कलामुल्लाह, और हदीस शरीफ में है कि जो शख्स ख्वाहिशे नफ्स से अपने आप को रोकेगा वोह बिहिश्ती है और उस की जगह बिहिश्त है। कलामुल्लाह में आया है कि जो अपने परवर दिगार से डरता है और गुनाह सरजद हो जाने के बा'द अपने नफ्स को ख्वाहिशात से रोकता है और तौबा करता है वोह यकीनन जन्नती है और उस का ठिकाना बेशक बिहिश्त है।

4 सच्ची तौबा

تُوبُوٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا

अल्लाह की तरफ सच्ची तौबा करो

मोमिनीन को तौबतुन नुसूह करने का हुक्म दिया गया है। नुसूह खुलूस और सच्चाई के मा'नों में इस्ति'माल होता है। तौबतुन नुसूह के बारे में हजरते का'ब से एक हदीस मरवी है कि उन्हों ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तौबतुन नुसूह के बारे में दरयाफ्त किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि इस से मुराद येह है कि जब तुम से कोई कुसूर हो जाए तो अपने गुनाह पर नादिम हो। फिर शरमिन्दगी के साथ उस पर अल्लाह से इस्तिगफार कर। और आइन्दा उस फे'ल का कभी इर्तिकाब न कर। हजरते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तौबतुन नुसूह के बारे में येह बयान किया कि तौबा के बा'द आदमी गुनाह का इआदा तो दर किनार बल्कि उस के इर्तिकाब का इरादा न करे।

सच्ची तौबा के बारे में हजरते अली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक बददु को जल्दी जल्दी तौबा इस्तिगफार के अल्फाज दोहराते देखा तो फरमाया येह झूटी तौबा है। उस ने पूछा, फिर सच्ची तौबा क्या है? तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फरमाया उस के लिये छे चीजें जरूरी हैं।

(1) जो कुछ हो चुका उस पर नादिम हो।

(2) अपने जिन फराइज से गफ्लत बरती हो उन को अदा करो।

(3) जिस का हक मारा हो उस को अदा करो।

(4) जिस को तक्लीफ पहुंचाई हो उस से मुआफी मांगो।

(5) आइन्दा इआदा न करने का पुख्ता इरादा कर लो।

(6) अपने नफ्स को अल्लाह की इताअत में इतना महव कर दो जिस तरह कि तुम ने अब तक उसे मा'सियत का खूगर बनाए रखा है और उस को इताअत की तल्खी का मजा चखाओ जिस तरह अब तक तुम उसे मा'सियतों की हलावत का मजा चखाते रहे हो।

﴾1﴿ सच्ची तौबा का मतलब

सच्ची तौबा का मतलब येह है कि इन्सान अल्लाह तआला से गुनाहों पर मुआफी तलब कर के अपने रूह और जिस्म को गुनाहों से पाक करे और सच्ची तौबा की अस्ल बुन्याद अपने किये पर पशेमानी है। जो अहकामाते इलाहिया के खिलाफ आ'माल करने पर होती है। उसी पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि पशेमानी व नदामत तौबा है। पशेमानी और नदामत उस वक्त दिल में पैदा होती है जब इन्सान का जमीर बेदार होता है और एहसास पैदा होता है कि अल्लाह और बन्दे के दरमियान गुनाहों की बिना पर एक पर्दा हाइल हो गया है और महबूबे हकीकी गुनाहों की बिना पर खफा हो गया है। तो उस वक्त दिल में एक खास दुख की लहर फठती है। बन्दा गमजदा होता है, हुज्नो मलाल बढता है। हस्रत में इजाफा होता है और येही खौफ और मलाल इन्सान को गिरया तक ले जाता है गिरया जारी से ऐसी रिक्कत पैदा होती है जो अल्लाह और बन्दे के दरमियान हिजाब को खोल देती है बन्दा पुख्ता इरादा करता है कि वोह फिर ऐसा फे'ल नहीं करेगा जो बन्दे को महबूबे हकीकी से जुदा कर दे।

हजरते अबू बक्र वास्ती तौबतुन नुसूह के बारे में फरमाते हैं कि गुनहगार पर गुनाह का कोई असर बाकी न रहे जिस की तौबा खालिस होती है वोह परवा नहीं करता किस तरह शाम होती है और किस तरह सुब्ह होती है और पशेमानी पुख्ता इरादा पैदा कर देती है।

सच्ची तौबा के बारे में इमाम गजाली फरमाते हैं कि तौबा की बुन्याद पशेमानी पर होती है और तौबा का नतीजा वोह इरादत होती है जो ताइब की तरफ से जाहिर होती है। पशेमानी येह होती है कि ताइब हमेशा पुर दर्द और पुर हसरत नजर आता है। उस का काम ही गिरया जारी और आहो फुगां है क्यूं कि जो शख्स अपने आप को हलाकत के तूफान में मुब्तला पाए और उसे मा'लूम हो कि अब मरा, तो वोह हसरत और पशेमानी से कैसे खाली हो सकता है अगर किसी का बच्चा बीमार पडा

हो और तबीब येह कह रहा हो कि बीमारी खतरनाक है और जान का खतरा है तो खयाल कीजिये कि उस के वालिदैन के दिल पर क्या गुजरेगी ? रंजो गम किस तरह उन के लिये नाकाबिले बरदाश्त हो जाएगा ? और येह बताने की जरूरत नहीं कि मां बाप को औलाद जान से जियादा प्यारी होती है। लेकिन येह भी सहीह है कि बाप को अपने जान बहर हाल अजीज तर है। और उस के तबीब खुदा और रसूल इस दुन्यावी तबीब से जियादा सादिक हैं। जब वोह उसे कहें कि आखिरत की हलाकत मौत के खतरे से भी जियादा जबरदस्त और अजीम है और जियादा गुनाह, हक तआला के जियादा गुस्से का बाइस होगा, यहां तक कि बीमारी से मौत का खतरा इतना यकीनी नहीं होगा। जितना कि गुनाह से हलाकत का होता है अगर येह हकीकत भी उस के दिल में खौफो हसरत न पैदा कर सके। तो इस का येह मतलब होगा कि गुनाह की आफत और हलाकत खेजी पर अभी वोह दिल से ईमान ही नहीं लाया। उस नदामत और पशेमानी की आग जिस कदर तेज होगी। उतनी ही तेजी से गुनाहो को जला कर खाकिस्तर कर देगी कि गुनाह के बाइस जो जंग आदमी के दिल को लग जाता है उसे हसरत और नदामत की आग के इलावा और कौन सी चीज दूर कर सकती है और उस के सिवा और कौन सी हरारत है जो दिल को साफ और रकीक बना सके। हदीस शरीफ की रू से तो अहले तौबा के साथ महब्बत रखने का हुक्म दिया गया है, तो इसी लिये कि उन का दिल रिक्कत से भरपूर होता है। और आईने की तरह साफ दिल जिस कदर साफ हो उतना ही गुनाहों से पाक होता है। ऐसे दिल को गुनाह में हलावत नहीं बल्कि तल्खी महसूस होती है। बनी इस्राईल के पैगम्बर ने एक दफ्आ हक तआला से सिफारिश की कि खुदाया फुलां शख्स की तौबा कुबूल फरमा ले। हक तआला ने वही नाजिल फरमाई कि मुझे अपनी इज्जत की कसम ! अगर आस्मान के तमाम फिरिश्ते भी उस की सिफारिश करें तो भी उस की तौबा कुबूल न करूं, कि उस के दिल में अभी गुनाह की हलावत मौजूद है।

और येह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि गुनाह हर चन्द कि मरगूब होता है लेकिन तौबा करने वाले के हक में उस की मिसाल जहरीले शहद जैसी है जो येह शहद एक बार खाएगा वोह रंज और सदमा उठाएगा और जब दोबारा उस का नाम नहीं लेगा बल्कि उस के तसव्वूर से ही सारे जिस्म के रोंगटे खडे हो जाएंगे और उस से महजूज और लुत्फ अन्दोज होने का खयाल उस के खौफ के नीचे दब कर रह जाएगा। जो उस के नुक्सान के तसव्वूर से पैदा होता है और उस तल्खी का एहसास किसी एक गुनाह तक महदूद नहीं बल्कि हर गुनाह में येही तल्खी कार फरमा रहेगी क्यूं कि वोह गुनाह जो उस ने किया कोई वाहिद गुनाह तो था नहीं हक तआला की रिजामन्दी से खाली था कि येह हालत तो सभी गुनाहों की होती है।

﴾3﴿ नदामत की तफ्सील

सिर्फ जबान से तौबा करना और अस्तगफिरुल्लाह आदतन कहते रहना भी तौबा के लिये मुफीद है लेकिन जबान के साथ दिल से तौबा करना फाइदे मन्द है। अपने किये हुए गुनाह पर शरमिन्दा और अफ्सोस करना, और सादिक निय्यते खालिस से अल्लाह का तालिब रहना ही सच्ची तौबा और इस्तिगफार है जिस के फजाइल किताबुल्लाह और अहादीस की रू से बयान कर दिये गए हैं। हजरते सुहैल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी फरमाते हैं कि येह दौलत बदों उज्लत और खामोशी और अकले हलाल के मुयस्सर नहीं आती। ब ए'तिबारे फितरत, दिल बे रोग पैदा होता है। उस की सलामती गुनाहों की तारीकी से जाती रहती है और आतिशे नदामत उस कदूवत को जला देती है। आं हजरत रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : "अन्नदमु तौबह" नादिम होना ही तौबा है।

मा'लूम हुवा कि हुज्नो नदामत ही तौबा की जान है। येह एक ऐसा कौल है जिस में तौबा की तमाम शराइत मौजूद हैं। क्यूं कि तौबा की एक शर्त तो मुखालिफते अहकामे इलाही पर अफ्सोस करना है। दूसरी शर्त लग्जिश को फौरन छोड देना है। तीसरी शर्त मा'सियत की तरफ न

लौटने का कस्द करना है और येह तीनों शर्तें नदामत के साथ वाबस्ता हैं। क्यूं कि जब दिल में किये हुए अफ्आले बद पर नदामत पैदा होती है तौबा की दो शर्तें उस के साथ खुद बखुद आ जाती हैं।

नदामत से मुराद येह है कि उस बात पर दिल सदमा हो कि गुजिश्ता उम्र अल्लाह तआला की मन्शा और मरजी के खिलाफ और उस के अहकाम की नाफरमानी में गुजारी। मसलन एक हबशी का वाकिआ है कि जब उसे बताया गया कि जिस वक्त वोह गुनाह करता था उस वक्त अल्लाह तआला भी देखता था तो उस पर नदामत और खशियते इलाही का इस कदर गल्बा हुवा कि उस ने एक ना'रा मारा और मर गया। अल गरज नदामत की पहचान येही है कि दिल नर्म और आंसू कसरत से निकलें हदीस शरीफ में है कि तौबा करने वालों के पास बैठा करो, क्यूं कि उन के दिल नर्म होते हैं।

(3) नदामत की वुजूहात

गुनाहों से पशेमानी के तीन अस्बाब हैं।

(1) जब अजाबे इलाही का खौफ दिल पर गल्बा पाता है, और बुरे अफ्आल पर दिल में गम पैदा होता है।

(2) ने'मते इलाही की ख्वाहिश दिल पर गालिब आ जाए और पुख्ता यकीन कि बुरे फे'ल और अल्लाह तआला की नाफरमानी से वोह ने'मत हासिल नहीं हो सकेगी।

(3) कियामत के दिन अल्लाह तआला और तमाम मख्लूक के सामने अपनी बद आ'मालियों के बे नकाब होने के तसव्वुर से खाइफ हो कर।

उन में से पहले को ताइब या'नी तौबा करने वाला, दूसरे को मुनीब या'नी अल्लाह तआला की तरफ इनाबत या रुजूअ करने वाला और तीसरे को तव्वाब या'नी अल्लाह की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला कहते हैं। जब कोई शख्स हसरतो नदामत की वज्ह से अपने मा'सियत को याद करे तो ताइब होता है। और जब कोई शख्स इरादा कर के गुनाह याद

करता है तो गुनहगार होता है क्यूं कि गुनाह के करने में इतनी हैरानी नहीं होती जितनी कि उस का इरादा करने में।

﴾4﴿ नदामत कुर्बे इलाही और रहमतों की जामिन है

इन्सान का अपने कुसूर पर नादिम होने की बजाए सरकश और दिलैर होना अख्लाके हसना के बुन्यादी उसूलों के मनाफी ही नहीं बल्कि खुली बद दियानती और दीदा दिलैर है। ऐसी रविश से तो मन्तिकी तौर पर मुफ्सिदाना नताइज मुरत्तब हो सकते हैं जैसे इब्लीस को अपने परवर दिगार के हुक्म की नाफरमानी करने पर पेश आए थे। ऐसा तर्जे अमल तो इन्सान को भी रांदए दरगाह कर के छोडेगा। उस के बरअक्स इज्जो इन्किसारी और तजल्लुल एक दिन बन्दे को मुकर्रब बना देगा।

मा'लूम हुवा कि अगर येह नदामत और खशियते इलाही की सआदत किसी गुनहगार को नसीब हो जाए तो उस पर कुर्बे इलाही के सबब रहमतों और बरकतों की मूसलाधार बारिश का नुजूल होने लगता है। ऐसा शख्स फिर अपने रब का शुक्र गुजार बन्दा बन कर सिर्फ अपने जाती अख्लाको महासिन के हुसूल की फिक्र नहीं करता बल्कि वोह अपने इर्द गिर्द के माहोल को भी मुतअस्सिर करता है फूलों की खुश्बू सारे गुलिस्तान को मुअत्तर कर देती है। वोह नेकियों को फेलाता है और बुराइयों को रोकता है। और बिल आखिर येह अमल सालेह उस को फलाहो कामयाबी के बुलन्द तरीन मकाम से हम किनार कर देता है।

मसाइब का सबब हमारे गुनाह हैं

येह रोज मर्रह का मुशाहदा है कि हमें जो तकालीफ और परेशानियां लाहिक होती हैं उन का अगर तज्जिया किया जाए तो हम जरूर उस नतीजे पर पहुंचेंगे कि उन का सबब हमारी ही कोई कजवरी और बद अमली है।

कुरआने करीम से भी इस बात का वाजेह सुबूत मिलता है। चुनान्चे सूरतुर्रूम में इर्शादे रब्बानी है कि "खुश्की और तरी में लोगों के

आ'माल के सबब बलाएं फेल रही हैं ताकि अल्लाह तआला उन के आ'माले बद का मजा उन को चखा दे ताकि वोह बा'ज आ जाएं।"

(अर्रूम : 41)

इस आयत से येह भी इशारा मिलता है कि अगर मसाइबो बलय्यात से नजात हासिल करना हो तो उस का इलाज बद आ'मालियों और गुनाहों से बा'ज आना है। या'नी मा'सियत से तौबा व इस्तिगफार हर मुसीबत का मुअस्सिर और यकीनी इलाज है।

सच्ची तौबा की शराइत

﴾1﴿ इकरारे गुनाह

इकरारे गुनाह तौबा की बुन्यादी शर्त है क्यूं कि जिस शख्स को किसी गुनाह का इकरार नहीं वोह तौबा क्यूं कर करेगा ? इस इकरार के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हदीस हस्बे जैल है।

وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اعْتَرَفَ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ ؕ

हजरते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि बेशक बन्दा गुनाह का इकरार करे फिर तौबा कर ले तो अल्लाह जल्ल शानुहू उस की तौबा कुबूल फरमा लेता हैं।

(बुखारी व मुस्लिम)

इस हदीस से मा'लूम हुवा कि ए'तिराफे गुनाह बडी चीज है और दर हकीकत ए'तिराफ ही के बा'द तौबा की तौफीक होती है। **जो लोग गुनाह को गुनाह नहीं समझते या गुनाह कर के येह नहीं मानते कि हम ने गुनाह किया है वोह तौबा की तरफ मुतवज्जेह नहीं होते।** बहुत से लोग जिन पर शैतान गालिब है गुनाह करते हैं मगर येह नहीं मानते कि हम ने गुनाह किया है। बा'ज तो ऐसी मजबूरी का उज्र करते हैं जो शरअन मोतबर नहीं होती। और बा'जे ऐसी भी होती हैं कि अल्लाह के अहकाम को ही खिलाफे अक्ल करार देते हैं और बा'ज लोग तरह तरह

की इल्लतें ढूंड कर गुनाह को हद्दे जवाज में लाने की बेजा कोशिश करते हैं, ऐसे लोग भला गुनाह के इकरारी कैसे हो सकते हैं। जब गुनाह का इकरार नहीं तो तौबा कैसे नसीब होगी ? येह शैतान की बहुत बडी कामयाबी है कि गुनाह कराए और गुनाह का इकरार न करने दे और हीले बहाने बना कर तौबा से बा'ज रखे। जब तौबा के बिगैर किसी को मौत आ जाती है तो शैतान खुशी से फूला नहीं समाता कि चलो इस आदमी की आकिबत खराब कर दी। बनी आदम का अजाब में मुब्तला होना शैतान के लिये बहुत बडी खुशी का जरीआ है।

इन्सान गुनाह करे और गुनाह का इकरारी हो तो तौबा की तौफीक भी हो सकती है लेकिन जो मुंह जोरी करता हो और गुनाह को हलाल समझता हो और गुनाह से रोकने वालों पर फब्तियां कस्ता हो, उन को बे वुकूफ बनाता हो, वोह भला तौबा के करीब कैसे फटक सकता है ? सच्चे मोमिन वोह हैं जो गुनाह से बचने की कोशिश करते हैं और गुनाह हो जाए तो बारगाहे खुदावन्दी में गुनाह का इकरार कर लेते हैं और तौबा व इस्तिगफार में मश्गूल हो जाते हैं। और येही सालिहीन का रास्ता है।

﴾2﴿ गुनाहों से बा'ज आना

दूसरी शर्त येह है कि गुनाहों से बिल्कुल बा'ज आ जाए और उन को तर्क कर दे और बिल्कुल छोड दे फिर हर घडी और हर आन गुनाहों से बचे।

﴾3﴿ गुनाह न करने का इरादा

तीसरी शर्त येह है कि जमानए मुस्तकबिल में गुनाह न करने का पुख्ता इरादा कर ले और अल्लाह तआला के साथ दोबारा गुनाह न करने का वा'दा करे और तौफीक मांगे और येह भी इरादा करे कि गुनाह के बारे में सोचेगा भी नहीं। और गुनाहों को तर्क कर के जमानए मुस्तकबिल में हमा गोश अल्लाह की इताअत में मश्गूल हो जाए। नेकी के कामों की तरफ सुस्ती, काहिली से काम न ले और नेकी पर कारबन्द हो जाए, ख्वाह उस के गुनाह की लज्जत उस को बार बार तंग करे।

﴾4﴿ गुनाहों का तदारुक

तौबा की चौथी शर्त येह है कि जो गुनाह उस से सरजद हो चुके उन का तदारुक करे। अल्लाह के हुजूर में उन के लिये मुआफी तलब करे और उस के हुजूर में अपने किये हुए पर नादिम और शरमिन्दा हो। इन्सान से गुनाह दो तरह सरजद होता हैं। एक तो वोह गुनाह जो अल्लाह तआला की जात से तअल्लुक रखते हैं वोह फराइज में शुमार किये जाते हैं और वोह फराइज जो उस के जिम्मे थे उन का अन्दाजा कर के अगर वोह पूरे हो सकते हों तो उन को पूरा करे, दूसरे वोह गुनाह जो हुकूकुल इबाद से तअल्लुक रखते हों उन को अदा करे।

﴾7﴿ हुकूकुल्लाह की अदाएगी

सच्ची तौबा करने वालों के लिये जरूरी है कि हुकूकुल्लाह, जिन का अदा करना लाजिम था, उन की अदाएगी करे हुकूकुल्लाह की अदाएगी का मतलब येह है कि बालिग होने के बा'द जिन फराइज को तर्क किया और जिन वाजिबात को छोडा उन की अदाएगी की जाए। नमाज, रोजा जकात हज इबादाती फराइज हैं जिन का शुमार हुकूकुल्लाह में होता है लिहाजा इन की तलाफी करना जरूरी है हुकूकुल्लाह की अदाएगी का तरीका हस्बे जैल है।

﴾1﴿ कजा नमाजों की अदाएगी

सिने बुलूगत से ले कर तौबा करने तक जो नमाजें कस्दन सहवन छूट गई हो या मरज और सफर की वज्ह से कजा हो गई हो उन का अन्दाजा करे कि कितनी नमाजें रह गई थीं तो फिर उन कजा नमाजों को पूरा करे।

कजा पूरा करने का एक तरीका येह है कि फारिग वक्त में कजा नमाजें अदा करना शुरूअ कर दे। जब नमाज का वक्त आ जाए तो वोह अदा

करे और फिर कजा अदा करना शुरूअ कर दे हत्ता कि उस वक्त तक कजा नमाजें अदा करता चला जाए जब तक कि तमाम कजा नमाजें पूरी न हो जाएं दूसरा तरीका येह है कि हर नमाज के साथ एक कजा नमाज पढे और बकिया सारी उम्र येही मा'मूल जारी रखे और रमजानुल मुबारक में नवाफिल की कसरत करे क्यूं कि उन नवाफिल का सवाब फर्ज के बराबर मिलता है तो इस तरीके से कजा पूरी हो रकती है।

(2) रोजे की कजा

ऐसे रोजे जिन की कजा लाजिम हो जैसा कि किसी ने मरज की वज्ह से रोजा छोड दिया या कस्दन रोजा नहीं रखा या बिग़ैर निय्यत के रोजा रखा तो ऐसे तमाम रोजों की कजा को पूरा करे। अब सुवाल पैदा होता है कि उस ने कितने रोजे छोडे हैं तो उस के खयाल के मुताबिक जितने रोजे छोडे हैं उन की कजा पूरी करे अगर वोह हर साल तमाम रोजे छोड गया तो सिने बुलूगत से ले कर उस का एहसास करे और अपनी उम्र तक तमाम रोजों को पूरा करे।

औरतों के साथ हर महीने वाली मजबूरी लगी हुई है। उस मजबूरी के जमाने को आम तौर से माहवारी के दिन कहते हैं। उन दिनों में शरअन नमाज पढना रोजा रखना जाइज नहीं है। शरीअत ने उन दिनों की नमाजें बिल्कुल ही मुआफ कर दी हैं लेकिन उन दिनों में फर्ज रोजे जो छोड दिये जाते हैं बा'द में उन की कजा रखना फर्ज है। लेकिन बहुत सी औरतें इस में कमजोरी दिखाती हैं और बा'द में मजकूरा रोजों की कजा नहीं रखतीं जिस की वज्ह से बहुत सी औरतों पर कई कई साल के रोजों की कजा लाजिम हो जाती है। खूब सहीह अन्दाजा कर के जिस से यकीन हो जाए कि जियादा से जियादा इतने रोजे होंगे अब सब की कजा रख लें। बालिग होने के बा'द से अब तक जितने भी फर्ज रोजे ख्वाह किसी भी वज्ह से रह गए हों, सब की कजा रखे, मर्द हो या औरत सब को इन की अदाएगी लाजिम है।

﴾3﴿ जकात की अदाएगी

ताइब होते ही जकात के बारे में खूब गौर करें कि मुझ पर जकात फर्ज हुई है या नहीं ? और अगर फर्ज हुई है तो हर साल पूरी अदा हुई है या नहीं ? जितने साल की जकात बिल्कुल ही न दी हो या कुछ दी हो और कुछ न दी हो। उन सब का इस तरह अन्दाजा लगाए कि दिल गवाही दे दे कि उस से जियादा माले जकात की अदाएगी मुझ पर वाजिब नहीं है फिर उसी कदर माले जकात मुस्तहिकीने जकात को दे दे, ख्वाह एक ही दिन में ख्वाह थोडा थोडा कर के दे दे। अगर मक्दूर हो तो जल्द से जल्द सब की अदाएगी कर दे। वरना जिस कदर मुम्किन हो अदा करता रहे और पुख्ता निय्यत रखे कि पूरी अदाएगी जिन्दगी में जरूर करूंगा और जब भी माल मुयस्सर आ जाए, अदाएगी में कोताही न करे और देर न लगाए।

सदकए फित्र भी वाजिब है और जो कोई नज्र मान ले तो वोह भी वाजिब हो जाती है इन में से जिस की भी अदाएगी न की हो उस की अदाएगी करे।

﴾4﴿ हज की अदाएगी

हज की शराइत के मुताबिक अगर ताइब पर शर्ते हज लागू होती है और माली इस्तिताअत हो तो उसे हज अदा करना चाहिये। अगर माली इस्तिताअत नहीं लेकिन सफरे हज के लिये जिस्मानी ताकत मौजूद हो तो उसे हज के लिये कस्बे हलाल कर के हज करने के लिये वसाइल पैदा करने चाहिये, हज एक मुकद्दस फरीजा है इस लिये इस से भी कोताही नहीं करनी चाहये।

देखने में आया है कि हज भी बहुत से मर्दों और औरतों पर फर्ज हो जाता है लेकिन हज नहीं करते, जिन पर हज फर्ज हो या पहले कभी हो चुका था और माल दूसरे कामों में लगा दिया। वोह हज करने की फिक्र करें जिस तरह मुम्किन हो इस फरीजे की अदाएगी से सरफराजी हासिल करें।

अगर किसी पर हज फर्ज हुवा और उस ने हज नहीं किया और इतनी जियादा उम्र हो गई कि सख्त मरज या बहुत जियादा बुढापे की वज्ह से हज के सफर से आजिज हो और मौत तक सफर के काबिल होने की उम्मीद न हो तो ऐसा शख्स किसी को भेज कर अपनी तरफ से हज्जे बदल करा दे अगर जिन्दगी में न करा सके तो वारिसों को वसिय्यत कर दे कि इस माल से हज कराएं। लेकिन उसूले शरीअत के मुताबिक वसिय्यत सिर्फ 1/3 माल में जारी हो सकती है, हां अगर बालिग वुरसा अपने हिस्से में से बखुशी मजीद देना गवारा कर लें तो उन को इख्तियार है।

(5) कफ्फारा

अगर किसी शख्स पर कोई कफ्फारा लाजिम आता है तो उस की अदाएगी से ओहदा बरआ होना चाहिये, और ऐसे गुनाहों के बारे में सोचे जो फराइज, वाजिबात और मन्नत के इलावा हैं और अपने जेहन में लाए कि वोह कब बालिग हुवा ? उस वक्त से ले कर तौबा करने तक उस के जिस्म के आ'जा या'नी हाथ पाऊं, जबान, कान, आंख, दिल शिकम और जिन्सी आलात से कौन कौन से गुनाह सरजद हुए हैं ? या'नी जबान कितना अर्सा झूट की तरफ माइल रही ? बोहतान बान्धती रही ? चुगलियां लगाती रही ? फिर जबान से जो गाली गलोच और बद कलामी हुए उस को याद करे। हत्ता कि जो सब बातें जबान ने खिलाफे शरअ सर अन्जाम दीं उन को याद करे। फिर हाथों ने क्या क्या जुल्म किया ? किस का हक गसब किया ? चोरी डकेती, बद दियानती, रिश्वत, हत्ता कि जितने भी गुनाह हाथ ने सर अन्जाम दिये हों उन को याद करे। फिर सोचे कि शिकम में कौन कौनसा हराम गया ? या'नी शराब खोरी या सुअर का गोश्त या ऐसी ही कौन कौन सी चीजें खाई हैं जो हराम थीं। फिर नफ्सानी ख्वाहिशात की बिना पर या'नी जिना, गैर महरम को लज्जते नफ्स की खातिर देखना वगैरा के गुनाह जेहन में लाए अब सुवाल पैदा होता है कि इन्सान जेहन में येह ला ता'दाद कर्दा गुनाह किस तरह आ सकते हैं तो वोह

उस तरह हो सकता है कि इन्सान तन्हाई में बैठ कर अपने माजी के हालात और वाकिआत रफ्ता रफ्ता दोहराए तो तमाम बुराइयां जो उस ने कीं, उस के सामने आ जाती हैं। गुनाहों की याद उन लोगों को देखने से भी आ जाती है जो गुनाह के साथी और शरीक रहे हों और वोह तमाम मकामात को भी याद करे जहां पर उस ने कोई गुनाह ख्वाह छुप कर या जाहिर किया था।

तमाम बुराइयों को जेह्न में लाने के बा'द अल्लाह के हुजूर गिरया जारी करे, सज्दे में सर रख कर मुआफी मांगे और इन का कफ्फारा बस येही होगा कि जियादा से जियादा नेकियां करे। कुरआने पाक कसरत से तिलावत करे या'नी नेक कामों की तरफ कसरत से तवज्जोह करे। ताकि उस के गुनाह मिट जाएं क्यूं कि **इर्शादे बारी है कि नेकी गुनाह को खत्म कर देती है।**

नेक और सालेह लोगों की महफिल में बैठे। सदका और खैरात की तरफ जियादा तवज्जोह दे भूकों को खाना खिलाए। फिर जब वोह अपनी जिन्दगी को किताबो सुन्नत का पाबन्द करेगा तो उस को बेशुमार तफ्लीफें आएंगी, उन को बसद नियाज कुबूल करे क्यूं कि रसूले पाक का कौल है कि अगर मुसलमानों को कोई तक्लीफ पहुंचे तो वोह उन के गुनाहों का कफ्फारा बन जाती है। चाहे वोह कांटा ही क्यूं न चुभा हो।

《8》 हुकूकुल इबाद की अदाएगी

हर गुनाह में अल्लाह की नाफरमानी तो होती है मगर उस नाफरमानी के साथ साथ उस गुनाह से किसी इन्सान की हक तलफी हुई हो या किसी के दिल को दुख पहुंचाया हो तो वोह गुनाह हुकूकुल इबाद से होगा। तो ऐसे गुनाहों से तौबा करने के लिये अल्लाह तआला से मुआफी मांगने के साथ साथ उस शख्स से भी मुआफी मांगना जरूरी है जिस के साथ जुल्म या जियादती की हो या जिस की हक तलफी की गई।

बन्दगाने खुदा के हुकूक तलफ करने का तदारुक और तलाफी येह है कि जिन लोगों को दुख पहुंचाया हो उन से मुआफी मांगी जाए और

उन के साथ नेकी और भलाई की जाए ताकि उन का कफ्फारा अदा हो जाए, या'नी जियादतियों और हक तलफियों का कफ्फारा लोगों के साथ नेकियां करना और उन के लिये दुआए खैर करना है। अगर वोह शख्स जिस को दुख पहुंचाया था वोह दुन्या से जा चुका है तो उस के लिये रहमत की दुआ मांगे। उस की औलाद और वुरसा के साथ हुस्ने सुलूक और महेरबानी करे। येही उस का कफ्फारा है।

﴾1﴿ जानी हक तलफी

हक तलफी दो तरह की होती है एक जानी हक तलफी और दूसरी माली हक तलफी। अगर किसी जान को नुक्सान पहुंचाया है या'नी बिगैर इरादे के कत्ल कर दिया तो उस की तौबा की सूरत येह है कि मक्तूल के वुरसा को खून बहा की अदाएगी की जाए। उस के बरअक्स कत्ल अम्दन से बिगैर किसास के खलासी नामुम्किन है। अगर वुरसा किसास मुआफ कर दें तो किसास साकित हो जाएगा। और इस तरह गुनाहों से नजात हो जाएगी।

﴾2﴿ माली हक तलफी

किसी का माल गसब कर लिया हो या माल छीन लिया या चोरी की या किसी के माल पर डाका डाला या अमानत में खियानत की या ताजिर बन कर बद दियानती की हो, या'नी मिलावट की हो या माली मुआमले में धोका दिया हो या खराब माल फरोख्त किया हो, या मजदूर की उजरत में कमी की हो या सिरे से दी ही न हो या सूद खाया तो इन तमाम सूरतों में हिसाब लगाया जाए और जिस को माली नुक्सान पहुंचाया हो उन के नुक्सान की तलाफी की जाए अगर माल वापस लौटाने की ताकत नहीं तो फिर इल्तिजा कर के माल को बख्शवाया जाए अगर वोह फौत हो गया हो तो उस के माल की तलाफी उस के वुरसा को की जा सकती है अगर येह सूरत भी न हो सके तो अल्लाह की राह में खैरात कर दे अगर माली तलाफी न की जाए तो उस की रोजे कियामत बाजे पुर्स होगी। चुनान्चे हुकूकुल इबाद की तरफ से चश्म पोशी नहीं करनी चाहिये।

हदीसे पाक में है कि कियामत के रोज बन्दे को अल्लाह के सामने खडा किया जाएगा और उस की नेकियां पहाड के बराबर होंगी तो उसे यकीनन जन्नत का मुस्तहिक होना चाहिये। मगर हुकूक का मुताल्बा करने वाले खडे हो जाएंगे। उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी का माल मारा होगा। किसी को जदो कोब किया होगा। पस इन हुकूक के बदले में येह नेकियां उन को दे दी जाएंगी और उस के पास नेकियों का कुछ हिस्सा भी बाकी न रहेगा उस वक्त फिरिश्ते अर्ज करेंगे या इलाही ! इस की नेकियां खत्म हो गई हैं और हुकूक के तलब करने वाले बहुत सारे बाकी हैं। अल्लाह तआला फरमाएगा कि इन का मुताल्बा करने वालों की बुराइयां इस के गुनाहों में डाल दो और इस को दोजख में ले जाओ। गरज वोह दूसरों के गुनाहों की वज्ह से जो बदले के तौर पर उस के जिम्मे डाले जाएंगे हलाक और तबाह हो जाएगा। इस तरह मज्लूम, जालिम की नेकियों के जरीए नजात पाएंगे क्यूं कि जालिम की नेकियां बतौरे तावान मज्लूम के हक में मुन्तकिल कर दी जाएंगी।

लिहाजा हुकूकल इबाद के बारे में इन्सान को हद दरजा मोहतात रहना चाहिये और एहतियात से काम लेना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि इन्सान से किसी की हक तलफी हो जाए जो उस को दोजख में ले जाए।

﴾3﴿ आबरू के हुकूक

आबरू के हुकूक का तलाफी का मतलब येह है कि अगर किसी को नाहक मारा हो या किसी की गीबत की हो या गीबत सुनी हो, गाली दी हो तोहमत लगाई हो या किसी भी तरह से कोई जिस्मानी या रूहानी या कल्बी तक्लीफ पहुंचाई हो, तो उस से मुआफी मांग ले, अगर वोह दूर हो तो उस को उज्र न समझे बल्कि खुद जा कर या खत भेज कर मुआफी तलब करे और जिस तरह मुम्किन हो तो उस से मुआफी मांग कर उस को राजी करे अगर मार पीट का बदला मार पीट से देना पडे तो उसे भी गवारा करे। अलबत्ता गीबत के बारे में येह है कि जिस की गीबत की हो उस से

मुआफी मांगे वरना उस के लिये बहुत जियादा मग्फिरत की दुआ करे जिस से यकीन हो जाए कि जितनी गीबत की थी या गीबत सुनी थी उस के बदले उस के लिये इतनी दुआ हो चुकी है कि उस दुआ के देखते हुए वोह जरूर खुश हो जाएगा और गीबत को मुआफ कर देगा।

येह बात दिल में बिठा लेनी चाहिये कि हुकूकुल इबाद तौबा से मुआफ नहीं होते हैं। और येह भी समझ लें कि नाबालिगी में नमाज रोजा तो फर्ज नहीं है लेकिन हुकूकुल इबाद नाबालिगी में भी मुआफ नहीं। अगर किसी लडके या लडकी ने किसी का माली नुक्सान कर दिया तो वारिस पर लाजिम है कि ब हैसियत वली खुद लडके लडकी के माल से उस की तलाफी करे। अगर्चे साहिबे हक को मा'लूम भी न हो, अगर वली ने अदाएगी नहीं की तो बालिग हो कर खुद अदा करें या मुआफी मांगें। बहुत से लोग जाहिरी तक्वा और परहेजगारी भी इख्तियार कर लेते हैं, जबानी तौबा भी करते रहते हैं लेकिन गुनाह नहीं छोडते, हराम कमाई से बाज नहीं आते और लोगों की गीबत करते हुए जरा भी दिल में एहसास नहीं होता कि हम गीबतें कर रहे हैं। सिर्फ जबानी तौबा करना और गुनाह न छोडना हुकूकुल्लाह व हुकूकुल इबाद की तलाफी न करना येह कोई तौबा नहीं। जो लोग रिश्वत लेते हैं या सूद लेते हैं या करोबार में फरेब दे कर नाजाइज तौर पर पैसा खींच लेते हैं। ऐसे लोगों का मुआमला बहुत कठिन है किस किस के हक की तलाफी करना है। उस को याद रखना और तलाफी करना और हुकूक वालों को तलाश कर के पहुंचाना, पहाड खोदने से भी जियादा सख्त है लेकिन जिन के दिल में आखिरत की फिक्र अच्छी तरह जागुर्जी हो जाए वोह बहर हाल हुकूक वालों के हुकूक किसी न किसी तरह पहुंचा कर ही दम लेते हैं।

﴾4﴿ हक तलफी अदा न करने का आखिरत में नुक्सान

हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फरमाते हैं कि हुजूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ्त फरमाया क्या तुम जानते हो मुफ्लिस कौन

है ? सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अर्ज किया कि हम तो उसे मुफ्लिस समझते हैं जिस के पास दिरहम न हो और माल न हो । येह सुन कर आं हजरत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि बिलाशुबा मेरी उम्मत का हकीकी मुफ्लिस वोह होगा जो कियामत के रोज नमाज और रोजे और जकात लेकर आएगा (या'नी उस ने नमाजें पढी होंगी, और रोजे भी रखे होंगे, जकात भी अदा की होगी और उन सब के बावुजूद इस हाल में मैदाने महशर में आएगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी पर तोहमत लगाई होगी और किसी का नाहक माल खाया होगा और किसी का नाहक खून बहाया होगा । और किसी को मारा होगा । और चूंकि कियामत का दिन फैसले का दिन होगा इस लिये उस शख्स का फैसला इस तरह किया जाएगा कि जिस जिस को उस ने सताया था और जिस जिस की हक तलफी की थी, सब को उस की नेकियां बांट दी जाएंगी, कुछ उस की नेकियां इस हकदार को दी जाएंगी और कुछ उस हकदार को दे दी जाएंगी फिर अगर हुकूक पूरा होने से पहले उस की नेकियां खत्म हो जाएंगी तो हकदारों के गुनाह उस के सर पर डाल दिये जाएंगे, फिर उस को दोजख में डाल दिया जाएगा । (मुस्लिम शरीफ)

इस हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि किसी के हुकूकुल इबाद तलफ करने से आखिरत में कितना सख्त नुक्सान पहुंचेगा !!!

﴾5﴿ जुल्म और हकतलफियों से बचने की ताकीद

दूसरी हदीस में है कि आं हजरत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जिस ने अपने किसी भाई पर जुल्म कर रखा हो, कि उस की बे आबरू की हो या और कुछ हक तलफी की हो तो आज ही (उस का हक अदा कर के या मुआफी मांग कर) उस दिन से पहले हलाल करलेवे जिस रोज न दीनार होगा न दिरहम होगा (फिर फरमाया कि) अगर उस के कुछ अच्छे अमल होंगे तो ब कदरे जुल्म उस से ले लिये जाएंगे और अगर उस की नेकियां न हुईं तो मज्लूम की बुराइयां ले कर उस जालिम के सर कर दी जाएंगी । (बुखारी)

इन दोनों हदीसों से मा'लूम हुवा कि सिर्फ पैसा कोडी दबा लेना ही जुल्म नहीं है, बल्कि गाली देना, तोहमत लगाना, बेजा मारना, बे आबरू करना भी जुल्म और हक तलफी है, बहुत से लोग समझते हैं कि हम दीनदार हैं मगर इन बातों से जरा नहीं बचते। येह याद रखो कि खुदा अपने हुकूक को तौबा व इस्तिगफार से मुआफ फरमा देता है मगर बन्दों के हुकूक जब ही मुआफ होंगे जब कि उन को अदा कर दे या उस से मुआफी मांग ले।

﴾6﴿ यतीमों का माल नाहक खाने की सजा

सब को मा'लूम है कि यतीम का माल खाना और उसूले शरीअत की खिलाफ वरजी करते हुए अपनी मिल्क में ले लेना या अपने ऊपर या अपनी औलाद के ऊपर खर्च कर देना सख्त गुनाह है और हराम है। कुरआने मजीद में इर्शाद है।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾

बेशक जो लोग नाहक यतीमों का माल खाते हैं, बस येही बात है कि वोह अपने पेटों में आग भर रहे हैं। और अन्करीब जलती हुई आग में दाखिल होंगे।

(पारह 4, सूरए निसा, आयत : 10)

जो लोग यतीम खानों के नाम से इदारे लिये बैठे हैं और वोह या उन के मुशिर चन्दे जम्आ करते हैं, वोह लोग इस आयत के मज्मून पर गौर कर लें और अपना हिसाब इसी दुन्या में कर लें। शरअन जितना हक्कुल खिदमत ले सकते हैं उस से जियादा तो नहीं ले रहे हैं खूब गौर फरमा लें। अगर कोई गबन किया है तो उस की तलाफी यौमे आखिरत से पहले कर लें। और बहुत से लोग येह समझते हैं कि यतीम का माल खाने का गुनाह उन्हीं लोगों को हो सकता है जो यतीम खाने चला रहे हैं लेकिन दर हकीकत घर घर यतीमों का माल खाया जाता है, जब किसी शख्स की वफात हो जाती है उस की नाबालिग औलाद लडके हों या लडकियां सब यतीम होते हैं, शरई उसूल के मुताबिक मीरास तक्सीम नहीं कि जाती।

चचा या बडे भाई के कब्जे में मरने वाले की रुकूम और जाएदाद जो कुछ होती हैं उन में से थोडा बहुत बिग़ैर हिसाब उन बच्चों पर खर्च करते रहते हैं और बा'ज लोग तो उन के मुस्तहिक पर कुछ भी खर्च नहीं करते और पूरी जाएदाद पर कब्जा कर लेते हैं और अपने नाम या अपनी औलाद के नाम कर देते हैं। जब येह यतीम बच्चे बालिग होते हैं तो बाप की मीरास में से उन को कुछ नहीं मिलता। येह सब यतीम का माल खाने में दाखिल है। अगर किसी ने बहुत हिम्मत की और मरने बाले की जाएदाद और माल को तक्सीम कर ही दिया तो उस में मरने वाले की बीवी और बच्चों को कुछ भी नहीं देते। येह सब बेवाह और यतीम का माल खाने में शामिल है।

(7) माली हुकूक ग़सब करने की मुख्तलिफ सूरतें

हमारे इलाकों में रिवाज है कि मय्यित के तर्के में से उस की लडकी को हिस्सा नहीं देते बल्कि भाई ही दबा बैठते हैं जो सरासर जुल्म करते हैं और हराम खाते हैं। बा'ज लोग कहते हैं कि वोह अपना हक मांगती नहीं हैं और मुआफ कराने से मुआफ भी कर देती हैं।

वाजेह रहे कि हक न मांगना दलील इस बात की नहीं कि उन्हों ने अपना हक छोड दिया है जैसी झूटी मुआफी होती है उस का कुछ ए'तिबार नहीं है। क्यूं कि वोह जानती हैं कि हम को मिलना तो है ही नहीं लिहाजा मुआफ ही कर देती हैं और अपना हक तलब करने से खामोश रहती हैं। अगर उन का हिस्सा बांट कर उन के सामने रख दिया जाए कि लो येह तुम्हारा हिस्सा है और जाएदाद की आमदनी जितनी भी उन के हिस्से की हो उन को दे दी जाए वोह उस के बावुजूद मुआफ कर दें तो मुआफी का ए'तिबार होगा, मजबूरी रस्मी मुआफी का ए'तिबार नहीं।

बा'ज लोग नफ्स को यूं समझा लेते हैं कि जिन्दगी भर उन को उन के सुसराल से बुलाएंगे बच्चों समेत आएंगी, खाएंगी पिएंगी उस से उन का हक अदा हो जाएगा। येह सब खुद फरेबी है। अव्वल तो उन पर इतना खर्च नहीं होता जितना मीरास में उन का हिस्सा निकलता है।

दूसरे सिलए रेहमी करना है तो अपने पैसे से करो, पैसा उन का और एहसान आप का ! कि हम ने बहन को बुलाया है और खर्च किया है। येह क्या सिलए रेहमी हुई ? तीसरे उन से मुआमला करो, क्या उस सौदे पर वोह राजी हैं। यक तरफा फैसला कैसे फरमा लिया ?

﴾1﴿ बीवी के हुकूक में जियादती की सूरत

बहुत से समझदार लोग भी मरने वाले भाई की जाएदाद से उस की बीवी को हिस्सा नहीं देते बल्कि उसे मजबूर करते हैं कि तू हमारे साथ निकाह कर ले। वोह बेचारी मजबूरन निकाह कर लेती है और येह समझती हैं कि हम ने शरीअत की पासदारी कर ली। हालां कि निकाह कर लेने से उस के शोहर की मीरास से जो शरअन हिस्सा उस को मिला है उस का दबा लेना फिर भी हलाल नहीं हो जाता। येह लोग कहते हैं कि अगर औरत को जाएदाद में हिस्सा दे दिया गया तो हमारी जमीन का हिस्सा दूसरे खानदान में चला जाएगा अगर चला गया तो क्या हुवा ? बेवा औरत का माल मारने और आखिरत के अजाब से तो बच जाएंगे।

इसी तरह महर को भी समझो कि रस्मी तौर पर बीवी मुआफ कर देने से मुआफ नहीं होता जब तक कि वोह अपने नफ्स की खुशी से मुआफ न कर दे। अगर उस ने येह समझ कर जबानी तौर पर मुआफ कर दिया कि मुआफ करूं या न करूं, मिलता तो है ही नहीं तो उस मुआफी का कुछ ए'तिबार नहीं है।

कुरआन शरीफ में इर्शाद है :

فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا۝

सो अगर तुम्हारी बीवियां नफ्स की खुशी से कुछ महर छोड दे तो तुम उस को मरगूब और खुशगवार समझते हुए खा लो। (पारह 4, सूरए निसा, आयत : 4)

इस बारे में भी येही सूरत करें कि उन का महर उन के हाथ में दे दें फिर वोह अपनी खुशी से बख्श दें तो उस को बे तकल्लुफ कुबूल कर लें।

﴾3﴿ लडकियों का महर वुसूल कर के जाती इस्ति'माल में लाना दुरुस्त नहीं

लडकियों की शादी कर दी जाती है और उन का महर वालिद या दूसरा कोई वली वुसूल कर लेता है। वुसूल कर लेना और उस की मिल्कियत जानते हुए महफूज रखना येह तो ठीक है लेकिन लडकी से पूछे बिग़ैर उस के माल को अपने तसर्रुफ में लाना और अपना ही समझ लेना, फिर उस को कभी भी ना देना या ऊपर के दिल से झूटी मुआफी करा लेना येह हलाल नहीं। बा'ज लोग कहते हैं कि साहिब ! शादी में जो हम ने खर्च किया है उस के इवज येह रकम वुसूल कर ली या जहेज में लगा दी। हालां कि वालिद या कोई वली रिवाजी अख्राजात करता है उमूमन येह सब कुछ नाम के लिये होता है। फिर बे जबान लडकी का माल इस तरह खर्च करना कैसे हलाल हो सकता है ? जो कुछ खर्च करें मुवाफिके शरअ खर्च करें और वोह भी अपने माल से न कि लडकी के महर से, उस के माल से खर्च करना बिला उस की इजाजत के जुल्म है। उस से पूछते तक नहीं और उस का माल उडा देते हैं। अगर कोई साहिब येह कहें कि वोह खामोश रहती है, येही इजाजत है तो येह सहीह नहीं है। रिवाजी खामोशी मालियात के बारे में मोअतबर नहीं है। उस की रकम उस को दे दो, उस पर किसी किस्म का जब्र न हो और बदनामी और रिवाज का डर न हो। फिर वोह खुशी से जो कुछ आप को दे दे, उस को अपना समझ सकते हो।

यूं कहने वाले भी मिलते हैं कि हम ने पैदाइश से ले कर आज तक खर्च किया है वोह हम ने वुसूल कर लिया। येह भी जाहिलाना जवाब है क्यूं कि शरअन आप पर उस की परवरिश वाजिब थी इस लिये आप ने अपना वाजिब अदा किया जिस की अदाएगी अपने माल से वाजिब थी। उस के इवज वुसूल करना खिलाफे शरअ है। बल्कि खिलाफे महब्बत और खिलाफे शफ्कत भी है गोया आप जो कुछ उस की परवरिश पर खर्च करते आए हैं वोह एक सौदे बाजी है। और है भी बिला हिसाब, जिस की लिखाई पढाई कुछ नहीं। पन्दरह बीस साल खर्च कर के उस के माल से

वुसूल कर लेंगे। उधार खर्च कर के बा'द में वुसूल कर लेना येह तो गैर भी कर देते हैं। आप ने अपनी औलाद के साथ कौन सा सुलूक किया ?

इन तमाम सूरतों में दूसरों के हुकूक की हक तलफी होती है। इस लिये इन तमाम सूरतों से बचना बेहतर है और अगर कोई गलती हो जाए तो उस का तौबा से इजाला करना चाहिये।

(9) कुबूले तौबा

तौबा करने के बा'द ताइब के जेहन में एक सुवाल उभरता है कि क्या उस की तौबा बारगाहे रब्बुल इज्जत में कुबूल हुई है या नहीं ? उस का सहीह जवाब अल्लाह तआला ख्वाब या मुराकबे की हालत में ताइब को दे देता है और बा'द में इन्सानी दिल में उस किस्म की तरफ माइल करने वाले जज्बात और खयालात पैदा होते हैं जिन से पता चलता है, कि उस की तौबा कुबूल हो गई है या तौबा के बा'द रूहानी फज्ल के आगाज से भी येह पता चल जाता है कि बारगाहे ईजदी में तौबा कुबूल हो गई है। बहर कैफ अगर तौबा साबिका बयान कर्दा शराइत के मुताबिक होगी और सच्चे दिल से होगी तो जरूर कुबूल होगी। तौबा का अस्ल तअल्लुक इन्सानी दिल से है। जिस को येह मा'रिफत हासिल हो जाए कि दिल की क्या हकीकत है ? जिस्म से उस का तअल्लुक क्या है ? और अल्लाह से उस की क्या निस्बत है ? तो ऐसा दिल तौबा की तरफ माइल होता है और दिल ही तौबा के जरीए अब्द और मा'बूद के दरमियान हिजाब को दूर करता है। दिल एक ऐसा आईना है कि अगर वोह गुनाहों और खताओं के जंगार से पाक साफ हो तो अल्लाह के नूर की आमाज गाह है लेकिन अगर आदमी से कोई गुनाह सरजद हो जाए तो येह गुनाह आईनए दिल को गन्दा कर देता है। मगर इन्सान की इबादत, और नेकियां नूर बन कर दिल की जुल्मत और तारीकी को खत्म कर देती हैं और जब भी जुल्मत का गल्बा होने लगे तो तौबा एक ऐसी इबादत की सूरत में जल्वागर होती है जिस से दिल की जुल्मत खत्म हो जाती है और दिल अज सरे नौ पाक साफ हो जाता है। दिल की पाकी से दिल में एक ऐसा नूर पैदा हो जाता है

जिस से अल्लाह तआला इन्सान की बातिनी निगाह को खोल देता है और फिर उस को तौबा कुबूल होने के बारे में खुद अल्लाह तआला से पता चल जाता है।

बाकी अल्लाह की रहमत ऐसी वुस्अत वाली है कि अगर कोई इन्सान सच्चे दिल से तौबा कर जाए तो उस तौबा को अल्लाह तआला जरूर शर्फे कुबूलियत बख्शता हैं मगर कुबूलियते तौबा के बारे में येह अम्र भी जेहन नशीन रखना चाहिये कि तौबा कर के बुराइयों को अमली तौर पर तर्क कर देना चाहिये। रिज्के हलाल कमाना और रिज्के हलाल खाना भी जुज्वे लाजिम है अगर तौबा तौबा कर के साथ साथ बुराई भी जारी रखी जाए तो तौबा हरगिज कुबूल न होगी ख्वाह जबान से इन्सान लफ्जे तौबा जितनी मरतबा चाहे कहता जाए कि अल्लाह मैं ने तौबा की। नाकिस तौबा कुबूल न होगी।

किन लोगों की तौबा कुबूल नहीं होती

तौबा हर शख्स की कुबूल हो जाती है। लेकिन बुन्यादी शर्त साहिबे ईमान होना लाजिमी है लिहाजा जो हजरात इस्लाम के इलावा किसी और मजहब के पैरूकार हो कर मर जाएं उन की तौबा कुबूल नहीं। चुनान्चे जो शख्स एक मरतबा ईमान ले आए और फिर मुर्तद हो जाए और कुफ्र में बढ जाए तो उस की तौबा कुबूल नहीं।

दर हकीकत अल्लाह तआला ने ईमान के बा'द कुफ्र करने वालों और फिर उस कुफ्र पर मरने वालों को डराया है कि मौत के वक्त तुम्हारी तौबा कुबूल न होगी, लिहाजा जो ईमान से निकल कर राहे हक से भटक जाएं और इस हालत में मर जाएं तो उन की तौबा कुबूल नहीं होती चुनान्चे याद रहे कि मौजूदा दौर में जो लोग इस्लाम की राह छोड कर कोम्यूनिजम और इल्हाद [नास्तीक] की राह इख्तियार कर लें तो ऐसे लोगों की तौबा मौत के वक्त हरगिज कुबूल नहीं होगी। अलबत्ता मौत से पहले पहले अगर वोह इस राह को छोड कर इस्लाम के सिराते मुस्तकीम पर आ जाएं तो उन की तौबा कुबूल है क्यूं कि इल्हाद के बारे में इर्शादे बारी तआला है कि

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ

बेशक जो लोग ईमान के बा'द कुफ्र करें, फिर उस कुफ्र में हद से जियादा बढ जाएं तो उन की तौबा हरगिज कुबूल न होगी येही लोग गुमराह हैं, बेशक जो लोग कुफ्र करें और मरते दम तक काफिर रहें । अगर उन में से कोई जमीन भर सोना फिदये में दे देवे तो फिर भी उन की तौबा हरगिज कुबूल न की जाएगी ।

(पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 90-91)

कुफ्र में बढने से मुराद येह है कि इस्लाम की अमलन मुखालिफत और मुजाहिमत करे और लोगों को खुदा के रास्ते से रोकने के लिये अपना पूरा जोर लगाए । लोगों में शुब्हात पैदा करे और बद गुमानियां फेलाए ताकि दूसरे लोग ईमान न ले आएं तो मुन्करीने इस्लाम का येह रवय्या इस हद तक बढ जाए तो ऐसे लोगों की तौबा हरगिज कुबूल न होगी ।

अलबत्ता शिर्क की मुआफी हो सकती है कि शिर्क करने वाला शिर्क को छोड कर ताइब हो जाए और सीधा रास्ता इख्तियार कर लेवे । शिर्क गुनाहे अजीम है । क्यूं कि इस के बारे में इर्शादे बारी तआला है कि "बेशक अल्लाह तआला इस बात को नहीं बख्शेगा कि उस के साथ किसी को शरीक किया जाए और उस के सिवा जितने गुनाह हैं जिस को चाहे बख्श दें । (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 48) और जो शख्स अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराता है वोह बहुत बडे जुर्म का मुर्तकिब हुवा ।" (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 116)

5 फजाइले तौबा

तौबा के फजाइल बेशुमार हैं उन में से चन्द एक हस्बे जैल हैं....

(1) हुसूले नजात का पहला कदम तौबा

दीनो दुन्या में फलाह और आखिरत में हुसूले नजात का पहला कदम और आखिरी सहारा तौबा है। क्यूं कि इस के इलावा कोई चारा नहीं कि इन्सान अल्लाह के हुजूर अपनी गलतियों और गुनाहों पर मुआफी मांगता रहे। चूंकि गुनाह और नाफरमानी इन्सान को हलाकत की तरफ ले जाती हैं। जो सरासर खसारे का सौदा है। इस के बरअक्स इताअत और तर्के गुनाह कुर्बे इलाही का जरीआ है। तौबा इताअत की तरफ माइल करती है और तर्के गुनाह की तरफ तरगीब देती है। इसी लिये तो अल्लाह का हुक्म है कि ख्वाहिशात की पैरवी न करो और हवस को छोड कर मेरी तरफ लौटो। और उम्मीद रखो कि आखिरत में मेरे पास मुराद पाओगे। हमेशा रहने वाले घर में मेरी ने'मतों के अन्दर रहोगे, फलाह और नजात से हमकिनार हो कर जन्नत में रहोगे। जो नेक लोगों के लिये है। दीनो दुन्या में हुसूले नजात के रास्ते में इन्सान के लिये सब से बडी रुकावट इन्सान का अपना नफ्स और शैतान है और येह दोनों इन्सान के अजली दुश्मन हैं, इन्सानी नफ्स ख्वाहिशात का तालिब है, लिहाजा येह इन्सान को आखिरी दम तक तालिबे दुन्या बनाए रखता है और शैतान इन्सान को राहे हक से गुमराह करने के दरपे रहता है। इस लिये येह दोनों दुश्मन इन्सान को गुनाहों में मुब्तला करने के लिये पेश पेश हैं और इन दोनों से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वोह रास्ता तौबा और इस्तिगफार है। शैतान इन्सान को इस तरह गुमराह करता है कि जब इन्सान की उम्र अभी पुख्ता नहीं होती बल्कि अवाइल होती है उस की अक्ले नाकिस सोच से फाएदा उठा कर दिल में वस्वसे डाल कर नफ्स को मग्लूब कर लेता है तो इन्सान पर जब हैवानियत और शैतानियत का गल्बा अच्छी तरह हो जाता है तो

उस के आ'जा व जवारेह जेह्न का साथ नहीं देते । चुनान्चे वोह बडी आसानी से तरह तरह की नफ्सानी ख्वाहिशात और मआसी का शिकार हो जाता है उस की सोच का अन्दाज भी बदल जाता है और फिर वोह अपने खालिक ही का बागी बन कर नापसन्दीदा अमल करने लगता है येह दिल की गफ्लत, रब की नाफरमानी और गुनाहों पर इस्रार ऐसे रूहानी अमराज हैं, कि अगर इन का बर वक्त इलाज न किया जाए तो इन्सान की फित्रत ही मस्ख हो जाने का खतरा है। ऐसे गाफिल इन्सान पर शैतान मुसल्लत हो जाता है जो हर वक्त उस के साथ रहता है जो उस को बेहकाता और गुनाहों पर उक्साता है और उस को ऐसे मुगालिते में रखता है। कि उस को अपने आ'माले बद भी भले और पसन्दीदा मा'लूम होने लगते हैं।

लिहाजा मा'लूम हुवा कि इन्सान मासियत की तरफ लाने वाली ख्वाहिशात और गुनाह पर आमादा करने वाले दुश्मनों में घिरा हुवा है। दाखिली दुश्मन तो खुद नफ्स हमारा है जो हमारे आस्तीन की तरह पहलू में छुपा हुवा है और खारिजी दुश्मन शयातीन, जिन्नात और इन्सान हैं, जो नेक इन्सानों को गुमराह करने के दरपे रहते हैं। इस लिये इन्तिहाई एहतियात के बा वुजूद इन्सान से कस्द या गैर इरादी तौर पर कितने ही गुनाह सरजद होते रहते हैं।

इसी तरह अगर इन्सान दिन रात दुन्यवी तफ़र्रुकात और मालो औलाद के चक्कर में गिरफ्तार रहे और मालो दौलत ही समेटता रहे तो येह भी हद दरजे की हलाकत का बाइस है क्यूं कि अल्लाह तआला से गफ्लत और दूरी उस की रहमत और पनाह से महरूम कर देगी। एक हदीस में हजरते उक्बा बिन आमिर से रिवायत है कि हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

"जब तू देखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी आदमी को बा वुजूद उस के खुल्लम खुल्ला गुनाहों के दुन्या की ने'मतें और मालो जाह दे रहा है और वोह जो चाहता है उस को मिल जाता है तो येह समझ ले कि उस को

रफ्ता रफ्ता गुनाहों में बढाया जा रहा है। ताकि आखिर में उसे सख्त अजाब में मुब्तला किया जाए। उस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने मजीद की येह आयत तिलावत फरमाई ..। पस वोह जब उन बातों को भूल गए जो उन्हें याद दिलाई गई थीं तो हम ने उन पर हर चीज के दरवाजे खोल दिये, यहां तक कि जब वोह अपने मालो जाह पर इतरा गए तो हम ने उन को अचानक पकड लिया और वोह बेबस हो कर रह गए ''। (मिश्कात)

लिहाजा जो शख्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आं हजरत मुहम्मद मुस्तफा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान रखता हो वोह ख्वाहिशाते नफ्सानी और बदी और शर में बहक जाने के बा'द, खैरो नेकी और राहे रास्त पर वापस आना चाहे और नेक निय्यती और पूरे खुलूस के साथ अल्लाह जल्लशानुहू की रिजामन्दी हासिल करने और इताअतो फरमां बरदारी का रास्ता इख्तियार करने का पुख्ता इरादा रखता हो तो उस पर लाजिम है कि अल्लाह तआला की उस करीमाना पेशकश और मोहलत का पूरा फाएदा उठाए और नई पाकीजा जिन्दगी की इब्तिदा ''तौबा व इस्तिगफार'' से करे। चूंकि हुसूले नजात और इस्तिकामते ईमान का येही पहला कदम है।

(2) तौबा के लिये अल्लाह तआला का हुक्म

तमाम गुनाहों से तौबा करना हर शख्स पर फर्जे ऐन है ख्वाह गुनाह किस किस्म का हो। क्यूं कि अम्बियाए किराम और खवासीन के इलावा कोई शख्स मुश्किल ही से ऐसा होगा कि जिस से कोई गुनाह सरजद न हो। और उस के जिस्म के आ'जा गुनाह से पाक हों। अगर ऐसा हो तो हो सकता है कि दिल ही से कोई गुनाह सरजद हो गया हो और अगर ऐसा नहीं तो शैतानी वस्वसो से आम इन्सान खाली नहीं हो सकता। जिस की बिना पर इन्सान अल्लाह की याद से गाफिल हो सकता है। अगर ऐसा भी नहीं तो अल्लाह के मा'रिफत के हुसूल में गफ्लत और कोताहियां उमूमन हो जाती हैं। उन सूरतों में हर शख्स की तौबा उस के

हाल की मुनासबत से होती है लेकिन तौबा हर एक के लिये जरूरी है अलबत्ता नोइय्यत में फर्क होता है। **अवामुन्नास अपने गुनाहों से तौबा करते हैं, अल्लाह के खास बन्दे गफ्लत से तौबा करते हैं और अहले मा'रिफत की तौबा येह है कि सिवाए खुदा के तमाम दुन्या से मुंह मोड लें।**

तौबा जब हर इन्सान पर फर्ज है तो हर इन्सान को बयक वक्त तमाम गुनाहों से तौबा करनी चाहिये मगर ऐसा नहीं करना चाहिये कि एक गुनाह से तौबा करे और दूसरे गुनाहों को वैसे ही सर अन्जाम देता चला जाए। जिस गुनाह से इन्सान तौबा करेगा वोही गुनाह दूर होगा और जिस से तौबा नहीं करेगा वोह गुनाह उस के जिम्मे रहेगा कोई भी इस जुमरे से मुस्तगनी नहीं। सिवाए उन लोगों के जो होशो हवास और अक्ल काइम न रखते हों, फिर न ही तौबा करने के लिये कोई उम्र का खास वक्त मुकर्रर किया गया है कि तुम फुलां उम्र में तौबा करो। बल्कि जिस वक्त भी शैतान इन्सान को फरेब दे और इन्सान गफ्लत और नादानी का शिकार हो कर गुनाह कर बैठे तो उसी वक्त इन्सान को तौबा की तरफ लौट आना चाहिये।

وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝

ऐ ईमान वालो ! तुम सब अल्लाह के हुजूर तौबा करो ताकि तुम नजात पाओ।

(पारह 18, सूरए नूर, आयत : 31)

इन्सानी फलाह येह है कि इन्सान साहिबे ईमान हो और अल्लाह का इताअत गुजार बन्दा हो। शरीअते इस्लामिया का पूरी तरह पाबन्द हो और फिर इताअते खुदा और रसूल में उस से कोई लग्जिश, कोताही या नाफरमानी सरजद हो जाए तो उस पर अल्लाह से उस की मुआफी मांगे। और अपनी नादानी पर तौबा करे और फिर अल्लाह के मुआफ करने पर इन्सान फलाह पा सकेगा। मगर इन्सानी फलाह के लिये इर्शादे बारी तआला के मुताबिक तौबा हर शख्स की नजात के किये लाजिमी करार दी गई है और तौबा के इस हुक्म से कोई इन्सान भी मुस्तस्ना नहीं।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَیْهِ یُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓی اَجَلٍ مُّسَمًّی وَّیُؤْتِ كُلَّ ذِیْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّیْٓ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ كَبِیْرٍ ۝

और तुम अपने गुनाह अपने रब से मुआफ कराओ। फिर उस की तरफ तौबा करो। वोह तुम को मुकर्ररा मुद्दत तक अच्छा मताअ देगा और अपने फज्ल से फज्ल देगा और अगर तुम मुंह मोडते रहे तो बेशक मुझे तुम्हारे लिये एक बडे दिन के अजाब का अन्देशा है।

(पारह 11, सूरए हूद, आयत : 3)

दुन्यावी मताअ की खातिर इन्सान लालज में आ कर गुनाह में मुब्तला हो जाता है। आम इन्सानों के सामने अपनी बेहतरी और फलाह का मे'यार सिर्फ दुन्यावी सहूलतों और आसाइशों का हुसूल है लेकिन इन्सानी फलाह और अन्जामे कार बेहतरी इसी में है कि वोह अल्लाह के बताए हुए मताअ को हासिल करने की कोशिश करे, दीन और दुन्या दोनों में अल्लाह से अपनी नजात और फलाह मांगे और इन्सानी नजात इसी में है कि रब्बुल इज्जत से अपने गुनाहों पर तौबा करे। चुनान्चे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मुझ से अपने गुनाहों पर तौबा करों। और तौबा करने से आखिरत तो बन ही जाएगी, लेकिन दुन्या में भी अल्लाह तआला इन्सान को अच्छा मताअ देंगे।

तौबा के इस हुक्म से जाहिर होता है कि येह हुक्म सिर्फ मुसलमानों के लिये नहीं है कि सिर्फ वोह अपने गुनाहों से तौबा करें। बल्कि येह हुक्म रूए जमीन पर बसने वाले तमाम इन्सानों के लिये है जिस रास्तों पर वोह चल रहे है, छोड कर सिराते मुस्तकीम पर आ जाए। जो लोग कुफ्रो शिर्क, इल्हाद और तरह तरह की वहम परस्ती में मुब्तला हैं, उन को चाहिये, कि तौबा कर के साहिबे ईमान बनें। और दीनो दुन्या में फलाह पाएं और अच्छा पाएं।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

जो कोई बुराई करे या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से इस्तिगफार कर ले तो वोह अल्लाह को गफूर और रहीम पाएगा।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 110)

जो शख्स भी अल्लाह तआला की तरफ रुजूअ करता है और अल्लाह की तरफ झुकता है तो अल्लाह तआला अपनी महेरबानी और वुस्अते रहमत से ढांप लेता है और उस के सगीरा और कबीरा गुनाहों को बख्श देता है, गो वोह गुनाह आस्मानो जमीन और पहाडों से भी बडे हों।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ

और मगफिरत तलब करो अपने रब से फिर उस की बारगाह में तौबा करो बेशक मेरा रब रहम करने वाला बहुत महब्बत करने वाला है।

(पारह 12, सूरए हूद, आयत : 90)

﴾3﴿ तौबा अल्लाह की तौफीक से है

अपने बन्दों को तौबा की तौफीक भी अल्लाह तआला देता है बशर्ते कि कोई उस से तौफीक तलब करे। उस के बारे में इर्शादे बारी तआला है कि

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ

आप का कोई दखल नहीं (अल्लाह) उन्हें तौबा की तौफीक दे या उन पर अजाब करे। क्यूं कि वोह जालिम हैं।

(पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 128)

ऐ मुस्लिम! जब तूने जान लिया कि तौबा का हुक्म हर बन्दे के लिये है। फिर येह भी याद रख कि तौबा अल्लाह की तौफीक के बिगैर हालिस नहीं होती, कोई कुछ कहे अल्लाह की तौफीक के बिगैर कोई बन्दा कुछ भी करने पर कोई कुदरत नहीं रखता। इस लिये ऐ अल्लाह! हर बन्दा

हर हाल में तेरे हुक्म का महकूम और तेरी तौफीक का मोहताज है, लेकिन तेरी तौफीक किस वक्त मिलती है ऐ इलाही ! तू हर उस बन्दे को तौफीक देता है जो तुझ से तौफीक तलब करता है। लिहाजा तौबा की तौफीक तलब करना हर इन्सान का फर्ज है। और बन्दा येह तौफीक अल्लाह से उस वक्त तलब करता है जब दुन्या से चारो नाचार मजबूर हो कर अल्लाह ही की तरफ रुजूअ करता है।

तीन सूरतों में इन्सान अल्लाह तआला की तरफ रुजूअ करता है और तौबा की तौफीक तलब करता है। पहली सूरत तो येह है कि जब कोई बुराई में इन्तिहां तक पहुंच जाता है, और फिर जब उस पर गिरफ्त होती है तो उस के दिल में एहसासे तौबा बेदार होता है और उस बेदारिये एहसास पर अगर वोह अल्लाह से तौबा की तौफीक तलब करे तो उसे मिल जाती है, दूसरी सूरत येह है कि अल्लाह के नेक बन्दों की तवज्जोह से भी दूसरों को तौबा की तौफीक हासिल होती है। तीसरी सूरत येह है कि नेक मज्लिस में जिक्रो फिक्र करने से भी अल्लाह तआला तौबा की तौफीक अता करता है।

﴾4﴿ रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफाअत से तौबा

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफाअत से तौबा कुबूल हो जाती है, इस के बारे में इर्शादे बारी तआला है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

और जब वोह अपनी जानों पर जुल्म कर के अपना नुक्सान कर बैठें, उस वक्त (ऐ रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) वोह आप की खिदमत में हाजिर हो जाते। फिर अल्लाह तआला से मुआफी चाहते और रसूलुल्लाह भी अल्लाह तआला से (उन के लिये) मुआफी चाहते तो जरूर अल्लाह तआला को तौबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला पाते।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 64)

इस आयत का शाने नुजूल तो वोह मौकअ है जब कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को दा'वते हक दी लेकिन कुछ लोगों ने उस दा'वत को दिल से कुबूल न किया और मुनाफिकाना रविश इख्तियार की। उन्हें चाहिये तो येह था कि वोह रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत करते लेकिन उन्हों ने आप के पैगाम की दिल से इताअत न की, तो उन की येह नाफरमानी सिर्फ रसूलुल्लाह की नाफरमानी बल्कि दूसरे लफ्जों में अल्लाह की नाफरमानी थी तो उस पर अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐ मेरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर येह दुन्या भर के कुसूर कर के और अपनी जानों पर तरह तरह के जुल्म तोडने के बा'द भी नादिम हो कर तेरे हुजूर में आ कर शफाअत की इल्तिजा करें और आप उन को मुआफ करने की दुआ करें तो अल्लाह जरूर उन की तौबा कुबूल करता।

येह आयत हर एक को दा'वते आम देती है कि मुसलमानों के इलावा अगर दीगर लोग भी अल्लाह से मुआफी तलब करना चाहें तो उन्हें रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन में दाखिल हो कर मुआफी मिल सकती है। क्यूं कि गैर मुस्लिमों का रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत में न आना इस अम्र की दलील है कि वोह अल्लाह की राह छोड कर अपने नफ्सों पर जुल्म कर रहे हैं। लिहाजा हर बालिग गैर मुस्लिम के लिये जरूरी है कि वोह कुफ्र से तौबा कर के दाइरए इस्लाम में दाखिल हो जाएं। ताकि अल्लाह उन्हें मुआफ करे।

﴾5﴿ तौबा कुबूल करने का इख्तियार

ऐ अल्लाह के बन्दे ! जब तू इस हकीकत को पा गया कि तौबा के बिगैर छुटकारा नहीं तो याद रख कि तौबा सिर्फ अल्लाह की बारगाह में कर। क्यूं कि उस के सिवा कोई तौबा कुबूल करने वाला नहीं है क्यूं कि कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है कि وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ﴿۱۶۰﴾ और मैं तौबा कुबूल करने वाला महेरबान हूं। (पारह 2, सूरए बकरह, आयत : 160)

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

क्या उन्हों ने येह नहीं किया कि बेशक अल्लाह अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है और खैरात मन्जूर करता है और बेशक अल्लाह ही है जो तौबा कुबूल करने वाला है।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 104)

इन आयात से मा'लूम हुवा कि तौबा कुबूल करने या न करने का इख्तियार सिर्फ अल्लाह को है क्यूं कि तमाम कारखानए काएनात सिर्फ अल्लाह ही का मरहूने मन्नत है और वोही हमारा हकीकी मालिक और हाकिम है और उसी ने हमें महदूद इख्तियारात दे कर एक मुख्तसर अर्सए हयात के लिये बतौरे आजमाइश इस दुन्याए रंगो बू में भेजा है और उस ने इन्सान के लिये जन्नत और दोजख, जजा और सजा मुकर्रर की है। फिर इन्सानी जिन्दगी का इन्हिसार भी उसी की इनायात से वाबस्ता है। जब हर इन्सान हर तरह से अल्लाह का मोहताज है और मौत के बा'द भी उस की तरफ लौट कर जाना है तो हकीकी तौबा भी उसी को कुबूल करने का इख्तियार है, अल्लाह के इलावा दुन्या में कोई ऐसी ताकत नहीं है जो इन्सान को तौबा कुबूल कर के उस को मुआफ कर दे।

कुरआने मजीद में एक और मकाम पर इर्शाद हुवा कि वोही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۙ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ

और ऐसा है कि अपने बन्दों की तौबा कुबूल फरमाता है। और वोह तमाम गुनाह मुआफ फरमा देता है और जो कुछ तुम करते हो वोह उस को जानता है और उस लोगों की इबादत कुबूल फरमाता है जो ईमान लाए और नेक अमल किये और उस को अपने फज्ल से और जियादा देता है और जो लोग कुफ्र कर रहे हैं उस के लिये सख्त अजाब है।

(पारह 25, सूरए शूरा, आयत : 25-26)

इस आयत में भी येही बताया गया है कि जब भी इन्सान को अपने गुनाहों पर एहसासे नदामत हो जाए और वोह अल्लाह के हुजूर सच्चे दिल से तौबा करे तो वोह उस की तौबा कुबूल करने वाला है। और भी बताया है कि जो तौबा की तरफ माइल होते हैं उन को अल्लाह अपने फज्ल से मजीद देता है या'नी उन की रोजी और नेकियों में इजाफा हो जाता है।

﴾6﴿ तौबा करने वालों से अल्लाह की महब्बत

अल्लाह को अपने बन्दों से खास प्यार है अगर वोह गलती कर के तौबा करलें तो वोह उन से महब्बत करता है क्यूं कि कुरआने पाक में इर्शादे बारी तआला है कि إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝ बेशक अल्लाह तौबा करने वालों से महब्बत रखता है और पाक रहने वालों को पसन्द करता है। (पारह 2, सूरए बकरह, आयत : 222)

उमूमन येह रोज मर्रा के मा'मूल की बात है कि इत्तिफाक से अगर कोई मालिक अपने मा तहत के जिम्मे किसी काम की अन्जाम देही लगा दे लेकिन वोह उसे करने में कोताही या गलती करे तो मालिक लाजिमन नाराज होगा। मगर फौरन ही मा तहत के दिल में अपनी गलती पर एहसासे नदामत हो और अगर वोह आजिजाना अन्दाज में अपने मालिक से गलती की मुआफी मांग ले तो वोह जरूर उसे मुआफ कर देगा और अगर वोह मालिक अहले बसीरत से हो तो उसे उस गलती करने वाले के साथ हमदर्दी का जज्बा भी पैदा होगा कि उसे गलती और कोताही का एहसास हो गया है और आइन्दा के लिये उस को मुतनब्बेह कर देगा कि ऐसा न करना।

बिऐनिही अल्लाह तआला अपने बन्दों पर महेरबान है कि वोह गुनाह के बा'द उस से मुआफी मांगें तो वोह मुआफ कर देता है और फिर अल्लाह ऐसे लोगों से प्यार भी करने लग जाता है कि उन्हों ने गुनाहों को तर्क कर के मेरी तरफ रुजूअ किया है। दुन्या का दस्तूर है कि अगर हम

किसी के साथ प्यार और महब्बत से पेश आएं तो वोह भी ऐसा ही पेश आने की कोशिश करता है। ऐसे ही अल्लाह तौबा करने वालों के साथ महब्बत से पेश आता है।

लिहाजा अल्लाह की महब्बत और प्यार के हुसूल के लिये इन्सानों को फौरन तौबा की तरफ रुजूअ करना चाहिये। अब जरा गौर करें कि जिस को अल्लाह तआला की महब्बत हासिल हो जाए तो वोह कितना खुश नसीब होगा कि काएनात की सब से बडी ताकत उस से महब्बत करती है, दुन्यावी नुक्तए नजर के मुताबिक अगर कोई इन्तिहाई खूब सूरत और मालदार लडकी किसी से महब्बत करने लगे तो वोह अपने आप को इन्तिहाई खुश किस्मत खयाल करने लगता है और फख्र से इतराता फिरता है और दिल ही दिल में बहुत खुश होता है, मारे खुशी के फूला नहीं समाता मगर वोह जिस को शहन्शाहे काएनात की महब्बत हासिल हो जाए तो वोह शख्स कितना अजीम और बुलन्द होगा लेकिन याद रखिये कि अल्लाह की महब्बत सिर्फ तौबा करने वालों को ही हासिल हो सकती है।

एक मकाम पर इर्शादे बारी तआला है कि

"सब्र करने वाले और सच्चाई वाले और अल्लाह का हुक्म बजा लाने वाले और अल्लाह की राह में खर्च करन वाले और पिछले पहर रात को इस्तिगफार करने वाले अल्लाह को महबूब हैं।"

(पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 17)

"वोह उस से पहले नेकियां करने वाले थे। वोह रात को थोडा सोते (और अक्सर हिस्सा रात का इबादते इलाही में गुजारते) थे और अलस्सुब्ह इस्तिगफार करते थे (मुआफी मांगते थे कि हक्के उबूदियत अदा न हो सका)" (पारह 26, सूरए अज्जारियात, आयत : 16 से 18)

कुरआने मजीद की इन आयात से भी येही बात अयां है कि अल्लाह तआला मुआफी और तौबा करने वालों को पसन्द करता है। येही वज्ह है कि अल्लाह के नेक बन्दे उस के हुजूर गिड गिडाते रहते हैं और अल्लाह उन पर महेरबान रहता है।

﴾7﴿ बन्दे की तौबा से अल्लाह की मसर्रत

इन्सान जब अल्लाह के हुज़ूर में तौबा करता है तो अल्लाह तआला बहुत खुश होता है कि एक इन्सान जिस को उस ने पैदा किया। फिर पैदाइश से मौत तक परवरिश का जिम्मा लिया। उस पर तरह तरह के एहसान किये और बे शुमार ला जवाल ने'मतें बख्शीं। मगर येह नादान अपने अजली दुश्मन शैतान के फरेब में आ कर अल्लाह की इताअत और इबादत से भटक गया लेकिन फिर उसी की तौफीक से तौबा का तालिब बनता है और दुन्या से मुंह मोड कर उसी के हुजूर तौबा के लिये हाजिर होता है तो अल्लाह तआला को बन्दे की तौबा से मसर्रत होती है। कि एक भूला हुवा इन्सान उस के हुजूर में आ कर सज्दा रेज हो गया। उस के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हदीस हस्बे जैल है।

وَعَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ
اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قَالَ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ اَنَا عِنْدَ
ظَنِّ عَبْدِيْ وَاَنَا مَعَهُ حَيْثُ
يَذْكُرُنِيْ وَاللهِ لَلّٰهُ اَفْرَحُ
بِتَوْبَةِ عَبْدِهٖ مِنْ اَحَدِكُمْ
يَجِدُ ضَالَّتَهُ بِالْفَلَاةِ وَمَنْ
تَقَرَّبَ اِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ
بَاعًا وَاِذَا اَقْبَلَ اِلَيَّ يَمْشِيْ
اَقْبَلْتُ اِلَيْهِ اُهَرْوِلُ ؎

हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया, कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि मैं अपने बन्दे के खयाल के साथ हूं या'नी जो मेरे बारे में जो गुमान करे में वैसा ही करूंगा। और मैं अपने बन्दे के साथ हूं जहां भी मुझे वोह याद करता है। फिर हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि अल्लाह की कसम ! इस में शक नहीं कि अपने बन्दे की तौबा से अल्लाह तआला उस से भी जियादा खुश होता है जब तुम से किसी का सामान सुवारी वगैरा जंगल में बयाबान में गुम हो जाए और वोह फिर उस को पा-ले (नीज अल्लाह जल्लशानुहू का इर्शाद है कि) जो

शख्स मेरी तरफ एक बालिश्त करीब होता है मैं उस की तरफ एक हाथ करीब हो जाता हूं और जो शख्स मेरी तरफ एक हाथ करीब होता है मैं उस की तरफ चार हाथ करीब हो जाता हूं और जब वोह मेरी तरफ मुतवज्जेह हो कर पाऊं से चलता हुवा आता है तो मैं उस की तरफ दौडते हुए मुतवज्जेह होता हूं। (बुखारी)

इस हदीस में अहले ईमान के लिये चन्द बशारतें हैं।

एक तो येह कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने फरमाया कि मैं बन्दे के खयाल के साथ हूं कि जब वोह येह खयाल करता है और उम्मीद रखता है कि अल्लाह तआला मुझे जरूर मुआफ कर देगा, दुन्यावी मुसीबतों और आखिरत के अजाबों से महफूज फरमा देगा, तो अल्लाह तआला उस की उम्मीद और गुमान के मुताबिक फैसला करेगा। दर हकीकत येह बहुत बडी बशारत है, उम्मीद बान्धने और अच्छा गुमान रखने में तो कुछ खर्च नहीं होता, अल्लाह तआला बहुत बडा महेरबान है, उम्मीद और गुमान पर कितनी बडी इनायत और महेरबानी की खुश खबरी दी है। कोई हो तो सही जो अल्लाह की तरफ बढे। अलबत्ता येह बात भी जरूरी है कि उम्मीद रख कर नेकियां करते रहना चाहिये और गुनाहों से बचते रहना चाहिये।

दूसरी बशारत जो इस हदीस में है वोह येह कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने फरमाया कि मैं बन्दे के साथ हूं। जहां भी वोह मुझे याद करे। अल्लाह की मइय्यत [साथ] बहुत बडी दौलत है और उस का कैफ वोही बन्दे महसूस करते हैं जो जबान और दिल से अल्लाह की याद में मश्गूल रहते हैं। अल्लाह का साथ होना कितनी बडी ने'मत है। जरा उस को गौर करो, अल्लाह की मइय्यत [साथ] का मजा उन्हीं लोगों से पूछों जिन को जिक्र की हुजूरी हासिल है और जो अपने अहवालो अश्गाल में अल्लाह पाक की तरफ मुतवज्जेह रहते हैं।

तीसरी बशारत देते हुए येह इर्शाद फरमाया कि जो कोई अल्लाह पाक की तरफ थोडा सा भी बढता है अल्लाह तआला उस की तरफ उस से कई गुना जियादा बढता है।

चौथी बशारत यूं दी कि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ कोई मा'मूली रफ्तार से चले तो अल्लाह जल्ल शानुहू उस की तरफ दौड कर पहुंच जाता है। येह भी बतौरे मिसाल है, अल्लाह पाक की महेरबानी और तवज्जोह और शाने करीमी को इन अल्फ़ाज में बयान फरमाया। बला मिसाल इस को यूं समझ लो जैसे कोई बच्चा हो, उस ने नया नया चलना शुरूअ किया हो और गिरता पडता चलता हो, उस को कोई अपने तरफ बुलाए और वोह दो चार कदम चले तो बुलाने वाला जल्दी से दौड कर उसे अपनी गोद में ले लेता है और शाबाशी देता है।

पस ऐ मोमिनो ! अल्लाह की तरफ बढो। उस की रहमत से कभी ना उम्मीद न हो, तौबा करते रहो, इस्तिगफार में लगे रहो और बराबर जिक्रुल्लाह में लगे रहो। हदीसे बाला में येह भी इर्शाद फरमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू को बन्दे के तौबा करने से उस शख्स की खुशी से भी जियादा होती है जो लको दक जंगल बयाबान में हो। उस की सुवारी और खाने पीने का सब सामान गुम हो जाए और हर तरफ देख भाल कर, ना उम्मीद हो कर येह समझ कर लैट जाए कि अब तो मरना ही है। और ऐसे वक्त में अचानक उस की सुवारी सामान के साथ उस के पास पहुंच जाए। उस शख्स को जो खुशी होगी वोह बयान से बाहर है। जब कोई बन्दा तौबा करता है तो अल्लाह जल्ल शानुहू को उस शख्स की खुशी से बढ कर खुशी होती है। येह भी अल्लाह तआला की खास शाने करीमी है।

एक और मकाम पर उसी हदीस के मफ्हूम को इस तरह बयान किया गया है जिस के रावी हजरते अनस बिन मालिक हैं, उन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि बेशक अल्लाह अपने बन्दे की तौबा पर उस से भी जियादा खुश होता है जितनी खुशी तुम में से किसी मुसाफिर को अपने उस ऊंट के मिल जाने से होती है जिस पर वोह चटयल बयाबान में सफर कर रहा हो और उसी पर उस के खाने पीने का सामान बन्धा हो और वोह ऊंट उस के हाथ से छूट कर भाग जाए और फिर उस को ढूंडते ढूंडते मायूस हो जाए और उसी मायूसी के आलम में

वोह किसी दरख्त के साए के नीचे लैट जाए और फिर उसी हालत में अचानक ऊंट को अपने पास खडा हुवा पाए और उस की मुहार पकडे और फिर खुशी के जोश में जबान उस के काबू में न रहे और खुदावन्दे करीम का शुक्र अदा करने की गरज से कहने लगे ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूं, तो जिस कदर तू उस को अपना ऊंट पाकर खुशी होती है, अल्लाह तआला को मोमिन की तौबा से उस से भी जियादा खुशी होती है।

अल्लाह तआला इन्सान की इबादत और इताअत से बे नियाज और बाला तर है और इस तरह वोह उस की सरकशी और नाफरमानी से भी बेनियाज है मगर इन्सान की इबादत और तौबा व इस्तिगफार का फाएदा भी इन्सान को पहुंचता है, और इसी तरह अल्लाह से कुफ्रो शिर्क करने का नुक्सान भी इन्सान ही को पहुंचता है। अलबत्ता जब इन्सान उस की इताअत की तरफ कदम बढाए तो उस से अल्लाह तआला खुश होता है।

लिहाजा जो इन्सान गुनाहों में लत पत हों उन के लिये अल्लाह को खुश करने का सिर्फ तौबा का रास्ता है। जब गुनहगार तौबा करेंगे तो अल्लाह उन से खुश होगा और उन्हें अपनी रहमतों के खजानों से दीनो दुन्या में माला माल कर देगा। चुनान्चे मौकअ को गनीमत जान कर वक्त नहीं खोना चाहिये और तौबा कर के अल्लाह को राजी करना चाहिये।

﴾8﴿ तौबा करने वालों के लिये फिरिश्तों की दुआए मग्फिरत

कुरआने पाक में इर्शादे बारी तआला है कि

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

जो फिरिश्ते कि अर्शे इलाही को उठाए हुए हैं और जो फिरिश्ते उस के इर्द गिर्द हैं वोह अपने रब की तस्बीहो तम्हीद करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिये (इस तरह) इस्तिगफार किया करते हैं कि ऐ परवर दिगार ! तेरी रहमत और इल्म हर चीज पर मुहीत है। सो उन लोगों को बख्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोजख से बचा ऐ हमारे परवर दिगार ! और उन को हमेशा रहने की बिहिश्तों में जिन का तूने उन से वा'दा किया है, दाखिल फरमा और उन के मां बाप बीबियों और औलाद में जो (जन्नत के, लाइक या'नी मोमिन) हों उन को भी दाखिल फरमा। बेशक तू जबरदस्त हिक्मत वाला है और उन को (कियामत के दिन हर तरह की) तकालीफ से बचा और तू जिस को उस दिन की तकालीफ से बचा ले तो उस पर तूने बहुत महेरबानी फरमाई और येह बडी कामयाबी है। (पारह 24, सूरए मोमिन, आयत : 7 ता 9)

अहले ईमान को अल्लाह तआला के हां खास मकाम हासिल है और मोमिनीन का येह मरतबा है कि हामिलीने अर्श मलाइका और उस के इर्द गिर्द रहने वाले मलाइका जो अल्लाह तआला के खास मुकर्रिबीन में से हैं। वोह ईमान वालों के हक में दुआएं करते हैं कि अल्लाह पाक उन की कोताहियों और उन के गुनाहों को मुआफ फरमा दे, गो अल्लाह तआला की जात अपनी रहमत और इल्म की बिना पर हर चीज का इहाता किये हुए है, चुनान्चे अल्लाह तआला से बन्दों की कमजोरियों, खामियां और खताएं छुप नहीं सकतीं। मगर फिर भी फिरिश्ते अल्लाह से दुआ करते हैं कि या इलाही ! तू अपने बन्दों पर अपनी रहमत के सबब उन के गुनाहों को बख्श दे और तेरे बख्श देने से तेरे बन्दे अजाब से बच जाएंगे और तेरे अजाब से वोही लोग बच सकते हैं जो तौबा करें और तेरा रास्ता इख्तियार करें। फिर फिरिश्ते अल्लाह तआला के हुजूर अर्ज करते हैं कि तौबा करने वाले मोमिनीन को जन्नत में दाखिल फरमा। जिस का तूने उन से वा'दा किया है और उन के वालिदैन को, बीबी बच्चों में जो मोमिनीन हों नेक और सालेह हों उन को भी उस के साथ जन्नत में दाखिल कर दे।

फिर फिरिश्ते अर्ज करते हैं या इलाही ! तू अहले ईमान और तौबा करने वालों को बुराइयों से बचा क्यूं कि बुराइयों से बचना ही इन्सानी जिन्दगी का अहम मक्सद है, क्यूं कि बुराइयां हमारे अकाइद और बुरे आ'माल में पाई जाती हैं और उन बुरे आ'माल और बद अख्लाकियों की बिना पर इन्सान दुन्यावी जिन्दगी में गुमराही की तरफ लौट जाता है और फिर उन बुराइयो ही की वज्ह से इन्सान को मरने के बा'द जो अजिय्यतें और तकालीफ बरदाश्त करना पडेंगी इन का इन्सान को अन्दाजा ही नहीं हो सकता । चुनान्चे मलाइका दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह ! तू उन को बुराइयों से बचा और जिस को तूने बुराइयों से बचा दिया तो उस पर तूने बडा एहसान किया ।

﴾9﴿ मोमिनीन ही तौबा की तरफ माइल होते हैं

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के औसाफ बयान किये हैं कि अल्लाह तआला के बन्दे वोह हैं जो जमीन पर पुर सुकून, पुर वकार और तवाजोअ से रहते हैं और आजिजी के साथ चलते हैं । तकब्बुर नहीं करते और जब बे इल्म उन से बातें करते हैं तो उन से बहस में उलझने की कोशिश नहीं करते क्यूं कि फुजूल बातों से इन्सान गुनहगार हो जाता है, ईमान वाले ही अल्लाह के सामने सज्दे और कियाम करते हैं, रातें इबादत में गुजारते हैं और ऐसे लोग ही ऐसी दुआएं करते रहते हैं कि हमारे परवर दिगार हम से दोजख का अजाब परे रख अल्लाह के बन्दे न खर्च करते वक्त बखीली करते हैं और न ही इस्राफ करते हैं बल्कि ए'तिदाल का रास्ता इख्तियार करते हैं ।

अल्लाह के बन्दों की येह खुसूसियत भी होती है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते क्यूं कि शिर्क सब से बडा गुनाह है और न ही वोह किसी को नाहक कत्ल करते हैं और न ही जिना करते हैं । जो लोग इन औसाफ को छोड कर इन के बरअक्स काम करें तो उन को कियामत के दिन अजाब होगा । मगर ऐसे लोग जिन से गुनाह सरजद हो जाएं और वोह अल्लाह के हुजूर तौबा करलें और अल्लाह पर अपने ईमान

को पुख्ता करें और आइन्दा से नेक काम करने लगें तो इस तरह वोह मोमिन बन जाएंगा क्यूं कि तौबा ही से अल्लाह की तरफ सच्ची लगन और रगबत काइम होती है और अल्लाह की तरफ येही रुजूअ, हकीकत में गुनाहों से बचाव है और रगबते तौबा अलामते ईमान है।

हजरते अबू फरवा फरमाते हैं कि एक आदमी हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में हाजिर हो कर अर्ज करता है कि अगर किसी शख्स ने सारे ही गुनाह किये हों, जो जी में आया हो किया हो तो उस की तौबा कुबूल हो सकती है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया तुम मुसलमान हो गए ? उस ने कहा जी हां ! आप ने फरमाया कि अब नेकियां करो और बुराइयों से बचो तो अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह भी नेकियों में तब्दील कर देगा उस ने कहा कि मेरी गद्दारियां और बदकारियां भी ? आप ने फरमाया हां, तो वोह अल्लाहु अक्बर कहता हुवा वापस चला गया, "अल्लाह तआला बे नियाज है जो चाहे कर सकता है।"

ईमान, अल्लाह और बन्दे के दरमियान एक ऐसा राबिता है जो इन्सान को तौबा की तरफ माइल कर देता है इस लिये तौबा की तरफ माइल रहना ही अहले ईमान की निशानयों में से है।

﴾10﴿ तौबा करने वालों के गुनाह नेकियों में बदल दिये जाते हैं

इस्लाम से कब्ल अरबी लोगों में बेशुमार बुराइयां या'नी शिर्क, कत्ल, जिन्सी बे राहरवी, वगैरा मौजूद थें। आज कल भी मुस्लिम मुआशरे में येह बुराइयां आम पाई जाती हैं बल्कि जिन्सी बे राहरवी कत्ल, जुवा, शराब और सूद तो नित नए तरीकों से हमारे मुआशरे में सरायत कर चुके है और लोगों को येह अमल करते हुए गुनाह का एहसास तक नहीं होता। चुनान्चे कुरआने पाक में फरमाया गया है कि

"इस्लाम के बा'द जो लोग ताइब हो गए और उन्हों ने बुराइयों को छोड दिया और उस के बा'द अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए और अपने अकाइद को दुरुस्त किया तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह तआला ने नेकियों में तब्दील कर दिया।"

दर हकीकत मुआशरे के वोह लोग जो हद दर्जा तक बिगड जाएं और तरह तरह के गुनाहों में घिर जाएं और उन में एहसासे बुराई उस हद तक बेदार हो जाए और उन के दिल में येह खयाल पैदा हो जाए कि अब तो हमारी बख्शिश नहीं हो सकती, मगर उस वक्त भी अगर कोई गुनहगार तौबा करे तो अल्लाह की रहमत और करम से वोह दरगाहे इलाही से कभी खाली नहीं लौट सकता और हो सकता है कि रहमते खुदावन्दी जोश में आ कर न सिर्फ उस के साबिका गुनाह मुआफ कर दे बल्कि उन को नेकियों में तब्दील कर दे येह अल्लाह की रिजा है जो चाहे सो करे, इसी लिये कुरआने पाक में इर्शाद हुवा है कि।

إِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾

जिन कामों से तुम को मन्आ किया जाता है उन में जो भारी भारी काम हैं (या'नी बडे बडे गुनाह) अगर तुम उन से बचते रहो तो हम तुम्हारी खफीफ बुराइयां (या'नी छोटे छोटे गुनाह) तुम से दूर कर देंगे और हम तुम को एक मुअज्जज जगह में दाखिल कर देंगे।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 31)

ब-जाहिर येह बात बडी ही अजीब मा'लूम होती है कि गुनाह नेकी में किस तरह तब्दील हो सकते हैं लेकिन अल्लाह तआला जब अपने बन्दों पर महेरबान होता है तो उस के लिये कोई चीज नामुम्किन नहीं मेरे खयाल में गुनाह नेकियों में उस तरह तब्दील होते हैं कि जब इन्सान तौबा कर लेता है तो साबिका गुनाह उस के मुआफ हो गए और आइन्दा ताइब नेकी की तरफ मुतवज्जेह होगा हत्ता कि उस की नेकियां इतनी जियादा हो जाएं कि नेकियों की येह जियादती बुराइयों को नेकियों में तब्दील करने के मुतरादिफ है।

हजरते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आं हजरत रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने नेकियां

और गुनाह तेहरीर फरमा दियें हैं तो जो नेकी का इरादा करे मगर करे नहीं तो उसे अल्लाह अपने हां एक पूरी नेकी लिखता है, फिर अगर इरादा करे और नेकी करे तो उसे अपने हां दस से सात सो गुना बल्कि बहुत जियादा गुना तक लिख लेता है और जो गुनाह का इरादा करे फिर करे नहीं, तो उस के लिये भी अल्लाह तआला एक पूरी नेकी लिख लेता है। फिर अगर गुनाह का इरादा करे, फिर कर भी ले तो उसे अल्लाह तआला एक गुनाह लिखता है। (मुस्लिम शरीफ)

येह अल्लाह तआला का बडा फज़्ल है कि अल्लाह नेकी पर सात सो गुना बल्कि उस से भी जियादा मिक्दार तक जज़ा अता फरमाता है और उस के बरअक्स एक गुनाह के बदले सिर्फ एक ही गुनाह शुमार होता है। अलबत्ता इस सिल्सिले में येह याद रखना चाहिये कि बा'ज गुनाह ऐसे भी हैं जिस से तमाम नेकियां जाएअ हो जाती हैं। मुआफी की सूरत येही है कि बन्दा तौबा व इस्तिगफार करे।

इसी तरह एक और हदीस में जिस के रावी हजरते अबू सईद है। आप ने फरमाया कि जब बन्दा मुसलमान हो और उस का इस्लाम अच्छा हो तो अल्लाह तआला उस के सारे किये हुए गुनाह मिटा देता है। उस के बा'द किसास होता रहता है कि नेकी तो दस गुने से लेकर सात सो गुना बल्कि बहुत जियादा गुना तक है और गुनाह उस के बराबर। मगर येह कि अल्लाह तआला मुआफी दे दे। (बुखारी)

وَعَنْ اَبِيْ ذَرٍّ وَّمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَّسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِتَّقِ اللهَ حَيْثُمَا كُنْتَ وَاَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا وَخَالِقِ النَّاسَ بِخُلُقٍ حَسَنٍ۔

हजरते अबू जर और मुआज बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह से डर तू जहां कहीं भी हो और बुराई के बा'द नेकी कर। येह नेकी उस बुराई को मिटा देगी। और तू लोगों से अच्छे अख्लाक के साथ पेश आ। (तिरमिजी)

इस हदीस में तीन बातें इर्शाद फरमाई हैं उन में येह भी है कि जब कोई गुनाह हो जाए तो उस के बा'द नेकी कर ले। येह नेकी गुनाह की मग्फिरत और कफ्फारे का बाइस होगी। कुरआने मजीद में इर्शाद है। إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ या'नी बिलाशुबा नेकियां गुनाहों को खत्म कर देती हैं। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 114)

येह भी अल्लाह जल्ल शानुहू का बहुत बडा इन्आम है कि नेकियों के जरीए गुनाह मुआफ होते रहते हैं। मुतअद्दद अहादीस में येह मज्मून वारिद हुवा है कि जब कोई मोमिन बन्दा वुजू करता है तो उस की आंखों से और हाथों से और पाऊं से और चेहरे से और सर से और कानों से गुनाह झड जाते हैं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

हजरते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जिस किसी भी मुसलमान को फर्ज नमाज हाजिर हो जाए (या'नी नमाज का वक्त हो जाए) फिर वोह नमाज के लिये अच्छी तरह वुजू करे और नमाज का रुकूअ सज्दा भी अच्छी तरह से करे तो येह नमाज उस के गुजिश्ता गुनाहों का कफ्फारा हो जाएगी, जब तक कि गुनाहे कबीरा न करे और येह कफ्फारा सय्यिआत हमेशा इसी तरह होता रहेगा।

एक हदीस में है कि पांचों नमाजें और एक जुमुआ दूसरे जुमुआ तक और एक रमजान दूसरे रमजान तक उन गुनाहों का कफ्फारा है जो उन के दरमियान हो जाएं जब कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।

(मुस्लिम शरीफ)

तो येह रिवायात हमें येही दर्स देती हैं कि हमें तौबा के बा'द नेकियों की तरफ माइल रहना चाहिये।

﴾11﴿ तौबा से बेगुनाह हो जाना

तौबा येह इन्सान को बे गुनाह बना देती है जैसे इन्सान ने कोई गुनाह किया ही न था। और ऐसा कर देती है कि जैसा कि वोह आज ही मां

के पेट से पैदा हुवा है क्यूं कि जब इन्सान पैदा होता है तो वोह बिल्कुल बे गुनाह होता है और बे गुनाही अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है क्यूं बे गुनाही इताअते इलाही की दलील है और गुनाह नाफरमानी की अलामत है लिहाजा जो बन्दे फरमां बरदार हों अल्लाह उन्हें पसन्द करता है और अपनी कुर्बत से नवाजता है। चुनान्चे हर इन्सान की येह कोशिश होनी चाहिये कि वोह जिस कदर अल्लाह के हुजूर झुक सकता हो, झुके। चूंकि तौबा बन्दे को अल्लाह के बहुत करीब कर देती है, उस के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि

وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ.

हजरते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि गुनाह से तौबा करने वाला उस शख्स की तरह हो जाता है जिस का कोई गुनाह नहीं होता।

(तबरानी)

इस हदीस में भी ऊपर वाली बात कही गई है कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा ही है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही न था। तौबा करने वाला और गुनाह न करने वाला इस बात में दोनों बराबर हैं कि न इस का मुआखजा है और न उस का, अलबत्ता तौबा सच्ची तौबा हो और लवाजिमो शराइत के साथ हो। लेकिन अहले दुन्या को अपने कामों से फुरसत ही कम है कि वोह तौबा के बारे में कुछ खयाल करें और जब मौत आजाएगी तो फिर इन्सान को तौबा का मौकअ क्यूं कर मिलेगा इस लिये मेरे दोस्त ताइब हो कर बे गुनाह हो जा।

﴾12﴿ तौबा और इस्लाहे आ'माल

तौबा करने के बा'द सब से जरूरी चीज अमले सालेह है क्यूं कि तौबा के बा'द भी अगर गुनाहों में मुलव्विस रहा जाए तो फिर तौबा का कोई फाएदा नहीं, लिहाजा तौबा के बा'द अमले सालेह की तरफ रागिब

हो जाना चाहिये क्यूं कि नेक आ'माल ही इन्सान का जरीअए नजात है इसी लिये कुरआने पाक में ईमान, तौबा और नेक आ'माल को फलाह की बुन्याद करार दिया है।

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى۝

और मैं ऐसे लोगों को बहुत बख्शने वाला हूं, जो तौबा कर लें और ईमान ले आएं और नेक अमल करते रहें फिर राह पर काइम रहें (या'नी ईमान और अमले सालेह पर मुदावमत करें)।

(पारह 16, सूरए ताहा, आयत : 82)

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَیِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الْكِتٰبِۙ اُولٰٓىٕكَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَیَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَۙ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَیَّنُوْا فَاُولٰٓىٕكَ اَتُوْبُ عَلَیْهِمْۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ۝

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो कुछ हम ने नाजिल किया है खुली खुली बातें और हिदायत, बा'द उस के कि हम उन को वाजेह तौर पर लोगों के लिये बयान कर चुके हैं किताब में, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह तआला ला'नत करता है और उन पर ला'नत भेजने वाले ला'नत भेजते हैं। मगर वोह लोग जो तौबा कर लें और इस्लाह कर लें और जाहिर कर दें तो ऐसे लोगों की मैं तौबा कुबूल करता हूं और मैं बहुत तौबा कुबूल करने वाला निहायत रहम करने वाला हूं। (पारह 2, सूरए बकरह, आयत : 159-160)

كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝

तुम्हारे रब ने महेरबानी फरमा कर अपने जिम्मे मुकर्रर कर लिया है कि जो शख्स तुम में से कोई गुनाह का काम कर बैठे जहालत से फिर उस के बा'द तौबा करे और इस्लाह रखे तो अल्लाह तआला की येह शान है कि वोह बडी मग्फिरत वाला है।

(पारह 6, सूरए अन्आम, आयत : 54)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾

फिर बात येह है कि तेरा रब उन लोगों को जिन्हों ने बुराई की, जहालत से फिर तौबा की उस के बा'द और इस्लाह कर ली तो तेरा रब उस के बा'द ज़रूर मग्फ़िरत करने वाला निहायत रहम वाला है।

(पारह 14, सूरए नह्ल, आयत : 119)

يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۶۶﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿۶۷﴾

अलबत्ता जो शख़्स तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग, उम्मीद है कि फ़लाह पाने वालों में से होंगे। (पारह 20, सूरए क़सस, आयत : 67)

इन आयात से साबित होता है कि इन्सान अमले सालेह की तरफ़ तब ही माइल रह सकता है जब कि तौबा कर के आइन्दा गुनाह न करने का पुख़्ता अ़ज़्म कर ले। जब पुख़्ता अ़ज़्म होगा तो तौबा के बा'द गुनाहों से ज़रूर बचेगा। और अगर फिर गुनाह हो जाए तो जल्दी से तौबा कर ले। नीज़ तौबा से पहले जो हुकूक़ुल्लाह या हुकूक़ुल इबाद ज़ाएअ किये हैं इन में क़ाबिले तलाफ़ी हैं उन की तलाफ़ी करे और आइन्दा उन के ज़ाएअ करने से परहेज़ करे और नमाज़ रोज़ा की क़ज़ा, हज व ज़कात की अदाएगी और ज़ुल्मो ख़ियानत, रिश्वत, चोरी, ग़बन वग़ैरा से लिये हुए माल की वापसी, ग़ीबतो बोहतान के लिये मुआफ़ी मांगना वग़ैरा तलाफ़ी की चीज़ें हैं उन की तलाफ़ी करे।

बहुत से लोग ज़बानी तौबा करते रहते हैं और अपना हाल नहीं बदलते, गुनाहों में जैसे लगे हुए थे तौबा के बावुजूद उन में उसी तरह मुलव्विस रहते हैं, तौबा का कोई असर उन अहवालो आ'माल पर ज़ाहिर नहीं होता। हज़ारों नमाज़ें छोड रखी हैं। सेंकडों रोज़े खा रखे हैं। भारी ता'दाद में लोगों के माल मार रखे हैं। ग़ीबत मुंह को लगी हुई है। मुसलमान भाइयो का गोश्त खा रहे हैं, उन पर बोहतान और तोहमतें धर रहे हैं और साथ ही तौबा तौबा की रट लगा रखी है। येह कैसी तौबा है ?

पक्की और सच्ची तौबा का तकाजा येह है, कि अपना हाल दुरुस्त किया जाए और जाएअ करदा हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद की तलाफी की जाए। और बहुत से पढे लिखे लोग अपने दुन्यावी मनाफेअ के लिये हक को छुपाते हैं और अपने मानने और जानने वालों के लिये कुबूले हक के सिल्सिले में सिद्दे राह बने होते हैं। न हक कुबूल करते हैं न दूसरों को कुबूले हक करने देते हैं। बल्कि अपनी रोजी का सिल्सिला जारी रखने के लिये बातिल को हक बताते हैं और गुमराही की तब्लीग में मस्रूफ रहते हैं। उस की तौबा येह है कि हक को जो छुपाया है उस को जाहिर करें और जिन लोगों को गुमराह किया है उन को बता दें कि हम गुमराही पर थे। तुम को भी गुमराही पर डाला है। हम ने हक कुबूल कर लिया है। तौबा कर ली है। तुम भी तौबा करो और हक कुबूल कर लो।

﴾13﴿ तौबा जुल्म को मिटा देती है

ऐ मुस्लिम ! तुझे येह मा'लूम होना चाहिये कि जुल्म बहुत बुरा गुनाह है। और येह लफ्ज कुरआने पाक में कई मा'नों में इस्ति'माल हुवा है। या'नी जो शख्स कुफ्रो शिर्क करता है वोह अपने ऊपर जुल्म करता है और जो शख्स गुनाह करता है वोह अपने नफ्स पर जुल्म करता है और जो दूसरे इन्सानों के हुकूक गसब करता हैं तो वोह दूसरों पर जुल्म करता है तो इस तरह जुल्म की तमाम सूरतों में इन्सान गुनहगार है। लेकिन तौबा जैसे जुल्म गुनाह को भी मिटा देती है इस के बारे में कुरआने पाक में इर्शादे बारी तआला हैं कि

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

फिर जो शख्स जुल्म के बा'द तौबा करे और इस्लाह कर ले तो बिलाशुबा अल्लाह उस की तौबा कुबूल फरमा लेगा बेशक अल्लाह गफूर रहीम है।

(पारह 6, सूरए माएदा, आयत : 39)

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

और जो शख़्स कोई गुनाह करे या अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह पाक से मग्फिरत चाहे तो वोह अल्लाह पाक को ग़फ़ूर रहीम पाएगा। (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 110)

पहली आयत चोरी के बा'द तौबा करने के बारे में है। चोरी की अस्ल सजा तो हाथ काटना है मगर येह सजा उस के जुर्म की है। वोह ज़ुल्म जो उस ने चोरी कर के अपने नफ़्स के ऊपर किया वोह सजा के बा'द भी बदस्तूर काइम रहता है। जब तक अल्लाह के हुज़ूर अपने किये की मुआफी तलब नहीं करता। लेकिन जो शख़्स तौबा कर ले और अपने नफ़्स को चोरी से पाक कर ले तो अल्लाह दर गुजर करने वाला है मगर जिन लोगों के नफ़्सों में चोरी बदस्तूर काइम रहती है वोह एक मरतबा सजा पाने के बा'द भी चोरी कर सकते हैं। लिहाजा येह नफ़्स पर किया जाने वाला ज़ुल्म तौबा के बिगैर ख़त्म नहीं होता, लिहाजा इस तरह का ज़ुल्म करने वालों को अल्लाह से मुआफी मांगनी चाहिये और अपने नफ़्स की इस्लाह भी करनी चाहिये।

दूसरी आयत में येह बताया गया है कि अगर कोई शख़्स बुरा फे'ल कर गुजरे या अपने नफ़्स के ऊपर ज़ुल्म कर जाए और उस के बा'द अल्लाह से दर गुजर करने की इल्तिजा करे तो अल्लाह दर गुजर करने वाला है लेकिन जो बुराई कर के अल्लाह से मुआफी न मांगे तो वोह उस के बुरे आ'माल उस के लिये एक न एक दिन वबाले जान बनेंगे।

﴾14﴿ भूल चूक के गुनाह से तौबा

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾

उस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह उन लोगों की तौबा कुबूल करता है जो नादानी से गुनाह करते हैं फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं तो येही लोग जिन की तौबा अल्लाह कुबूल करता है। अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

(पारह 4, सूरए निसा, आयत : 17)

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا ۢ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

ऐ नबी ! जब तेरे पास वोह लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से कह दो कि तुम पर सलामती है। तुम्हारे रब परवर दिगार ने तुम्हारे ऊपर रहमत लाजिम ठहराई है कि जिस ने तुम में नादानी से कोई बुरा काम किया फिर उस ने तौबा कर ली और इस्लाह कर ली तो बेशक वोह बख्शने वाला महेरबान है। (पारह 7, सूरए अन्आम, आयत : 54)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

बेशक तेरा परवर दिगार उन लोगों के लिये जिन्हों ने नादानी से गुनाह किया फिर उस के बा'द तौबा कर ली और इस्लाह पर आ गए। बेशक तेरा परवर दिगार उस के बा'द बख्शने वाला महेरबान है।

(पारह 14, सूरए नहल, आयत : 119)

इन आयात में अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे हां तौबा और मुआफी सिर्फ उन लोगों को मिलती है जो कस्दन नहीं बल्कि नादानी की बिना पर गुनाह कर जाते हैं। एक इन्सान गफ्लत की बिना पर कोई गुनाह करता है और उसे उस के बारे में कुरआनी अहकामात मा'लूम न थे मगर जब उस को एहसास पैदा हुवा और जमीर जाग उठा कि वोह तो बहुत बडा गुनाह करता रहा है। और अल्लाह के हां शर्मिन्दा हो जाए और अपने कुसूर की मुआफी मांगे तो अल्लाह उस को मुआफ कर देगा। उस के बर अक्स अगर एक शख्स बुराई को जानते हुए भी येह कहे कि गुनाह कर लो, बा'द में मुआफी मांग लेना तो येह नादानी नहीं बल्कि मक्कारी है। रोज मर्रा की जिन्दगी में बेशुमार ऐसे आ'माल और अफ्आल सरजद हो जाते हैं जिन के बारे में इन्सान को पता नहीं होता कि क्या येह गुनाह हैं कि नहीं, तो येह ला-इल्मी और नादानी है। ला-इल्मी की हालत में अगर

इन्सान से गुनाह खुद बखुद सरजद हो जाएं तो अल्लाह तआला ने ऐसे गुनाहों से तौबा करने पर उन्हें मुआफ करने का वा'दा फरमाया है।

उमूमन येह भी देखने में आता है कि सने शुऊर से आलमे शबाब तक उम्र ऐसी जज्बाती और दिल आवेज होती है कि इन्सान भूले में क्या कुछ कर जाता है लेकिन जूं ही एहसास बेदार हुवा तो इन्सान तौबा की तरफ माइल हो गया तो अल्लाह ऐसे बन्दे के गुनाह मुआफ कर देता है।

हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आं हजरत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि बन्दा जब कोई गुनाह कर लेता है फिर कहता है कि मौला ! मैं ने गुनाह कर लिया, मुझे मुआफी दे दे। रब फरमाता है क्या मेरा बन्दा जानता है कि उस का कोई रब है जो गुनाह मुआफ भी करता है और उस को पकड भी लेता है। मैं ने अपने बन्दे को बख्श दिया। फिर जितना रब चाहे बन्दा ठहरा रहता है। फिर कोई गुनाह कर बैठता है, कहता है या रब मैं ने गुनाह कर लिया, बख्श दे, रब फरमाता है क्या मेरा बन्दा जानता है कि उस का कोई रब है जो गुनाह बख्शता है और उस को पकड भी लेता हैं। मैं ने अपने बन्दे को बख्श दिया। फिर बन्दा ठहरा रहता है। जितना रब चाहे, फिर गुनाह कर बैठता है। अर्ज करता है या रब ! मैं ने गुनाह कर लिया मुझे मुआफी दे तो रब फरमाता है क्या मेरा बन्दा जानता है कि उस का कोई रब है जो बख्शता है और पकड भी लेता है। मैं ने अपने बन्दे को बख्श दिया, जो चाहे करे। (बुखारी)

इस हदीसे पाक में बख्शिश का वा'दा उन लोगों के वास्ते है जो गुनाह पर खुद इस्रार नहीं करते बल्कि गुनाह से बचने के बावुजूद उस से गुनाह सरजद हो जाता है या'नी तौबा के वक्त उन का पुख्ता अहद था कि अब आइन्दा गुनाह से बचता रहूंगा मगर फिर भी गुनाह हो गया। गोया वोह कौलन और फे'लन अपने गुजिश्ता गुनाहों की जिन्दगी पर नादिम हुवा और अपने मकदूर भर उस के तदारुक की कोशिश भी की। अगर उस के बावुजूद गुनाह हो गया तो उस पर शर्मसार हो कर अगर फिर अल्लाह तआला से मुआफी का तलबगार है तो ऐसे शख्स की तौबा कुबूल करने के लिये मौला करीम हर वक्त तय्यार है।

जैसा कि एक और हदीस शरीफ में हजरते अबू बक्र सिद्दीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि मुआफी मांग लेने वाला गुनाह पर अडता नहीं अगर्चे दिन में सत्तर बार गुनाह करे। (तिरमिजी, अबू दावूद)

लेकिन शर्त येही है कि हर तौबा के वक्त आइन्दा गुनाह न करने का अहद हो बिल आखिर एक मरहला ऐसा आ जाएगा कि अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से उस को गुनाह से महफूज कर देगा।

﴾15﴿ तौबा और लग्जिश

ताइब होने के बा'द अगर इन्सान से फिर कोई लग्जिश हो जाए या'नी गुनाह सरजद हो जाए तो इन्सान को फौरन उस के इजाले की तरफ तवज्जोह देनी चाहिये और फिलफोर कफ्फारा अदा करना चाहिये। तौबा और इस्तिगफार करना चाहिये उस के बारे में इर्शादे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हस्बे जैल है।

وَعَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ
رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ
صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ
مَثَلُ الْمُؤْمِنِ وَالْاِیْمَانِ
کَمَثَلِ الْفَرَسِ فِیْ اٰخِیَّتِہٖ
یَجُوْلُ ثُمَّ یَرْجِعُ اِلٰی
اٰخِیَّتِہٖ وَاِنَّ الْمُؤْمِنَ یَسْھُوْا
ثُمَّ یَرْجِعُ فَاَطْعِمُوْا طَعَامَکُمْ
الْاَتْقِیَاءَ وَاَوْلُوْا مَعْرُوْفَکُمْ
الْمُؤْمِنِیْنَ

हजरते अबू सईद अल खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि मोमिन और ईमान की मिसाल ऐसी है जैसे घोडा अपने ठिकाने की जगह पर बन्धा हुवा (और उस के पाऊं में लम्बी रस्सी हो वोह रस्सी की लम्बाई की हद तक) घुमता रहता है फिर अपने ठिकाने पर आ जाता है। ऐसे ही मोमिन गाफिल हो जाता है और गुनाह कर लेता है फिर ईमान (के मतालिबात) की तरफ वापस आ जाता है पस तुम लोग अपना खाना मुत्तकी लोगों को खिलाया करो और अपने अतिय्ये मोमिनीन को दिया करो। (इब्ने हब्बान, बैहकी)

ऐसे ही जियादा तौबा और इस्तिगफार के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक हदीस है जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जियादा तौबा करने पर जोर दिया है।

وَعَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كُلُّ ابْنِ اٰدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ ۔

हजरते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि हर इन्सान खताकार है और बेहतरीन खताकार वोह हैं जो खूब जियादा तौबा करने वाला हैं।

(तिरमिजी, इब्ने माजा)

इन अहादीस से मा'लूम हुवा कि मोमिन से गुनाह हो जाना कोई तअज्जुब और अचम्बे की बात नहीं है अलबत्ता गुनाह पर इस्रार करना मोमिन की शान से बहुत बईद है, गुनाह हो जाए तो जल्द तौबा कर लेनी चाहिये और ईमानी तकाजों के पूरा करने में लग जाए, सरकश न बने और जिद व इनाद पर कमर न बान्धे क्यूं कि येह बरबादी का सबब है।

लिहाजा लग्जिश का इजाला इस तरह हो सकता है कि अल्लाह के हुजूर में दोबारह तौबा करे और अपने दिल में पुख्ता इरादा करे कि मैं इस गुनाह को दोबारह न करूंगा। और अल्लाह तआला से तौफीक मांगे कि आइन्दा उस से दोबारह सरजद न हो और अपने दिल में अपने किये पर शर्मिन्दा और नादिम हो, और उस गुनाह के अजाब से डरे और अल्लाह से दर गुजरी और रहमत की दुआ मांगे। क्यूं कि इन्सान के जुर्मों को अल्लाह की अफ्वे बन्दा नवाजी के इलावा और कहीं पनाह नहीं मिल सकती।

बुजुर्गों ने कफ्फारे का एक तरीका येह भी बतलाया है कि इन्सान दोबारह ताइब होने की गरज से अच्छी तरह अपने जिस्म और कपडों को पाक साफ कर के दो रक्अत नमाज अदा करे नवाफिल अदा करने के बा'द इस्तिगफार का विर्द करे। दिल में खुजूओ खुशूअ और आजिजी इतनी हो कि दिल खौफे खुदा से कांप उठे। और अल्लाह से अपने किये पर तौबा

करे। तौबा से दिल का खासा तअल्लुक है। अगर इस्तिगफार का विर्द सिर्फ जबान पर ही किया जाए और दिल उस से गाफिल हो तो ऐसी तौबा बुलन्द दरजा नहीं रखती। मगर सिर्फ जबान से ही तौबा करना भी फाएदे से खाली नहीं क्यूं कि जबान के विर्द में कसरत से दिल में हुजूरी पैदा होती है।

हजरते दाता गंज बख्श फरमाते हैं कि येह जरूरी नहीं कि मुसीबत से बचने का अज्म करने के बा'द इन्सान तौबा पर काइम रह सके। अगर तौबा के बा'द फिर फुतूर आ जाए और पुख्ता इरादे के बा'द फिर इन्सान गुनाह में उल्झ जाए तो सवाबे तौबा जाएअ नहीं होता।

सूफियाए किराम में कुछ ऐसे सूफिया भी गुजरे हैं जो तौबा करने के बा'द लग्जिश के मुर्तकिब हुए और गुनाह में उल्झ गए मगर फिर तम्बीह पर अल्लाह तआला की तरफ लौट आए। मशाइखे किराम में से एक बुजुर्ग फरमाते हैं कि मैं ने सत्तर बार तौबा की और हर बार मा'सियत का शिकार हुवा। इकहत्तरवीं बार मेरी तौबा को इस्तिकामत नसीब हुई। हजरत अबू उमर फरमाते हैं कि हजरते उस्मान हीरी के दस्ते मुबारक पर मैं ताइब हुवा और अर्सए दराज तक आप की खिदमत में रह कर बातिनी फुयूजो बरकात हासिल किये। लेकिन कुछ अर्सा अपने तौबा पर काइम रहने के बा'द में लग्जिश का मुर्तकिब हुवा। उस के बा'द हजरते उस्मान हीरी की मज्लिस से गुरेज करता रहा। जहां कहीं भी दूर से नजर आते नदामत से राहे फरार इख्तियार करता। एक रोज सामना हो ही गया, आपने फरमाया बेटा दुश्मनो की सोहबत इख्तियार करने से क्या हासिल है ? जब तक गुनाहों से दामन पाक न हो, दुश्मन तो हमेशा ऐब ढुंडता है। अगर तू ऐब से पाक होगा तो उसे तक्लीफ होगी। अगर गुनाहों का मुर्तकिब होना ही है तो हमारे पास आ, तेरी मुसीबत हम बरदाश्त कर लेंगे दुश्मन की ख्वाहिश के मुताबिक ख्वार होने की क्या जरूरत है ? हजरते अबू उमर फरमाते हैं कि उस के बा'द मुझे गुनाह की रगबत नहीं हुई और मेरी तौबा को इस्तिकामत मिल गई।

हजरते अली हिजवेरी फरमाते हैं कि मैं ने सुना है कि किसी शख्स ने तौबा की फिर गुनाह का मुर्तकिब हुवा फिर पशेमान हुवा और

एक रोज दिल में सोचा कि अगर अब दरगाहे हक में जाऊं तो मेरा क्या हाल होगा ! हातिफ ने कहा तू हमारा फरमां बरदार था तो हम ने तुझे शर्फे कुबूलियत बख्शा तू फरमां बरदार हुवा तो हम ने तुझे मोहलत दी । अगर अब भी तू हमारी तरफ आए तो हम तुझे कुबूल कर लेंगे । इस से मा'लूम हुवा कि ताइब होने के बा'द भी अगर इन्सान से कोई गलती हो जाए तो फिर भी तौबा का दामन नहीं छोडना चाहिये और अल्लाह के हुजूर झुक जाना चाहिये ।

﴾16﴿ बारगाहे रिसालत में गुमान पर तौबा

एक दिन रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, उम्मुल मोमिनीन हजरते जैनब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हां तश्रीफ ले गए । वहां उन्हों ने आप को शहद पेश किया जिस के नोश फरमाने में कुछ देर लग गई । फिर चन्द रोज तक आप का येही मा'मूल रहा कि आप वहां जा कर शहद नोश फरमाते । हजरते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا और हजरते हफ्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को उस पर रश्क हुवा । और मश्वरा किया कि जब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तश्रीफ लाएं तो अर्ज किया जाए कि आप के दहन मुबारक से मुगाफिर की बू आती है । मुगाफिर की बू आप को नापसन्द थी । चुनान्चे ऐसा ही किया गया । आप ने फरमाया कि मुगाफिर तो मेरे करीब नहीं आया, अलबत्ता शहद मैं ने पिया है । चूंकि उस से उन दोनों की दिल शिक्नी होती थी तो आप ने उन की दिलजूई करते हुए फरमाया कि मैं शहद को अपने ऊपर हराम करता हूं और पीना छोड देता हूं । आप ने येह भी फरमाया कि इस बात का किसी से जिक्र न करना ।

एक कौल येह है कि एक रोज सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हजरते हफ्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हां मुकीम थे, वोह आप से इजाजत ले कर अपने वालिद हजरते उमर फारूके आ'जम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की इयादत के लिये चली गईं । हजरते मारिया किब्तिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हां तश्रीफ ले गए । हजरते हफ्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को येह गिरां गुजरा तो आपने उस की तसल्ली व तशफ्फी की खातिर फरमाया कि मैं ने हजरते मारिया किब्तिया

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मेरे ऊपर हराम किया। और मैं तुम्हें खुश खबरी देता हूं कि मेरे बा'द, उमूरे उम्मत के मालिक हजरते अबू बक्र सिद्दीक और हजरते उमर फारूक होंगे। वोह इस बात से खुश हो गईं और फर्ते मसर्रत में येह गुफ्तगू हजरते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बयान कर दी। हालां कि हुजूर ने मन्अ फरमाया था कि येह किसी पर जाहिर न करें।

चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआला ने येह राज जाहिर करने पर हुजूर को आगाह फरमा दिया और इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला आप को कसम खोलने की इजाजत देता है और आप अपने ऊपर वोह चीज हराम न फरमाएं जिस को अल्लाह तआला ने आप के लिये हलाल किया है। नीज अल्लाह तआला ने हजरते आइशा और हजरते हफ्सा को मुतनब्बेह फरमाया कि तुम्हारे दिल ए'तिदाल से हट गए हैं अगर तौबा करो तो तुम्हारे हक में बेहतर है। इर्शाद फरमाया :

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَاۚ وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَۚ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ۝ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓىٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓىٕحٰتٍ ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا۝

ऐ नबी की दोनों बीबियों ! अगर तुम तौबा करो, तो जरूर तुम्हारे दिल राह से हट गए हैं और अगर उन पर जोर बान्धो तो बेशक अल्लाह उन का मददगार है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले और उस के फिरिश्ते उन की मदद पर हैं। अगर नबी तुम्हें तलाक दे दें तो अभी उन का रब तुम से बेहतर बीबियां दे दे, इताअत वालियां, ईमान वालियां, अदब वालियां, तौबा वालियां, बन्दगी वालियां, रोजा रखने वालियां, बा हया और कंवारियां। (पारह 28, सूरए तहरीम, आयत : 4-5)

चनान्चे इस हिदायत के बा'द उस अज्वाजे मुतहहरात ने तौबा फरमाई जो कुबूल हुई और फिर उन्हों ने हुजूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खिदमत ही को सब ने'एमतों से बेहतर जाना।

﴾17﴿ अल्लाह की रहमत से मायूस न होते हुए तौबा करो

इन्सान बा'ज औकात येह सोच कर तौबा नहीं करता कि मैं ने तो बे पनाह गुनाह कर डाले हैं। इतने जियादा गुनाह अल्लाह क्यूं कर मुआफ करेगा ? या येह सोचता है कि उस की मुआफी तो हो ही नहीं सकती। लेकिन ऐसी सोचें शैतानी वसाविस के सिवा और कुछ नहीं। बन्दों को अल्लाह की रहमत से कभी मायूस नहीं होना चाहिये। इस के बारे में इर्शादे बारी तआला है कि

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۞ وَاَنِيْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۞

आप (मेरी तरफ से) फरमा दीजिये कि ऐ मेरे वोह बन्दों ! जिन्हों ने अपनी जानों पर जियादती की है, अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो जाओ बेशक अल्लाह सब गुनाहों को मुआफ फरमा देगा। बेशक वोह गफूर रहीम है और रुजूअ हो जाओ अपने रब की तरफ और झुक जाओ उस की बारगाह में उस से पहले कि तुम्हारे पास अजाब आ जाए। फिर तुम्हारी मदद न की जाए। (पारह 24, सूरए जुमर, आयत : 53-54)

इस आयत में लोगों को येही नसीहत की गई है कि अल्लाह की रहमत से बिल्कुल मायूस नहीं होना चाहिये। क्यूं कि इन्सान के हजारों लाखों गुनाह भी अल्लाह की रहमत और मग्फिरत के सामने कुछ हैसियत नहीं रखते।

सूरए यूसुफ में इर्शाद है :

وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۞

अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वोही लोग नाउम्मीद होते हैं, जो काफिर हैं।

(पारह 13, सूरए यूसुफ, आयत : 87)

और सूरए हिज्र में इर्शाद है :

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ۝

(हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फिरिश्तों से गुफ्तगू फरमाते हुए) कहा कि गुमराह लोगों के सिवा अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद होता है ? (पारह 14, सूरए हिज्र, आयत : 56)

अल्लाह तआला की जात सब से जियादा रहीमो करीम है वोह अरहमुर्राहिमीन है । मुश्रिक और काफिर के इलावा सब की मग्फिरत फरमा देगा जिस कदर भी गुनाह सरजद हो जाएं उस की रहमत से नाउम्मीद न हों और बराबर तौबा का एहतिमाम करते रहें, किसी दिन اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पक्की तौबा भी हो जाएगी ।

सगीरा गुनाहों की मग्फिरत और उन का कफ्फारा तो आ'माले सालेहा से भी होता रहता है लेकिन कबीरा गुनाहों की यकीनी तौर पर मग्फिरत हो जाना तौबा के साथ मश्रूत है । अगर तौबा न की और उसी तरह मौत आ गई तो बशर्ते ईमान मग्फिरत तो फिर भी हो जाएगी लेकिन येह कोई जरूरी नहीं कि बिला अजाब मग्फिरत हो जाए, अल्लाह तआला यूं भी मग्फिरत फरमा सकता है और उसे येह भी इख्तियार है कि गुनाहों की सजा देने के लिये दोजख में डाल दे, फिर अजाब के जरीए पाको साफ कर के जन्नत में भेजे । चूंकि अजाब का खतरा भी लगा हुवा है इस लिये हमेशा पक्की तौबा और इस्तिगफार करते रहें और अल्लाह तआला से हमेशा मग्फिरत की उम्मीद रखें उस की रहमत से कभी नाउम्मीद न हों, ताकि इस हाल में मौत आए कि तौबा के जरीए सब कुछ मुआफ हो चुका हो ।

येह भी मा'लूम होना चाहिये कि मग्फिरतों की खुश खबरी सुन कर गुनाहों पर जुरअत करना और इस घमन्ड में गुनाह करते चले जाना कि मरने से पहले तौबा कर लेंगे । बहुत बडी नादानी है क्यूं कि आइन्दा का हाल मा'लूम नहीं क्या पता तौबा से पहले मौत आ जाए । फिर येह भी तजरिबा है कि मौत से पहले तौबा व इस्तिगफार की दौलत उन्ही लोगों को

नसीब होती है जो गुनाहों से बचने का धियान रखते हैं और कभी कभार गुनाह हो जाता है तो तौबा कर लेते हैं और जो लोग मग्फिरत की खुश खबरियों को सामने रख कर गुनाह पर गुनाह करते हैं, उन को तौबा व इस्तिगफार का खयाल तक नहीं आता।

वफादार बन्दों का शिआर येह नहीं कि मग्फिरत का वा'दा सुन कर बे खौफ हो जाएं। बल्कि मग्फिरतों की बिशारतों के बा'द और जियादा गुनाहों से बचने और नेकियों में तरक्की करने की तरफ मुतवज्जेह होने की जरूरत है।

﴾18﴿ वक्ते नज्अ की तौबा कुबूल नहीं

मौत से कब्ल इन्सान पर एक ऐसी हालत तारी होती है जो दर अस्ल मौत का पेश खैमा होती है और उस हालत को आलमे नज्अ कहते हैं लिहाजा जब इन्सान पर मौत तारी होती है तो उस वक्त तौबा कुबूल नहीं होती। चूंकि नज्अ के वक्त मरने वाले का ईमानो इकरार गैर इख्तियारी होता है क्यूं कि मौत से पहले वक्त में जब इन्सान ने नेक काम करने थे और अल्लाह की इताअत करनी थी। वोह वक्त तो खत्म हो गया बल्कि अब तो अमल न करने पर सजा देने का वक्त आ गया है लिहाजा उस वक्त इन्सान की तौबा कुबूल नहीं होती। अल्लाह का दस्तूर येह नहीं है कि तमाम उम्र इन्सान खुदा से बे खौफ और बे परवार हो कर गुनाह करता चला जाए और फिर ऐन उस वक्त जब मौत का फिरिश्ता जाहिर हो जाए, तो उस वक्त तौबा करने लगे तो उस वक्त तौबा कुबूल नहीं होगी, क्यूं कि किताबे जिन्दगी तमाम हो चुकी। अब इम्तिहान की मोहलत कैसी ? इस के बारे में कुरआने मजीद में अल्लाह तआला का इर्शाद है।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَأُولٰٓئِكَ
يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّيْ تُبْتُ الْئٰنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ
كُفَّارٌ ۗ أُولٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ۝

तौबा जिस का कुबूल करना अल्लाह तआला के जिम्मे है वोह तो उन्हीं की है जो बे समझी से कोई गुनाह कर बैठते हैं फिर करीब ही वक्त में तौबा कर लेते हैं, अल्लाह तआला उन की तौबा कुबूल करता है और अल्लाह तआला खूब जानता है हिक्मत वाला है और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो गुनाह करते रहते हैं यहां तक कि जब उन में से किसी के सामने मौत आ खडी हुई तो कहने लगा कि मैं अब तौबा करता हूं और न उन लोगों की (तौबा मक्बूल है) जिन को हालते कुफ्र पर मौत आ जाती है उन के लिये हम ने एक दर्दनाक सजा तय्यार कर रखी है।

(पारह 4, सूरए निसा, आयत : 17-18)

इस आयते करीमा में इर्शाद फरमाया है कि जब मौत आ खडी हो उस वक्त तौबा कुबूल नहीं होती। जैसा कि सब को मा'लूम है, ईमान बिल गैब मो'तबर है और तौबा भी उसी वक्त मक्बूल होती है जब गैब पर ईमान रखते हुए तौबा कि जाए। जब किसी आदमी को अपने हालात के ए'तिबार से येह यकीन हो गया कि अब मैं मरने ही वाला हूं। और जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया, लेकिन मौत के वक्त जो दूसरे आलम के अहवाल मुन्कशिफ होते हैं उन में से अभी कुछ भी जाहिर नहीं हुवा तो उस वक्त तक गुनहगार की तौबा और काफिर का ईमान मक्बूल है लेकिन जब मौत आने लगी और दूसरे आलम के हालात नजर आने लगे जो मौत के वक्त नजर आने शुरूअ हो जाते हैं तो उस वक्त न गुनहगार की तौबा कुबूल है न काफिर का ईमान कुबूल है।

हजरते अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि आप ने फरमाया कि बेशक अल्लाह तआला बुजुर्गो बरतर अपने बन्दे की तौबा उस वक्त तक कुबूल फरमाता है जब तक वोह नज्अ की हालत को न पहुंचा हो।

मुस्नद अहमद में है कि चार सहाबी जम्अ हुए उन में से एक ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह से सुना है कि जो शख्स अपने मौत से एक दिन पहले भी तौबा कर ले अल्लाह तआला उस की तौबा कुबूल कर लेता है। दूसरे ने कहा सच मुच तुम ने हुजूर से सुना है ? उस ने कहा हां तो दूसरे ने

कहा मैं ने सुना है कि अगर आधा दिन पहले भी तौबा कर ले तो अल्लाह तआला कुबूल कर लेता है। तीसरे ने कहा की मैं ने सुना है कि अगर एक पहर पहले तौबा हो जाए तो वोह भी कुबूल होती है। चौथे ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह से यहां तक सुना है कि उस के नरखरे में रूह आ जाए तो भी तौबा के दरवाजे उस के लिये खुले रहते हैं।

अक्सर अहादीस के मजामीन से मा'लूम होता है कि जब तक बन्दा जिन्दा है और उसे अपने हयात की उम्मीद है तब तक वोह खुदा की तरफ झुके, तौबा करे तो अल्लाह तौबा कुबूल कर लेता है। हां जब जिन्दगी से मायूस हो जाए, फिरिश्तों को देख ले और रूह जिस्म से निकल कर हलक तक आ जाए। गरगरा शुरूअ हो जाए तो उस की तौबा कुबूल नहीं होती। फिर फरमाया कि जो मरते दम तक गुनाहों पे अडा रहे और मौत को देख कर कहने लगे कि अब तो ऐसे शख्स की तौबा कुबूल नहीं होगी।

﴾19﴿ तौबा का दरवाजा कब तक खुला रहेगा

येह मस्अला आम इन्सानों के जेह्नों में उभरता है कि इन्सान की तौबा किस वक्त कुबूल होती रहेगी और तौबा का दरवाजा कब बन्द होगा ?

कुर्बे कियामत के वक्त जब कियामत बरपा होने वाली होगी तो उस वक्त की जाने वाली तौबा कुबूल न होगी। कुबूलियते तौबा का वक्त कियामत के बरपा होने से पहले तक है और तौबा का दरवाजा कियामत तक खुला रहेगा और इस लिये कहा गया है कि कियामत तक अल्लाह तौबा कुबूल करेगा। लिहाजा इन्सान को हरगिज येह नहीं सोचना चाहिये कि जब कियामत आने वाली होगी तो तौबा कर लूंगा बल्कि इन्सान को अपने सामने अपनी जिन्दगी का मुअय्यना वक्त रखना चाहिये। क्या मा'लूम उस को कब मौत आ जाए और इन्सान बिगैर तौबा के ही इस दुन्या से कूच कर जाए और उस की जिन्दगी में कियामत का वक्त ही न आए और गुनाहों का बोझ उठाए अल्लाह के हुजूर पेश होना पडे। इस

लिये हर इन्सान को चाहिये कि पहली फ़ुरसत ही में अपने गुनाहों पर अल्लाह के हुज़ूर ताइब हो जाए और बकिया जिन्दगी उस की इताअत में गुजारे और मौत तक इस्तिगफार जारी रखे।

तौबा के दरवाजे के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हदीसे मुबारका हस्बे जैल है :

وَعَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا ؛

हजरते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि बिलाशुबा अल्लाह तआला शानुहू عَزَّوَجَلَّ रात को हाथ फेलाता है ताकि गुजरे हुए दिन में जिस ने गुनाह किये हैं उन की तौबा कुबूल फरमाए। और दिन में अपना हाथ फेलाता है ताकि गुजरी हुई रात में जिन्हों ने गुनाह किये हैं उन की तौबा कुबूल फरमाए। मगरिब से सूरज तुलूअ होने तक (हर रात दिन) ऐसा ही होता रहेगा। (निसाई, मुस्लिम)

इस हदीस में येह जो फरमाया मगरिब से आफ्ताब तुलूअ होने से पहले पहले ऐसा होता रहेगा। या'नी तौबा करने वाले की तौबा कुबूल होती रहेगी। इस का मतलब येह है कि कियामत से पहले सूरज मगरिब से निकलेगा उस का मगरिब से निकलना अलामाते कियामत में से है और इस बात की भी निशानी होगी कि उस से पहले जिन्हों ने गुनाह कर रखे हैं और तौबा नहीं की अब उन की तौबा कुबूल न होगी। अल्लाह के नेक बन्दों के नज्दीक तौबा के दरवाजे से मुराद तौबा कुबूल होने का अर्सा है।

हजरते सफ्वान बिन अस्साल से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने तौबा के लिये मगरिब में एक दरवाजा बनाया है जिस का अर्ज सत्तर साल की राह है।

वोह उस वक्त तक बन्द न होगा जब तक कि सूरज मगरिब से तुलूअ न हो। येही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इर्शाद है "जिस दिन तुम्हारे रब की बा'ज निशानियां आएंगी तो किसी ऐसे नफ्सो को ईमान मुफीद न होगा जो पहले से ईमान न लाया हो।" (तिरमिजी, इब्ने माजा)

हजरते अबू हुरैरा से रिवायत है कि आप ने फरमाया जिस शख्स ने सूरज के मगरिब से निकलने से पहले तौबा कर ली अल्लाह उस की तौबा कुबूल फरमाएंगा।

मादा परस्त लोग सूरज के मशरिक की बजाए मगरिब से निकने को एक जबानी अफ्साना समझते हैं मगर जब कियामत बरपा होगी तो येह काएनात का निजाम दरहम बरहम हो जाएगा, तो उस वक्त कियामत के बरहक होने और अल्लाह तआला पर यकीन और इकरार करने का कुछ फाएदा न होगा इस लिये कि इन्सान के ईमानो इकरार और आ'मालो अफ्आल पर जजा और सजा उसी वक्त मुरत्तब होती है जब कि उस को ईमान लाने न लाने, मानने या न मानने दोनों पर इख्तियार और कुदरत हासिल हो, तो जब कियामत बरपा होने की येह अलामत या'नी सूरज का मशरिक की बजाए मगरिब से निकलना जाहिर हो जाएगा तो उस वक्त न ईमान का कोई फाएदा होगा और न ही किसी किस्म की तौबा और इस्तिगफार कुबूल होगी और तौबा का दरवाजा बन्द हो जाएगा या'नी तौबा कुबूल करने की मुद्दत खत्म हो जाएगी।

﴾20﴿ तौबा व इस्तिगफार की बरकतें

तौबा व मग्फिरत के बेशुमार दीनी व दुन्यावी फाएदे हैं और उस की बहुत सी बरकतें हैं जिन का जिक्र अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में मुख्तिलफ मकामात पर किया है।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِ یُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّیُؤْتِ كُلَّ ذِیْ
فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ كَبِیْرٍ ۝۳

और येह कि तुम अपने रब से मग्फिरत तलब करो फिर उस की तरफ मुतवज्जेह रहो। वोह तुम को वक्ते मुकर्रर तक खुश ऐश जिन्दगी बख्शेगा और जियादा अमल करने वाले को जियादा सवाब देगा।

(पारह 11, सूरए हूद, आयत : 3-4)

इस आयत में इस्तिगफार और तौबा का हुक्म है और येह फरमाया है कि तौबा व इस्तिगफार करने वालों को अल्लाह तआला (दुन्या में खुश ऐश रखेगा और अच्छी उम्दा जिन्दगी नसीब फरमाएगा और आखिरत में हर जियादा अमल करने वाले को (जो अच्छा अमल करने वाला हो) जियादा सवाब देगा।

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

ऐ मेरी कौम ! मग्फिरत तलब करो अपने रब से फिर तौबा करो उस के हुजूर में। वोह भेज देगा तुम्हारे खूब बारिशें और बढा देगा तुम्हारी कुव्वत में जियादा कुव्वत और मुंह मत फेरो मुजरिम बनते हुए।

(पारह 12, सूरए हूद, आयत : 52-53)

येह हजरते हूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नसीहत है जो उन्हों ने अपनी कौम को फरमाई थी।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝

पस मैं ने कहा तुम अपने रब से मग्फिरत तलब करो बिलाशुबा वोह बडा बख्शने वाला है। वोह कसरत से तुम पर बारिश भेजेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा और तुम्हारे लिये बागात बना देगा। और तुम्हारे लिये नहरें जारी फरमा देगा।

(पारह 29, सूरए नूह, आयत : 10-12)

हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने जो अपनी कौम को खिताब फरमाया, आयते बाला में उस को जिक्र फरमाया है।

أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَأْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ۝

क्या उन लोगों ने नहीं जाना कि अल्लाह पाक तौबा कुबूल फरमाता है अपने बन्दों से और सदकात कुबूल फरमाता है और बेशक अल्लाह खूब जियादा तौबा कुबूल फरमाने वाला और महेरबान है।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 104)

इन आयात से वाजेह तौर पर मा'लूम हुवा कि इस्तिगफार और तौबा से जहां गुनाहों की मुआफी का अजीब फाएदा है जो आखिरत के अजाब से बचाने वाला है वहां इस के दुन्यावी फाएदे भी हैं।

सूरए हूद के पहले रुकूअ की आयत में इर्शाद फरमाया कि इस्तिगफार और तौबा में लगने की वज्ह से अल्लाह तआला शानुहू वक्ते मुकर्रर तक (या'नी इसी दुन्या में मौत आने तक) खुश ऐश उम्दा जिन्दगी नसीब फरमाएगा। खुश ऐश जिन्दगी बहुत जामेअ लफ्ज है। येह मताअन हसनन का तर्जमा है जो हर तरह की खुशी और मसर्रत और शादमानी को शामिल है। जाहिरी बातिनी आफियतो सेहत और इत्मीनानो सुकून इस्तिगफारो तौबा के जरीए इसी दुन्या में हासिल होता रहेगा और उस के आखिरत वाले फवाइदो बरकात उस के इलावा होंगे।

सूरए हूद के पांचवें रुकूअ की आयत में इर्शाद फरमाया कि इस्तिगफार और तौबा में लगने से अल्लाह जल्ल शानुहू खूब बारिशें भेजेगा और कुव्वत में मजीद कुव्वत का इजाफा फरमा देगा। बारिश का रहमते आम्मा होना सब को मा'लूम है। उस से खेती उगती है, फल मेवे तय्यार होते हैं। दूसरी जरूरतों में बारिश का पानी काम आता है। और येह जो फरमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू कुव्वत में इजाफा फरमा देगा। येह अल्फाज भी हर तरह की कुव्वत को शामिल हैं। आज लोग दुन्यावी अस्बाब इख्तियार करते हैं और कुव्वतो ताकत बढाना चाहते हैं लेकिन

ताकत बढने का जो अस्ल सरचश्मा है कि गुनाहों को छोडें और तौबा व इस्तिगफार में लगें उस से गाफिल हैं इस लिये दुश्मन से पिटते और मार खाते हैं। आ'माले सालेहा की जो कुव्वत है और तौबा व इस्तिगफार से कुव्वत में इजाफा होता है उस से बिल्कुल बेखबर हैं और कुव्वतो ताकत की तलाश में गुनाहों में इजाफा करते चले जा रहे हैं जो सबब है जो'फ का और दुश्मन के गल्बे का, हालां कि وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ में उसी पर तम्बीह फरमाई है कि तौबा व इस्तिगफार करो। और नेकियों में लगो और गुनाहगारों वाली जिन्दगी न गुजारो।

⑥ विलायत और तौबा

वलियुल्लाह, अल्लाह तआला के खास बन्दे हैं जिन्हें अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल होता है और उन पर अन्वारे इलाहिया का नुजूल होता है और वोह हमेशा रहमते खुदावन्दी के साए तले होते हैं।

विलायत का हुसूल दो तरह से होता है। एक येह है कि रोजे अजल से अल्लाह तआला ने लोगों को मुन्तखब कर रखा है कि फुलां फुलां उस के खास बन्दों के गिरौह से होंगे और वोह अल्लाह के दोस्त होंगे। दूसरे वोह लोग हैं जो अपनी इबादत और इताअत पर अल्लाह के हुजूर दुआ गो होते हैं और आरजूएं करते हैं कि अल्लाह उन को अपने खास बन्दों में शुमार करे। चुनान्चे ऐसे लोगों को भी अल्लाह तआला अपनी दोस्ती से नवाजता है और उन का शुमार भी मख्सूस बन्दों के गिरौह में होने लगता है। इन दोनों तरह से ख्वाह किसी तरह से इन्सान का राबिता अल्लाह के साथ हो उन को सब से पहले अल्लाह के हुजूर ताइब होना पडता है और बकिया जिन्दगी इस्तिगफार में गुजारना पडती है।

﴾1﴿ अल्लाह से दोस्ती की पहली मन्जिल

तौबा अल्लाह तआला से दोस्ती की पहली मन्जिल है लिहाजा हर वली को उसी सीढी पर पहले कदम रखना पडता है। क्यूं कि उस के बिगैर मन्सबे विलायत को पाना मुम्किन नहीं। क्यूं कि औलिया की जिन्दगी इस अम्र की दलील है कि जब किसी के दिल में अल्लाह के लगन और इश्क पैदा हुवा तो उस ने सब से पहले अल्लाह के हुजूर अपने साबिका गुनाहों पर तौबा की। और फिर रूहानी सिल्सिले का आगाज हुवा।

बुजुर्गाने दीन में से बा'ज तो बचपन ही से ताइब हो गए जो सालेह तरबियत का नतीजा था जो उन के वालिदैनने की। बा'ज औलियाए किराम ने जवानी में तौबा की और बा'ज ने जवानी के बा'द तौबा की।

मगर याद रखना चाहिये कि जो कोई जितनी जल्दी तौबा करेगा और गुनाह को तर्क कर के अल्लाह की इताअत की तरफ रागिब होगा उतनी जल्दी ही मन्जिल को पाएगा । उस के लिये मन्जिल का हुसूल कदरे आसान हो जाता है। लेकिन मन्जिले मक्सूद तक पहुंचने के लिये बेशुमार मकामात से गुजरना पडता है और उन मकामात को उबूर करने के लिये एक अर्सा दरकार होता है। जिसे कैफियत या हाल कहा जाता है। और उस की अस्ल बुन्याद तौबा है। जिस से हाल काइम रहता है। मा'लूम हुवा कि तौबा ही वोह इब्तिदा है जिस से रूहानी मकामात का आगाज होता है और तौबा ही वोह बुन्याद है जिस की बिना पर अल्लाह के खास बन्दे विलायत और रूहानियत के मदारिज तै करते हुए आ'ला से आ'ला दरजात पाते हैं।

तौबा से पहले ईमाने कामिल होना अज हद जरूरी है, ईमाने कामिल इन्सान का जमीर जिन्दा रखता है। इन्सान जब बुराइयों कि तरफ बढने लगता है तो सब से पहले उस का जमीर उस को मलामत करता है कि वोह बुराई और गुनाह क्यूं करने लगा है और ऐसे जमीर को मलामत करने वाला जमीर कहता हैं। जमीर की येह कैफियत किसी नेक बुजुर्ग की सोहबत में बैठने से बहुत जल्द पैदा होती है या नेक वालिदैन और रिज्के हलाल खाने वाले वालिदैन की दुआओं से फितरी तौर पर औलाद में मौजूद होती है। या कुदरती तौर पर ऐसा माहोल मिल जाए जिस के जेरे असर इन्सान नेकी की तरफ रागिब हो जाए तो जब बुराई करने पर इन्सान का जमीर इन्सान को मलामत करने लगता है । तो उस का नतीजा येह निकलता है कि इन्सान गमगीन रहने लगता है। वोह सोचता है कि उस से बुराई और गुनाह क्यूं सरजद हुए हैं। चुनान्चे जब येह कैफियत होती है तो तलबे हक का एहसास बेदार होता है । और वोह बेदारी इन्सान को अल्लाह की तरफ ले जाना चाहती है और येही बेदारी इन्सान को नेकी के रास्ते की रहनुमाई करती है। जब भी कोई गाफिल गफ्लत की नीन्द से जागता है तो येही बेदारी उसे राहे हिदायत की तलाश पर डाल देती है और

जब तलाश की तरफ आता है तो अल्लाह के रास्ते की जरूरत पेश आती है और इस रास्ते पर गामजन होने के लिये तौबा की तरफ लौटना पडता है क्यूं कि तौबा के बिगैर और कोई चारा नहीं होता मन्जिले हक का रास्ता नसीब हो और बेदार इन्सान ही राहे तौबा के आगाज में पहुंचता है

बेदारी मर्दे मोमिन के दिल में अल्लाह की निशानियों में से एक है जो इन्सान को तौबा का रास्ता बताती है। तौबा कर लेने के बा'द तौबा पर काइम रहना बहुत जरूरी है चुनान्चे तौबा की बरकरारी के लिये नफ्स का मुहासबा करना जरूरी होता है। जब तक नफ्स का मुहासबा न किया जाएगा उस वक्त तक इस्तिकामते तौबा नसीब नहीं होती। इन्सान को सोचना चाहिये कि उस दिन से कब्ल अपने आ'माल का मुहासबा खुद कर लेना चाहिये जिस दिन अल्लाह के हुजूर हमारे आ'माल का मुहासबा होगा और उस वक्त इन्सान बिल्कुल बेबस होगा।

इस्लामी इबादात नमाज, रोजा, हज, जकात की अन्जाम देही से इन्सानी आ'माल का मुहासबा होता है और जूं जूं इन्सान इबादात की तरफ कदम बढाता है तो उस में इस्तिकामते तौबा नसीब होती जाती है और येह इबादात इन्सान को नफ्सानी ख्वाहिशात और दुन्या की गुलामी से बचाने के लिये अहम किरदार अदा करती हैं। आ'माल के मुहासबे के बा'द आ'माल की निगरानी की जरूरत पेश आती है क्यूं कि आ'माल की निगरानी तौबा में इस्तिकामत पैदा करती है चुनान्चे बुजुर्गाने दीन ने फरमाया कि जो अल्लाह का बन्दा अपनी निगरानी पर सख्त निगाह रखता हो उस की विलायत काइम रहती है। अपनी निगरानी के लिये मुराकबा सब से उम्दा है और बातिन की निगहेदाश्त के लिये मुराकबा बहुत सूदमन्द है क्यूं कि जाहिरी आ'माल के मुहासबे और मुराकबे के जरीए बातिन की पाकीजगी दो ऐसी चीजें हैं जिन से तौबा काइम रहती है।

हजरते शैख उमर फरमाते हैं कि मुराकबा इल्मे कियाम है और उसी के जरीए इल्मे हाल की तक्मील हुई और उस की कमी बेशी का इल्म होता है। वोह येह कि वोह अल्लाह के साथ अपने तअल्लुकात का

मे'यार मा'लूम करे। येह तमाम चीजें सहीह तौबा के लिये जरूरी हैं। क्यूं कि तसव्वूरे अजाइम का पेश खैमा होता है। और अजाइम आ'माल का पेश खैमा होते हैं। तसव्वूरात से कल्ब के इरादे की तक्मील होती है। चुनान्चे कल्ब आ'जा व जवारेह का हाकिम है इस लिये जब तक कल्ब कोई इरादा न करे, उस वक्त तक आ'जा हरकत में नहीं आते, लिहाजा मुराकबा ऐसी चीज है जिस के जरीए बुरे तसव्वूरात के मवाद का कल्अ कम्अ होता है। मुराकबे की तक्मील से तौबा की तक्मील होती है और जो तसव्वूरात को जब्त करे, वोह आ'जा व जवारेह की जरूरियात को फराहम कर लेता है। बहर हाल मुराकबे के जरीए कल्ब से बुरे इरादों की जडों का कल्अ कम्अ हो जाता है उस के बा'द मुराकबे से जो बात छूट जाए उस की तलाफी मुहासबा कर लेता है।

सालिकीन को सहीह तौबा करने के बा'द अल्लाह की तरफ तवज्जोह रखना जरूरी है क्यूं कि तौबा के बा'द अगर तवज्जोह को अल्लाह की तरफ से हटा कर दुन्या की तरफ लगाया जाए तो रूहानी मनाजिल रुक जाएंगी। बल्कि हो सकता है कि अल्लाह से तवज्जोह हटाने से वोह मकाम जो उसे तौबा के जरीए से हासिल हुवा हो वोह भी जाएअ हो जाएगा। सच्ची और सहीह तौबा उस वक्त तक काइम रहती है जब तक आ'माल के नकाइस को दूर किया जाएगा और नकाइस को दूर करने के लिये सच्चे दिल से मुजाहिदा करना जरूरी है और मुजाहिदे के लिये सब्र जरूरी है।

चुनान्चे गुर्बत, फक्रो फाका, तकालीफ, रंजो अलम और सदमात में सब्र करना चाहिये। लेकिन सब्र खुदा के लिये और उस के रास्ते में होना चाहिये। हकीकी सब्र में तंगी महसूस नहीं करनी चाहिये और हकीकी सब्र तौबा पर काइम रहने से हासिल होता है।

सब्रे इन्सानी नफ्स को मुत्मइन करता है और सुकूने कल्ब के लिये तज्किय‌ए नफ्स जरूरी है और तज्किय‌ए नफ्स तौबा से हासिल होता है। क्यूं कि सच्ची तौबा से नफ्स पाक हो जाता है। और नफ्स में नर्मी,

आजिजी व इन्किसारी पैदा हो जाती है और आजिजी इन्सान को रिजा के मकाम तक ले जाती है और रिजाए इलाही का हुसूल ही विलायत की इन्तिहा है इस लिये अल्लाह की रिजा का हासिल होना सच्ची तौबा का फल है।

तौबा करने वाला अपने आ'जा को बुराइयों से महफूज रखता है और अल्लाह की ने'मतो से फाएदा उठा कर उस की इताअत करता है इस तरह वोह अल्लाह की ने'मतों का शुक्र बजा लाता है। क्यूं कि इन्सान के जिस्म के तमाम आ'जा अल्लाह की ने'मत में उन्हें गुनाहों से बचा कर खुदा की इताअत में मस्रूफ रखना अस्ल शुक्र गुजारी है लिहाजा सच्ची तौबा से बढ कर और कौन सी शुक्र गुजारी हो सकती है।

अल किस्सा खुलासा येह निकला कि विलायत के हुसूल और फिर विलायत में मकामे बन्दगी तक पहुंचने के जितने भी मदारिज तै करने पडते हैं उन सब में सच्ची तौबा पर काइम रहना जरूरी है और आखिर कार इन्सान तौबा और इस्तिगफार की मुआवनत और मदद से अपनी मन्जिले मक्सूद को पहुंच जाता है और येही वज्ह है कि अव्वलीन दौर के सूफिया और बुजुर्गाने दीन ने तौबा पर काइम रहने पर बहुत जोर दिया और तौबा ही को कामयाबी के जीने की कुंजी करार दिया।

(2) निगाहे वली और तौबा

येह दुन्या अल्लाह के नेक बन्दों और बुजुर्गों से खाली नहीं। कोई वक्त ऐसा नहीं होता जब कि अल्लाह को याद करने वाले इस दुन्या में मौजूद न हों, अल्लाह के येह नेक और सालेह बन्दे ख्वाह किसी पीर के रूप में हो या किसी फकीर या दुरवेश के रंग में हो, गुदडी नशीन हो या किसी शैखे तरीकत के लुबादा में, लोगों को राहे हक की दा'वत दे रहे हो या किसी वा'ज और खिदमतगार की सूरत में खल्के खुदा की खिदमत में मस्रूफ हों। उन के पेशे नजर हर हाल में अल्लाह की रिजा और मख्लूके खुदा को राहे रास्त पर लाना मक्सूद होता है।

अल्लाह के ऐसे खास बन्दे जिन्हों ने इश्के इलाही में तन मन धन की बाजी लगाई होती है उन पर अल्लाह की खास रहमत और इनायात बरसती हैं उन की निगाह में वोह कीमयाई तासीर होती है कि वोह अल्लाह के हुक्म और रहमत से तक्दीर को बदल सकते हैं। जो ब-जाहिर तो जमीन पर बैठे होते हैं लेकिन ला-मकान की खबर देते हैं। वोह अक्सर जुस्तजू में होते हैं कि कोई तालिब रुश्दो हिदायत उन के पास आए जिस को वोह अल्लाह की राह बतलाएं और उस के इश्क में कुन्दन करें।

अल्लाह के ऐसे खासुल खास बन्दे जब किसी तालिब के लिये दुआ करते हैं तो उन की दुआ बारगाहे रब्बुल इज्जत में फौरन कुबूल होती है। इधर उन की निगाहे इनायत का लुत्फो करम होता है उधर इन्सान की तक्दीर बदल जाती है और तालिब को अल्लाह का रास्ता मिल जाता है और उस का शुमार अल्लाह के महबूब बन्दों में होने लगता है। तालिबाने हक को सच्ची तौबा की तौफीक मिल जाती है। सब से पहले तालिब के दिल में तौबा का एहसास पैदा होता है उस एहसास के नतीजे में तालिब अल्लाह के हुजूर गिड गिडा कर रोता है, अपने माजी के गुनाहों पर नादिम होता है और अल्लाह के हुजूर सच्चे दिल से मुआफी मांगता है हत्ता कि अल्लाह उसे मुआफ कर देता है। वली की निगाह से उस के दिल की आंख खुलती है और उस पर येह राज आश्कारा होता है कि तौबा करने से वोह जिस दुन्या में दाखिल हुवा है वोह माद्दी दुन्या से बहुत बुलन्दो बरतर है।

(3) नाकिस पीर और बे असर तौबा

आज कल इस्लामी तसव्वूफ में रस्मी पीरी मुरीदी का रवाज आम है और दिन ब-दिन येह उरूज पर पहुंच रही है। पीराने इजाम को बडे अहतिराम की निगाह से देखा जाता है लेकिन एक आम इन्सान अल्लाह के इताअत गुजार बन्दे और नफ्सानी ख्वाहिशात के गुलाम पीर में फर्क नहीं कर सकता। हमारी कौम के अनपढ और मा'मूली पढे लिखे

तो एक तरफ, बडे बडे दानिश्वर और उलमा भी अल्लाह के महबूब बन्दे की तलाश में धोका खा जाते हैं क्यूं कि आमिल और कामिल में बहुत फर्क होता है और हमारा मुआशरा आमिल पीरों से भरा पडा है हर कोई शरीअत के मे'यारी पैमाने से खरे और खोटे में इम्तियाज नहीं कर सकता। पीर की इत्तिबाअ किताबो सुन्नत को अगर बुजुर्गाने दीन ने परखने का एक मे'यार करार दिया है लेकिन अक्सर देखा जाता है कि धोका देने वाले हजरात भी जाहिरन अपने आप को किताबो सुन्नत का पाबन्द बना लेते हैं मगर उन के दिल में तलबे दुन्या के सिवा कुछ नहीं होता।

राहे हकीकत के तालिब भी सच्चे तालिब नहीं रहे क्यूं कि परेशान हाल मुसलमान के पेशे नजर पीर का मुरीद बन कर अल्लाह की हिदायत का रास्ता इख्तियार करना मक्सूद नहीं और न उन में अल्लाह की सच्ची लगन, तडप, सोजो मस्ती और जुस्तजू होती है और न ही निय्यत में खुलूस होता है बल्कि उन के पेशे नजर पीरों का मुरीद बनने में ख्वाहिशात का खातिर ख्वाह हल है और उन के दिल में मुरीद बनने का मक्सद सिर्फ येह होता है कि पीर की दुआ से वोह रातों रात दौलत मन्द बन जाएं। या किसी न किसी सूरत में जिन्दगी की माद्दी मुश्किलात का हल निकल आए। कोई पीर का मुरीद इस लिये बनता है कि उस का सिल्सिलए रोजगार बन जाए। उस के जराए आमदन में वुस्अत हो जाए किसी को औरत का मस्ला दरपेश हो तो वोह उस के हुसूल के लिये मुरीद बनता है। किसी को बीमारी से नजात न मिलती हो वोह मुरीदी के बाइस तसव्वूरे नजात के तहत मुरीद बनता है। ऐसे लोग बहुत कम हैं। जो अल्लाह को हासिल करने के लिये पीर की मुरीदी इख्तियार करते हैं।

बेशक इन हालात में दुन्यावी अगराज की खातिर जब कोई तालिब किसी पीर के पास जाता है और मक्सद येह होता है कि बैअत करने से दुन्या सुधर जाए और ख्वाहिशात की तक्मील हो तो पीर साहिब भी फौरन मुरीद बनाने की करते हैं ताकि मुरीदों की ता'दाद में इजाफा हो। उन के मुरीद करने का तरीकए कार येह होता है कि पीर तालिब को

पहले दो रक्अत नफ्ल तौबा पढने के लिये कहता है। नफ्ल पढाने के बा'द पीर कहता है कि तुम अल्लाह के हुजूर में अपने साबिका गुनाहों से तौबा करो। और आइन्दा उन से बचने का अहद करो और मुरीद अपने जबान से इकरार करता जाता है फिर पीर साहिब ऐसी कुछ और हिदायात कर के वजाइफ की ता'लीम दे देते हैं और अगर कोई शीरनी वगैरा तक्सीम करने हो तो खैरो बरकत के लिये तक्सीम कर दी जाती है। येह मुरीद करने का एक आम तरीका है। मगर ऐसा ही मिलता जुलता तरीका हर तरीकत में पाया जाता है। अगर्चे येह तरीकए बैअत दुरुस्त है लेकिन चूंकि तालिब की निय्यत में खुलूस नहीं होता और वोह बैअत के बा'द पीर के सामने अपनी मुश्किलात का अम्बार पेश कर देता है और कहता है कि अल्लाह से दुआ फरमाएं या मुझे कोई ता'वीज या वजीफा बताएं जिस से मेरे मकासिद जल्द अज जल्द पूरे हों। ऐसी मरीदी में चूंकि इन्सान हकीकी मा'नों में तालिबिल्लाह नहीं बनता तो उस की तौबा के भी खातिर ख्वाह नताइज बर आमद नहीं होते और इन्सान पीर के सामने इकरारे तौबा करने के बा'द फिर अपनी अमली जिन्दगी में बुराइयों को अपनाए रखता है। वोह पीर की खिदमत में भी हाजिर होता है और दुन्या की हेरा फेरियों को भी तर्क नहीं करता। हलालो हराम की तमीज नहीं करता और कस्बे हलाल की तरफ तवज्जोह नहीं देता और मुरीदी इख्तियार करने के साथ गुनाह भी करता है तो ऐसी पीरी मुरीदी से इन्सान को रूहानी फाएदा हासिल नहीं हो सकता। और न सच्ची तौबा की तौफीक हासिल हो सकती है।

﴾4﴿ तौबा और इस्तिकामते ईमान

तौबा से ईमान में इस्तिकामत पैदा होती है और इस्तिकामते ईमान अल्लाह की वहदानियत और मा'बूद होने पर यकीने कामिल की अलामत है। इस्तिकामते ईमान से बन्दे पर येह बात भी अयां हो जाती है कि अल्लाह के सिवा दीनो दुन्या में नजात देना वाला और कोई नहीं।

इन्सान उस की खुदाई से भाग कर कहीं भी नहीं जा सकता। जब इन्सान की जिन्दगी हर तरह अल्लाह तआला की रहमतों और नवाजिशों की मरहूने मिन्नत है तो फिर बन्दा खुदा को छोड कर रास्ता क्यूं इख्तियार करे।

ताइब पर येह हकीकत वाजेह होती है कि जहां का पैदा करने वाला और उस का निजाम चलाने वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं, वोह जिन्दा और कय्यूम है, कादिरे मुत्लक है। अल्लाह जो चाहता है कर सकता है और अपने इरादे और इख्तियार में किसी का पाबन्द नहीं है, अल्लाह तआला समीओ बसीर है। तमाम सिफाते इलाहिया उस की जात ही से वाबस्ता हैं। इन तमाम हकाइक को दिल में जगह देने से ताइब के ईमान में बेपनाह पुख्तगी पैदा होती है और पुख्तगिये ईमान इन्सान को हर गुनाह से बचने में मदद देती है।

﴾5﴿ तौबा ही तौबा

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ۝

जब उन से कोई फोहश काम हो जाए या अपनी जान पर कोई गुनाह कर बैठें तो फौरन अल्लाह का जिक्र और इस्तिगफार करने लग जाते हैं और अल्लाह के इलावा कोई गुनाह बख्शने वाला नहीं है और वोह लोग बा वुजूद इल्म के किसी बुरे काम पर अडते नहीं।

(पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 135)

हम गुनहगार इन्सानों से गलती हो जाना कोई बईद नहीं है, लिहाजा उस के मुतअल्लिक मुन्दरजा बाला आयात में बताया गया है कि नेक लोग वोह हैं जिन से कोई गलती हो जाती है तो वोह तौबा करने लग जाते हैं हत्ता कि तौबा और इस्तिगफार करते हुए अल्लाह के हुजूर रोते हैं तो अल्लाह तआला फिर उन के गुनाह मुआफ कर देता है।

मुस्नदे अहमद में हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि जब कोई शख्स गुनाह

करता है, फिर खुदा के सामने हाजिर हो कर कहता है कि परवर दिगार मुझ से गुनाह हो गया लेकिन उस का ईमान है कि उस का रब गुनाह पर पडक भी करता है और अगर चाहे तो मुआफ भी कर देता है। मैं ने अपने बन्दे का गुनाह मुआफ फरमा दिया उस से फिर गुनाह होता है फिर तौबा करता है, अल्लाह तआला फिर मुआफ फरमाता है फिर तीसरी मरतबा उस से गुनाह हो जाता है तो फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआला मुआफ कर देता है। चौथी मरतबा फिर गुनाह कर बैठता है फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआला मुआफ कर देता है।

हजरते अबू हुरैरा से एक और रिवायत में है कि हम ने एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! जब हम आप को देखते हैं तो हमारे दिलों में रिक्कत तारी हो जाती है और हम अल्लाह वाले बन जाते हैं लेकिन जब आप के पास से चले जाते हैं तो वोह हालत नहीं रहती, औरतों, बच्चों में फस जाते हैं, घर बार के धंधों में लग जाते हैं। तो आप ने फरमाया सुनो जो कैफियत तुम्हारे दिलों की मेरे सामने होती है अगर येही हर वक्त रहती तो फिरिश्ते तुम से मुसाफहा करते और तुम्हारी मुलाकात को तुम्हारे घरों पर आते। सुनो अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तुम्हें यहां से हटा दे और दूसरी कौम को ले आए। जो गुनाह तो करे मगर फिर बख्शिश मांगे और फिर खुदा उन्हें बख्श दे।

आमीन!

अल्लाह तआला से बार बार तौबा इस्तिगफार करने और जिक्र करने से रूह में गुनाहों की जो कसाफत पैदा होती है वोह दूर हो जाती है और इन्सान में ईमानी हरारत फिर नए सिरे से बेदार हो जाती है। सहीह मोमिनीन वोही होते हैं जो कि अपने गुनाहों पर अल्लाह से इस्तिगफार और तौबा करते ही रहते हैं और अगर गलती सरजद हो जाए तो उस पर अडे नहीं रहते बल्कि अल्लाह से मुआफी मांगते हैं और आइन्दा बुरे कामों से बाज आ जाते हैं।

मुस्नदे अहमद में है कि एक शख्स ने हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज किया कि मुझ से गुनाह हो गया, तो आप ने फरमाया तौबा कर। उस ने अर्ज किया मुझ से फिर गुनाह हो गया। फरमाया फिर तौबा कर ले। उस ने अर्ज किया कि मुझ से फिर गुनाह हो गया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि इस्तिगफार कर, उस ने अर्ज किया कि मुझ से और गुनाह हुवा। फरमाया इस्तिगफार किये जा, यहां तक कि शैतान झुक जाए। फिर फरमाया कि गुनाह को बख्शना अल्लाह ही के हाथ में है।

मुस्नदे अहमद ही में है कि रसूले खुदा के पास एक कैदी आया और अर्ज किया, या अल्लाह ! मैं तेरी तरफ तौबा करता हूं, मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ तौबा नहीं करता या'नी मैं अल्लाह से बख्शिश चाहता हूं, आप ने फरमाया उस ने हकदार को पहचाना।

अगर इन्सान से गुनाह बार बार सरजद हो तो फिर इस्तिगफार भी बार बार करने में कोई मुजाएका नहीं लेकिन कस्दन गुनाह से बचना चाहिये। इन अहादीस से येह साबित होता है कि इन्सान के पास गुनाह बख्शवाने का और कोई तरीका नहीं बजाए उस के कि वोह हर वक्त तौबा व इस्तिगफार में रहे चुनान्चे इन्सान को तौबा ही तौबा करते रहना चाहिये।

अब्दुल करीम कुशैरी कहते हैं कि मैं ने अपने शैख अबू अली दक्काक को फरमाते सुना कि एक मुरीद ने तौबा की मगर उस से तौबा टूट गई। एक दिन वोह सोच रहा था कि अगर दोबारा तौबा करेगा तो उस का क्या हुक्म होगा ? उस पर गैब से निदा आई। तुम ने हमारी इताअत की तो हम ने शुक्रिया अदा किया, तूने हमें छोड दिया तो हम ने तुम्हें मोहलत दी। फिर लौट आएगे तो हम तुझे कुबूल कर लेंगे। मुरीद फिर इरादत मन्दी की तरफ लौट आया और इस बात पर साबित कदम रहा।

लिहाजा जब इन्सान मा'सियत को तर्क कर के अपने दिल से इस्रार की गिरह को खोल देता है और फिर येह इरादा कर लेता है कि वोह फिर ऐसा काम न करेगा। तब कहीं उस के दिल पर खालिस नदामत तारी होती है और वोह अपने किये पर अफ्सोस करता है और अपने आ'माल

और अफआल के मुर्तकिब होने पर नादिम होता है। इस तरह उस की तौबा मुकम्मल होती है । और उस का मुजाहिदा सहीह होता है और लोगों से मेल जोल रखने की बजाए उन से अलाहिदगी इख्तियार करने लग जाता है और बुरे दोस्तों की सोहबत में बैठने की बजाए वोह उन से मुतनफ्फिर हो कर खुलुव्वत में रहना पसन्द करता है। वोह दिन रात अफ्सोस करता रहता है और अक्सर औकात सच्चे दिल से नादिम व शर्मसार रहता है। वोह अपने आंसूओं की बारिश से अपने लग्जिश के निशानात मिटाता है और अच्छी तौबा के जरीए वोह अपने गुनाहों के जख्मों का इलाज करता है अपने हम जिन्सों के दरमियान अपने गुनाहों की वज्ह से मश्हूर होता है और उस की लागिरी के जरीए उस की हालत की दुरुस्ती का पता चलता है।

(6) बुजुर्गाने दीन के अक्वाले तौबा

बुजुर्गाने दीन के अक्वाल में बडी नसीहत और दानाई के रुमूज होते हैं, जिन पर अमल पैरा हो कर मा'रिफते हक हासिल होती है । चुनान्चे तौबा के मुतअल्लिक अकाबिरीने दीन के कुछ अक्वाल मुन्दरजए जैल हैं।

(1) हजरते अली

हजरते अली का तौबा के बारे में फरमान है कि गुनाह पर नादिम होना उन्हें मिटा देता है और नेकियों पर मगरूर होना उन्हें बरबाद कर देता है ।

(2) हजरते आइशा सिद्दीका

हजरते आइशा सिद्दीका ने तौबा के बारे में फरमाया है कि खुदा से डरते रहो । क्यूं कि जब खुदा से डरोगे तो अल्लाह तआला तुम को लोगों से बचा देगा और जब लोगों से डरोगे तो अल्लाह तआला के सामने तुम्हारी कुछ पेश न जाएगी ।

﴾3﴿ हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी

हजरत शैख ने फरमाया है कि जो फासिकों के साथ नशिस्त बरखास्त करता है, वोह गुनाह पर दिलेर हो जाता है और उसे तौबा करने की तौफीक नहीं रहती।

﴾4﴿ हजरते ख्वाजा हसन बसरी

हजरते ख्वाजा हसन बसरी ने फरमाया है कि तौबा के चार सुतून हैं [1] जबान से मुआफी का तालिब होना [2] दिल से पशेमान होना [3] आ'जा को गुनाह से रोकना [4] येह निय्यत रखना, कि आइन्दा ऐसा गुनाह नहीं करूंगा और येह भी फरमाया कि तौबतुन नुसूह येह है कि तौबा करे और जिस गुनाह से तौबा की है उस की तरफ फिर न लौटे।

﴾5﴿ हजरते राबिआ बसरी

आप ने फरमाया कि सिर्फ जबान से तौबा करना झूटों का शेवा है। अगर खुद ब खुद तौबा करें तो फिर दूसरी तौबा की हाजत नहीं रहती। एक और जगह पर राबिआ फरमाती हैं कि मेरे अस्तगफिरुल्लाह कहने में जो अदमे खुलूस पाया जाता है उस से में इस्तिगफार करती हूं।

﴾6﴿ हजरते जुन्नून मिसरी

आप फरमाते हैं कि आम लोग गुनाह से और खवास गफ्लत से तौबा करते हैं। और अम्बिया की तौबा उस से होती है कि वोह देखते हैं कि जो मरतबा औरों ने हासिल किया है येह उसे हासिल करने से कासिर रहे हैं। मतलब येह है कि अवाम से जाहिर के मुतअल्लिक सुवाल होगा। और खवास से आ'माल की हकीकत के मुतअल्लिक बाजे पुर्स होगी, क्यूं कि गफ्लत अवाम के लिये रुकावट और खवास के लिये हिजाब होती है।

एक और जगह पर आप फरमाते हैं कि गुनाहों को छोडे बिगैर तौबा करना झूटों की तौबा है। आप ने येह भी फरमाया कि तौबा की

हकीकत येह है कि जमीन अपनी वुस्अत के बावुजूद तुझ पर तंग हो जाए। यहां तक कि तेरे लिये फिरार की राह बाकी न रहे। उस के बा'द तेरी जान तुझ पर तंग हो जाए।

﴾7﴿ हजरते हबीब बिन अबी

कियामत के दिन आदमी पर उस के गुनाह पेश किये जाएंगे। जो खता उस के सामने आएगी उस पर येही कहेगा कि मैं इसी से डरा करता था। चुनान्चे उस का कुसूर उस से मुआफ कर दिया जाएगा।

﴾8﴿ हजरते अबुल हसन बोशलजी

उन का कौल है कि अगर गुनाह की याद में लज्जत न रहे तो येह तौबा है। गुनाह की याद तो नदामत की वज्ह से होती है या दिली ख्वाहिश की वज्ह से। जब नदामत की वज्ह से हो तो इन्सान ताइब होता है जब इरादत सी याद आए तो गुनाह है। गुनाह का मुर्तकिब होने में वोह आफत नहीं जो उस की इरादत में है क्यूं कि इर्तिकाब तो एक बार हो चुका है मगर इरादत मुस्तक्बिल तौर पर दिल में जागुर्जी रहती है। घडी भर जिस्म से गुनाह करना इतना संगीन नहीं जितना रात दिन इरादते गुनाह में मुन्हमिक रहना संगीन है।

﴾9﴿ शैख सूसी

आप से तौबा के बारे में पूछा गया तो फरमाया तौबा हर उस चीज से की जाती है जिस की इल्म ने मजम्मत की हो। और जिस चीज की इल्म ने ता'रीफ की हो उस की तरफ रुजूअ किया जाता है। येह ता'रीफ जाहिरो बातिन दोनों में शामिल है और उस का तअल्लुक उस शख्स से है जिसे इल्मे कामिल अता किया गया हो। चुनान्चे इल्म के सामने जहालत इस तरह गाइब हो जाती है जैसे तुलूए आफ्ताब से रात गाइब हो जाती है।

﴾10﴿ हजरते इब्राहीम दक्काकी

आप फरमाते हैं तौबा येह है कि जिस तरह तू पहले अल्लाह की तरफ पुश्त किये हुए था और इधर तवज्जोह नहीं देता था, अब तू हमातन तवज्जोह बन जाए और फिर उस की तरफ पुश्त न करे।

﴾11﴿ हजरते लुक्मान

जो रहम करता है उस पर रहम होता है। जो चुप रहता है वोह सलामत रहता है जो अच्छी बात कहता है वोह गनीमत पाता है। जो बुरी बात कहता है वोह गुनहगार होता है, और जो अपनी जबान नहीं रोकता वोह नदामत उठाता है।

﴾12﴿ हजरते इब्राहीम बिन अदहम

अच्छे आदमी की जरूरत इसी लिये है कि भूल चूक आदमी का काम है और सब इन्सान, इन्सान नहीं होते। इन्सान गुजर गए और भूत रह गए। इन को इन्सान कैसे जानें जो आदमियों की हतक करते हैं।

अल्लाह तआला ने तीन चीजें तीन चीजों में मख्फी रखी हैं। अव्वल अपनी रिजामन्दी को अपनी ताअत में, पस किसी ताअत को हकीर मत जानो। शायद खुदा की रिजामन्दी उसी में हो। दुवुम अपने गजब को मआसी में। इस लिये किसी गुनाह को छोटा मत समझ। शायद उस का गजब उसी में हो। सिवुम अपनी विलायत को बन्दों में मख्फी कर रखा है लिहाजा बन्दों में से किसी को हकीर मत समझ। शायद अल्लाह का वली हो।

﴾13﴿ शैख अबुल हसन रजवी

आप का कौल है कि तौबा येह है कि तुम खुदा की याद के सिवा हर चीज की याद से तौबा कर लो और उस के सिवा तुम्हारे दिल में कोई चीज न रहे।

﴾14﴿ हजरते फुजैल बिन अयाज

हजरते फुजैल बिन अयाज ने फरमाया कि तुम अपनी जात के खुद वसी बनो और दूसरे लोगों को अपने लिये वसी न बनाओ जब कि खुद तुम ने अपनी जिन्दगी में अपने नफ्स की वसिय्यत जाएअ कर दी तो फिर तुम उन दूसरों को इस बात पर किस तरह बुरा कह सकते हो कि उन्हों ने तुम्हारी वसिय्यत राएगां और जाएअ कर दी है।

﴾15﴿ हजरते अबू अली दक्काकी

आप ने फरमाया कि तौबा के तीन दरजे हैं (1) तौबा (2) अनाबत (3) औबत । तौबा इब्तिदाई दरजे से दरमियानी दरजा अनाबत, और आखिरी या इन्तिहाई दरजा औबत है। जिस ने अजाबे इलाही के खौफ से तौबा की वोह साहिबे तौबा है। जिस ने सवाब की खातिर या अजाब से बचने के लिये तौबा की वोह साहिबे अनाबत है और जिस ने महज अल्लाह के हुक्म की ता'मील के लिये तौबा की, सवाब की और अजाब से बचने के अन्देशे से नहीं वोह साहिबे औबत है अनाबत औलियाए मुकर्रिबीन की सिफत है, औबत अम्बिया व मुर्सलीन की सिफत है।

﴾16﴿ हजरते जुनैद बगदादी

आप ने फरमाया कि तौबा तीन मुआफी पर हावी है। (1) गुनाह पर पशेमानी (2) जिस चीज को अल्लाह ने मन्अ फरमाया उस को दोबारा न करने का पुख्ता इरादा (3) हुकूके इन्सानी को अदा करने की कोशिश। एक और मरतबा आप ने फरमाया कि एक मरतबा हजरते सिर्री सकती के पास पहुंचा तो मैं ने उन का रंग परीदा पाया। मैं ने वज्ह दरयाफ्त की तो आप ने फरमाया कि एक जवान ने मुझ से तौबा के बारे में दरयाफ्त किया। मैं ने उस को बताया कि तौबा येह है कि तू अपने गुनाह को न भूले। वोह जवान मुझ से झगडने लगा और कहा कि तौबा तो येह है कि अपने गुनाहों को भुला दे। मैं ने कहा कि मेरे नज्दीक तो तौबा के येही

मा'ना हैं जो उस जवानने बताए हैं। हजरते सिर्री सकती ने पुछा क्यूं येह मा'नी क्यूं कर रहे हो ? मैं ने जवाब दिया कि मैं कहता हूं कि जब मैं रन्जो अलम के आलम में होता हूं तो वोह मुझे आरामो राहत की हालत में ले जाता है। और आरामो राहत की हालत में रन्जो अलम को याद करना जुल्म है। येह सुन कर वोह खामोश हो गए।

《17》 हजरते अबुल हसन शाजिली

ख्वाह तुम से कोई गुनाह सरजद न हो फिर भी हमेशा इस्तिगफार किया करो। मोमिनों की जमाअत को न छोडो गो वोह गुनहगार और बदकार ही क्यूं न हों।

《18》 हजरते अबू सईद

हजरते अबू सईद ने वसिय्यत की कि खुदा का खौफ अपने ऊपर लाजिम कर, कि हर एक चीज की खैर येही है और जिहाद करना अपने ऊपर लाजिम कर, कि इस्लाम में रहबानियत उसी को कहते हैं और कुरआने मजीद को हमेशा पढा कर, कि वोह तेरे लिये जमीन वालों में नूर होगा और आस्मान वालों में तेरी याद रहेगी और बेहतर बात के सिवा सुकूत इख्तियार कर कि उस के बाइस शैतान पर गालिब आ जाएगा।

《19》 हजरते ख्वाजा बख्तियार काकी

इन्सान को चाहिये कि जिस चीज से तौबा करे, उसे हमेशा अपना दुश्मन जाने। जब तक बन्दे के साथ ख्वाहिशों में से कोई ख्वाहिश रहेगी। वोह हरगिज अल्लाह तआला तक न पहुंचेगा।

《20》 हजरते इमाम गजाली

राहे सुलूक में कदम रखने के लिये जिक्रो फिक्र की जरूरत है और जिक्रो फिक्र के लिये पहली शर्त तौबा है।

«21» हजरते अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अली

हजरत ने फरमाया कि तौबा करने वाला तो अपनी लग्जिशों से तौबा करता है। एक ताइब गफ्लत से तौबा करता है। एक तौबा करने वाला नेकियों के देखने से तौबा करता है। जाहिर है कि इन तीनों में बहुत फर्क है।

«22» हजरते अबू बक्र वास्ती

आप ने फरमाया कि तौबा येह है कि ताइब के जाहिरो बातिन में मा'सियत का शाएबा बाकी न रहे। जिस की तौबा खालिस होती है वोह परवा नहीं करता कि तौबा के बा'द उस की शाम कैसी गुजरी और सुब्ह कैसी गुजरी।

«23» हजरते यहया बिन मुआज राजी

आप ने मुनाजात में कहा कि मैं येह तो नहीं कह सकता के मैं ने तौबा की है। न येह कह सकता हूं कि अब ऐसा नहीं करूंगा क्यूं कि मैं अपने सरशत को पेहचानता हूं और न मैं उस की जमानत दे सकता हूं कि आइन्दा गुनाह नहीं करूंगा क्यूं कि मैं अपनी कमजोरियों को जानता हूं। फिर भी मैं कहता हूं कि आइन्दा ऐसा नहीं करूंगा क्यूं कि शायद मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगा। क्यूं कि शायद मैं दोबारा ऐसा करने से पहले मर जाऊं। एक और जगह आप ने फरमाया कि तौबा के बा'द का एक गुनाह तौबा से पहले के तहत्तर गुनाहों से बदतर है।

«24» हजरते इब्ने अता का इर्शाद

हजरते इब्ने अता ने फरमाया कि तौबा दो तरह की है, तौबा अनाबत और तौबा इस्तिजाबत। तौबा अनाबत येह है कि बन्दा अल्लाह तआला के अजाब से तौबा करे, तौबा इस्तिजाबत येह है कि बन्दा अल्लाह के लुत्फो करम से हया करते हुए तौबा करे।

﴾25﴿ हजरते अबू उमर अलजाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आप ने फरमाया कि एक वजीर एक अजीम लश्कर के साथ जा रहा था। अवाम पूछने लगी के येह कौन है ? सरे राह खडी हुई एक जईफा ने कहा कि क्या तुम येह पूछते हो कि येह कौन है ? येह एक बन्दा है, जो खुदा की नजरों से गिर गया है और खुदा ने उस को दुन्या में मुब्तला कर दिया है जिस में तुम उसे देख रहे हो। जईफा की येह बात उस वजीर ने सुन ली, घर वापस जा कर उन्हों ने वजारत से इस्तिफा दे दिया और मक्कए मुकर्रमा में पहुंच कर मुकीम हो गया।

﴾26﴿ शैख रुवेम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आप फरमाते हैं कि तौबा का सहीह मफ्हूम येह है कि तौबा से तौबा की जाए।

﴾27﴿ शैख हसन अल मुगाजिली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आप फरमाते हैं कि तौबा अनाबत येह है कि तुम अल्लाह से इस लिये डरो कि वोह तुम पर कादिर है, उस ने कहा कि तौबा इस्तिजाबत क्या है ? फरमाया वोह येह है कि तुम अल्लाह से इस लिये शर्माओ कि वोह तुम से करीब है। येही वोह तौबा है कि अगर वोह किसी बन्दे हक के दिल में जागुर्जी हो जाए तो वोह नमाज में भी अल्लाह के जिक्र के इलावा हर तसव्वुर और वस्वसे से तौबा इस्तिगफार करे।

﴾28﴿ अबू अली शफीक बिन इब्राहीम अल अजमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आप के जमाने में एक साल बल्ख में सख्त कहत पडा, लोग एक दूसरे को खा रहे थे। इस आलमे मुसीबत में आप ने देखा कि नौजवान सरे बाजार नाच रहा है। लोगों ने पूछा कि तुम क्यूं नाच रहे हो, तमाम खल्कत मुसीबत में मुब्तला है, तुम्हें अपनी रविश पर शर्म नहीं आनी चाहिये ? नौजवान ने जवाब दिया मुझे कोई गम नहीं, मेरा मालिक

एक पूरे गाऊं का मालिक है और वोह मेरी रोजी का कफील है। आप ने चिल्ला कर कहा, खुदाया येह नौजवान इस बात पर नाजां है कि इस का मालिक पूरे गाऊं का मालिक है। तू शहन्शाहों का शहन्शाह है और रोजी का वा'दा कर चुका है फिर हम बद नसीब अपने आप को रन्जो मुसीबत में मुब्तला समझते हैं तो आप ने तौबा कर के राहे हक इख्तियार कर लिया।

﴾28﴿ एक बुजुर्ग का कौल

एक बुजुर्ग का कौल है कि अल्लाह तआला ने बन्दों पर जुल्म कर ने से मन्अ फरमाया है पस जो शख्स दूसरे पर जुल्म करेगा वोह अल्लाह तआला की मुखालिफत में पहल करेगा। एक और कौल है कि जो शख्स गुनाह से तौबा कर के सात बरस तक पक्का रहे तो फिर कभी उस से गुनाह न होगा।

﴾29﴿ हजरते अब्दुर्रहमान बिन अबिल कासिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

मुसलमान का तौबा करना ऐसा है जैसा इस्लाम के बा'द इस्लाम लाना।

﴾30﴿ एक और बुजुर्ग का कौल

एक बुजुर्ग का कौल है कि मुझे खूब मा'लूम है अल्लाह जल्ल शानुहू मेरी मग्फिरत कब करता है, लोगों ने पूछा कब ? फरमाया जब मुझे तौबा की तौफीक देता है।

﴾31﴿ हजरते अबू हफ्स हद्दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

आप फरमाते हैं कि तौबा में बन्दे का अपना कुछ इख्तियार नहीं होता क्यूं कि तौबा हक तआला की तरफ से है बन्दे के तरफ से नहीं। इस का मतलब येह है कि इन्सान की अपनी कोशिश का नतीजा न हो बल्कि हक तआला की अता हो।

आप तौबा की मन्जिल पर इस तरह पहुंचे कि आप एक लडकी की महब्बत में मुब्तला थे और अपने दोस्तों के मश्वरे के मुताबिक

नीशापूर के एक यहूदी से मदद के तालिब हुए यहूदी ने कहा चालीस दिन तक नमाज और दुआ को तर्क करो, कोई नेकी का काम न करो। फिर मेरे पास आओ। मैं कुछ ऐसा इन्तिजाम करूंगा कि महबूब तुम्हारे कदमों में आ गिरेगा। अबू हफ्स ने यहूदी की हिदायात पर अमल किया। और चालीस दिन के बा'द फिर उस के पास पहुंचे। उस ने हस्बे वा'दा एक नक्श दिया मगर येह बिल्कुल बे असर हुवा, यहूदी ने कहा कि मा'लूम होता है कि इन चालीस दिनों में तुम ने जरूर कोई नेक काम किया है। सोचो, अबुल हफ्स ने जवाब दिया कोई ऐसा काम नहीं किया सिवाए इस चीज के रास्ते में एक छोटासा पथ्थर पडा हुवा था। वोह मैं ने परे हटा दिया, ताकि किसी को ठोकर न लगे, यहूदी ने कहा उस खुदा की खिलाफ वर्जी न करो जिस ने तुम्हारी इतनी सी नेकी को जाएअ नहीं होने दिया। हालां कि तुम मुतवातिर चालीस रोज तक उस के एहकाम से रूगरदां रहे हो, अबू हफ्स ने तौबा की और यहूदी मुसलमान हो गया।

﴾32﴿ हजरते मालिक बिन दीनार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

हजरते मालिक बिन दीनार, ख्वाजा हसन बसरी के मुसाहिब थे उन की तौबा का वाकिआ यूं बयान किया जाता है कि वोह एक रात को अपने साथियों के साथ ऐशो इश्रत में मश्गूल थे। जब सो गए तो एक साज से आवाज आई ! ऐ मालिक ! तुझे क्या हो गया ? क्यू तौबा नहीं करता ? मालिक बिन दीनार ने सब कुछ तर्क कर दिया और ख्वाजा हसन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के पास आए और सच्चे दिल से तौबा की और बुलन्द मकाम पाया।

﴾33﴿ हजरते अब्दुल्लाह बिन मुबारक अल मरूजी

हजरते अब्दुल्लाह बिन मुबारक अल मरूजी बुजुर्गे मशाइख में से गुजरे हैं, उन्हों ने इस तरह तौबा की कि वोह एक कनीज पर आशिक हो गए, एक रात वोह रिन्दों [शराबी] की सोहबत से उठे और एक साथी को हमराह ले कर मा'शूका की दीवार के नीचे जा खडे हुए। वोह छत पर आ गई और दोनों सुब्ह तक एक दूसरे को देखते रहे। सुब्ह की अजान हुई तो

अब्दुल्लाह समझे कि शायद इशा की अजान है। जब सूरज निकलता हुवा देखा, तो मा'लूम हुवा कि तमाम रात दीदार में गर्क रहे। तबीअत को बहुत कल्क हुवा, दिल ही दिल में कहा कि ऐ मुबारक! तुझे शर्म चाहिये। सारी रात ख्वाहीशे नफ्सानी में खडा रहा, करामात का भी तालिब है। चुनान्चे उन्हों ने अल्लाह के हुजूर तौबा की और बा'द में इल्म और तिब्ब में मश्गूल हो कर बुलन्द मकाम पाया।

﴾34﴿ हजरते ख्वाजा बिशर हाफी की तौबा

हजरते ख्वाजा बिशर हाफी कामिल बुजुर्ग थे आप की विलादत 150 हिजरी में हुई और बहत्तर साल की उम्र में 222 हिजरी में वफात पाई। आप से लोगों ने पूछा कि आप ताइब किस तरह हुए और उस की क्या वज्ह हुई ? फरमाया कि एक दिन मैं शराब खाने में बैठा हुवा था कि मेरे कान में आवाज आई कि ऐ शख्स ताइब हो जा। कब्ल उस के कि मरने के बा'द मुन्कर नकीर तुझ को बेदार करें। जैसे ही मैं ने येह आवाज सुनी। मैं ताइब हो गया और पिछले गुनाहों से बाज आया और हक तआला ने मुझ को येह दरजा अता फरमाया।

﴾35﴿ हजरते अबू अम्र बिन नजीद और अबू उस्मान

कहा जाता है कि अबू अम्र बिन नजीद इब्तिदा में अबू उस्मान की मज्लिस में आया करते थे। उन के कलाम का उन के दिल पर असर हुवा और अबू अम्र ने तौबा कर ली। फिर उन से सुस्ती हो गई। अब जब अबू उस्मान को देखते तो दूर भागते और उन की मज्लिस में भी न जाते। एक बार अबू उस्मान सामने से आ निकले। अबू अम्र रास्ते से हट कर दूसरे रास्ते पर हो लिये। अबू उस्मान ने उन का पीछा किया। वोह उन के पीछे चलते रहे यहां तक कि उन को पा लिया, कहा बेटा! जो शख्स तुझ से सिर्फ इस सूरत में महब्बत करता है जब तू मा'सूम हो तो उन की सोहबत में न रहे, अबू उस्मान तुझे उस हालत में नफ्अ पहुंचा सकता है। रावी कहता है कि अबू अम्र बिन नजीद ने तौबा की और उन के मुरीद हो गए। और उस पर काइम रहे।

7 इस्तिग़फ़ार

इस्तिगफार का मतलब अल्लाह से बख्शिश और मग्फिरत तलब करना है। कुरआन की सूरतुत्तौबा में लफ्ज यूं इस्ति'माल हुवा है।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرٰهِيْمَ لِأَبِيْهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ أَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ۝

और हजरते इब्राहीम का अपने बाप के लिये मुआफी चाहना एक वा'दे की वज्ह से था जो वोह अपने वालिद से कर चुका था। फिर जब हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर येह बात वाजेह हो गई कि उस की दुश्मनी अल्लाह के लिये है तो उस ने तअल्लुक तोड दिया बेशक इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام आहें करने वाला हलीम था। (पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 114)

यहां येह लफ्ज अल्लाह से बख्शिश, मग्फिरत और मुआफी तलब करने के मा'नों में इस्ति'माल हुवा है। इस से मा'लूम हुवा कि इस्तिगफार, हुसूले बख्शिश की इल्तिजा है जो इन्सान अपने लिये या किसी दूसरे के लिये करता है।

﴾1﴿ कुरआने पाक में हुक्मे इस्तिगफार

कुरआने पाक में अल्लाह तआला ने जिन आयात में इस्तिगफार या'नी मुआफी तलब करने का हुक्म दिया है वोह हस्बे जैल हैं।

﴾1﴿ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ और अल्लाह से इस्तिगफार करो बेशक अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 106)

﴾2﴿ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ और उन के लिये अल्लाह से मुआफी मांगो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

(पारह 18, सूरए नूर, आयत : 62)

﴾3﴿ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है और अपनों के गुनाहों की मुआफी चाहो। और अपने रब की ता'रीफ करते हुए सुब्ह और शाम उस की हम्द बयान करो। (पारह 24, सूरए मोमिन, आयत : 55)

﴾4﴿ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَ مَثْوٰىكُمْ۠

पस जान लें कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और ऐ महबूब ! अपने खासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की मुआफी मांगो अल्लाह दिन को तुम्हारा फिरना और रात को तुम्हारा आराम कर लेना जानता है। (पारह 26, सूरए मुहम्मद, आयत : 19)

﴾5﴿ وَّ اَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِ और येह कि रब से मुआफी मांगो फिर उस की तरफ तौबा करो। (पारह 11, सूरए हूद, आयत : 3)

﴾6﴿ فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِؕ اِنَّ رَبِّیْ قَرِیْبٌ مُّجِیْبٌ पस उस से इस्तिगफार करो, फिर उस की तरफ रुजूअ करो, बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला करीब है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 61)

﴾7﴿ وَ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِؕ اِنَّ رَبِّیْ رَحِیْمٌ وَّدُوْدٌ और अपने रब से मुआफी चाहो, फिर उस की तरफ रुजूअ करो। बेशक मेरा रब महेरबान महब्बत वाला है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 90)

﴾8﴿ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا तो मैं ने कहा अपने रब से मुआफी मांगो, वोह बडा मुआफ फरमाने वाला है। (पारह 29, सूरए नूह, आयत : 10)

﴾9﴿ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا तो अपने रब की सना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख्शिश चाहो। बेशक वोह बहुत तौबा कुबूल करने वाला है। (पारह 30, सूरए नस्र, आयत : 3)

इन आयात से इस्तिगफार के मुतअल्लिक हस्बे जैल एहकामात अख्ज होते हैं ..।

[1] इस्तिगफार के हुक्म से येह बात वाजेह है कि अल्लाह के हुजूर मुआफी मांगते रहना चाहिये या'नी दिन रात में अल्लाह की तरफ रुजूअ करते हुए अल्लाह से अपने गुनाहों की बख्शिश तलब करना जरूरी है, क्यूं कि गुनाहों से बचने के बावुजूद कुछ गुनाह ऐसे भी इन्सान से हो

जाते हैं जो उस की सोच में नहीं होते इस लिये गाहे ब–गाहे इस्तिगफार से वोह गुनाह मुआफ हो जाते हैं। अगर इन्सान इस्तिगफार न करे तो वोह गुनाह इन्सान के जिम्मे रह जाएंगे इस लिये कसरत से इस्तिगफार करना जरूरी है।

[2] अहले तक्वा और अहले रूहानियत के लिये जरूरी है कि वोह उन लोगों के लिये भी अल्लाह के सामने इस्तिगफार करें जो उन की सोहबत या कुर्बत में हों। क्यूं कि जिन के लिये इस्तिगफार की दुआ की जाती है तो अल्लाह उन्हें भी अपने गुनाहों की मुआफी मांगने की तौफीक अता कर देता है। इस तरह अहले रूहानियत की तवज्जोह से गुनहगारों के गुनाह मुआफ हो जाते हैं।

[3] इस्तिगफार के साथ गुनाहों से बचना बहुत जरूरी है और येह बात सोच कर गुनाह करना काबिले गिरफ्त है कि बा'द में इस्तिगफार कर लेंगे, इस्तिगफार के साथ सुब्ह शाम अल्लाह की हम्दो सना करना भी जरूरी है। जैसा कि सूरतुल मोमिनून की आयत में बयान किया गया है।

[4] सूरतुल मोमिनून के आखिर में है कि ऐ मुहम्मद ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहिये कि ऐ मेरे रब ! मग्फिरत और रहम कर क्यूं कि तू सब से अच्छा रहीम है। येह एक तरह के दुआइया जुम्ले हैं, जिन से येह जाहिर होता है कि अल्लाह तआला ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मग्फिरत मांगने और रहमत तलब करने का हुक्म दिया है, इब्तिदाए इस्लाम में रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम जब येह दुआ मांगते तो काफिर मुसलमानों का मजाक उडाया करते थे तो अल्लाह तआला ने उस मुसलमानों को ताकीद की कि काफिरों की परवा मत करें और अल्लाह से हमेशा रहमत के तलबगार रहें।

[5] जैसा कि सूरए मुहम्मद में भी अल्लाह तआला ने रसूले पाक को हुक्म दिया है कि ऐ नबी ! खूब जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं। चुनान्चे अपने मुसलमानों मोमिन मर्दों और औरतों के लिये मुआफी की दुआ करो ताकि अल्लाह उन्हें मुआफ करे।

नबिये पाक की जिन्दगी इन्सानियत में इन्साने कामिल का एक नुमूना है और उन को तौबा और इस्तिगफार का हुक्म दे कर अस्ल में दूसरों के लिये एक मिसाल काइम करना है ताकि दूसरे इन्सान रसूले पाक की पैरवी में अल्लाह से गुनाहों पर तौबा करें। और दुन्या के किसी बडे से बडे फाजिल, आबिद, आलिम, सूफी, पीर और शैखे तरीकत के दिल में येह खयाल तक पैदा न हो सके कि इबादत और इताअत का जो हक था उस ने अदा कर दिया है। और वोह अपने दिल में उस पर फख्र और गुरूर करे बल्कि अल्लाह तआला के करीब ख्वाह कितना ही क्यूं न हो वोह आजिजाना अन्दाज में रहे।

[6] सूरहे नस्र में फरमाया गया है कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा में दीने इस्लाम की जब तक्मील हुई और इस्लामी जाबितए हयात के अहकामात हर लिहाज से पूरे हो गए तो अल्लाह तआला ने दीने इस्लाम को गालिब कर दिया और उस वक्त लोग अल्लाह की मदद और नुस्रत से फौज दर फौज दीने इस्लाम में दाखिल हुए तो अल्लाह तआला ने नबिये पाक को इर्शाद फरमाया कि ऐ नबी ! अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करो और उस से मग्फिरत की दुआ मांगो, बेशक वोह बडा तौबा कुबूल करने वाला है। यहां पर भी खिताब अगर्चे बराहे रास्त रसूले पाक को है। लेकिन हर मुसलमान के लिये पैगाम है कि वोह इस्लाम को अमली तौर पर खुद अपनाए और फिर दूसरों को इस्लाम पर अमल पैरा होने की तल्कीन करे।

नेकियों पर अमल पैरा होने के बावुजूद अगर कोई खता हो जाए तो उस पर तौबा करे क्यूं कि इन्सान से खता का सरजद हो जाना बईद अज कयास नहीं, **इन्सान ने इस्लाम के लिये ख्वाह कितनी कुरबानियां दी हों, इस्लाम पर अमल पैरा होने में कितनी जांफिशानी से मेहनत की हो मगर उस के दिल में कभी भी खयाल पैदा नहीं होना चाहिये कि उस ने जो कुछ सर अन्जाम दिया है वोह बे-ऐब है** बल्कि उस की बे-ऐबी तो सिर्फ अल्लाह की जात को मा'लूम है और उसे अल्लाह से

दुआ मांगना चाहिये कि जो खिदमत उस ने सर अन्जाम दी है उस को अल्लाह तआला कुबूल करे और मेरी कोताहियों को मुआफ कर दे।

एक और मौकअ पर सूरए आले इमरान में रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया है कि उस से दर गुजर करो और उन के लिये इस्तिगफार करो, यहां पर रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया है कि उन के लिये या'नी मोमिनीन के लिये खास कर सहाबए किराम के लिये दुआ करें। रसूले पाक खुदा की रहमत के बाइस इन्तिहाई नर्म दिल और अपने सहाबा से और दूसरे इन्सानों से बडी शफ्कत और प्यार से पेश आते थे। चुनान्चे अल्लाह तआला ने आप को फरमाया है कि अगर उन से गलती हो जाए तो उसे दर गुजर करते हुए उन के हक में इस्तिगफार किया करें।

अहादीस और हुक्मे इस्तिगफार

अहादीस में भी इस्तिगफार की बहुत ताकीद की गई है क्यूं कि नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब जाते खुद कसरत से इस्तिगफार किया करते थे और येही रास्ता आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के लिये पसन्द फरमाया। जिन अहादीस में इस्तिगफार की तरगीब दी गई है वोह हस्बे जैल हैं।

﴾1﴿ दिल की सियाही का इलाज ब जरीअए इस्तिगफार

गुनाह इन्सान के दिल पर सियाह दाग पैदा करता है हत्ता कि जब गुनाह जियादा हो जाते हैं तो सारा दिल सियाह हो जाता है उस सियाही का इलाज नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिगफार तज्वीज फरमाया।

وَعَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْمُؤْمِنَ اِذَا اَذْنَبَ كَانَتْ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فِیْ

हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया, कि बिलाशुबा जब मोमिन बन्दा गुनाह करता है तो उस के

قَلْبِهٖ فَاِنْ تَابَ وَاسْتَغْفَرَ صُقِلَ قَلْبُهٗ وَاِنْ زَادَ زَادَتْ حَتّٰى تَعْلُوَ قَلْبَهٗ فَذٰلِكُمُ الرَّانُ الَّذِىْ ذَكَرَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى: كَلَّا بَلْ، رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۞

दिल पर सियाह दाग लग जाता है पस अगर तौबा व इस्तिगफार कर ले तो उस का दिल साफ हो जाता है और अगर गुनाह जियादा करे तो येह सियाह दाग बढता जाएगा यहां तक कि उस के दिल पर छा जाएगा, येही वोह जंग है जिस के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि उन के आ'माल ने उन के दिलों पर जंग लगा दिया। (तिरमिजी)

हजरते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत से मा'लूम हुवा कि गुनाहों की वज्ह से दिल सियाही में घिर जाता है और उस सियाही को दूर करने के लिये हुजूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिगफार को तज्वीज फरमाया, दिल की सफाई और पाकीजगी के लिये इस्तिगफार नुस्खए कीमिया है दिल को गुनाहों की आलाइश से साफ करना जरूरी है लिहाजा अगर कभी गुनाह हो जाए तो फौरन तौबा व इस्तिगफार करना चाहिये। जो लोग तौबा व इस्तिगफार की तरफ मुतवज्जेह नहीं होते, गुनाहों की वज्ह से उन के दिल में नेकी बदी का एहसास तक नहीं रहता। और उस से एहसास का खत्म हो जाना बद बख्ती की अलामत है।

बुरी मेहफिल इन्सान के दिल पर बुरे अस्रात का तअस्सुर डालती है। खास कर फासिकों और फाजिरों के पास उठना बैठना दिल की खराबी का बाइस है, लिहाजा बुरे मजमूओं से गुरैज करें अगर सफर वगैरा में कहीं उन के साथ बैठना उठना पड जाए तो इस्तिगफार करते रहें। और उन से जुदा होने के बा'द भी इस्तिगफार जारी रखें ताकि दिल पर जो गलत अस्रात हुए हों वोह जाइल हो जाएं। बुजुर्गों की मज्लिस से इन्सान मुतअस्सिर हो कर हमेशा नेकियों की तरफ माइल होता है। इस लिये हमेशा अच्छी सोहबत इख्तियार करने की कोशिश करनी चाहिये।

﴾2﴿ इस्तिगफार से दिल की सफाई

इस्तिगफार से दिल की सफाई होती है नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के मुतअल्लिक यूं फरमाया है :

وَعَنِ الْاَغَرِّ الْمُزَنِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّهٗ لَيُغَانُ عَلٰى قَلْبِيْ وَاِنِّيْ لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ فِي الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ ؕ

हजरते अगिर्रि अल मुजनी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि बिलाशुबा मेरे दिल पर लबगान आ जाता है और बिलाशुबा मैं जरूर अल्लाह तआला से रोजाना सो मरतबा इस्तिगफार करता हूं। (मुस्लिम)

इस हदीसे पाक से मा'लूम होता है कि नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम हो कर सो मरतबा इस्तिगफार पढा करते थे ताकि आप की उम्मत आप की इत्तिबाअ में अल्लाह के हुजूर अपने गुनाहों पर इस्तिगफार करती रहा करे क्यूं कि दुन्यवी जिम्मे दारियों में मस्रूफ होने की वज्ह से दिल की तवज्जोह अल्लाह की तरफ से हट जाती है। लेकिन इस्तिगफार पढने से इन्सान अल्लाह की तरफ रागिब रहता है और येही रगबत हमें गुनाहों से बचाती है इस लिये हर शख्स को तौबा व इस्तिगफार की जरूरत है लिहाजा हमें रोजाना कसरत से तौबा इस्तिगफार पढते रहना चाहिये।

आप का इस्तिगफार उम्मत के लिये था इस लिये उम्मत को भी चाहिये कि इस्तिगफार करती रहे इसी तरह एक और हदीस में आप ने इस्तिगफार की यूं तरगीब दी है।

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهِ اِنِّيْ لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ اَكْثَرَ مِنْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً ؕ

हजरते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : अल्लाह की कसम ! मैं दिन में सो बार से जियादा इस्तिगफार करता हूं। (बुखारी)

﴾3﴿ नामए आ'माल में कसरते इस्तिगफार पाना

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिगफार की तरगीब इस तरह भी दी है कि कियामत के रोज जो अपने आ'माल नामे में इस्तिगफार की कसरत पाएगा, वोह बहुत खुश किस्मत होगा। ताकि लोग उस खुश किस्मती को मद्दे नजर रखते हुए इस्तिगफार की तरफ मुतवज्जेह हों।

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طُوْبٰى لِمَنْ وَجَدَ فِيْ صَحِيْفَتِهِ اِسْتِغْفَارًا كَثِيْرًا ؕ

हजरते अब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि उस के लिये बहुत बेहतर है जो कियामत के दिन अपने आ'माल नामे में कसीर इस्तिगफार पाए। (इब्ने माजा)

इस हदीस में कसरत से इस्तिगफार करने की तरगीब येह बात बयान करते हुए दी गई है कि कियामत के रोज जो शख्स अपने आ'माल नामे में कसरते इस्तिगफार लिखा हुवा पाए तो उस के लिये बेहतरी की खुश खबरी है क्यूं कि उस के बाइस उसे नजात हासिल होगी और वोह राहत पाने का हकदार है और येह राहत सिर्फ कसरते इस्तिगफार से हासिल होगी। क्यूं कि इस्तिगफार से गुनाह भी मुआफ हो गए और आ'माल नामे में नेकियों की भी जियादती हो गई इस लिये नेक और सालिहीन हमेशा कसरत से इस्तिगफार करते हैं और अपने पास बैठने वालों को भी कसरते इस्तिगफार की तरगीब देते रहते हैं ताकि कियामत के रोज जब आ'माल नामा पेश हो तो उस में कसरते इस्तिगफार हो।

﴾4﴿ इस्लाहे जबान के लिये इस्तिगफार

नादान हैं वोह लोग जो अपने घर वालों या'नी मां बाप, बहन भाई और अपनी बीबियों से फोहश कलामी के साथ पेश आते हैं, ना रवा सुलूक में ना जेबा अल्फाज इस्ति'माल करते हैं। दूसरों की दिल आजारी से इन्सान ख्वाह-म-खवाह गुनाह मौल लेता है इस लिये रसूले अकरम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि जिस शख्स की तबीअत में शिद्दत हो तो अपनी तबीअत को ए'तिदाल पर रखने के लिये वोह अल्लाह के हुजूर कसरत से इस्तिगफार करता रहे। इस से जबान की इस्लाह होगी और तबीअत नेकियों की तरफ माइल रहेगी लिहाजा मेरे दोस्त! तू भी इत्तिबाए रिसालत में सो मरतबा रोजाना इस्तिगफार पढा कर फिर देख खुदा की रहमत तुझ पर कैसे महेरबान होती है क्यूं कि इस्लाह के लिये इस्तिगफार पढने के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है

وَعَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ كُنْتُ ذَرِبَ اللِّسَانِ عَلٰى اَهْلِيْ قُلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ خَشِيْتُ اَنْ يُّدْخِلَ لِسَانِي النَّارَ قَالَ اَيْنَ اَنْتَ مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ اِنِّيْ لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ فِي الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ ٭

हजरते हुजैफा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बयान फरमाया कि मैं अपने घर वालों के साथ फोहश कलामी के साथ पेश आता था। मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! डर है कि मेरी जबान मुझे दोजख में दाखिल न कर दे आप ने फरमाया तुम इस्तिगफार से क्यूं दूर हो? मैं रोजाना सो मरतबा अल्लाह से इस्तिगफार करता हूं।

﴾5﴿ इस्तिगफार की कसरत का अज्रे अजीम

कसरत से इस्तिगफार का बहुत अज्र है और उस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है :

وَعَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ حَافِظَيْنِ يَرْفَعَانِ اِلَى اللّٰهِ فِيْ يَوْمٍ فَيَرٰى تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِيْ اَوَّلِ الصَّحِيْفَةِ اسْتِغْفَارًا وَ فِيْ اٰخِرِهَا اسْتِغْفَارًا اِلَّا قَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى قَدْ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ مَا بَيْنَ طَرَفَيِ الصَّحِيْفَةِ ـ

हजरते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि मुहाफिज फिरिश्ते अल्लाह के हुजूर जब किसी का ऐसा आ'माल नामा पेश करें जिस के अव्वलो आखिर इस्तिगफार लिखा हुवा हो तो उस पर इर्शादे बारी तआला होता है कि मैं ने बन्दे का वोह सब कुछ बख्श दिया जो इस आ'माल नामे के अव्वलो आखिर के दरमियान है। (बज्जाज)

इस हदीस में इस्तिगफार के अज्रे अजीम का जिक्र किया गया है। याद रहे कि दो मुहाफिज फिरिश्ते इन्सान का आ'माल नामा लिखने के लिये मुकर्रर हैं जो नमाजे फज्र और नमाजे अस्र में बदलते हैं। रात की ड्यूटी वाले फज्र के वक्त चले जाते हैं और दिन वाले आ जाते हैं और अस्र के वक्त दिन वाले फिरिश्ते चले जाते हैं और रात वाले आ जाते हैं। येह आने और जाने वाले फिरिश्ते अपने मुकर्रर वक्त पर बारगाहे इलाही में बन्दों के आ'माल नामे पेश करते हैं तो उन में बा'ज ऐसे आ'माल नामे भी होते हैं जो इस्तिगफार से शुरूअ होते और इस्तिगफार पर खत्म होते हैं और ऐसा आ'माल नामा उस शख्स का होगा जो सुब्ह शाम इस्तिगफार करता हो तो उस पर अल्लाह का हुक्म होगा कि जिस आ'माल नामे की इब्तिदा और इन्तिहा इस्तिगफार से है उस की बख्शिश की जाती है ख्वाह उस इस्तिगफार के दरमियान चन्द एक गुनाह ही क्यूं न हों। क्यूं कि दिन के आगाज और इख्तिताम पर अल्लाह से मुआफी तलब करने से गुनाह खत्म हो जाते हैं।

लिहाजा इस हदीस से हमें येह सबक मिलता है कि जब हम दिन का आगाज करें तो इस्तिगफार कर लें और अस्र के वक्त नमाज के बा'द इस्तिगफार पढें ताकि हमारे आ'माल नामे की इब्तिदा व इन्तिहा इस्तिगफार से हो और येह बख्शिश का कितना बडा अज्रे अजीम है जो इस्तिगफार के बाइस इन्सान को मिलता है।

﴾6﴿ इस्तिगफार और मुश्किलात का हल

इस्तिगफार तंगी और दुखों का इलाज भी है और उस से रोजी के मिलने में आसानी पैदा होती है। क्यूं कि इस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है।

وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ لَزِمَ الْاِسْتِغْفَارَ

हजरते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुजूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स इस्तिगफार को अपने ऊपर लाजिम कर ले अल्लाह

يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهٗ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا وَّرَزَقَهٗ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۔

तआला उस के लिये हर दुश्वारी से छुटकारा हासिल करने का जरीआ बना देगा और हर दुख से नजात देगा और उस को ऐसी जगह से रिज्क देगा जहां से उस को गुमान भी न होगा। (अबू दावूद)

इस दुन्या में राहत और खुशी के साथ साथ गम और तफक्कुरात भी हैं और खास कर जूं जूं कुर्बे कियामत का दौर आ रहा है, मुश्किलात और मसाइब में इजाफा होता जा रहा है किसी को फिक्रे मआश है तो किसी को रिहाइश का मस्अला दर पेश है अगर किसी की गुजर औकात आसानी से हो रही है तो उसे बीमारी घेरे बैठी है, गोया हर शख्स किसी न किसी मस्अले में फंसा हुवा है और सुकूने कल्ब हासिल नहीं तो इन दुश्वारियों से नजात और सुकूने कल्ब के लिये अल्लाह तआला ने एक आसान सा नुस्खा तज्वीज किया वोह है इस्तिगफार, लिहाजा जो शख्स इस्तिगफार पढे उस की हर मुश्किल हल हो जाएगी। इस के लिये ऐसे जराएअ मआश बन जाएंगे जिन के बारे में वोह सोच भी नहीं सकता।

इस से साबित हुवा कि कसरते इस्तिगफार में कितने फवाइद हैं। हर दुश्वारी का दूर हो जाना हर फिक्र का काफूर हो जाना और ऐसी जगह से रिज्क मिलना जहां से रिज्क मिलने का धियान भी न हो अल्लाह की कितनी बडी ने'मतें हैं। लोग दुश्वारियों के खत्म होने और तफक्कुरात से नजात पाने और रिज्क हासिल होने के लिये क्या क्या जतन करते हैं लेकिन इस्तिगफार में नहीं लगते, जो बहुत आसान नुस्खा है जिस के इस्ति'माल से कामयाबी यकीनी है, अल्लाह तआला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वा'दा है कि इस्तिगफार में लगने से बन्दा अजीम मनाफेअ व फवाइद से माला माल हो जाएगा।

﴾7﴿ इस्रारे गुनाहों से बचने के लिये इस्तिगफार

जिस शख्स से बार बार एक ही तरह का गुनाह सरजद हो जाता हो तो उसे उस से बचने के लिये इस्तिगफार का रास्ता इख्तियार करना चाहये।

हजरते अबू बक्र सद्दीक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स इस्तिगफार करता रहे वोह उन लोगों में शुमार नहीं है जो गुनाहों पर इस्रार करने वाले हैं अगर्चे एक दिन में सत्तर मरतबा गुनाह हो जाएं। (अबू दावूद)

وَعَنْ اَبِیْ بَکْرِ نِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا اَصَرَّ مَنِ اسْتَغْفَرَ وَاِنْ عَادَ فِی الْیَوْمِ سَبْعِیْنَ مَرَّۃً ۔

बा'ज गुनाह ऐसे हैं जो इन्सान से भूले में हो जाते हैं लेकिन यूं भी देखा गया है कि बा'ज हजरात बार बार गुनाह करते हैं मसलन फिल्म देखना गुनाह है लेकिन इस के बावुजूद लोग उसे गुनाह तसव्वुर न करते हुए बार बार देखते हैं इस तरह गुनाहों का इस्रार इन्सान की आकिबत खराब करता है और बार बार गुनाह बगावत और सरकशी की अलामत है इस लिये बार बार गुनाहों से बचने के लिये इस्तिगफार बहुत अच्छा है।

﴾8﴿ अजाबे इलाही से बचाव का जरीआ

इस्तिगफार अजाबे इलाही से भी बचाव का जरीआ है इस के मुतअल्लिक रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया है :

हजरते अबू मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझ पर मेरी उम्मत के लिये दो अमानें नाजिल फरमाई हैं कि जिन का इस आयत में जिक्र है

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ
وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۔

पस जब मैं दुन्या से पर्दा कर जाऊंगा (तो एक अमान उठ जाएगी और दूसरी अमान) या'नी इस्तिगफार कियामत तक के लिये अपनी उम्मत के अन्दर छोड जाऊंगा। (तिरमिजी)

وَعَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنْزَلَ اللّٰہُ عَلَیَّ اَمَانَیْنِ لِاُمَّتِیْ ۔ وَمَا کَانَ اللّٰہُ لِیُعَذِّبَہُمْ وَاَنْتَ فِیْہِمْ وَمَا کَانَ اللّٰہُ مُعَذِّبَہُمْ وَھُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ۔ فَاِذَا مَضَیْتُ تَرَکْتُ فِیْہِمُ الْاِسْتِغْفَارَ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ ۔

बयान किया जाता है कि एक मरतबा अबू जह्ल ने अल्लाह तआला से येह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह ! अगर तेरा कुरआन वाकेई तेरी तरफ से है तो हम पर उस के न मानने की वज्ह से आस्मान से पथ्थर बरसा दे या हम पर कोई दर्दनाक अजाब वाकेअ कर दे इस पर अल्लाह की तरफ येह आयत नाजिल हुई ।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ۝

और अल्लाह तआला ऐसा न करेगा कि उन के अन्दर आप के मौजूद होते हुए उन को अजाब दे और अल्लाह तआला उन को अजाब न देगा जिस हालत में कि वोह इस्तिगफार करते रहते हैं ।

(पारह 9, सूरए अन्फाल, आयत : 33)

आयते शरीफा से मा'लूम हुवा कि हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ फरमा होते हुए अल्लाह तआला दुन्या में अजाब न भेजेगा, और इस्तिगफार करने वालों को भी अजाब न देगा । लिहाजा इस हदीस में अजाबे दुन्यावी से महफूज रहने के लिये दो चीजें इर्शाद फरमाईं । एक गैर इख्तियारी या'नी हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इसी दुन्या में तशरीफ फरमा होना, येह अम्र बन्दों के इख्तियार में नहीं । जब अल्लाह ने चाहा अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुला लिया । दूसरी इख्तियारी या'नी इस्तिगफार करते रहना । हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआला ने वफात दे कर उठा लिया जिस की वज्ह से अमान का एक जरीआ जाता रहा और दूसरा जरीआ बाकी है जो अपने इख्तियार में है या'नी इस्तिगफार करते रहें और अजाब से बचते रहें ।

हदीसे बाला में हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येही इर्शाद नक्ल किया गया है कि अल्लाह तआला ने दो अमानें नाजिल फरमाईं । जिन में से एक आप का वुजूदे गिरामी है और दूसरा इस्तिगफार है आप के तशरीफ ले जाने के बा'द कियामत तक के लिये उम्मत के लिये एक अमान या'नी इस्तिगफार बाकी है ।

अहले मक्का मुश्रिक थे, अबू जह्ल उन का सरदार था । उस ने पथ्थर बरसने या दर्दनाक अजाब आने की दुआ मांगी थी, अल्लाह

तआला ने येह गवारा न फरमाया कि अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के होते हुए और इस्तिगफार में मश्गूल होते हुए उन पर अजाब भेजे। हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत से पहले उन के अन्दर मौजूद थे येह तो जाहिर ही है और इस्तिगफार का मतलब येह है कि वोह लोग जमानए शिर्क में जो हज करते थे उस में गुफ्रानक गुफ्रानक कहते जाते थे येह अल्फाज तलबे मग्फिरत के लिये बोले जाते थे। जब मुश्रिको को अमान दी गई कि जब तक इस्तिगफार करते रहेंगे अजाबे दुन्या में मुब्तला न होंगे तो मोमिनीन ब तरीके औला इस्तिगफार की वज्ह से अजाबे दुन्या से महफूज रहेंगे।

﴾9﴿ हर गुनाह की मग्फिरत के लिये इस्तिगफार

وَعَنْ أُمِّ عِصْمَةَ الْعَوْصِيَّةِ رَضِيَ اللهُ
عَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى
اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ مُسْلِمٍ
يَعْمَلُ ذَنْبًا إِلَّا وَقَفَ الْمَلَكُ
ثَلٰثَ سَاعَاتٍ فَإِنِ اسْتَغْفَرَ مِنْ
ذَنْبِهٖ لَمْ يَكْتُبْهُ عَلَيْهِ وَلَمْ
يُعَذِّبْهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

हजरते उम्मे अस्मा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जो भी कोई मुसलमान गुनाह करता है तो आ'माल लिखने वाला फिरिश्ता तीन घडी इन्तिजार करता है पस अगर इस्तिगफार कर लिया तो वोह गुनाह उस के आ'माल नामे में नहीं लिखता और उस पर अल्लाह तआला उस को कियामत के दिन अजाब न देगा। (मुस्तदरक हाकिम)

अल्लाह चाहता है कि उस के बन्दे ब जरीए इस्तिगफार गुनाहों से बचें। इस लिये जो शख्स गुनाह सरजद होने के बा'द फौरन एहसासे नदामत के तहत तौबा और इस्तिगफार करने लगता है तो वोह गुनाह फौरन मुआफ हो जाता है बल्कि वोह फिरिश्ते जो इन्सान का आ'माल नामा लिखते हैं उन्हें हुक्म है कि इन्सान से गुनाह सरजद हो जाने के बा'द कुछ देर तवक्कुफ करो ताकि बन्दा अपने गुनाह पर मुआफी मांगले। अगर गुनाह करने वाला इस्तिगफार कर ले तो वोह फिरिश्ता उस गुनाह को नहीं लिखता। न फिरिश्ता लिखेगा न कियामत में उस गुनाह की पेशी होगी न

उस पर अजाब होगा। अल्लाह तआला की कितनी बडी महेरबानी है। एक नेकी की कम अज कम दस गिनती लिखी जाती है और गुनाह हो जाए तो अव्वल तो फिरिश्ता लिखने में देर लगाता है, बन्दे के इस्तिगफार का इन्तिजार करता है अगर इस्तिगफार कर लिया तो उस का लिखा जाना ही खत्म हुवा और अगर इस्तिगफार न किया तो एक गुनाह एक ही लिखा जाता है। फिर सगीरा गुनाह हसनात के जरीए मुआफ होते रहते हैं और कबीरा गुनाहों से तौबा करने के लिये हर वक्त रहमते हक का दरवाजा खुला हुवा है, अल्लाह बडा हलीमो करीम और सत्तारो गफ्फार है। उस की शाने करीमी को जानते हुए भी कोई शख्स गुनाह की मग्फिरत कराए बिगैर मर जाए तो बडे खसारे की बात है।

﴾10﴿ इस्तिगफार करने वालों में से होने की ख्वाहिश करना

इस्तिगफार करना खुश बख्ती की दलील है लिहाजा ऐसे लोग जो इस्तिगफार करते रहते हैं वोह अल्लाह के हुजूर बहुत पसन्दीदा लोगों में से हो जाते हैं। चुनान्चे ऐसे लोगों की रफाकत की ख्वाहिश करना बहुत अच्छा है इस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया :

وَعَنْ عَائِشَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ الَّذِيْنَ اِذَا اَحْسَنُوا اسْتَبْشَرُوْا وَاِذَا اَسَاءُوا اسْتَغْفَرُوْا ؕ

हजरते आइशा से रिवायत है कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फरमाते थे ऐ अल्लाह ! मुझे उन लोगों में से कर, कि जो नेकी करें खुश हों और जब बुराई करें इस्तिगफार करें। (इब्ने माजा)

तौबा व इस्तिगफार की दुआएं

कुरआने पाक में तौबा व इस्तिगफार के मुतअल्लिक हस्बे जैल दुआएं बयान हुई हैं ..।

﴾1﴿ हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और हजरते हव्वा को जब जन्नत से इस जमीन पर उतार दिया गया तो उन्हों ने अपने किये पर अल्लाह के हुजूर

मुआफी और मग्फिरत तलब की और कसरत से इस दुआ का विर्द किया तो इस पर अल्लाह तआला ने उन की तौबा कुबूल फरमाई, लिहाजा आज भी अगर कोई शख्स अपनी गलती पर नादिम हो कर इस दुआ को कसरत से पढे तो उस की खताएं मुआफ हो जाएंगी, लिहाजा हर नमाज के बा'द इस दुआ को एक मरतबा या तीन मरतबा पढना भी बहुत ही सूद मन्द है।

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ۝

ऐ हमारे परवर दिगार ! हम ने अपने आप पर जियादती की है और अगर तू हमारी मग्फिरत न करे और हम पर रहम न फरमाए तो वाकेई हम खसारा वालों में हो जाएंगे। (पारह 8, सूरए आ'राफ, आयत : 23)

﴾2﴿ हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की दुआए इस्तिगफार

हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कौम जब बुत परस्ती से बा'ज न आई तो उस पर हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह के हुजूर उन जालिमों की बरबादी की इल्तिजा की और उस के साथ ही उन्हों ने अपने लिये और अल्लाह पर ईमान लाने वालों के हक में बख्शिश और मग्फिरत की दुआ की ताकि अल्लाह तआला मोमिन मर्दों और औरतों को अपनी पनाह में रखे, लिहाजा मग्फिरत और बख्शिश के लिये येह दुआ भी बडी अक्सीर है।

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا تَبَارًا۠

ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे वालिदैन को और जो शख्स मेरे घर में ब हालते ईमान दाखिल हो उस को और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को बख्श दे और जालिमों की बरबादी और बढा दे। (पारह 29, सूरए नूह, आयत : 28)

﴾3﴿ हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने यौमे हिसाब को अपनी और अपने अहले ईमान की बख्शिश के लिये मुन्दरजए जैल दुआ की है। लिहाजा जो शख्स रोजे कियामत में बख्शिश के लिये येह दुआ पढे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की बख्शिश होगी।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ

ऐ हमारे रब ! मुझे और मेरे वालिदैन को, और अहले ईमान को जिस दिन हिसाब होगा बख्श दे । (पारह 13, सूरए इब्राहीम, आयत : 41)

का'बे की ता'मीर करते हुए हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह के हुजूर, येह दुआ की । इस दुआ के पढने से इन्सान को तौबा की तौफीक हासिल हो जाती है लिहाजा नमाज के बा'द इस को एक बार पढना बेहतर है।

وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

और हम को हमारे हज के अहकाम बता और हमारी तौबा कुबूल फरमा । तू ही बडा दर गुजर करने वाला महेरबान है ।

(पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 128)

﴾4﴿ हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने भाइयों की मग्फिरत के लिये येह दुआ की, लिहाजा रिश्तेदारों और दूसरों की मग्फिरत के लिये येह दुआ पढनी चाहये । يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ अल्लाह तुम्हारी मग्फिरत फरमाए और वोह सब रहम करने वालों से बढ कर रहम फरमाने वाला है । (पारह 13, सूरए यूसुफ, आयत : 92)

﴾5﴿ हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तौबा, और मग्फिरत के लिये मुख्तलिफ औकात में हस्बे जैल दुआएं कीं । इन को पढने से बख्शिश और रहमत हासिल होती है

﴾1﴿ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ तू हमारा कारसाज है। पस हम को बख्श दे और हम पर रहम फरमा और तू सब बख्शने वालों से बेहतर बख्शने वाला है । (पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 155)

﴾2﴿ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ऐ मेरे रब ! मैं ने अपने नफ्स पर जुल्म किया पस तू मुझे बख्श दे । (पारह 20, सूरए कसस, आयत : 16)

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿3﴾

ऐ मेरे परवर दिगार ! मुझे और मेरे भाई को मुआफ कर दे और हम को अपनी रहमत में दाखिल फरमा ले और तू सब से जियादा रहम फरमाने वाला है। (पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 151)

﴿6﴾ हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने मछली के पेट में येह दुआ पढी। येह दुआ इस्तिगफार और तौबा के लिये बहुत मुअस्सिर है जो शख्स येह आयते करीमा सवा लाख मरतबा पढे तो उस के सारे गुनाह मुआफ हो जाते हैं ख्वाह वोह रेत के जर्रों के बराबर ही क्यूं न हों। اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू पाक है। बेशक मैं ही जियादती करने वालों से हूं। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 87)

﴿7﴾ मुतफर्रिक दुआएं

इस्तिगफार की मुतफर्रिक दुआएं हस्बे जैल हैं जो कुरआने मजीद में मजकूर हैं।

﴿1﴾ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ऐ मेरे परवर दिगार ! बख्श दे और रहम फरमा और तू ही सब से बेहतर रहम करने वाला है।

(पारह 18, सूरए मुमिनून, आयत : 118)

﴿2﴾ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ

ऐ हमारे रब ! हर चीज का तेरा रहम और तेरा इल्म इहाता किये हुए है पस जो तेरी राह पर चले उन को दोजख के अजाब से बचा।

(पारह 24, सूरए मुमिन, आयत : 7)

﴿3﴾ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ हम ने सुन लिया और मान लिया ऐ हमारे परवर दिगार ! हम तुझ से बख्शिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ लौट कर जाना है। (पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 285)

﴿4﴾ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٝ وَاغْفِرْ لَنَا ٝ وَارْحَمْنَا ٝ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

ऐ हमारे परवर दिगार ! न पकड हम को अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं, ऐ हमारे रब न रख हम पर भारी बोझ जैसा कि रखा तूने उन पर जो हम से पहले हुए। ऐ रब हमारे और न उठवा हम से वोह चीज कि नहीं ताकत हम को उस के उठाने की। और दर गुजर फरमा हम से और बख्श दे हम को और रहम फरमा हम पर। तू ही हमारा मालिक है। पस काफिरों की कौम पर हमारी मदद कर। (पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 286)

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿5﴾

ऐ हमारे रब ! हमें बख्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए हैं और हमारे दिल में ईमान लाने वालों की तरफ से कदुरत न रख ऐ हमारे रब ! बेशक तू बहुत महेरबान निहायत रहम वाला है। (पारह 28, सूरए हश्र, आयत : 10)

﴿6﴾ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ऐ हमारे रब ! कामिल कर दे हमारे लिये हमारा नूर, और बख्श दे हम को। बिलाशुबा तू हर चीज पर कादिर है। (पारह 28, सूरए तहरीम आयत : 8)

﴿7﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को और हमारे कामों में हद से बढ जाने को बख्श दे और हमारे कदमों को जमा दे और काफिरों के मुकाबले में हमारी मदद फरमा। (पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 147)

﴿8﴾ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ऐ हमारे रब ! बेशक हम ईमान लाए, तू हमारे गुनाह मुआफ कर दे और हम को दोजख के अजाब से महफूज फरमा। (पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 16)

﴿9﴾ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ऐ हमारे रब ! बेशक हम ने सुना एक पुकारने वाले से जो निदा दे रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। सो हम ईमान ले आए। पस तू हमारे गुनाहों को बख्श दे और हमारी बुराइयों को फरामोश कर दे। और हम को नेक बन्दों में शामिल कर के मौत देना। (पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत : 193)

﴾10﴿ إِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا बेशक हम अपने परवर दिगार पर ईमान लाए ताकि वोह हमारी खताएं मुआफ कर दे। (पारह 16, सूरए ताहा, आयत : 73)

﴾11﴿ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ऐ अल्लाह ! तू पाक है। मैं तेरे हुजूर तौबा करता हूं और मैं सब से पहला ईमान लाने वाला हूं।

(पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 143)

﴾12﴿ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ बेशक हम ही खतावार हैं। हमारा परवर दिगार पाक है। (पारह 29, सूरए कलम, आयत : 29)

﴾13﴿ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

अगर तू इन्हें अजाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें मुआफ कर दे तो बेशक तू जबरदस्त हिक्मत वाला है।

(पारह 7, सूरए माइदह, आयत : 118)

अहादीस और इस्तिगफार की दुआएं

इस्तिगफार के मुतअल्लिक अहादीसे मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुन्दरजा जैल हैं :

﴾1﴿ सय्यिदुल इस्तिगफार

सय्यिदुल इस्तिगफार का मतलब है सब से बडा इस्तिगफार इस इस्तिगफार के बारे में फरमाया गया है कि जो शख्स इस इस्तिगफार को एक मरतबा दिन या रात में यकीने कामिल के साथ पढले और अगर वोह उस दिन या रात में वफात पा जाए तो वोह जरूर जन्नती होगा। इस इस्तिगफार के मुतअल्लिक अल्लाह वालों का कहना है कि इस के विर्द इन्सानी तबीअत में खौफे खुदा पैदा होता है और दिल अल्लाह तआला की तरफ राजेअ होता है। जो शख्स इस इस्तिगफार का विर्द जियादा करे तो उस के गुनाह बिल्कुल मुआफ हो जाते हैं। लिहाजा हर इन्सान को चाहिये कि वोह हर नमाज के बा'द इसे एक मरतबा जरूर पढे। अक्सर बुजुर्ग इसे सुब्ह शाम पढते हैं।

हजरते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि सय्यिदुल इस्तिगफार यूं है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ
وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ
مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ
بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ
فَاغْفِرْلِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ ۔

ऐ अल्लाह ! तू मेरा परवर दिगार है। तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे अहद और तेरे वा'दे पर काइम हूं। जहां तक मुझ से हो सकेगा। मैं ने जो गुनाह किये उन के शर से तेरी पनाह चाहता हूं। मैं तेरी ने'मतों का इकरार करता हूं और अपने गुनाहों का भी इकरार करता हूं, लिहाजा मुझे बख्श दे क्यूं कि तेरे इलावा कोई गुनाहों को नहीं बख्श सकता। (बुखारी शरीफ)

﴾2﴿ कलिमए इस्तिगफार

इस्लाम के छे कलिमों में से पांचवें कलिमे को इस्तिगफार कहा जाता है जिस के कलिमात येह हैं :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْۢبٍ
اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ
عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ
الذَّنْۢبِ الَّذِيْۤ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْۢبِ
الَّذِيْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ
الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا
بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۔

मैं अल्लाह से बख्शिश तलब करता हूं जो मेरा रब है तमाम गुनाहों से। वोह गुनाह जो अमदन हों या खता से पोशीदा हों या जाहिर और उस की तरफ रुजूअ करता हूं उस गुनाह से कि मैं जानता हूं। और उस गुनाह से कि नहीं जानता मैं। तहकीक तू जानने वाला है गैबों का और छुपाने वाला हैं ऐबों का और गुनाहों का बख्शने वाला है न कोई ताकत और न कोई कुव्वत मगर साथ अल्लाह के है जो बुलन्द अजीम है।

﴾3﴿ रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा इस्तिगफार

हजरते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुजूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जिस ने येह अल्फाज पढे उस के तमाम गुनाह बख्श दिये जाएंगे अगर्चे मैदाने जिहाद से भागा हो।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ۔

मैं अल्लाह से बख्शिश मांगता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं है वोह जिन्दा और काइम रखने वाला है। और मैं उस के हुजूर तौबा करता हूं। (तिरमिजी शरीफ)

इस इस्तिगफार की इन्तिहाई फजीलत है और बयान किया जाता है कि सिदके दिल से अगर तीन या पांच मरतबा इस का विर्द कर के अल्लाह तआला से मग्फिरत तलब की जाए तो उस की मग्फिरत हो जाएगी।

दूसरी रिवायत में है कि अगर्चे उस के गुनाह समुन्दर की झाग के मानिन्द ही क्यूं न हों, अल्लाह का रास्ता तलाश करने के लिये इस इस्तिगफार का विर्द बहुत जरूरी है, इस को जितना कसरत से पढा जाएगा इतने ही जियादा असरार जाहिर होंगे और वोह शख्स अल्लाह के करीब होता जाएगा।

हर नमाज के बा'द इस इस्तिगफार को तीन मरतबा जरूर पढना चाहिये और अगर रात को सोते वक्त इस दुआ को तीन मरतबा पढा जाए तो बहुत उम्दा है। अगर कोई शख्स सवा लाख मरतबा रमजानुल मुबारक में इस का विर्द करे तो अल्लाह से जो मांगे सो पाए। इस इस्तिगफार को बा'द नमाजे फज्र ग्यारह सो 1100 मरतबा पढना इजाफए रिज्क का बाइस बनता है।

﴾4﴿ हजरते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की दुआए इस्तिगफार

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ

ऐ अल्लाह ! मैं ने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया और गुनाहों को सिर्फ तू ही बख्श सकता है लिहाजा तू मुझे अपनी

عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ط

मग्फिरत के जरीए बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा बेशक तू ही बख्श ने वाला महेरबान है। (मुस्लिम शरीफ)

येह दुआ हजरते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछी थी। और दुआ में येही ता'लीम दी गई है, अल्लाह के हुजूर अपने नफ्स पर जुल्म करने का इकरार करो और उस से बख्शिश और रहमत तलब करो क्यूं कि अल्लाह के सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख्श सकता। इस लिये इबादत के बा'द खास कर नमाज के बा'द येह दुआ मांगनी चाहिये ताकि वोह कोताहियां जो इन्सान से इबादत करते वक्त हो जाती हैं उन की मुआफी हो जाए।

﴾5﴿ हर मज्लिस में इस्तिगफार का हुक्म

وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ اِنْ كُنَّا لَنَعُدُّ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَجْلِسِ يَقُوْلُ رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ مِائَةَ مَرَّةٍ ط

हजरते इब्ने उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बयान फरमाया, कि बिलाशुबा हम हर मज्लिस में येह शुमार करते थे कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सो मरतबा येह अल्फाज अदा फरमाते हैं رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ (तिरमिजी, अबू दावूद)

हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से इस्तिगफार करते थे जिस का मुतअद्दद अहादीस में जिक्र है। आप तो मा'सूम थे फिर भी इस कदर इस्तिगफार की तरफ आप की तवज्जोह थी, कि जब कभी आप किसी मज्लिस में बैठते तो सो मरतबा मुन्दरजा बाला दुआ पढते। चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ से हमें येह सबक हासिल करना चाहिये कि जब हम किसी खास मेहफिल में जाएं तो सो मरतबा मुन्दरजा बाला दुआ पढें ताकि अल्लाह की पनाह में रहें और बुराइयों से बचे रहें।

﴾6﴿ नमाज के बा'द दुआए इस्तिगफार

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۔

ऐ अल्लाह ! तू सलाम है और तुझ ही से सलामती मिलती है तू बा बरकत ऐ जलाल और इकराम वाले । (मुस्लिम शरीफ)

इस हदीस से येह मा'लूम हुवा कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तरीके कार था के नमाज का सलाम फेर कर तीन बार इस्तिगफार पढते ताकि आने वाली उम्मत आप की इत्तिबाअ में नमाज के बा'द इस्तिगफार पढे इस के बा'द अल्लाह के हुजूर सलामती और बरकत की दुआ करते लिहाजा हमें भी नमाज के बा'द येहीं दुआ पढनी चाहिये ।

﴾7﴿ नमाजे तहज्जुद के वक्त का इस्तिगफार

नमाजे तहज्जुद के वक्त उठते हुए येह इस्तिगफार पढना चाहिये ।

﴾1﴿ اَنْتَ رَبُّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

ऐ अल्लाह ! तू हमारा परवर दिगार हैं और तेरी ही तरफ लौटना है । पस बख्श दे मेरे पिछले और अगले और पोशीदा और खुले गुनाह और वोह गुनाह जिन का तुझ को जियादा इल्म है । तू ही आगे बढाने वाला है और तू ही पिछे हटाने वाला है और तू ही मेरा मा'बूद है । तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । (मिश्कात शरीफ)

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَعَافِنِيْ ۔ ऐ अल्लाह ! मुझे बख्श दे और मुझ को हिदायत दे और मुझे रिज्के आफियत अता फरमा । (मिश्कात)

﴾8﴿ वुजू से पहले दुआए इस्तिगफार

वुजू शुरूअ करते वक्त बिस्मिल्लाह शरीफ पढ कर उस के बा'द येह दुआ पढनी चाहिये :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे घर में वुस्अत दे और मेरे रिज्क में बरकत अता फरमा। (मिश्कात शरीफ)

﴾9﴿ वुजू के बा'द दुआए इस्तिगफार

وَعَنْ اَبِيْ سَعِيْدِنِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ تَوَضَّأَ فَقَالَ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ كُتِبَ فِيْ رَقٍّ ثُمَّ جُعِلَ فِيْ طَابِعٍ فَلَمْ يُكْسَرْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

हजरते अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स वुजू कर के سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ पढ ले तो येह अल्फाज एक मुहर शुदा जर्फ में मेहफूज कर के अर्श के नीचे रख दिये जाएंगे फिर कियामत तक येह मुहर न तोडी जाएगी। (सुनने निसाई)

वुजू नमाज के लिये शर्ते अव्वल है क्यूं कि वुजू के बिगैर कोई नमाज नहीं होती और वुजू के बारे में अक्सर अहादीस में बयान हुवा है कि वुजू में आजा धोए जाते हैं उन के गुनाह मुआफ कर दिये जाते हैं। अगर्चे हर उज्व धोते वक्त दुआ पढनी चाहिये "लेकिन इस हदीस में इस बात की तल्कीन की गिई है कि वुजू के बा'द भी इस्तिगफार के लिये मुन्दरजा बाला दुआ पढनी चाहिये ताकि वुजू में अगर कोई कमी सुन्नत या मुस्तहब के खिलाफ हो गई हो तो इस्तिगफार से उस की तलाफी हो जाए।

﴾10﴿ मस्जिद में दाखिल होने का इस्तिगफार

मस्जिद में दाखिल होते वक्त येह इस्तिगफार पढनी चाहिये :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ऐ अल्लाह मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे।

﴾11﴿ मस्जिद से निकलते वक्त का इस्तिगफार

मस्जिद से बाहर निकते वक्त येह इस्तिगफार पढनी चाहिये।

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِکَ ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिये अपने फज्ल के दरवाजे खोल दे

﴾12﴿ कजाए हाजत के बा'द का इस्तिगफार

कजाए हाजत से फारिग हो कर इस्तिगफार के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है :

وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا قَالَتْ کَانَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذَا خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ قَالَ غُفْرَانَکَ ۔

हजरते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब बैतुल खला से बाहर आते थे तो गुफरानक कहते। (तिरमिजी)

कजाए हाजत के बा'द बैतुल खला से बाहर आ कर हुजूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफरानक कहते हैं या'नी अल्लाह तआला से मग्फिरत तलब करते थे।

﴾13﴿ अगले पिछले गुनाहों की मुआफी का इस्तिगफार

जो शख्स येह इस्तिगफार पढे उस के जाहिर और पोशीदा और अगले पिछले गुनाह मुआफ हो जाएंगे। हर रात को सोते वक्त ग्यारा मरतबा पढना चाहिये।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُکَ لِمَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۔

ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से उन सब गुनाहों की मग्फिरत चाहता हूं जो मैं ने पहले किये और बा'द में किये जो जाहिर में और पोशीदा तरीके पर किये। तू आगे बढाने वाला है और तू पिछे हटाने वाला है। और तू हर चीज पर कादिर है।

﴾14﴿ बख्शिश और तौबा

बख्शिश और तौबा के लिये बा'द नमाजे जोहर येह इस्तिगफार कसरत से पढना चाहिये :

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ

ऐ मेरे परवर दिगार ! मुझे बख्श दे और मेरी तौबा कुबूल कर। बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला है।

﴾15﴿ वुस्अते रहमत का इस्तिगफार

जो शख्स येह इस्तिगफार बा'द नमाजे जुमुआ एक सो ग्यारह मरतबा पढे वोह अल्लाह की रहमत और बख्शिश को बडा ही करीब पाएगा।

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ
مِنْ ذُنُوْبِیْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰی
عِنْدِیْ مِنْ عَمَلِیْ ؕ

ऐ अल्लाह ! तेरी मग्फिरत मेरे गुनाहों से बहुत जियादा वसीअ है और तेरी रहमत मेरे नज्दीक मेरे अमल से बढ कर उम्मीद वाली है।

﴾16﴿ नादानिस्ता गुनाहों से मुआफी

सुब्ह से शाम तक इन्सान कई गुनाह ऐसे कर जाता है जो इन्सान के तसव्वुर में भी नहीं होते कि वोह गुनाह हैं लिहाजा ऐसे गुनाहों की मुआफी के लिये बा'द नमाजे इशा इक्कीस 21 मरतबा येह इस्तिगफार पढना चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْٓئَتِیْ وَ
جَهْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْٓ اَمْرِیْ وَمَآ
اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ ؕ

ऐ अल्लाह ! मेरी खता और मेरी नादानी और मेरा अपने काम में हद से बढ जाना और वोह सब गुनाह बख्श दे जिन को तू मुझ से जियादा जानता है।

﴾17﴿ दिल की पाकीजगी के लिये

दिल को गुनाहों की आलूदगी से साफ करने के लिये बा'द नमाजे सुब्ह तीन मरतबा येह इस्तिगफार पढना चाहिये। इस के पढने से इन्सान का दिल ऐसे साफ हो जाता है जैसे सफेद कपडा होता है।

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ عَنِّيْ خَطَايَايَ
بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِيْ
مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ
الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ
بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا
بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ -

ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाहों को बरफ और ओलों के पानी से धो दे और मेरे दिल को गुनाहों से ऐसा साफ कर दे जैसे तूने सफेद कपडे को मेल से साफ फरमाया है और मेरे और मेरे गुनाहों के दरमियान इतना फासिला कर दे जितना फासिला तूने मश्रिक और मगरिब के दरमियान रखा है।

﴾18﴿ हंसी मजाक के गुनाहों से मुआफी का इस्तिगफार

बा'ज औकात इन्सान हंसी मजाक में ऐसे अफ्आल कर जाता है जो गुनाह होते हैं तो ऐसे गुनाहों की मुआफी के लिये अल्लाह के हुजूर शाम को रोजाना एक मरतबा येह इस्तिगफार पढ लेना चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ جِدِّيْ وَ
هَزْلِيْ وَخَطِيْئَتِيْ وَعَمَدِيْ
وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ ؛

ऐ अल्लाह ! जो गुनाह मुझ से सच मुच इरादे से सादिर हुए और जो हंसी से सादिर हुए और खताअन सादिर हुए और जो दानिस्ता तौर पर सादिर हुए, सब को बख्श दे और येह सब मुझ ही से सादिर हुवा।

﴾19﴿ गुमराह कुन फित्नों से बचने की दुआ

शैतान इन्सान को हर वक्त गुमराह करने पर कमरबस्ता है और हमेशा फित्ना और फसाद फेलाता है लिहाजा उस की गुमराह कुन हरकतों से बचने के लिये येह इस्तिगफार पढना चाहिये। इस से इन्सानी नफ्स का गुस्सा कम हो जाता है और उसे पढने वाला शैतानी फित्नों से मेहफूज हो जाता है।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ
اِغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ
قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُضِلَّاتِ
الْفِتَنِ مَا اَحْيَيْتَنَا ؛

ऐ अल्लाह ! नबिये करीम मुहम्मदे मुस्तफा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब ! मुझे बख्श दे और मेरे दिल से गुस्सा निकाल दे। और जब तक तू मुझे जिन्दा रखे गुमराह करने वाले फित्नों से मेहफूज फरमा।

﴾20﴿ बख्शिश और बरकते रिज्क का इस्तिगफार

अगर कोई येह चाहे कि उस के गुनाह मुआफ हो जाएं और उस के रिज्क में बरकत हो जाए तो वोह सो 100 मरतबा येह इस्तिगफार पढे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَ وَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ ۞

ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे (कब्र के) घर को वसीअ बना । और मेरे रिज्क में बरकत दे ।

﴾21﴿ बख्शिश और हुसूले जन्नत

अल्लाह से मग्फिरतो रहमत तलब करने के लिये कसरत से येह इस्तिगफार पढना चाहिये इसे कसरत से पढने वाला जन्नत में दाखिल होगा । اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَدْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ ۞ ऐ अल्लाह ! मेरी मग्फिरत फरमा दे और मुझ पर रहम फरमा और मुझे जन्नत में दाखिल फरमा ।

﴾22﴿ कुबूले तौबा की दुआ

अल्लाह के हुजूर सच्ची तौबा करने के बा'द येह दुआ पढनी चाहिये ताकि तौबा कुबूल हो जाए । رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِيْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِيْ وَاَجِبْ دَعْوَتِيْ ۞

ऐ मेरे रब ! मेरी तौबा कुबूल फरमा और मेरे गुनाहों को धो दे और मेरी दुआ कुबूल फरमा ।

﴾23﴿ अच्छे कामों में रहनुमाई तलब करना

हर काम में अल्लाह की रहनुमाई, और तौफीक हासिल करने के लिये काम शुरूअ करते वक्त एक मरतबा येह दुआ पढनी चाहिये ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِيْ وَاَسْتَهْدِيْكَ لِمَرَاشِدِ اَمْرِيْ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ فَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّيْ ۞

ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से अपने गुनाहों की मग्फिरत तलब करता हूं और अपने खैर के कामों में तेरी रहनुमाई तलब करता हूं और तेरे हुजूर तौबा करता हूं । लिहाजा मेरी तौबा कुबूल फरमा । बिलाशुबा तू ही मेरा रब है ।

﴾24﴿ मग्फिरत, रहमत, आफियत और हिदायत हासिल करने का इस्तिगफार

अल्लाह से मग्फिरत, रहमत, आफियत रिज्क और हिदायत हासिल करने के लिये येह इस्तिगफार पढना चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَ اهْدِنِيْ ؕ

ऐ अल्लाह ! मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा, मुझे आफियत दे और मुझे रिज्क अता फरमा और मुझे हिदायत पर काइम रख।

﴾25﴿ बेहतरीन दुआए मग्फिरत

गुनाहों की बख्शिश के लिये येह दुआ बहुत मुअस्सिर है जो शख्स इसे सोते वक्त एक मरतबा पढने का मा'मूल बना ले वोह हमेशा गुनाहों से पाकीजा रहेगा।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ؕ

ऐ अल्लाह ! मेरे सब गुनाह बख्श दे जो मैं ने पहले किये और जो बा'द में और जो मैं ने पोशीदा तौर पर किये और जो अलानिया तौर पर किये और जिन को तू मुझ से जियादा जानता है। तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं है।

﴾26﴿ सीधे रास्ते पर चलने की दुआ

अल्लाह तआला से सीधा रास्ता और हिदायत तलब करने के लिये येह दुआ पढनी चाहिये। जो शख्स गुमराही के रास्ते पर हो अगर वोह इस दुआ को सात मरतबा चालीस दिन तक बा'द नमाजे फज्र पढे तो उसे रास्ता मिल जाएगा।

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاهْدِنِي السَّبِيْلَ الْاَقْوَمْ ۞

ऐ परवर दिगार ! मुझे बख्श दे और रहम फरमा और मुझे सीधी राह पर चला ।

﴾27﴿ दोजख से नजात का इस्तिगफार

आखिरत में दोजख से नजात के लिये येह इस्तिगफार पढना चाहिये हर नमाज के बा'द उसे एक मरतबा पढने वाले की इबादत कुबूल होगी और आखिरत में जन्नत में दाखिल किया जाएगा ।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّا وَتَقَبَّلْ مِنَّا وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَاَصْلِحْ لَنَا شَاْنَنَا كُلَّهٗ ۞

ऐ अल्लाह ! हमारी मग्फिरत फरमा और हम पर रहम फरमा हम से राजी हो जा और हमारी इबादत कुबूल फरमा और हमें जन्नत में दाखिल फरमा और हमें दोजख से नजात दे और हमारा सब हाल दुरुस्त फरमा दे ।

8 मग्फिरत

गुनाहों का मुआफ या दर गुजर होना मग्फिरत कहलाता है। अल्लाह तआला गफूर और गफ्फार है वोही अपने बन्दों के गुनाहों को अपनी रहमत तले ढांपता है लिहाजा उसी छुपाने, ढांपने और बख्श देने को मग्फिरत कहा जाता है। इन्सानी जिन्दगी का सब से बडा मक्सद येही है कि इन्सान को मग्फिरत हासिल हो और अल्लाह हमारे तमाम गुनाह बख्श दे। मग्फिरत तलब करने का नाम इस्तिगफार है और मग्फिरत से मिलता जुलता अफ्व है जिस के लफ्जी मा'नी गुनाहों को नामए आ'माल से मिटा देना है। मग्फिरत और तौबा में फर्क येह कि अल्लाह से पिछले गुनाहों पर मुआफी चाहनी और आइन्दा गुनाह न करने का अहद तौबा है। जब कि साबिका गुनाहों पर पर्दा डाल देना और बख्श देना मग्फिरत है लेकिन इन दोनों लफ्जों में मिलता जुलता ही मफ्हूम पाया जाता है।

मग्फिरत की मिसाल यूं समझें कि सहाबए किराम में बेशुमार ऐसे सहाबा थे। जिन्हों ने तुलूए इस्लाम के वक्त रसूले पाक की सख्त मुखालिफत की, आप को तरह तरह की अजिय्यतें दीं। लेकिन जूंही वोह मुसलमान हो गए तो अल्लाह ने उन के साबिका गुनाह मुआफ कर दिये और उन के पिछले बुरे आ'माल को उन के नेक आ'माल की आड में छुपा दिया। येह उन के साबिका गुनाहों की मग्फिरत थी।

ऐसे ही अगर कोई शख्स किसी की चीज चुराते हुए पकडा जाए लेकिन चीज का मालिक आका मुआफी तलब करने पर उसे मुआफ कर देता है, मुआफी तो उसे मिल गई लेकिन कानूनन जो उसे सजा मिलनी थी वोह न मिली, लिहाजा वोह सजा आखिरत पर मौकूफ हो गई। अगर अल्लाह से मुआफी तलब करने पर आखिरत की सजा भी खत्म हो जाए तो उसे मग्फिरत कहा जाता है, गुनाह से किरदार पर धब्बा लग जाता है और उस का किरदार गुनाह न करने वाले की तरह बे दाग नहीं रहता। मगर

इन्सान जब अल्लाह के हुजूर अपने गुनाहों पर तौबा करता है तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों को अपनी रहमत के साये में पर्दा पोश कर के मुआफ कर देता है। या'नी जो सजा अल्लाह की तरफ से उसे यौमे हिसाब के बा'द मिलनी थी वोह कुबूले तौबा या मुआफी की बिना पर नहीं मिलेगी, जिसे मग्फिरत या बख्शिश कहा जाता है।

﴾1﴿ तलबे मग्फिरत के अहकाम

अल्लाह से मग्फिरत तलब करने की तीन सूरतें हैं। पहली सूरत येह है कि अपने लिये मग्फिरत तलब की जाए। दूसरी सूरत येह है कि दूसरे जिन्दा मोमिन भाइयों के लिये अल्लाह से मग्फिरत मांगी जाए। और तीसरी सूरत येह है कि जो मुसलमान भाई दुन्या से तश्रीफ ले गए हैं ख्वाह वोह अपने अइज्जा व अकारिब हों या दूसरे, उन के लिये दुआए मग्फिरत की जाए। इन तीन सूरतों के अलग अलग अहकाम हस्बे जैल हैं।

﴾1﴿ अपने लिये मग्फिरत तलब करना

कुरआने पाक में बेशुमार मकामात पर हजरते इन्सान को मग्फिरत और बख्शिश तलब करने की तरगीब दी गई है। चुनान्चे इर्शादे बारी तआला है कि।

﴾1﴿ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝۹۰

और अपने परवर दिगार से मग्फिरत चाहो और उस के हुजूर तौबा करो बिलाशुबा मेरा रब बडा ही रहम फरमाने वाला और महब्बत करने वाला है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 90)

﴾2﴿ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ (पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 133)

अपने रब की बख्शिश और जन्नत की जानिब जल्दी से दौडो।

﴾3﴿ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

और जो कोई गुनाह करे या अपने ऊपर जुल्म करे, फिर अल्लाह से बख्शवाए तो अल्लाह को बहुत बख्शने वाला महेरबान पाएगा।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 110)

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿4﴾ और पिछली रात में बख़्शिश चाहने वाला।

(पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 17)

وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا ﴿5﴾ और दर गुजर फरमाए हम से और हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा। तू ही हमारा मौला है।

(पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 286)

इन आयात से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआला से मग्फिरत तलब करना हर इन्सान के लिये जरूरी है क्यूं कि आम इन्सान गुनाह का पुत्ला है लेकिन वोह लोग जिन्हें अल्लाह तौफीक देता है। वोह गुनाहों, कोताहियों और लग्जिशों से मेहफूज रहते हैं मगर हर गुनहगार के लिये अल्लाह से मग्फिरत तलब करना इस लिये भी जरूरी है कि बा'ज औकात छोटे छोटे गुनाह इतनी जियादा ता'दाद में खुद ब खुद सरजद हो जाते हैं कि इन्सान को मा'लूम ही नहीं होता कि उस के आ'माल नामे में गुनाहों का एक अम्बार जम्अ हो गया है। चुनान्चे बारगाहे रब्बुल इज्जत में गुनाहों की मुआफी के लिये मग्फिरत तलब करनी चाहिये ताकि अल्लाह तआला मुआफ कर दे।

इन्सान के लिये जरूरी है कि वोह अल्लाह से मग्फिरत तलब करता रहे क्यूं कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह से मग्फिरत तलब करने की तरगीब यूं दी है :

وَعَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الشَّيْطَانَ قَالَ وَعِزَّتِكَ يَا رَبِّ لَا اَبْرَحُ اُغْوِيْ عِبَادَكَ مَا دَامَتْ اَرْوَاحُهُمْ فِيْ اَجْسَادِهِمْ فَقَالَ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ وَعِزَّتِيْ وَجَلَالِيْ وَ ارْتِفَاعِ مَكَانِيْ لَا اَزَالُ اَغْفِرُ لَهُمْ مَا اسْتَغْفَرُوْنِيْ ٭

हजरते अबू सईद رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि बिलाशुबा शैतान ने कहा कि ऐ रब! तेरी इज्जत की कसम है कि मैं तेरे बन्दों को बेहकाता रहूंगा जब तक कि उन की रूहें उन के जिस्मों में रहेंगी तो उस पर इर्शादे बारी तआला हुवा कि मुझे अपनी इज्जतो जलाल की कसम कि मैं उन को बख़्शता रहूंगा जब तक वोह मुझ से मग्फिरत तलब करते रहेंगे। (अहमद)

शैतान इन्सान का अजली दुश्मन है वोह चाहता है कि जियादा से जियादा लोगों को जहन्नम में धकेल दे। ताकि वहां वोह अजाब भुगतें। लेकिन जब अल्लाह तआला ने उस को रांदए दरगाह फरमाया। नाफरमानी की वज्ह से अपनी दरगाह से रांद दिया और उसे लईन करार दे दिया तो उस ने कियामत तक जिन्दा रहने की मोहलत मांगी। जब उसे वक्त मा'लूम तक मोहलत दे दी गई तो कहने लगा में नस्ले आदम को वर-गलाऊंगा और राहे हक से बेहका दूंगा इसी लिये वोह हर वक्त लोगों को गुमराही में मुब्तला करने की कोशिश में रहता है। इन्सानों और जिन्नों में बेशुमार लोग उस के साथी बन जाते हैं जो खुद भी गुनाह करते हैं और दूसरों से भी गुनाह करवाते हैं ताकि इन्सान तौबा की तरफ न आ जाए।

शैतान ने जब बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज किया कि जब तक वोह जिन्दा रहेंगे, उन को बेहकाता रहूंगा तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैं उन को बख्शता रहूंगा जब तक वोह इस्तिगफार करते रहेंगे, लिहाजा शैतान को इस्तिगफार के साथ बडी जिद है। अव्वल वोह इन्सान को ईमान कुबूल करने नहीं देता। चाहता है कि लोग कुफ्र पर ही मर कर अजाब का मजा चखें और जो लोग मुसलमान हैं उन को हर वक्त अल्लाह के रास्ते से गुमराह करने की फिक्र में रहता है और सगीरा व कबीरा गुनाहों पर आमादा करता रहता है। चुनान्चे जरूरी है कि इन्सान अपने दुश्मन से चोकन्ना रहे और उस की बात न माने, अपने नफ्अ व नुक्सान को समझे। अगर गुनाह हो जाए तो तौबा व इस्तिगफार में लगे ताकि शैतान जलील हो और वोह गुनहगार की बख्शिश देख कर जलता है। क्यूं कि जब भी बन्दा इस्तिगफार की तरफ माइल होता है तो अल्लाह फौरन गुनाह मुआफ कर देता है जिस से शैतान का मन्सूबा नाकाम हो जाता है।

《2》 दूसरे मुसलमानों के लिये दुआए मग्फिरत

हर मुसलमान को चाहिये कि वोह आपस में एक दूसरे के लिये मग्फिरत की दुआ करें क्यूं कि येह फे'ल अल्लाह तआला को बहुत पसन्द

है। रसूले पाक ने सहाबा से कहा कि एक दूसरे के लिये बख्शिश की दुआ किया करो। हालां कि आप को दुआ की क्या जरूरत थी लेकिन इस से येह बताना मक्सूद था कि लोग आपस में एक दूसरे के लिये मग्फिरत की दुआ करें ताकि अल्लाह उन से राजी हो। क्यूं कि दुआए मग्फिरत इन्सान में आजिजी व इन्किसारी पैदा करती है और बारगाहे रब्बुल इज्जत में आजिजी हमेशा कुबूल होती है। दूसरे मुसलमानों के लिये दुआए मग्फिरत के मुतअल्लिक इर्शादे बारी तआला येह है।

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۠

और वोह जो इन के बा'द आए अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब ! हमें बख्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए। और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ कीना न रख, ऐ हमारे रब ! बेशक तू ही निहायत महेरबान रहम वाला है। (पारह 28, सूरए हश्र, आयत : 10)

अपने इलावा दूसरे मुसलमान मर्दों औरतों के लिये बख्शिश और मुआफी तलब करने के बारे में नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है :

وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنِ اسْتَغْفَرَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ كَتَبَ اللهُ لَهٗ بِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ حَسَنَةً

हजरते उबादा बिन सामित رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बयान फरमाया कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मैं ने येह सुना कि जो शख्स मोमिन मर्दों औरतों के लिये इस्तिगफार करे अल्लाह तआला उस के लिये हर मोमिन और मोमिना (के इस्तिगफार) के इवज एक नेकी लिख देगा। (तबरानी)

﴾3﴿ मर्हूम मुसलमानों के लिये दुआए मग्फिरत

दुआए मग्फिरत की तीसरी सूरत येह है कि जो मुसलमान इस दुन्या से कूच कर गए हों उन के लिये अल्लाह के हुजूर दुआए मग्फिरत की

जाए । जिस से उन के सामाने बख्शिश में इजाफा होता है । इस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है :

وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا الْمَيِّتُ فِي الْقَبْرِ اِلَّا كَالْغَرِيْقِ الْمُتَغَوِّثِ يَنْتَظِرُ دَعْوَةً تَلْحَقُهُ مِنْ اَبٍ اَوْ اُمٍّ اَوْ اَخٍ اَوْ صَدِيْقٍ فَاِذَا لَحِقَتْهُ كَانَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا وَاِنَّ اللهَ تَعَالٰى لَيُدْخِلُ عَلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ مِنْ دُعَاءِ اَهْلِ الْاَرْضِ اَمْثَالَ الْجِبَالِ وَاِنَّ هَدِيَّةَ الْاَحْيَاءِ اِلَى الْاَمْوَاتِ اَلْاِسْتِغْفَارُ لَهُمْ۔

हजरते अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया कि मुर्दा अपनी कब्र में डूबने वाले की तरह होता है जैसे दरिया में डूबने वाला चाहता है कि कोई मुझे डूबने से बचाए इसी तरह मुर्दा कब्र में अपने मां बाप या भाई या किसी अजीज की तरफ से दुआ का मुन्तजिर रहता है जब उसे दुआ पहुंचती है तो वोह उसे तमाम चीजों से जियादा प्यारी होती है और अल्लाह दुआ करने वालों की वज्ह से अहले कुबूर को पहाडों की मानिन्द सवाब पहुंचाता है। लिहाजा जिन्दों का मुर्दों के लिये तोहफा दुआए मग्फिरत है। (बैहकी, शुउबुल ईमान)

इस हदीस से येह बात वाजेह होती है कि मुर्दों के लिये दुआए इस्तिगफार करनी चाहिये क्यूं कि इस्तिगफार से उन्हें आलमे बरजख में राहत हासिल होती है अगर किसी को अजाब हो रहा हो तो उस में तख्फीफ हो जाती है और जो नेक होते हैं उन के मरातिब में इजाफा होता है।

ऐसे ही एक और हदीस में मर्हूम मां बाप के लिये दुआए मग्फिरत की ताकीद की गई है। लिहाजा अगर किसी के वालिदैन इस दुन्या में फौत हो गए हों तो उस की औलाद अगर उस के लिये दुआए मग्फिरत करे तो उन्हें कब्र में बहुत फाएदा पहुंचता है। इस के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमान येह है :

وَعَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْعَبْدَ لَيَمُوْتُ وَالِدَاهُ اَوْ

हजरते अनस से रिवायत है कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फरमाया कि अगर किसी के मां बाप वफात पा जाते हैं या दोनों में से एक फौत हो जाता

اَحَدُهُمَا وَالِدَاهُ لَعَاقٌّ فَلَا يَزَالُ يَدْعُوْلَهُمَا وَيَسْتَغْفِرُلَهُمَا حَتّٰى يَكْتُبَهُ بَارًّا ؕ

है। इस हाल में के येह शख़्स उन की जिन्दगी में उन की नाफ़रमानी करता रहा और सताता रहा। अब मौत के बा'द उन के लिये दुआ करता रहता है और इस्तिग़फ़ार करता रहता है यहां तक कि अल्लाह तआला उस के मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक करने वालों में लिख देता है। (मिश्कात शरीफ़)

इस लिये नेक औलाद, मां बाप के लिये बाइसे रहमत है। इसी तरह दोस्तों या दीगर रिश्तेदारों की दुआए मग़्फ़िरत से मय्यित को सवाब पहुंचता है और यक़ीनन येह मुर्दों के लिये एक निहायत ही क़ीमती तोहफ़े की हैसियत रखती है। लिहाज़ा हर मुसलमान को तमाम मुसलमनों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करनी चाहिये। येह याद रहे कि बदनी अमल मसलन फ़र्ज़ नमाज़ और रोज़ा ख़ुद अपने ही अदा करने से अदा होता है लेकिन सवाब मरने के बा'द भी मय्यित को पहुंचता रहता है। लिहाज़ा सदक़ा व ख़ैरात या महज़ दुआ व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए मय्यित के लिये दुआए मग़्फ़िरत करनी चाहिये।

दुआए मग़्फ़िरत का फ़ौत शुदा हज़रात को एक फ़ाएदा येह भी पहुंचता है कि नेक बन्दों के लिये दुआए मग़्फ़िरत दरजात की बुलन्दी में इज़ाफ़ा करती है। इस के मुतअल्लिक़ नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान है :

وَعَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ لَيَرْفَعُ الدَّرَجَةَ لِلْعَبْدِ الصَّالِحِ فِي الْجَنَّةِ فَيَقُوْلُ يَا رَبِّ اَنّٰى لِيْ هٰذِهٖ فَيَقُوْلُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ ؕ

हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि बेशक अल्लाह तआला जन्नत में नेक बन्दे का दरजा बुलन्द फ़रमा देता है वोह अर्ज़ करता है कि ऐ रब ! येह दरजा मुझे कहां से मिला ? अल्लाह तआला का इर्शाद होता है के तेरी औलाद ने जो तेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ की येह उस की वज्ह से है। (अहमद)

इस हदीस से येह बात अयां होती है कि नेक, मुत्तकी और सालिहीन के लिये दुआए मग्फिरत करने से उन के दरजात बुलन्द होते हैं और उन को अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है और दुआए मग्फिरत मांगने वाले का सवाब मिलता है, अम्बियाए किराम और औलियाए किराम के लिये जो मग्फिरत की दुआए ईसाले सवाब की जाती है उस के बारे में येह कत्अन खयाल नहीं करना चाहिये कि एक नबी या वली के लिये दुआए मग्फिरत की क्या जरूरत है ? बल्कि वोह तो बख्शे हुए हैं, लेकिन इताअते खुदावन्दी इसी में है कि उन के लिये खुसूसन और आम मुसलमनों के लिये उमूमन दुआए मग्फिरत की जाए जो अल्लाह के हां उन के दरजात में बुलन्दी का बाइस बनती है।

दूसरों के लिये दुआए मग्फिरत पूरे खुलूस और तहे दिल से मांगनी चाहिये। दुआए मग्फिरत जितनी आजिजी, तवज्जोह और खुलूस से मांगी जाएगी वोह जल्द बारगाहे रब्बुल इज्जत में कुबूल होगी। लिहाज दुआ के वक्त हमें दिल सोज और चश्म पुर नम होना ज्याद बेहतर है।

(4) काफिर, मुश्रिक और मुनाफिक के लिये दुआए मग्फिरत की मुमानअत

किसी भी काफिर, मुश्रिक और मुनाफिक के लिये बख्शिश की दुआ न की जाए क्यूं कि जब उन के लिये अल्लाह के हां मग्फिरत नहीं तो फिर उन के लिये दुआए मग्फिरत क्यूं ? अगर कोई अल्लाह के इस हुक्म को नजर अन्दाज करते हुए अपने किसी भी काफिर, मुश्रिक या मुनाफिक रिश्तेदारों या मां बाप के लिये दुआए मग्फिरत करेगा तो वोह अल्लाह के हुक्म की खिलाफ वर्जी कर के गुनहगार होगा।

मुनाफिक के बारे में कुरआने पाक में खोल कर बयान कर दिया गया है कि जंगे तबूक और फत्हे मक्का के लिये जाते वक्त कुछ लोग पीछे रह गए और वोह कस्दन न गए। ताकि कहीं अल्लाह के रास्ते में मारे न जाएं तो सुल्हे हुदैबिया के बा'द जब आप वापस मदीना आए तो अल्लाह ने वजाहत की कि वोह लोग जरूर आप से आ कर कहेंगे कि हमें अपने

अम्वाल और बाल बच्चों की फ़िक्र ने मशगूल कर रखा था और हम से कोताही हो गई कि हम ने अल्लाह के हुक्म को न माना और हम आप के साथ नहीं गए लिहाजा आप हमारे लिये दुआए मग्फिरत फरमा दें। अस्ल में उन का ऐसा करना जाहिरी होगा क्यूं कि दर अस्ल वोह अपनी हरकत पर शर्मिन्दा हैं। तो ऐसे लोगों के लिये मग्फिरत नहीं। एक और मौकअ पर इर्शादे बारी है कि जब उन से कहा जाता है कि आओ ता कि अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिये मग्फिरत की दुआ करे तो सर झटकते हैं और आप उन की तरफ देखते हैं कि वोह बडे घमन्ड के साथ आने से रोकते हैं। ऐ नबी ! उन के लिये दुआए मग्फिरत की जाए या न की जाए उन के लिये यक्सां है अल्लाह उन्हें हरगिज मुआफ नहीं करेगा।

(पारह 28, सूरए मुनाफिकून, आयत : 6)

चुनान्चे इस से येह अयां होता है कि वोह लोग जो अल्लाह के खिलाफ हों उन के लिये दुआ न की जाए और कर भी दी तो वोह काबिले कुबूल नहीं। दुआए मग्फिरत सिर्फ मुसलमानों और हिदायत याफ्ता लोगों के लिये कुबूल होती है। नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत मग्फिरत का बाइस बनती है क्यूं कि इर्शादे बारी तआला है कि : ऐ नबी ! लोगों से कह दो कि अगर तुम हकीकत में अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी इख्तियार करो अल्लाह तुम से महब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाह मुआफ करेगा। वोह बडा मुआफ करने वाला है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 31) नबी और ईमान वालों को लाइक नहीं कि मुश्रिकों की बख्शिश चाहें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह दोजखी हैं।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 3)

﴾2﴿ मग्फिरत अता करने का इख्तियार

गुनाहों की बख्शिश और मुआफी का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला को है। जिसे चाहे वोह मुआफ कर दे और जिसे चाहे मुआफ न करे क्यूं कि अल्लाह गफूर्रहीम है इस लिये गुनाह बख्श ने और तौबा कुबूल करने का इख्तियार सिर्फ अल्लाह को है और उस के इख्तियारात में

कोई शरीक नहीं। वोह कादिरे मुत्लक है इस लिये हकीकत में वोही दर गुजर करने वाला है। हर एक को मारने वाला और हयात बख्शने वाला है। अल्लाह ही के हुक्म से हर एक को मौत आती है। मौत से ले कर कियामत के अर्से तक किसी को अजाबे कब्र में मुब्तला करना और किसी को अपनी रहमत के साए तले ढांप कर कब्र में राहत पहुंचाना अल्लाह ही के इख्तियार में है। तो मा'लूम हुवा कि सजा देने का या मुआफ करने का इख्तियार सिर्फ उसी के हाथ में है।

रोजे कियामत को इन्सानों के आ'माल का मुहासबा होगा। जजा और सजा के फैसले का दिन होगा उस रोज मग्फिरत और बख्शिश का मालिक सिर्फ अल्लाह होगा जिसे चाहे मुआफ करे और जिसे चाहे सजा दे क्यूं कि इर्शादे बारी तआला है कि : هُوَاَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ तक्वा और मग्फिरत की उम्मीद ही से वाबस्ता की जाए।

इस आयत से येह बात साबित होती है कि खताएं सरजद होने पर सिर्फ अल्लाह से डरना और उसी से तक्वा वाबस्ता रखना चाहिये क्यूं कि इसी में इन्सान की नजात है अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में इस बात को वाजेह कर दिया कि मग्फिरत और बख्शिश का कुल्ली इख्तियार रखते हुए वोह किन लोगों को बख्शेगा और किन को नहीं बख्शेगा। वोह लोग जो उस का इन्कार करते हैं या किसी को उस के इख्तियारात में बराबर का हिस्सेदार ठहरा देते हैं उन को अल्लाह तआला हरगिज नहीं बख्शेगा। और अहले ईमान में से जिन को चाहे मुआफ कर दे और जिन को चाहे न बख्शे येह अल्लाह की रिजा पर मब्नी है।

﴾3﴿ आ'माले मग्फिरत

बख्शिश और मग्फिरत का सारा दारो मदार आ'माल पर है जिन लोगों के आ'माल नेक और सालेह होंगे, उन्हें मग्फिरत हासिल होगी।

सब से पहले वोह लोग बख्शिश और मग्फिरत के हकदार हैं। जिन्हों ने मुकम्मल तौर पर इस्लामी जाबितए हयात को अपनाया और फिर सारी जिन्दगी इताअते किताबुल्लाह और सिफ्ते रसूलुल्लाह में गुजार

दी। फिर वोह लोग बख्शे जाएंगे जो रासिखुल अकीदा मुसलमान थे। जब उन से गुनाह सरजद हुए तो उन्हों ने अल्लाह के हुजूर तौबा की और तौबा कुबूल होने पर उन के लिये मग्फिरत है।

फिर ऐसे लोग जिन्हों ने पूरी तरह इस्लामी उसूलों को नहीं अपनाया मगर उन में कुछ सिफात ऐसी थीं जो अल्लाह को बहुत पसन्द हैं और उन सिफात की बिना पर अल्लाह चाहे तो उन्हें बख्श दे। उन का जिक्र अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में मुख्तलिफ जगह पर बयान फरमाया है कि फुलां फुलां सिफात के लोगों के लिये मग्फिरत है और वोह सिफात मुन्दरजा जैल हैं।

﴾1﴿ अहले ईमान के लिये मग्फिरत

मग्फिरत सिर्फ अहले ईमान के लिये है मगर साहीबे ईमान होने के साथ नेक आ'माल भी जरूरी हैं क्यूं कि इर्शादे बारी तआला है कि

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝

ताकि जजा दे उन लोगों को जो ईमान लाए और सालेह अमल किये। वोही लोग हैं जिन के लिये मग्फिरत और रिज्क है।

(पारह 22, सूरए सबा, आयत : 4)

﴾2﴿ अल्लाह से डरने वालों के लिये मग्फिरत

अल्लाह तआला फरमाता है कि जिन लोगों ने मुझ को नहीं देखा मगर फिर भी मुझ से डरते हैं यकीनन उन के लिये मग्फिरत है और बडा अज्र है या'नी अल्लाह से डरने का इन्सान को बहुत फाएदा है कि इन्सानी कमजोरियों की वज्ह से अगर उस से कोई गुनाह सरजद हो जाए और वोह अल्लाह के हुजूर अपने गुनाहों का ए'तिराफ कर ले तो ऐसे लोगों को अल्लाह तआला मुआफ फरमा देता है और उन के लिये बडा अज्र और सवाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

जो लोग अल्लाह से बिगैर देखे डरते हैं उन के लिये मग्फिरत और बडा अज्र है। (पारह 29, सूरए मुल्क, आयत : 12)

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِیْمٍ ﴿۱۱﴾

बेशक आप उस शख्स को डरा सकते हैं जो नसीहत की पैरवी करे और बे देखे खुदाए रहमान से डरते हैं, उसे मग्फिरत और अज्रे करीम की बिशारत दे दो। (पारह 22, सूरए यासीन, आयत : 11)

﴾4﴿ अल्लाह की राह में खर्च करने से मग्फिरत हासिल होती है

अल्लाह की राह में माल खर्च करने का बडा दरजा है क्यूं कि येह बडे साहिबे दिल हजरात का काम है। लिहाजा इर्शादे खुनावन्दी है कि मालो अस्बाब उस की राह में खर्च किया जाए मगर शैतान इन्सान के दिल में वस्वसे डालता है कि खर्च न करो, गरीब और फकीर हो जाओगे लेकिन अल्लाह तआला ने शैतान के वस्वसे का रद पेश करते हुए फरमाया कि अल्लाह के रास्ते में मालो अस्बाब खर्च करने से अल्लाह तआला की बख्शिश और फज्ल बढेगा। और मग्फिर हासिल होगी।

اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَیَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ یَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ

शैतान तुम्हें फकीरी से धम्काता है और बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तआला बख्शिश और फज्ल का वा'दा करता है।

(पारह 3, सूरए बकरह, आयत : 268)

﴾4﴿ मुजाहिदीन के लिये मग्फिरत

अल्लाह की राह में जिहाद करने का अज्र भी मग्फिरत है क्यूं कि अल्लाह की राह में तन मन धन लुटाना बहुत बडी बात है। चुनान्चे जो लोग अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, दुश्मनाने दीन के खिलाफ कलिमए हक बुलन्द करते हैं और अल्लाह की राह में दुन्यावी मालो मताअ के इलावा जान तक कुर्बान कर देते हैं तो अल्लाह के हां उन का अज्र मग्फिरत है। या'नी कियामत के रोज अल्लाह तआला ऐसे लोगों को जरूर बख्शेगा। और उन के लिये जन्नत का अज्र होगा। फिर जन्नत में आ'ला से आ'ला दरजा दिया जाएगा क्यूं कि इर्शादे बारी तआला है कि :

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ जिहाद करने वालों के लिये बडे दरजे हैं मग्फिरत और रहमत है, अल्लाह बडा मुआफ करने वाला और रहम करने वाला है। (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 96)

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۞

और बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ। तो अल्लाह की बख्शिश और रहमत उन के सारे धन दौलत से बेहतर है। (पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 157)

﴾5﴿ बडे गुनाहों से बचने वालों के लिये मग्फिरत

कबीरा गुनाहों से बचने वालों के लिये भी पैगामे मग्फिरत है क्यूं कि गुनाह फर्द और मुआशरे या'नी दोनों के लिये तबाही का बाइस बनते हैं। इस लिये अल्लाह ने कबाइर से बचने वालों के लिये मग्फिरत का वा'दा किया है क्यूं कि इर्शादे बारी तआला है कि :

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ

जो लोग बडे गुनाहों से परहेज करते हैं अगर उन से कोई फवाहिश सरजद हो जाए तो बेशक अल्लाह का दामने मग्फिरत बहुत वसीअ है।

(पारह 27, सूरए नज्म, आयत : 32)

इस आयत में येह बयान किया गया है कि ऐसे लोग जो बडे बडे गुनाहों से बचते हैं और बुरे अफ्आल से परहेज करते हैं। बचने की कोशिश के बावुजूद अगर उन से किसी किस्म का गुनाह सरजद हो जाए तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को मुआफ कर देगा। बशर्ते कि जान बूझ कर गुनाहे सगीरा वाले अफ्आल न किये जाएं। तो ऐसे लोगों को अल्लाह तआला मुआफ कर देगा। बशर्ते कि वोह नेकी की तरफ माइल हों। क्यूं कि अल्लाह तआला का दामने रहमत बहुत वसीअ है और वोह बशरी कमजोरियों को खूब जानता है।

﴾6﴿ सरकशी छोड कर नेक आ'माल की तरफ आने वालों के लिये मग्फिरत

जब कभी इन्सान से गलतियां हो जाएं और वोह गुनाहों की तरफ

लगा रहे मगर उसे गुनाहों का एहसास हो जाए कि वोह गुनाहों में मुब्तला रहा है। और अब उस के गुनाहों की कैसे तलाफी हो सकती है उन हालात में उस ने जो जियादतियां की हैं, अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये येह अल्लाह तआला की मर्जी होती है कि जिस के चाहे गुनाह मुआफ कर दे। अस्ल में वोह लोग जो जाहिलियत में कत्ल, जिना, चोरी, डाके और इसी तरह और बहुत से बुरे गुनाहों में गर्क हो चुके थे और इस बात से मायूस हो चुके थे तो ऐसे लोगों को उम्मीद दिलाई गई है कि जो लोग रब की तरफ लौट आएं तो अल्लाह तआला सब गुनाहों को मुआफ कर सकता है। येह तमाम खूबियां जिन लोगों में होंगी, अल्लाह तआला के हां उन के लिये मग्फिरत हैं और बडा अज्र है। अब हम खुद ही खयाल करें कि येह तमाम खूबियां हम में किस हद तक पाई जाती हैं। अगर गौर से आ'माल का मुहासबा करें तो एक आम फहम मुसलमान के जेहन में आ जाएगा कि येह तमाम खूबियां अक्सर मुसलमानों के किरदार और अफ्आल में मौजूद नहीं हैं, लिहाजा हमें चाहिये कि अल्लाह की कुर्बत के हुसूल के लिये और मग्फिरत के लिये इस बातों पर अमल पैरा हों।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ
وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ
وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا
وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

बेशक मुसलमान मर्द और औरतें। मोमिन मर्द और औरतें। फरमां बरदार मर्द और औरतें। सच्चे मर्द और औरतें। सब्र करने वाले मर्द और औरतें। डरने वाले मर्द और औरतें, सदका देने वाले मर्द और औरतें। रोजा रखने वाले मर्द और औरतें, अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले मर्द और औरतें, अल्लाह का कस्रत से जिक्र करने वाले मर्द और औरतें, अल्लाह ने उन के लिये मग्फिरत और बडा अज्र रखा है।

(पारह 12, सूरए अहजाब, आयत : 35)

इस आयत में बताया गया है कि मुन्दरजा जैल नेक आ'माल करने वालों के लिये मग्फिरत है।

﴾1﴿ इताअतो फरमां बरदारी

मग्फिरत उन लोगों के लिये है जो मुतीअ और फरमां बरदार हैं। इताअत और फरमां बरदारी में येह बात आती है कि अगर अक्लन कोई किताबुल्लाह और सुन्नत को तस्लीम करे मगर अमलन उस की खिलाफ वर्जी करे वोह मुतीओ फरमां बरदार नहीं होगा।

﴾2﴿ रास्तबाजी

अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरी मग्फिरत उन के लिये भी है जिन्हों ने जिन्दगी के हर शो'बे में रास्तबाजी को अपना रखा हो, सच बात कहते हों और सच पर अमल करते हों। झूट, फरेब, बद दियानती, दगाबाजी, चक्कर। धोके उन की जिन्दगी में नहीं पाए जाते। उन की जबान से वोही निकता है जो उन के दिल में होता है। वोह काम करते हैं जो उन के नज्दीक रास्ती और सदाकत हो। और हर मुआमला सदाकत से तै करते हैं।

﴾3﴿ साबिर

सब्र करने वालों को अल्लाह तआला बहुत पसन्द फरमाता है क्यूं कि अल्लाह के रास्ते या'नी सिराते मुस्तकीम पर अमल पैरा होने में बे शुमार मुश्किलात और मसाइब बरदाश्त करने पडते हैं। और जिन नुक्सानात से दो चार होना पडता है। उन का पूरी साबित कदमी के साथ मुकाबला सब्र ही से किया जा सकता है। चुनान्चे सब्र करने वालों के लिये अल्लाह तआला ने मग्फिरत और बख्शिश की जजा रखी है।

﴾4﴿ सदका देने वाले

फिर फरमाया कि मग्फिरत उन के लिये है जो अल्लाह के रास्ते में मालो दौलत खर्च करते हैं और अल्लाह की राह में अपनी दौलत लुटाते हैं

और इस्तिताअत के मुताबिक गरीबों, मिस्कीनों, जईफ, मुसीबत जदा मोहताजों और कमजोरों की मदद करते हैं। और अल्लाह के रास्ते में बुख्ल से काम नहीं लेते।

﴾5﴿ रोजा रखने वाले

फिर फरमाया कि मग्फिरत उन के लिये है जो रोजा रखते हैं। रोजे का अल्लाह ने बहुत मकाम रखा है, रोजा फर्ज तो जरूरी रखना पडता है। उस के इलावा अल्लाह के बन्दे नफ्ल रोजे भी रखते हैं और रोजे रखने वालों को अल्लाह पसन्द करता है। चुनान्चे कस्रत से रोजे रखने वालों के लिये अल्लाह की मग्फिरत है।

﴾6﴿ शर्मगाहों की हिफाजत करना

शर्मगाहों की हिफाजत से मुराद येह है कि नफ्सानी ख्वाहिशात को पूरा करने के लिये अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो जाइज तरीका मुकर्रर किया है उस के जरीए से अपने जज्बात की तसल्ली की जाए उस के इलावा हराम की तरफ बिल्कुल न जाए और अल्लाह की बनाई हदों का एहतिराम करे और उन से तजावुज न करे। शर्मगाह की हिफाजत में वोह उमूर भी आते हैं जो इन्सान को जिना की तरफ रागिब करते हैं जैसे बरहंगी, उर्यानी और फहाशी वगैरा।

﴾7﴿ अल्लाह की याद

फिर मग्फिरत उन के लिये है जो कस्रत से अल्लाह को याद करते हैं उस से एक तो येह मुराद है कि हर वक्त दिल या जबान से अल्लाह का जिक्र किया जाए या हर काम में उस का धियान अल्लाह की तरफ हो। ख्वाह वोह दुन्यावी तौर पर काम कर रहा है मगर उस का खयाल अल्लाह की तरफ हो और अल्लाह के तसव्वुर को अपने दिल में इतना पुख्ता जमाए कि उसे अल्लाह नजर आए।

﴾8﴿ अल्लाह के रास्ते में मग्फिरत

अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की रहमत और बख्शिश तुम्हारे हिस्से में आएगी। वोह उन सारी चीजों से जियादा बेहतर है जिन्हें येह लोग जम्अ करते हैं और ख्वाह तुम मरो या मारे जाओ तो हर एक ने अल्लाह की तरफ लौटना होता है।

ऐ पैगम्बर ! येह अल्लाह की बडी रहमत है कि तुम इन लोगों के लिये बहुत नर्म मिजाज वाकेअ हुए हो। वरना अगर कहीं तुम सख्त होते तो येह लोग आप के गिर्दो पेश से दूर चले जाते। इन के कुसूर मुआफ कर दो और इन के लिये दुआए मग्फिरत करो।

(पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत : 156-158)

मुसलमानों को रसूले पाक से महब्बत रखनी चाहिये जब रसूल से महब्बत करेंगे तो उस के बदले में अल्लाह तआला उन से महब्बत करेगा और रसूल की महब्बत इन्सान की मग्फिरत और गुनाहों की मुआफी का वसीला बनती है।

﴾9﴿ मग्फिरत में सब्कत ले जाने की कोशिश करना

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ मग्फिरत में एक दूसरे से सब्कत ले जाने की कोशिश करो। (पारह 27, सूरए हदीद, आयत : 21)

इर्शादे बारी तआला है कि मग्फिरत हासिल करने के लिये एक दूसरे से आगे निकने की कोशिश करो। जिस तरह इन्सान के दिल में मालो दौलत, इज्जत, जाहो हश्मत और इक्तिदार में दूसरे से आगे बढने की तमन्ना होती है और उस के हुसूल के लिये वोह दूसरों से हमेशा आगे निकलने की कोशिश करता है। इसी तरह इन्सान को दारुल मआद के लिये दूसरों की निस्बत अल्लाह की रहमत और मग्फिरत की तरफ दौड कर जाना चाहिये।

सब्कत ले जाने से येह मुराद है कि तन्दुरुस्ती और मौत का क्या ए'तिबार कि कब आ जाए चुनान्चे नेक आ'माल करने में सुस्ती और

टाल मटोल न करनी चाहिये और मौत के आने से पहले दूसरों की निस्बत अपने नेक आ'माल का ऐसा जखीरा जम्अ कर लेना चाहिये जिस की बिना पर जन्नत में जा सके।

﴾10﴿ जन्नत में मग्फिरत हासिल होगी

अल्लाह तआला ने परहेजगारों के लिये जन्नत का वा'दा फरमाया है। जन्नत ऐसा बाग है जिस में नहरें बहती हैं और तरह तरह की उन को ने'मतें दी जाएंगी उन ने'मतों से बढ कर अल्लाह तआला उन को मुआफ फरमा देगा। या'नी दुन्या में जिन्हों ने कोताहियां की है उन को अल्लाह तआला मुआफ फरमा देगा और येह मग्फिरत अल्लाह के हाथ में है। وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ط उन के लिये उस में तरह तरह के फल होंगे और उन के रब की तरफ से बख्शिश।

(पारह 26, सूरए मुहम्मद, आयत : 15)

﴾4﴿ मग्फिरत से महरूम रहने वाले

इस्लाम की रू से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह की मग्फिरत से हमेशा के लिये महरूम रहेंगे। और अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में खुद ही उन का जिक्र कर दिया और वोह लोग तीन किस्म के हैं। [1] काफिर [2] मुश्रिक [3] मुनाफिक। येह वोह लोग हैं जो किसी न किसी सूरत में अल्लाह की हक्कानियत को तस्लीम नहीं करते। इस लिये अल्लाह इन्हें किसी सूरत में भी मुआफ नहीं करेगा और न ही उन की मग्फिरत होगी।

﴾1﴿ अहले कुफ्र की मग्फिरत नहीं

वोह लोग जो ए'तिकाद के लिहाज से अल्लाह का इन्कार करते हैं। उन के मुतअल्लिक इर्शादे बारी तआला है कि उन की मग्फिरत न होगी।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

बेशक वोह लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से

रोका । फिर कुफ्र ही की हालत में मर गए तो अल्लाह ऐसे लोगों को हरगिज मुआफ नहीं करेगा । (पारह 26, सूरए मुहम्मद, आयत : 34)

येह आयत इस अम्र पर दलालत करती है कि वोह लोग जो अल्लाह को इस तरह मा'बूद नहीं मानते जिस तरह इस्लाम ने बताया है वोह काफिर हैं । और फिर वोह लोग जो अल्लाह को तो किसी न किसी सूरत में तस्लीम करते हैं लेकिन उस के इलावा ईमान की दूसरी शराइत के मुन्किर हैं वोह भी काफिर हैं चुनान्चे ऐसे लोग जो कुफ्र का रास्ता इख्तियार करें और फिर मरते दम तक उस पर काइम रहें और दूसरों को भी दीने इस्लाम पर ईमान लाने से रोकें, उन के लिये मग्फिरत नहीं है ।

अहले किताब के इलावा दुन्या के तमाम गैर इल्हामी मजाहिब या'नी बुधमत, हिन्दूमत, जैनमत, पारसियत, किमोनिजम के लोग काफिर हैं । येह तमाम मजाहिब बातिल हैं लिहाजा उन के पैरोकार भी झूटे हैं बल्कि येह लोग इस्लाम को मिटाने के दरपे हैं और इस्लाम की सर बुलन्दी में एक बहुत बडी रुकावट हैं । हालते कुफ्र में मरने से बख्शिश न होगी । इस के इलावा अगर कोई मुसलमान इस्लाम छोड कर उन का रास्ता इख्तियार करे जैसा कि कुछ मुसलमान ब जाहिर मुसलमान कहलाते हैं मगर किमोनिजम के पैरोकार बन जाते हैं तो ऐसे लोग भी कियामत के रोज अल्लाह के हुजूर मग्फिरत के मुस्तहिक नहीं होंगे । इलावा अजीं अगर कोई कुफ्र का रास्ता छोड कर मुसलमान हो जाए तो वोह बख्शिश का मुस्तहिक हो सकता है लिहाजा मैं दुन्या के तमाम मुसलमानों को दा'वत देता हूं कि वोह सहीह मुसलमान बन कर अल्लाह से बख्शिश और मग्फिरत के तलबगार बनें । क्यूं कि इसी में इन्सान की फलाह है ।

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ۠

तुम उन की मुआफी चाहो या न चाहो । अगर तुम सत्तर बार उन की मुआफी चाहोगे तो अल्लाह हरगिज उन्हें नहीं बख्शेगा । येह इस लिये

कि वोह अल्लाह और उस के रसूल के मुन्किर हुए और अल्लाह फासिकों को राह नहीं दिखाता। (पारह 10, सूरए तौबा, आयत : 80)

﴾2﴿ मुश्रिकीन की मग्फिरत न होगी

अल्लाह की जात, सिफात और इख्तियारात में किसी दूसरे को उस का मद्दे मुकाबिल समझना या उस में उस का हिस्से दार ठहराना शिर्क है। शिर्क अल्लाह के लिये ऐसा नापसन्दीदा गुनाह है कि अल्लाह शिर्क करने वालों को हरगिज मुआफ नहीं करता क्यूं कि येह सब गुनाहों से बडा गुनाह है लिहाजा शिर्क को एक मा'मूली गुनाह तसव्वुर न करना चाहिये।

शिर्क करने वाले, अल्लाह को लोगों का खुदा तो तस्लीम करते हैं मगर उसी को सिर्फ रब और मा'बूद नहीं मानते बल्कि खुदाई में अल्लाह की जात और सिफात में हिस्से दार करार देते हैं जात के साथ शिर्क येह है कि अल्लाह के इलावा दूसरों को अल्लाह या'नी परस्तिश के लाइक करार देना, जैसे कि लोगों ने इस्लाम से कब्ल फिरिश्तों को अल्लाह की बेटियां करार दिया और कुछ मिट्टी के बुतों को देवी और देवता करार दिया और फिर उन की इबादत की। येह सब शिर्क फिज्जात था।

सिफात में शिर्क येह है कि खुदाई सिफात में किसी को दाखिल कर देना। जैसा कि किसी के बारे में येह यकीन रखना कि वोह अल्लाह की तरह रज्जाक है तो येह शिर्क फिस्सिफात है ऐसे ही वोह इख्तियारात जो सिर्फ अल्लाह के हाथ में हैं उन में किसी को शामिल करना शिर्क फिल इख्तियार कहलाता है लिहाजा शिर्क की इन तमाम सूरतों से बचना जरूरी है क्यूं कि मुश्रिकीन के बारे में इर्शादे बारी तआला है कि उन की मग्फिरत न होगी।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى إِثْمًا عَظِيْمًا ۝

बेशक अल्लाह शिर्क को मुआफ नहीं फरमाता। उस के इलावा जिस कदर चाहे मुआफ कर देता है अल्लाह के साथ जिस ने शरीक ठहराया, तहकीक उस ने बहुत बडा झूट बान्धा जो बहुत बडा गुनाह है।

(पारह 5, सूरए निसा, आयत : 48)

﴾3﴿ मुनाफिक़ीन की बख्शिश न होगी

मुनाफकत से मुराद येह है कि इन्सान जाहिरन तो अपने आप को मुसलमान जाहिर करे मगर दिल से इस्लाम का मुन्किर हो। इब्तिदाए इस्लाम में बहुत से लोग ऐसे थे जो मुसलमानों की बढती कुव्वत और ताकत से मुतअस्सिर हो कर मुसलमान हो गए लेकिन उन के दिल में खोट थी। और दिल से वोह अल्लाह और रसूल के मुन्किर रहे और बे शुमार मौकओं पर उन्हों ने मुसलमानों को धोका दिया और आखिरकार अल्लाह ने उन को बे नकाब कर दिया और बिल आखिर अपनी मुनाफिकाना रविश की बिना पर जलीलो ख्वार हुए और आखिर में भी उन की मुनाफकत ने उन्हें येह नुक्सान पहुंचाया कि आखिरत में उन की मग्फिरत न होगी।

रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौर में जो मुनाफकत को छोड कर मुकम्मल तौर पर हल्का बगोशे इस्लाम हुए और अपनी मुनाफकत पर नादिम हो कर अल्लाह के हुजूर ताइब हो गए, तो ऐसे लोग मग्फिरत के हकदार ठहरे।

आज भी अगर कोई गैर मुस्लिम जासूसी की गरज से ब जाहिर मुसलमान बन कर मुसलमानों में रहता हो और फिर उसी हालत में मर जाए तो उस की मग्फिरत न होगी क्यूं कि उस ने इस्लाम को सच्चे दिल से कुबूल न किया बल्कि मुनाफिकाना रविश इख्तियार कर के मुसलमानों को धोका देने की कोशिश की ऐसे किरदार को अल्लाह कत्अन पसन्द नहीं करता लिहाजा जिन्दगी के किसी भी शो'बे में मुनाफिकाना रविश इख्तियार न करनी चाहिये। ऐसा करना ईमान का सौदा करने के मुतरादिफ है जो अल्लाह को पसन्द नहीं।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ۝

उन पर एक सा है तुम उन की मुआफी चाहो या न चाहो, अल्लाह उन्हें हरगिज न बख्शेगा। बेशक अल्लाह फासिकों को राह नहीं देता। (पारह 12, सूरए मुनाफिकून, आयत : 6)

इस आयत की रू से फासिक या'नी मुनाफकत करने वालों की भी बख्शिश न होगी।

9 अम्बिया की तौबा व इस्तिगफार

अल्लाह के पैगम्बर गुनाहों से पाक होते हैं। या'नी कबीरा और सगीरा गुनाह उन से सरजद नहीं होते। क्यूं कि उम्मत के लिये नबी की इताअत का हुक्म है इस लिये अम्बिया की ता'लीमात पाकीजा थीं और वोह बजाते खुद भी मा'सूम थे।

एक आम उसूल है कि कोई फे'ल उस वक्त गुनाह के जुमरे में नहीं आता है जब कि उस फे'ल में अल्लाह तआला के किसी हुक्म की नाफरमानी का इरादा पाया जाए अगर इरादा न हो, सिर्फ भूल चूक हो तो वोह इताअत के आ'ला मे'यार की कमी होगी।

आम लोगों की तौबा गुनाह से होती है लेकिन खवास की तौबा आ'ला मे'यार की कमी से होती है ताकि अल्लाह तआला के सिवा किसी और की तरफ उन का दिल माइल न हो और कुर्बे इलाही हासिल रहे इस का मतलब येह हुवा कि ब-तकाजए बशरियत मन्शाए इलाही को आ'ला मर्तबे पर पूरा करने में कमी का इरतिकाब तो हो सकता है। जिस पर आम इन्सानों से तो कोई बाजपुर्स नहीं होती। मगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जलालते शान और अल्लाह तआला से तअल्लुक की बिना पर ताकीद होती है जो अम्बिया का इस्तिगफार है।

चुनान्चे बाज मुआमलात में इताअते इलाही के सिल्सिले में नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा दूसरे अम्बिया से तकाजए इलाही के मुताबिक पूरा हक अदा करने के लिये अम्बियाए किराम ने इस्तिगफार का रास्ता इख्तियार किया ताकि उन के पैरूकार तौबा और इस्तिगफार का रास्ता इख्तियार कर सकें। अम्बिया के इस्तिगफार के वाकिआत येह हैं :

﴾1﴿ हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा का किस्सा

हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की बीवी हजरते हव्वा जन्नत में आराम से जिन्दगी गुजार रहे थे मगर उन्हें एक तम्बीह की गई कि जन्नत

में फुलां दरख्त है उस के पास न जाना और न उस का फल खाना। येह हजरते इन्सान को पहली हिदायत की गई जिस के पीछे कोई न कोई मस्लेहत थी। उस के मुतअल्लिक कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है कि :

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

और हम ने फरमाया ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी इस जन्नत में रहो और इस में बे रोक टोक खाओ जहां से तुम्हारा जी चाहे मगर उस दरख्त के नज्दीक मत जाना वरना हद से बढने वालों में से हो जाओगे। (पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 35)

हजरते आदम की जब तख्लीक हुई तो अल्लाह तआला ने फिरिश्तों को हुक्म दिया कि हजरते आदम को ता'जीमी सज्दा करो, तो तमाम फिरिश्तों ने सज्दा किया लेकिन इब्लीस ने सज्दे से इन्कार किया तो उस पर अल्लाह तआला ने उस से पूछा कि तुझे किस चीज ने सज्दा करने से रोका है तो उस ने जवाब दिया कि मैं इस से बेहतर हूं क्यूं कि येह इन्सान मिट्टी से बनाया गया है और मैं आग से बना हूं। आग मिट्टी से बेहतर है इस लिये मैं इस से बेहतर हूं। लिहाजा मैं बेहतर हो कर इस कमतर को क्यूं कर सज्दा करता ? चुनान्चे अल्लाह तआला ने शैतान को इस की नाफरमानी पर अपनी बारगाह से मर्दूद और जलील कर के निकाल दिया। फिर फरमाया कि तुझ पर अल्लाह तआला कि, उस के फिरिश्तों की, और उस के बन्दों की कियामत तक ला'नत रहेगी। लेकिन शैतान ने कियामत तक के लिये मोहलत मांगली। और इन्सानों की आंखों से पोशीदा रह कर इन्सानों को गुमराह करने की सोच में लग गया, फिर कहने लगा।

فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝

तेरी इज्जत की कसम ! कि मैं तेरे चुने हुवे बन्दों के सिवा हर एक को गुमराह करूंगा। (पारह 23, सूरए ص, आयत : 82-83)

फिर इब्लीस लईन ने येह भी कहा :

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝

बोला तो जब तूने या'नी अल्लाह तआला ने मुझे हिदायत से मेहरूम कर दिया है तो मैं उन की ताक में तेरी सीधी राह पर बैठूंगा फिर उन्हें बहकाने के लिये उन के आगे से और पीछे से और दाएं से, और बाएं से उन पर आऊंगा और अक्सर को नाशुक्रे करूंगा।

(पारह 8, सूरए आ'राफ, आयत : 16-17)

तो उस के इस जवाब पर रब्बे जुल जलाल ने फरमाया :

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

यहां से रुस्वा और मर्दूद हो कर निकल जा तो जो कोई इन में से तेरी राह पर चलेगा तो मैं उन सब से दोजख को भर दूंगा।

(पारह 8, सूरए आ'राफ, आयत : 18)

इसी तरह एक और मकाम पर फरमाया :

قَالَ فَالْحَقُّ ۫ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ۚ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

कहा तो सच येह है और मैं सच ही फरमाता हूं। बेशक मैं जरूर तेरी पैरवी करने वालों से जहन्नम को भर दूंगा। (पारह 23, सूरए صٓ, आयत : 84-85)

इस के बा'द अल्लाह तआला ने सय्यिदुना आदम को भी इब्लीस से होशयार रहने की ताकीद की।

فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝

फिर हम ने कहा ऐ ! आदम येह तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है। कहीं तुम्हें जन्नत से न निकलवा दे। (पारह 16, सूरए ताहा, आयत : 117)

इन्सान की चूंकि येह एक फितरी ख्वाहिश है कि वोह हमेशा हमेशा जिन्दा रहे, शैतान ने किसी बहाने से हजरते हव्वा को कहा कि तुम शजरे मम्नूआ का फल खालो तो हमेशा के लिये जिन्दा रहोगी और फिरिश्ता बन जाओगी और फिरिश्तों के लिये मौत नहीं। कुरआने मजीद में येह बात यूं बयान हुई है।

وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝
وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ

और (इब्लीस ने) कहा तुम्हें तुम्हारे रब ने दरख्त से मन्आ नहीं किया फरमाया मगर इस लिये कहीं तुम फिरिश्ते न हो जाओ या हमेशा जिन्दा रहने वाले हो जाओ और इन से कसम खाई कि मैं तुम दोनों का खैर ख्वाह हूं। तो उस पर इन दोनों को फरेब पर माइल कर लिया।

(पारह 8, सूरए आ'राफ, आयत : 20-22)

चुनान्चे हजरते हव्वा की शैतान की इस चाल में आ गई और शजरे मम्नूआ दोनों या'नी हजरते आदम और हजरते हव्वा ने खा लिया। जिस से जन्नती लिबास उतर गया और दोनों की शर्मगाहें खुल गईं और जन्नत में इधर उधर भागने लगे। और पत्तों से अपने जिस्म ढांपने लगे।

अल्लाह तआला के हुक्म की पाबन्दी न करने के सबब दोनों को हुक्म हुवा कि तुम जमीन पर उतर जाओ या'नी यहां से चले जाओ। मेरी कुर्बत से दूर हो जाओ क्यूं कि नाफरमान मेरे कुर्ब में नहीं रह सकते। हजरते आदम ने हजरते हव्वा की तरफ देखा और फरमाया कि येह पहली शामते गुनाह है। चुनान्चे उन को जमीन पर उतार दिया गया कि तुम्हारी सजा है कि जमीन में अपना रिज्क तलाश कर के खाओ और औरत के लिये येह अम्र बाइसे तक्लीफ ठहराया गया, कि औरत दर्दे जेह से बच्चा जनेगी। और येह दोनों अहकाम नस्ले आदम के लिये ता कियामत ठहराए चुनान्चे हम देखते हैं कि नाचीज इन्सान को रिज्क हासिल करने के लिये सुब्हो शाम कितनी कोशिश और मशक्कत उठानी पडती है और न ही कोई औरत दर्दे जेह के बिगैर बच्चे को जनम दे सकती है। बिल आखिर गफूरुर्रहीम ने आप को नजरे करम से नवाजा और आप को खता मुआफ कराने का एक तरीका सिखा दिया। इर्शाद फरमाया :

فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

फिर सिख लिये आदम ने अपने रब से चन्द कलिमें, तो अल्लाह ने उन की तौबा कुबूल कर ली। बेशक वोही बहुत तौबा कुबूल करने वाला निहायत रहम फरमाने वाला है। (पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 37)

आप ने जिन कलिमात से दुआ फरमाई थी वोह येह हैं :

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ۝

ऐ हमारे रब ! तेरी नाफरमानी कर के हम ने अपनी जानों पर बहुत जुल्म किया है और अगर तूने हम पर रहम न फरमाया तो हम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे। (पारह 8, सूरए आ'राफ, आयत : 23)

हजरते अली मुर्तजा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मर्फुअन रिवायत है कि जब हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप फिक्रे तौबा में हैरान थे। इस परेशानी के आलम में याद आया कि पैदाइश में मैं ने सर उठा कर देखा था कि अर्श पर लिखा हुवा है "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" मैं समझा कि बारगाहे इलाही में वोह मरतबा किसी को मुयस्सर नहीं जो आंहजरते सय्यिदुना मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हासिल है कि अल्लाह तआला ने उन का नाम अपने मुकद्दस नाम के साथ अर्श पर मक्तूब फरमाया, लिहाजा आप ने इन अल्फाज के साथ दुआ की

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِجَاهِ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَكَرَامَتِهٖ عَلَيْكَ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ خَطِيْئَتِيْ۔

या रब ! मैं तुझ से तेरे खास बन्दे मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाहो मर्तबत के तुफैल और उस की करामत के सदके जो उन्हें दरबार में हासिल है, मग्फिरत चाहता हूं।

कहा जाता है कि येह दुआ करनी थी कि हक तआला ने उन की मग्फिरत फरमाई और वही नाजिल फरमाई कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कहां से जाना तूने ? आप ने तमाम माजरा अर्ज किया। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया : "ऐ आदम ! मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब पैगम्बरों में पिछला पैगम्बर है ! तुम्हारी औलाद में अगर वोह न होता तो तुम को भी पैदा न करता।"

इस से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा कुबूल फरमाता है एक और जगह पर आता है कि कोई शख्स बुरा काम कर बैठे या अपनी जान पर जुल्म कर बैठे, फिर तौबा व इस्तिगफार करे तो वोह देख लेगा कि खुदा उस की तौबा कुबूल कर लेगा। अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा कुबूल करने वाला है और बडा रहीम है। हजरते

आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कुबूल करने के बा'द अल्लाह तआला ने उन को और औलादे आदम को एक मुकर्ररा मुद्दत के लिये जमीन में सुकूनत और करार दिया। हजरते आदम अल्लाह के बरगुजीदा बन्दे हैं, एक लग्जिश की बिना पर जन्नत से आप को रूए जमीन की तरफ उतार दिया गया। मन्शाए खुदावन्दी इस से नस्ले आदम को फैलाना था, फिर हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से आप की लग्जिश को मह्व फरमाया गया, इस से औलादे आदम को येह सबक दिया गया कि अगर किसी से कोई गलती सरजद हो जाए तो बारगाहे इलाही में सच्चे दिल से तौबा करे अल्लाह तआला उस की तौबा कुबूल फरमाने वाला है।

हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा के बारे में हजरते आइशा से एक रिवायत है कि जब खुदा को मन्जूर हुवा कि आदम की तौबा कुबूल फरमाए तो आदम ने खानए का'बा का सात मर्तबा तवाफ किया और उस वक्त वोह एक सुर्ख रंग का टीला था। फिर दो रक्अत नमाज अदा की और कहने लगे ऐ अल्लाह! तू मेरी मख्फी और जाहिर बातों को जानता है मेरी मा'जिरत कुबूल फरमा, तू मेरी हाजत से वाकिफ है, मेरी दरख्वास्त पूरी फरमा। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ऐसा ईमान जो मेरे दिल से जा मिले और यकीने सादिक मांगता हूं कि मुझे मा'लूम हो जाए कि सिवाए उस चीज के जो तूने मेरे लिये लिख दी है, कुछ और मुझे न पहुंचेगा और जो कुछ तूने मेरी किस्मत में लिखा है उस से मुझे राजी कर दे। खुदा तआला ने इन के पास वही भेजी कि ऐ आदम! मैं ने तुम्हारे गुनाह बख्श दिये। जो कोई तुम्हारी औलाद में से मेरे पास तुम्हारी तरह दुआ करता हुवा आएगा मैं उस के गुनाह बख्श दूंगा और दुन्या उस के पास आएगी।

नैशापूरी ने बयान किया है कि इस का मुक्तजा तौबा है कि तौबा जमीन पर उतर आने के बा'द कुबूल हुई हो। हालां कि सहीह तो येह है कि तौबा पहले कुबूल हुई है।

हजरते इमामे हुसैन से रिवायत है कि आप ने फरमाया जब अल्लाह तआला ने हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कुबूल की तो फिरिश्तों

ने उन्हें मुबारक बाद पेश की और हजरते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने खिदमत में हाजिर हो कर कहा कि ऐ आदम ! आप की आंखे ठंडी हों कि अल्लाह तआला ने आप की तौबा कुबूल की । येह सुन कर आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया ऐ जिब्राईल ! इस तौबा के बा'द भी अगर बाजपुर्स हुई तो फिर मेरा ठिकाना नहीं । उस वक्त वही नाजिल हुई और अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐ आदम ! तुम ने अपनी नस्ल को मशक्कत, तक्लीफ और तौबा का वारिस बनाया है तो अब जो कोई मुझे पुकारेगा मैं कुबूल फरमाऊंगा जिस तरह मैं तुम्हारी तौबा कुबूल की है और जो कोई मुझ से मांगेगा मैं अता करने में बखीली नहीं करूंगा क्यूंकि मैं तो करीब हूं और कुबूल करने वाला हूं। ऐ आदम ! मैं गुनाहों से तौबा करने वालों को जन्नत में जम्अ कर दूंगा और उन को उन की कब्रों से शादां व फरहां उठाऊंगा और उन को उन दुआओं की कुबूलियत के बाइस कब्रों से शाद निकालूंगा ।

आप की येह तौबा दसवीं मुहर्रम को कुबूल की गई थी। तौबा के बा'द आप को खलीफतुल अर्ज होने का ए'लान फरमाया गया और सब को आप की फरमां बरदारी करने का हुक्म सुनाया गया। हजरते आदम के इस वाकिए से हमें तौबा और फरमां बरदारी का रास्ता इख्तियार करने का दर्स मिलता है।

﴾2﴿ हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह के नबी और पैगम्बर थे आप जिस कौम की तरफ नबी बन कर आए आप ने उन्हें दा'वते हक दी। मगर जब आप की तब्लीगो नसीहत के बावुजूद कौम ईमान न लाई तो आप ने तंग आ कर कौम के लिये अजाब मांगा । अल्लाह तआला ने आप को एक कश्ती तय्यार करने का हुक्म दिया। जब कश्ती तय्यार हो गई तो अजाबे इलाही पानी के तूफान की सूरत में जाहिर हुवा। आप ने अपने पैरूकारों और अहलो अयाल से कहा कि इस कश्ती में सुवार हो जाओ लेकिन आप की बीवी और बेटा कश्ती में सुवार न हुए। जब पानी का तूफान बढा तो आप ने अपने बेटे को पुकारा कि ऐ मेरे बेटे ! येह तूफान कोई मा'मूली

तूफान नहीं है। येह तो अजाबे इलाही है तुम काफिरों का साथ छोडो और अल्लाह को मान कर कश्ती में सुवार हो जाओ तो जान बच जाएगी। मगर उस को यकीन न आया। उस का खयाल था कि जूंही पानी जियादा होगा किसी पहाड पर चढ जाऊंगा। और जिन्दगी बच जाएगी मगर अल्लाह का दस्तूर है कि जब अजाब आ जाए तो फिर कोई तदबीर काम नहीं करती। इस के मुतअल्लिक कुरआने पाक में है कि जब आप ने अपने बेटे को देखा तो येह कहा :

وَنَادٰی نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ۝

और नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने अल्लाह से कहा कि ऐ रब ! येह मेरा बेटा है। मेरे घरवालों में से और तेरा वा'दा सच्चा है और तू सब हाकिमों से बडा हाकिम है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 45)

हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के बेटे के ईमान की हकीकत का अल्लाह तआला को ब खूबी इल्म था वोह ब-जाहिर तो ईमान ला चुका था लेकिन दिल से मुश्रिकीन के साथ था और इसी वज्ह से वोह कश्ती पर सुवार न हुवा। लिहाजा इस मुनाफकत की बिना पर इस का गर्क होना उस के मुकद्दर में लिखा जा चुका था। चुनान्चे बारगाहे रब्बुल इज्जत से हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को येह जवाब मिला।

قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ﱪ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ

फरमाया ऐ नूह ! वोह तेरे घरवालों में से नहीं है उस के काम सालेह नहीं हैं। तू मुझ से वोह सुवाल न कर जिस का तुझे इल्म नहीं। मैं तुझे नसीहत फरमाता हूं कि नादान न बन। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 46)

अल्लाह तआला के इस जवाब पर हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के दिल में खयाल पैदा हुवा कि वोह बेटा जिस ने इताअते इलाही का रास्ता इख्तियार नहीं किया और उन की नुबुव्वत का इकरार नहीं किया तो उस की बचत के लिये अल्लाह के हुजूर इल्तिजा नहीं करनी चाहिये थी तो उस पर आप ने अल्लाह के हुजूर मुन्दरजा जैल अल्फाज के साथ इस्तिगफार किया।

رَبِّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِکَ اَنۡ اَسۡـَٔلَکَ مَا لَـیۡسَ لِیۡ بِہٖ عِلۡمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغۡفِرۡ لِیۡ وَ تَرۡحَمۡنِیۡۤ اَکُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ۞

ऐ मेरे रब ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं कि तुझ से वोह चीज मांगूं जिस का मुझे इल्म नहीं और अगर तूने मुझे न बख्शा और रहम न फरमाया तो मैं नुक्सान उठाने वालों में हो जाऊंगा।

(पारह 12, सूरए हूद, आयत : 47)

हजरते नूह की कौम को इस्तिगफार का हुक्म

अल्लाह तआला फरमाता है कि हम ने हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को जब उन की कौम की तरफ भेजा और उन को हुक्म दिया कि अपनी कौम के लोगों को डराओ और अल्लाह के अजाब से खबरदार करो। हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम को आ कर कहा कि देखो मैं तुम्हारा पैगम्बर हूं और तुम को आगाह करता हूं कि तुम तीन बातों पर अमल करो। अव्वलन अल्लाह की बन्दगी करो, दूसरे अल्लाह से डरो और तीसरे रसूल की इताअत करो। जब तुम इन बातों पर अमल करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों को मुआफ फरमा देगा और तुम्हें एक वक्ते मुकर्ररा तक बाकी रखेगा मगर कौम ने आप की बात न मानी तो हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह से अर्ज की कि मैं अपनी कौम के लोगों को शबो रोज पुकारा मगर मेरी पुकार का उन पर असर न हुवा बल्कि इन की शरारतों में इजाफा हुवा और मैं ने उन को बुलाया ताकि वोह उन्हें मुआफ कर दे मगर उन्हों ने मेरी बात तक सुनना गवारा न की और अपने कानों में ऊंगलियां ठूस लीं और अपने कपडों से मुंह ढांप लिये। या'नी आप की शक्ल देखना पसन्द न करते थे। क्यूं कि जब उन से मिलेंगे तो उन की बात सुनना पडेगी इस लिये नजर बचाते थे।

हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कौम अपने बुरे कामों पर डटी रही और तकब्बुर करती रही। हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अज हद समझाया कि तुम अल्लाह तआला के हुजूर मुआफी मांगो और अपने गुनाहों पर तौबा करो क्यूं कि अल्लाह तआला मुआफ करने वाला है और जब तुम अल्लाह से तौबा करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें मुआफ कर के तुम्हें माल और

औलाद से नवाजेगा। तुम्हें अपनी ने'मतों से माला माल करेगा। तुम्हारे लिये बागात पैदा करेगा। और तुम्हारे लिये नहरे जारी करेगा। मगर वोह कौम अपनी रविश पर डटी रही और तौबा की तरफ न आई और अजाब की मुस्तहिक ठहरी, इर्शादे बारी हुवा।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ

मैं ने कहा अपने रब से मुआफी मांगो बेशक वोह बडा मुआफ करने वाला है। (पारह 29, सूरए नूह, आयत : 10)

﴾3﴿ हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह के जलीलुल कद्र पैगम्बर थे और अल्लाह तआला ने अपनी दोस्ती के लिये मुन्तखब फरमाया और फिर उन को पैगम्बरों और नबियों का पेशवा बनाया। एक रिवायत में है कि हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में चार हजार पैगम्बर हुए।

हजरते इब्राहीम को अपने बाप[1] [हकीकी वालिद का नाम तारीख था जो मुख्लिस मोमिन थे] के शिर्क व बुत परस्ती पर बडा सदमा था और आप के दिल में ख्वाहिश थी के वोह किसी तरह अपने इस अमल से बाज आ जाए तो एक दिन आप ने अपने बाप आजर [येह आप के वालिद का बडा भाई था जो कुफ्र की हालत में मरा] से कहा कि ऐ मेरे बाप जो न सुने और न देखे और न जो वक्त पर तेरे काम न आए उन बुतों को क्यूं पूजता है ऐ मेरे बाप! बेशक मेरे पास वोह इल्म आया है जो तुझे न आया सो तू मेरे पीछ चला आ मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं ऐ मेरे बाप! शैतान का बन्दा न बन बेशक शैतान रहमान का नाफरमान है ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूं कि तुझे रहमान का कोई अजाब न पहुंचे फिर तू शैतान का साथी हो जाएगा।

लेकिन आजर ने अपने बेटे हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام कि नसीहत पर कुछ गौर न किया बल्कि सख्त अन्दाज में जवाब दिया कि ऐ इब्राहीम अगर तू बाज न आया तो मैं तुझे संगसार कर दूंगा और तू मुझ से एक लम्बी मुद्दत के लिये दूर हो जा।

[1] चचा को मजाजन बाप कहा गया है आजर आप का चचा था बाप नहीं, आप के बाप मोमिन है मुश्रिक नहीं। 12

हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी नर्म दिली और मुतहम्मिल मिजाजी के बाइस अपने बाप के उस नापसन्दीदा इजहारे खयाल पर सब्र से काम लिया और उन के लिये अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिगफार की तौफीक तलब करने का वा'दा किया। कुरआन में येह बात यूं बयान हुई है।

سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْؕ اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا۝

अन्करीब मैं तेरे लिये अपने रब से मुआफी मांगूंगा बेशक वोह मुझ पर महेरबान है। (पारह 16, सूरए मरयम, आयत : 47)

चुनान्चे हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने हस्बे वा'दा अपने बाप की बख्शिश के लिये मुन्दरजए जैल अल्फाज के साथ दुआ की

وَاغْفِرْ لِاَبِیْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّیْنَۙ۝ وَ لَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَۙ۝ یَوْمَ لَا یَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَۙ۝ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍؕ۝

और मेरे बाप को बख्श दे बेशक वोह गुमराह है और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे जिस दिन न माल काम आएगा और न बेटे मगर वोह जो अल्लाह के हुजूर सलामती वाला दिल ले कर हाजिर होगा। (पारह 19, सूरए शुअरा, आयत : 86-89)

अल्लाह तआला ने आप की येह दुआ येह कह कर रद फ़रमा दी कि जो कुफ्रो शिर्क से तौबा किये बिगैर मर जाए और मरते दम तक ईमान न लाए तो उन को हरगिज मुआफ नहीं किया जाएगा। सूरतुत्तौबा में इर्शाद फरमाया :

مَا كَانَ لِلنَّبِیِّ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ یَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِیْنَ وَ لَوْ كَانُوْۤا اُولِیْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ۝

नबी और ईमान वालो की शान नहीं कि मुश्रिकीन की बख्शिश चाहे अगर्चे वोह रिश्तेदार हो जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह दोजखी है। (पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 113)

आजर के मरने से पहले येह एहतिमाल था कि शायद वोह तौबा कर के मुसलमान हो जाए। लेकिन जब उस का खातिमा कुफ्रो शिर्क पर

हो गया तो हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के हक में दुआ व इस्तिगफार करना तर्क फरमा दिया और उन से अपनी बेजारी का ए'लान फरमाया सूरतुत्तौबा में इर्शाद हुवा।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ۝

और इब्राहीम का अपने बाप की बख्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब जो उस से कर चुका था फिर जब इब्राहीम पर खुल गया कि वोह अल्लाह का दुश्मन है तो उस से बेजार हो गया बेशक इब्राहीम बडा नर्म दिल और तहम्मुल वाला था।

(पारह 11, सूरए तौबा, आयत : 114)

आप का बाप शिर्क की हालत में फौत हुवा था और शिर्क को अल्लाह तआला कभी मुआफ नहीं करता और अल्लाह तआला को आप के मुश्रिक बाप के लिये दुआ करना पसन्द न आया उस पर हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को एहसास पैदा हुवा कि उसूलन उन्हें अपने बाप के लिये दुआ करना नहीं चाहिये थी इस पर हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह की पाकीजगी बयान की और इस तरह अपनी मुनाजात पेश की।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۝ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝ وَالَّذِيْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓــَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝

वोह खुदा जिस ने मुझे पैदा किया वोही मुझे सीराते मुस्तकीम दिखलाता है वोह खुदा मुझे खिलाता पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूं तो मुझे शिफा अता करता है और वोह खुदा जो मुझे मौत देगा फिर जिन्दा करेगा वोह जात जिस से मैं कियामत के दिन अपनी खताओं की बख्शिश की उम्मीद रखता हूं। (पारह 19, सूरए शुअरा, आयत : 78-82)

हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के बयान से जाहिर होता है कि अल्लाह ही की जात एक ऐसी जात है जिस से अपनी कोताहियों और गफ्लतों पर बख्शिश की उम्मीद लगाई जा सकती है हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और

हजरते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام जब का'बा शरीफ की ता'मीर कर रहे थे तो आप दोनों की जबाने मुबारक पर येह दुआए इस्तिगफार जारी था।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَیْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَیْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۲۸﴾

ऐ हमारे रब ! कुबूल कर हम से बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है और ऐ रब हमारे ! हम को फरमां बरदार बना और हमारी औलाद में से एक अपनी फरमां बरदार उम्मत कर दे और हम को इबादत के तरीके सिखला दे और हम को मुआफ फरमा बेशक तू ही बहुत तौबा कुबूल करने वाला महेरबान है। (पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 127-128)

आप की येह दुआ कुबूल हुई रब्बुल इज्जत ने आप की नस्ल से हुजूर नबिये करीम जैसे अजीम नबी को पैदा फरमाया।

﴾4﴿ हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का शुमार अल्लाह के बरगुजीदा पैगम्बरों में होता है आप जब जवानी की उम्र को पहुंचे तो अल्लाह तआला ने आप को हिक्मत और कुव्वत अता फरमाई। उसी जमाने का एक वाकिआ है कि हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام शहर या'नी मिस्र में थे और लोग अपने अपने काम में मस्रूफ थे तो वहां दो आदमियों को लडते देखा एक बनी इस्राईल में से था और दूसरा आप के मुखालिफीन फिरऔनियों में से था। और उस को किब्ती कहते थे दोनों आपस में किसी बात पर झगड रहे थे। इस्राईली ने हजरते मूसा से अव्वलन किब्ती को समझाने की कोशिश की मगर वोह अपनी ज्यादती से बाज न आया तो हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को तादीबन समझाने के लिये और जुल्म से बाज रखने के लिये एक घूंसा रसीद किया वोह किब्ती फौरन मर गया। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام खिलाफे तवक्कोअ नतीजे से बहुत घबराए। और कहने लगे येह तो शैतानी हरकत है और शैतान इन्सान का खुल्लम खुल्ला दुश्मन है।

قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۵﴾

कहा येह काम शैतान की तरफ से हुवा। बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला। (पारह 20, सूरए कसस, आयत : 15)

येह नदामत के सबब आप इस्तिगफार पढने लगे और अल्लाह तआला से अर्ज करने लगे कि मेरे परवर दिगार! मुझ से कुसूर हो गया है तू मुझे मुआफ फरमा। चुनान्चे अल्लाह तआला से इल्तिजा करने लगे। कि खुदाया तूने मुझे जाहो इज्जत, बुजुर्गी और ने'मत अता फरमाई है और येह दुआ मांगने लगे।

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَغَفَرَلَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝

ऐ मेरे परवर दिगार! मैं ने अपने ऊपर जुल्म किया तू मुझे मुआफ फरमा दे अल्लाह तआला ने उन्हें बख्श दिया। बेशक वोह बख्शने वाला महेरबान है। (पारह 20, सूरए कसस, आयत : 16)

शहर में किब्ती के कत्ल का चर्चा हो गया। मगर इस्राईली के इलावा कोई भी इस राज से वाकिफ न था और चूंकि येह वाकिआ उसी की हिमायत में हुवा था इस लिये उस ने इज्हार न किया मगर हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को घबराहट और बेचेनी रही। चुनान्चे दूसरे रोज हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام खौफजदा और वहशत की हालत में डरते हुए शहर में आए कि देखें क्या बातें हो रही हैं, कहीं राज खुल तो नहीं गया! अचानक आप ने देखा कि वोही इस्राईली किसी और से झगड रहा था। आप को देखते ही उस ने फिर मदद के लिये पुकारा। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام येह देख कर उस पर नाखुश हुए और उसे कहा कि तू शरीर आदमी है कि हर रोज लोगों से झगडा करता है। येह सुनते ही वोह घबरा गया। जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फिरऔनी को रोकने के लिये उस की तरफ हाथ बढाना चाहा लेकिन उस से कब्ल आप इस्राईली पर खफा हो चुके थे तो उस से उस इस्राईली को शुबा हुवा कि आज मुझ पर हम्ला तो नहीं करने लगे और घबरा कर कहने लगा ऐ मूसा! क्या आज आप मुझ को कत्ल करना चाहते हो ? तो उस ने शोर मचाना शरूअ कर दिया कि येह मूसा है जिस ने कल एक शख्स को कत्ल किया और अब मेरी जान लेने लगा है। येह अल्फाज एक फिरऔनी

ने सुने, कातिल की तलाश पहले ही हो रही थी और फिरऔनी ने हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में फिरऔन को बताया। फिरऔन बहुत गुस्से में आया और दूसरे साथियों से मश्वरा कर के हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कत्ल करने का मन्सूबा बनाया। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को भी किसी तरह से उन के मन्सूबे का सुराग मिल गया और आप किसी और तरफ निकल गए। और अल्लाह तआला से दुआ मांगने लगे कि ऐ परवर दिगार! उन जालिमों से बचा और मुझे मुआफ कर दे।

जब बनी इस्राईल, फिरऔन की गुलामी से आजाद हुए तो अल्लाह तआला ने हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को चालीस दिन तक कोहे तूर पर चिल्लाकशी का हुक्म फरमाया। ताकि हिदायत की किताब तौरैत अता फरमाई जाए। जिस पर अमल पैरा हो कर उन की कौम गुमराही से इज्तिनाब करती रहे। चुनान्चे आप मुकर्ररा वक्त पर कोहे तूर पर पहुंचे। रब्बुल आलमीन ने आप से कलाम फरमाया। तो आप ने अर्ज किया :

قَالَ رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِیْ وَ لٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ ۚ

कहा : ऐ रब मेरे! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं। अल्लाह तआला ने फरमाया तू मुझे हरगिज न देख सकेगा। हां इस पहाड की तरफ देख। येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अन्करीब तू मुझे देख लेगा। (पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 143)

इस के बा'द अल्लाह तआला ने एक जल्वा अपने नूर का कोहे तूर पर चमकाया तो वोह रेजा रेजा हो गया और हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की हैबतो जलाल से बेहोश हो कर गिर पडे फिर कुछ देर बा'द जब होश आया तो आप ने अपने सुवाल पर नदामत से सर झुका लिया और आप ने तौबा के लिये इस तरह दुआ फरमाई जो कुबूल हुई।

سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ۝

तू पाक है तेरे हुजूर तौबा करता हूं और मैं सब से पहले ईमान लाने वाला हूं। (पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 143)

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की कौम की तौबा

हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब कोहे तूर पर चालीस यौम के लिये गए तो उन की गैर मौजूदगी में एक सामरी या'नी जादूगर ने कौम को फरैब दे कर तमाम जेवरात इकठ्ठा कर लिये और उन को पिगला कर एक बछडे की सूरत बना कर खडी कर दी। फिरऔन गर्क होने के वक्त जब जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ लाए तो सामरी ने आप के घोडे के पाऊं के नीचे से मुठ्ठी भर मिट्टी उठाली कि उस में जरूर कोई बरकत होगी। सामरी ने वोही मिट्टी बछडे के मुंह में डाल दी। चुनान्चे उस के मुंह से गाय की सी आवाज निकने लगी। फिर उस ने कौम को धोका दिया और कहने लगा कि हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से भूल हो गई कि खुदाए तआला से हम कलाम होने कोहे तूर पर चले गए। खुदा तो यहां मौजूद है। येही तुम्हारा मा'बूद है लिहाजा इस की पूजा करो। कौम ने सामरी के कहने पर बछडे की पूजा शुरूअ कर दी। हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब कोहे तूर से वापस आए और देखा कि कौम बछडे की पूजा कर रही है तो आप को बहुत गुस्सा आया और लोगों को कहा कि येह तुम ने क्या किया है ? उस पर कुरआने पाक के अल्फाज येह हैं :

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِىِٕكُمْ
فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىِٕكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

और जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम से कहा ऐ मेरी कौम ! बछडे को मा'बूद बना कर तुम ने अपनी जानों पर जुल्म किया अब अपने रब से तौबा करो। पस अपने नफ्स को मारो। अल्लाह के हां तुम्हारी बेहतरी इसी में है बेशक वोह तौबा कुबूल करने वाला रहीम है।

(पारह 1, सूरए बकरह, आयत : 54)

जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें एहसासे तौबा दिया तो उन्हों ने कहा कि ऐ मूसा ! हम भूल गए थे। चुनान्चे हम अपने अल्लाह से तौबा कर लेते हैं। इस मक्सद के लिये कौम के सत्तर आदमियों को मुन्तखब

किया गया कि वोह कोहे तूर पर जा कर कौम की तरफ से अल्लाह के हुजूर तौबा करें, लिहाजा मुकर्रर आदमी जब कोहे तूर के पास पहुंचे तो उन्हों ने हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से जिद की कि ऐ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ! हमें अल्लाह सामने दिखाओ फिर हम तुम्हें तस्लीम करेंगे कि तुम वाकेई अल्लाह के पैगम्बर हो । वरना हम तुम्हें और अल्लाह को नहीं मानते । अल्लाह तआला को उन की येह नाशुक्री और गुस्ताखी पसन्द न आई तो उस पर अल्लाह ने उन्हें मौत दे दी । येह देख कर हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह के हुजूर में कहा कि अब मैं वापस जा कर कौम को क्या मुंह दिखाऊं ? चुनान्चे आप ने अल्लाह के हुजूर गिरया जारी की तो अल्लाह ने दुआ कुबूल की और फिर उन्हें एक एक कर के दोबारा जिन्दा किया । जिन्दा होने पर उन तमाम ने अल्लाह के हुजूर तौबा की इल्तिजा की । अल्लाह ने उन की इल्तिजा कुबूल की मगर चालीस साल के लिये उन को मस्कनत [गरीबी] में डाल दिया । उस अर्से में मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ से सहरा में अब्र का साइबान रहा और मन्न वस्सलवा का नुजूल भी रहा । उस के बा'द अल्लाह ने उस कौम की तौबा कुबूल की और फिर उन्हें गल्बा अता कर के दुन्या में जाहो मर्तबत से सरफराज किया ।

हजरते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते हारून عَلَيْهِ السَّلَام, हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा जाद भाई थे । जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर चालीस यौम के लिये गए तो कौम को उन के हवाले कर गए । लेकिन बा'द में कौम ने बछडे की पूजा शुरूअ कर दी लेकिन जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इस बात का पता चला तो आप सख्त गेज और गुस्से की हालत में अपनी कौम की तरफ पलटे अपने भाई हजरते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ मुतवज्जेह हुए और कहा कि आप ने कौम के लोगों को क्यूं फसाद में मुब्तला होने दिया ? और क्यूं न इस्लाह की ? फिर जोश में आ कर अपने भाई के सर के बाल पकड लिये । हजरते हारून عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया कि कौम ने मुझे कमजोर जानते हुए मुझे मौत के घाट उतारना चाहा उस के इलावा मैं ने इस खयाल से भी

जियादा दख़्ल न दिया कि कहीं आप येह न कहें कि मेरा इन्तिजार भी न किया और कौम में फूट डाल दी। इस बात की कौम ने येह कह कर तस्दीक कर दी कि वाकेई हजरते हारून عَلَيْهِ السَّلَام ने इस फित्ने से हमें मन्अ किया था।

وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِیْ وَاَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ۝

और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो। (पारह 16, सूरए ताहा, आयत : 90)

जब हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को येह मा'लूम हुवा तो आप को अपने भाई के साथ बुरा सुलूक होने का सख़्त सदमा हुवा। उस पर आप ने अल्लाह के हुजूर येह दुआ की :

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِاَخِیْ وَاَدْخِلْنَا فِیْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ۝

ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और तू सब से जियादा रहम फरमाने वाला है।

(पारह 9, सूरए आ'राफ, आयत : 151)

(5) हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام की अपने बेटों के लिये दुआए मग्फिरत

हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام, हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام और उन के भाई बिन्यामीन को बहुत पसन्द करते थे और उन से वालिहाना प्यार करते थे। येह दोनों भाई हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से छोटे थे और उन की वालिदा साहिबा का भी इन्तिकाल हो चुका था। हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام के सोतेले भाई वालिद की बेपनाह महब्बत की बिना पर हसद करते थे उन के हसद की वज्ह वोह ख़्वाब भी था जो हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा था, कि जिस में ग्यारा सितारे, सूरज और चांद उन्हें सज्दा कर रहे हैं। चुनान्चे आप के भाइयों ने सोचा कि क्यूं न हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام को ख़त्म कर दिया जाए और उस मक्सद को हासिल करने के लिये आप के भाइयों ने एक चाल चली और जंगल में बकरियां चराने और खेलने का बहाना बना कर अपने हमराह ले गए। हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को उन के साथ भेज तो दिया लेकिन येह अन्देशा भी जाहिर किया जिस का कुरआने पाक में बयान हुवा है कि

قَالَ اِنِّیْ لَیَحْزُنُنِیْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَ اَخَافُ اَنْ یَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ۝۱۳

कहा मुझे रंज होगा कि तुम इसे (हजरते यूसुफ को عَلَيْهِ السَّلَام) ले जाओ और डरता हूं कि उसे भेडिया खाले और तुम उस से बे खबर रहो। (पारह 12, सूरए यूसुफ, आयत : 13)

हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام का येह अन्देशा सहीह साबित हुवा। और जब हजरते यूसुफ के भाई आप को जंगल की सेर कराने के बहाने ले गए तो वहां उन्हों ने मश्वरा कर के आप को एक कूएं में डाल दिया जिस में पानी न था और अर्से से खुश्क पडा था। और वापसी पर आप की कमीज को किसी जानवर का खून लगा कर ले आए और हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि यूसुफ को एक भेडिया उठा कर ले गया है। हजरते या'कूब को इस वाकिए से बहुत दुख हुवा और आप ने बेटे की जुदाई पर इतनी गिरया जारी की कि आप की आंखों की बीनाई जाती रही। आखिर कार जब हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के बादशाह बन गए और कहत साली की बिना पर आप के भाई आप से गल्ला लेने के लिये आए तो उस वक्त आप को अपने भाइयों और बाप के हालात मा'लूम हुए और येह भी पता चला कि मेरे बाप की जुदाई के सदमे की वज्ह से बीनाई जाती रही है तो आपने अपने भाइयों को अपना पैराहन दिया और कहा कि येह वालिद की आंखों पर डाल देना, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अल्लाह की रहमत उन की आंखों को रोशन कर देगी, किनआन में वापस आने पर हजरते या'कूब के बडे बेटे यहूदा ने आप की आंखों पर पैराहने यूसुफ को डाला। तो आप की आंखें रोशन हो गईं। यहूदा वोही थे जिस ने पहले हजरते यूसुफ को कूएं में फेंक, कर झूट का खून आलूदा कुर्ता हजरते या'कूब की खिदमत में पेश किया था। और आप उस बुराई के बदले में पैराहने यूसुफ भी उन्हों ने बाप की आंखों पर डाला। ताकि बुराई का बदला अच्छाई से बदल जाए और खुश खबरी की सआदत उस के हाथों अन्जाम पाए।

हजरते या'कूब की आंखें जब रोशन हो गईं तो बच्चों से कहने लगे। देखों मैं हमेशा तुम से कहा करता था कि खुदा की बा'ज वोह बातें

मैं जानता हूं जिन से तुम बेखबर हो मैं तुम से कहा करता था कि खुदा तआला मेरे यूसुफ को जरूर मुझ से मिलाएगा। अभी थोडे दिनों का जिक्र है कि मैं ने तुम से कहा था कि आज मुझे मेरे यूसुफ की खुश्बू आ रही है अब बेटे शर्मो नदामत में गर्क हो कर सर झुकाए बोले, ऐ बाप ! आप खुदा की बारगाह में हमारे गुनाहों की मग्फिरत के लिये दुआ फरमाए क्यूंकि अब येह तो जाहिर हो चुका है कि हम सख्त खताकार और कुसूरवार हैं। हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया। अन्करीब मैं अपने रब से तुम्हारे लिये मग्फिरत की दुआ करूंगा। बिलाशुबा वोह बडा बख्शने वाला, रहम करने वाला है और मुझे अपने रब से येह भी उम्मीद है कि वोह तुम्हारी खताएं मुआफ कर देगा इस लिये कि वोह बख्शिशों और महेरबानियों वाला है। तौबा करने वालों की तौबा कुबूल फरमा लिया करता है मैं सेहरी के वक्त तुम्हारे लिये इस्तिगफार करूंगा तो आप ने अपनी औलाद के लिये अल्लाह के हुजूर इस्तिगफार किया।

﴾6﴿ हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام का अपने भाइयों के लिये इस्तिगफार

हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई किनआन में कहत साली की वज्ह से आप के पास पहुंचे तो उस वक्त आप के भाइयों की हालत आजिजाना और बेबस थी। आप के भाइयों ने आप के सामने अपने मसाइब और दुखों का जिक्र किया। पुरानी दास्तान को दोहराया, वालिदे बुजुर्गवार की हालत बयान की तो हजरते यूसुफ को अपने साबिका दुख याद आ गए और उन से पूछा कि तुम ने जहालत में अपने भाई यूसुफ के साथ क्या किया था ?

इस मुलाकात से पहले भी आप की अपने भाइयों से मुलाकात हुई थी लेकिन आप को अल्लाह का हुक्म था कि अपने आप को जाहिर न करें। इस मरतबा अल्लाह तआला ने हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि वोह अपने आप को अपने भाइयों पर जाहिर कर दें कि मैं आप का भाई हूं इस पर आप के भाई चोंक पडे क्यूं कि उन के सामने अगले पिछले हालात आ गए और हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि मैं यूसुफ हूं। और बिन्याबीन मेरा सगा भाई है। अल्लाह तआला के फज्लों करम से

हम बिछडने के बा'द मिल गए। अब तो भाइयों ने हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام की फजीलत और बुजुर्गी का इकरार कर लिया कि वाकेई सूरतो सीरत के ए'तिबार से आप हम पर कुव्वत रखते हैं, मुल्कों माल के ए'तिबार से भी अल्लाह तआला ने आप को हम पर फजीलत दी उस रोज से हजरते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया कि मैं आज के दिन के बा'द तुम्हें येह खता याद भी न दिलाऊंगा। मैं तुम्हें कभी नहीं झिडकूंगा न तुम पर कोई इल्जाम लगाता हूं न तुम पर कोई इज्हार करता हूं बल्कि मेरी दुआ है कि खुदा तुम्हें मुआफ करे। भाइयों ने उज्र पेश किया आप ने कुबूल फरमा लिया। अल्लाह तआला तुम्हारी पर्दापोशी करे और तुम ने जो किया है उसे बख्श दे और कुरआन में इस का यूं बयान किया गया है।

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾

जवाब दिया आज तुम पर कोई खफगी नहीं न इल्जाम, अल्लाह तुम्हें बख्श दे वोह सब महेरबानों से महेरबान है।

(पारह 13, सूरए यूसुफ, आयत : 92)

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

जब खुश खबरी देने वाले ने पहुंच कर उन के मुंह पर कुर्ता डाला उसी वक्त वोह फिर से बीना हो गए कहने लगे क्या मैं तुम से न कहा करता था कि मैं खुदा की तरफ से वोह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। वोह कहने लगे आप हमारे गुनाहों की बख्शिश तलब कीजिये बेशक हम कुसूरवार हैं, अच्छा मैं तुम्हारे लिये अपने परवर दिगार से बख्शिश मांगूंगा वोह बहुत बडा बख्शने वाला निहायत रहीम है।

(पारह 13, सूरए यूसुफ, आयत : 96-98)

﴾7﴿ हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

अल्लाह तआला ने हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को नैनवा के इलाके में

लोगों को राहे हिदायत पर लाने के लिये नबी मब्ऊस फरमाया। आप ने लोगों के बुरे आ'माल को देखा तो उन्हें खुदा के रास्ते की दा'वत दी। शिर्क और बुत परस्ती को छोड कर एक खुदा की परस्तिश की तरफ बुलाया। मगर कौम आप की दा'वत पर ईमान न लाई। फिर आप ने लोगों को अल्लाह के अजाब से डराया लेकिन लोगों ने आप के कहने को सच न माना। आखिर आप ने अल्लाह के हुजूर दुआ की कि उन पर अजाब नाजिल कर। मगर इस मुद्दत के दौरान अजाब नाजिल न हुवा और आप अल्लाह के हुक्म का इन्तिजार किये बिगैर ही दिल बरदाश्ता हो कर वहां से चल दिये। इसी अस्ना में आस्मान से एक सियाह रंग के धूएं की मानिन्द अजाब नाजिल होना शुरूअ हुवा। वहां के लोगों को यकीन हो गया कि उन के पैगम्बर यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने अजाब की खबर सच्ची ही दी थी लिहाजा येह अजाब हमारा सब कुछ हलाक कर देगा। चुनान्चे नैनवा का बादशाह बमअ अपनी रिआया के सब छोटे बडे अफराद और जानवरों समेत शहर से बाहर एक खुले मैदान में निकल आया। उस के बा'द सब लोग अल्लाह के हुजूर में गिरया जारी करने लगे और सज्दा रेज हुए और अल्लाह के अहकामात को न मानने पर मुआफी मांगने लगे। चुनान्चे अल्लाह तआला ने उन के ताइब होने पर उन से अजाब उठा लिया। इसी अस्ना में हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام दरया के किनारे पहुंच कर एक कश्ती में सुवार हो गए और जब कश्ती गहरे दरया में गई तो वहां तूफान के आसार नमूदार हुए। करीब था कि कश्ती डूब जाती। चुनान्चे फैसला येह हुवा कि किसी आदमी को दरया में डाल दिया जाए ताकि वज्न कम हो जाए। कुरआ डाला तो हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का नाम निकला। किसी ने भी आप को दरया में डालना पसन्द न किया। चुनान्चे दोबारा कुरआ डाला गया तो फिर आप का नाम निकला हत्ता कि तीन मरतबा आप का नाम निकला और हजरते यूनुस को दरया में कूदना पडा। जब आप कूदे तो एक बडी मछली ने आप को निगल लिया। उस पर अल्लाह तआला ने सूरतुस्साफात में इर्शाद फरमाया है :

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

जब कि भरी कश्ती की तरफ निकल गया। जब कुरआ डाला गया तो उन के नाम का निकल आया। फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था। (पारह 23, सूरए साफ्फात, आयत : 140-142)

अल्लाह तआला ने मछली को हुक्म फरमाया कि आप को अपने पेट में रखे लेकिन उन्हें जर्रा भर नुक्सान न पहुंचे। क्यूं कि हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का जिस्म मछली का रिज्क न था बल्कि अल्लाह ने उस के पेट को कैदखाना बनाया था। अब आप को अपने किये का अहसास हुवा कि बेशक मैं ने जल्दी की और बिगैर हुक्मे इलाही के इन्तिजार के बस्ती वालों को छोड कर निकल खडा हुवा सूरए अम्बिया में इर्शाद हुवा।

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ

और जुन्नून को याद करो जब चला गुस्से में भरा, तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 87)

उस मछली का पेट एक तन्नूर की तरह था और आप ने उस मछली के पेट में अल्लाह को पुकारा और आप ने दरया की तेह में कंकरियों की तस्बीह सुनी और खुद भी तस्बीह करना शुरूअ कर दी। आप मछली के पेट में जा कर पहले तो समझे कि मैं मर गया फिर पैर को हिलाया तो वोह हिला, यकीन हुवा कि मैं जिन्दा हूं। वहीं सज्दे में गिर पडे और कहने लगे बारगाहे रब्बुल इज्जत ! में मैं ने तेरे लिये इस जगह को मस्जिद बनाया जिसे इस से पहले किसी ने जाए सुजूद न बनाया होगा। और आप ने उसी वक्त अल्लाह के हुजूर इस्तिगफार किया और इस आयत का विर्द किया। لَّا إِلَٰهَ إِلَّا أَنتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ الظَّالِمِينَ नहीं कोई मगर तू पाक है बेशक मैं जालिमों में से हूं।

तीन दिन बा'द अल्लाह ने आप का इस्तिगफार कुबूल किया और आप को मछली के पेट से निकाला और फिर इज्जत से नवाजा। रब्बे करीम को आप की येह आजिजी व इन्किसारी बहुत पसन्द आई और आप की तौबा कुबूल फरमाई। इर्शाद फरमाया :

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

तो हम ने उस की पुकार सुन ली और उसे गम से नजात बख्शी। और मुसलमानों को ऐसे ही नजात दूंगा। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 88)

इस इर्शादे इलाही से वाजेह हो गया कि तौबा व इस्तिगफार सिर्फ अम्बिया ही के लिये मख्सूस नहीं बल्कि जो मोमिन भी अपने रब की तरफ इख्लास और नेक निय्यती के साथ रुजूअ करेगा उस को मसाइब और इब्तिला से नजात मिलेगी। नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि

"जो इस्तिगफार को अपने ऊपर लाजिल करे तो अल्लाह तआला उस के लिये हर तंगी से छुटकारा और हर गम से नजात देगा, और उसे वहां से रोजी देगा जहां से उस का वहमो गुमान भी न हो।

रिवायत है कि जो कोई मुसीबत जदा बारगाहे इलाही में मुन्दरजा बाला कलिमात से दुआ करेगा तो अल्लाह तआला उस की दुआ कुबूल फरमा लेता है। लिहाजा हजरते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام के इस्तिगफार की आयत का विर्द अल्लाह के नज्दीक बहुत पसन्द है। चुनान्चे आज भी अगर कोई इन्सान खुलूसे दिल से इस आयत को पढे तो अल्लाह की बख्शिश और रहमत को वोह बहुत करीब पाएगा।

﴾8﴿ हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के साथ भी एक ऐसा वाकिआ गुजरा है कि जिस वक्त आप ने सज्दा रेज हो कर अल्लाह से इस्तिगफार किया और वोह वाकिआ यूं बयान किया जाता है कि एक दफ्अ आप अपने घर में महवे इबादत थे कि आप के सामने एक दम दो आदमी जाहिर हुए जो आपस में झगड रहे थे और उन का झगडा येह था कि एक के पास निन्नावे दुम्बियां थीं और दूसरे के पास सिर्फ एक और निन्नावे दुम्बियों वाला जबरदस्ती उस की एक दुम्बी छीन कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता था। जब आप ने येह तकरार सुनी तो आप के जेहन में आया कि येह तो

जुल्म है कि निन्नावे दुम्बियों वाला उस की एक दुम्बी पर भी कब्जा कर ले। उस के फौरन बा'द हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने सोचा कि येह क्या मुआमला है कि महल के बाहर तो पहरा है और येह दीवार फांद कर किस तरह अन्दर आ गए और फिर फौरन गाइब हो गए। येह तो कोई अल्लाह के भेजे हुए थे जिन्हों ने हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सामने इस वाकिए से किसी हकीकत की रहनुमाई की कि उन के पास इतनी बडी अजीमुश्शान हुकूमत है। फिर उन की अपनी इन्फिरादी जिन्दगी है जिस में बहुत सी आजमाइशें और इम्तिहान हैं चुनान्चे हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पर इस वाकिए से ऐसी कैफियत तारी हुई कि आप अल्लाह के हुजूर सर ब-सुजूद हो गए। और तलबे मग्फिरत करते हुए ए'तिराफ करने लगे कि खुदाया ! इस अजीमुल मर्तबत जिम्मेदारी से सुबुकदोश होना भी मेरी ताकत से बाहर है। जब तक कि तेरी मदद शामिले हाल न हो। अल्लाह तआला की जात को हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का येह अमल पसन्द आया और उन की मग्फिरत की। सूरए صٓ में है

وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝

अब दावूद समझा कि हम से येह जांच की थी। तो अपने रब से मुआफी मांगी और सज्दे में गिर पडा और रुजूअ लाया तो हम ने उसे मुआफ फरमा दिया बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में जरूर कुर्ब का दरजा हासिल है और अच्छा ठिकाना है। (पारह 23, सूरए صٓ, आयत : 24-25)

मुफस्सिरीन कहते हैं कि आप चालीस रोज तक खुदा के हुजूर सज्दे में पडे रोते रहे इस कदर आंसू बहे कि उस पानी से घास ऊग आई। तब अल्लाह तआला ने रहम फरमाया और तौबा कुबूल फरमाई और येह इर्शाद हुवा :

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

ऐ दावूद ! बेशक हम ने तुझे जमीन पर अपना खलीफा मुकर्रर किया तू लोगों में हुकूमत कर इन्साफों सच्चाई के साथ और ख्वाहिश के

पीछे न चल कि कहीं तुझे अल्लाह की राह से बहका दे। बेशक वोह जो अल्लाह की राह से बहकते हैं उन के लिये सख़्त अजाब है इस बात पर कि वोह हिसाब के दिन को भूल बैठे। (पारह 23, सूरए صٓ , आयत : 26)

या'नी नाइब का फर्ज येह है कि वोह मुआमलाते दुन्यवी शरीअते इलाही के मुताबिक करे। जिस में अपनी मर्जी या ख़्वाहिशे नफ्स का शाइबा तक न हो वरना अल्लाह की राह से बेहक जाने का सख़्त खतरा है।

हजरते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह तआला ने बडे फज़्लो करम से नवाजा था आप को जमीन पर अपना खलीफा और रसूल मुकर्रर फरमाया और एक अजीमुश्शान सल्तनत पर आप को हुकूमत अता फरमाई आप को हक व इन्साफ करना भी सिखाया। आप के हाथ में लोहा नर्म हो जाता था जिस से आप जिरहें तय्यार कर के रिज़्के हलाल कमाते। अल्लाह सुब्हानहू ने आप को एक आस्मानी किताब "जबूर" भी अता फरमाई। जिस को आप सुब्हो शाम ऐसी खुश इल्हानी से तिलावत फरमाते और जिक्रो तस्बीह भी ऐसे खुलूस और खौफे इलाही से फरमाते कि उस की तासीर से पहाड वज्द में आ कर आप के साथ तस्बीह करने लगते और परिन्दे भी आप के गिर्द जम्अ हो कर आप के हमनवा हो जाते और सफ बांधे आप के सर के ऊपर खडे रहते। जिन्नो इन्स भी सफ बस्ता हो कर खडे हो जाते और चलता पानी भी रुक जाता। सूरए सबा में इर्शादे बारी तआला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۙ﴿۱۰﴾

और हम ने दावूद को अपनी तरफ से बडा फज़्ल दिया ऐ पहाडो ! खुश आवाज से पढो उस के साथ और ऐ उडने वाले परिन्दो ! (तुम भी पढो) और नर्म कर दिया उस के लिये हम ने लोहा।

(पारह 22, सूरए सबा, आयत : 10)

और सूरए صٓ में इर्शाद फरमाया।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾

और हमारे बन्दे दावूद ने'मतों वाले को याद करो। बेशक वोह बडा रुजूअ करने वाला है। बेशक हम ने उस के साथ पहाड मुसख्खर फरमा दिये कि तस्बीह करते शाम को और सूरज चमकते और परिन्दे जम्अ किये हुए, सब उस के फरमां बरदार थे और हम ने उस की सल्तनत को मज्बूत किया और उसे हिक्मत और कौले फैसल दिया।

(पारह 23, सूरए ص, आयत : 17-20)

﴾9﴿ हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام, हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के फरजन्द और जानशीन थे। अल्लाह तआला ने आप को ऐसी बादशाहत अता की जो जिन्नो इन्स और चरिन्दो परिन्द पर थी आप तमाम जानवरों की बोलियां जानते थे। हवा भी आप के लिये मुसख्खर या'नी आप की हुकूमत ऐसी थी जो किसी को न दी गई। मगर एक मरतबा अल्लाह तआला ने हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को आजमाइश में डाल दिया। उस की बहुत सी वुजूहात बयान की जाती हैं लेकिन उन में से एक वज्ह येह भी है कि हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की एक बीवी जिस का नाम अमीना था उस को अपने बाप से बहुत प्यार था। चुनान्चे उस बीवी ने हजरते सुलैमान के घर अपने बाप का बुत बना कर उस की परस्तिश की जिस से आप बे खबर रहे और पैगम्बर के घर शिर्क की येह कार गुजारी अल्लाह को पसन्द न आई। चुनान्चे अल्लाह तआला ने हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को कुछ अर्से के लिये तख्त से महरूम कर दिया गया और एक आजमाइश में डाल दिया। इस आजमाइश के दौरान हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह के हुजूर बख्शिश और इस्तिगफार की दुआ की, बा'ज मुफस्सिरीन इस्राईली रिवायत से इख्तिलाफ करते हैं। वल्लाहू आलमु बिस्सवाब !

इस आजमाइश के बारे में कुरआन की सूरए ص में है कि "हम ने सुलैमान की आजमाइश की और उन के तख्त पर एक जिस्म डाल दिया। फिर उस ने रुजूअ किया कि खुदाया ! मुझे बख्श दे और मुझे वोह बादशाही अता कर जो मेरे सिवा किसी शख्स के लाइक न हो और तू बडा

ही देने वाला है पस हम ने हवा को उन के मा तहत कर दिया। वोह आप के हुक्म से जहां आप चाहते पहुंचा दिया करती थी। ताकतवर जिन्नात इमारत बनाने वाले, गौता खोर और दूसरे जिन्नात को भी जो जन्जीरों में जकडे रहते थे, आप के मा तहत कर दिया था।

इब्ने कसीर ने हजरते सा'द के हवाले से यूं बयान किया है कि हजरते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام की 100 बीवियां थीं। आप के सब से जियादा ए'तिबार उन में से एक बीवी पर था जिन का नाम हबरादा था। जब जुनूबी होते या रफ्ए हाजत के लिये जाते तो आप अपनी अंगूठी जिस पर इस्मे आ'जम लिखा था जो अल्लाह की तरफ से दी गई थी। उन ही को सोंप जाते। एक मरतबा आप बैतुल खला में गए, पीछे से एक शैतान आप की सी सूरत बना कर आया और बीवी से अंगूठी तलब की, उन्हों ने उस जिन्न को दे दी। येह उस को लेते ही तख्त पर बैठ गया। अब जो हजरते सुलैमान आए तो वोह अंगूठी तलब की तो बीवी ने कहा कि आप अंगूठी तो ले गए हैं। चुनान्चे आप ने खयाल किया कि येह खुदा की आजमाइश है लिहाजा उसी परेशानी में महल से निकल गए। उस शैतान ने चालीस दिन तक हुकूमत की और नित नए तरह तरह के अहकामात सादिर किये उन अहकामात की तब्दीली को देख कर उलमा ने समझ लिया कि येह सुलैमान नहीं।

चुनान्चे कौम के चन्द उलमा आप की बीवियों के पास आए और उन से कहा येह क्या मुआमला है ? हमें सुलैमान की जात पर शुबा पैदा हो गया है। अगर येह वाकेई सुलैमान हैं तो उन की अक्ल जाती रही है या येह सुलैमान नहीं। वरना ऐसे खिलाफे शरअ अहकामात न देते। औरतें येह सुन कर रोने लगीं। और येह लोग वहां से वापस आ गए और तख्त के इर्द गिर्द उसे घेर कर बैठ गए। और तौरात खोल कर उस की तिलावत शुरूअ कर दी। येह खबीस शैतान कलामे खुदा से भागा और जाते हुए अंगूठी समुन्दर में फेंक गया जिसे एक मछली निगल गई। हजरते सुलैमान यूंही अपने दिन गुजार रहे थे। एक दिन समुन्दर के किनारे

निकल गए, भूक बहुत लगी हुई थी। माहीगीरों को मछलियां पकडते हुए देख कर उन के पास आ कर एक मछली मांगी और अपना नाम बताया। उस पर बा'ज लोगों को तेश आया कि देखो भीक मांगने वाला अपने आप को सुलैमान बताता है उन्हों ने आप को मारना पीटना शुरूअ किया। आप जख्मी हो गए और एक किनारे जा कर अपने जख्म का खून धोने लगे। बा'ज माहीगीरों को आप पर रहम आ गया कि एक साइल को ख्वाह म ख्वाह मारते जा रहे हो। भई इसे चन्द मछलियां दे दो। बेचारा भूका है। भून खाएगा।

चुनान्चे उन्हों ने चन्द मछलियां दे दीं। भूक की वज्ह से आप अपने जख्मों को और खून को तो भूल गए और जल्दी से मछली का पेट चाक करने बैठ गए। खुदा की कुदरत से मछली के पेट से वोह अंगूठी निकल आई आप ने खुदा की ता'रीफ बयान की और अंगूठी ऊंगली में डाल ली। उसी वक्त परिन्दों ने आ कर आप के सर पर साया कर दिया। और लोगों ने पहचान लिया और आप से मा'जिरत करने लगे। आप ने फरमाया येह सब अम्रे रब्बी था, खुदा की तरफ से इम्तिहान था, फिर आप महल में तशरीफ ले आए और अपने तख्त पर बैठ गए और हुक्म दिया कि उस शैतान को, जहां भी हो गिरफ्तार कर के लाओ। चुनान्चे उसे कैद कर लिया गया आप ने उसे एक लोहे के सन्दूक में बन्द कर दिया और कुफ्ल लगा कर मुहर लगा दी और समुन्दर में फेंकवा दिया। जो कियामत तक वहीं कैद रहेगा।

इस किस्से से येह जाहिर होता है कि हजरते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام पर जब आजमाइश का वक्त आया तो उन्हों ने भी अल्लाह के हुजूर मुआफी मांगी। और उस पर बख्शिश की दुआ की जो अल्लाह तआला ने कुबूल फरमाई और इस आजमाइश को खत्म कर के आप को दोबारा तख्ते बादशाहत पर बिठा दिया।

﴾10﴿ हजरते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام का इस्तिगफार

हजरते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام को, अल्लाह तआला ने हर तरह की ने'मतों से नवाजा था, औलाद, अम्वाले मवेशी, खेतियां और बागात

वगैरा कस्रत से अता फरमाए। आप रात दिन बेपनाह अल्लाह तआला की इबादत करते। रिवायत है कि फिरिश्तों ने एक दिन अल्लाह तआला से अर्ज की कि हजरते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام मालो दौलत, जनो फरजन्द जियादा मिलने और दुन्या में जियादा सहूलतें हासिल होने की वज्ह से बन्दगी करते हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया कि वोह हर हाल में हमारी रिजा पर राजी है। जिस तरह वोह इस वक्त राजी है, हालते फक्र में इस से भी जियादा शुक्र गुजार रहेगा।

एक रिवायत येह भी है कि एक दिन आप को किसी ने कहा कि आप को अल्लाह तआला ने दुन्या में बहुत मालो फरजन्द और ने'मतें अता की हैं। आप ने फरमाया कि उस के इवज में बहुत इबादत और शुक्र अदा करता हूं। येह अल्फाज खुदा को ना पसन्द हुए। आप के हजारहा ऊंट और बकरियां और मवेशी मर गए। तमाम खेतियां बरबाद हो गईं। फरजन्द, घर की छत गिरने से दब कर मर गए। मगर जब आप को किसी के हलाक होने या माल जाया होने की खबर दी जाती तो आप हम्दे इलाही फरमाते और कहते कि मेरा क्या है ? जिस का था वोह ले गया, कभी फरमाते रिजाए इलाही है, किसी ने कहा कि आप अल्लाह तआला से और मांग लें। फरमाया कि जितना अर्सा मुझे येह ने'मतें मुयस्सर रहीं मैं उस का ही शुक्र अदा नहीं कर सकता। फिर आप को मर्जे लाहिक हो गया जिस के बाइस सब ने साथ छोड दिया। बिल आखिर कोई सबब पेश आया कि आप ने बारगाहे इलाही में अर्ज किया कि जरूर मुझ से सुस्ती हुई है जिस से येह तक्लीफ पहुंची है। चुनान्चे आप ने अल्लाह तआला से इस तरह दुआ व इस्तिगफार किया।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो। जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तक्लीफ और ईजा दी है।

(पारह 23, सूरए صٓ, आयत : 41)

सूरतुल अम्बिया में अल्लाह तआला ने आप के मुतअल्लिक फरमाया है कि وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚۖ

और अय्यूब को याद करो जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तक्लीफ पहुंची और तू सब रहम करने वालों से जियादा रहम करने वाला है। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 83)

अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फरमाई और तमाम बीमारियों से शिफा अता फरमादी।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ तो हम ने उस की दुआ सुन ली तो हम ने जो तक्लीफ उसे थी, दूर कर दी। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 84)

हजरते इब्ने अब्बास से मरवी है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी अल्लाह तआला ने उन सब को जिन्दा फरमा दिया और अपने फज्लो रहम से उतनी ही औलाद और अता कर दी। मालो दौलत भी बहुत अता फरमाया। सूरतुल अम्बिया में इर्शाद फरमाया :

وَاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝

और हम ने उस के घरवाले और उन के साथ उतनी ही और अता फरमाए अपने पास से रहमत फरमा कर और बन्दगी वालों के लिये नसीहत है। (पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत : 84)

इस से मा'लूम हुवा कि आजमाइश में पूरा उतरने, सब्रो शुक्र और अल्लाह तआला की रिजा पर राजी रहने से रिजाए इलाही हासिल होती है और दुन्या व आखिरत में दरजात बुलन्द होते हैं।

तौबा व इस्तिगफार पर भी इसी तरह इन्आमो इकराम से नवाजा जाता है।

नीज इस वाकिए को तमाम बन्दों के लिये नसीहत बनाया कि जब कभी किसी नेक बन्दे पर दुन्या में कोई मुश्किल और इब्तिला का दर्द आए तो हजरते अय्यूब की तरह सब्र करना चाहिये और अपने परवर दिगार से फरयाद करनी चाहिये। अल्लाह तआला अपनी रहमत से हर मुश्किल दूर कर देता है।

﴾10﴿ कौमे सालेह عَلَيْهِ السَّلَام को इस्तिग़फार की तल्कीन

हजरते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام कौमे समूद की तरफ नबी बन कर आए थे। आप ने कौम से कहा कि सिर्फ अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा मा'बूद नहीं उसी लिये इन्सान को मिट्टी से पैदा किया और फिर उसी ने इन्सानों को अपने फज्लों करम से जमीन में बसाया उन्हें बेशुमार ने'मतों से नवाजा मगर आप की कौम ने कुफ्रो शिर्क किया और आप को नबिये बरहक मानने से इन्कार कर दिया मगर सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को डराया कि ईमान लाओ और ईमान लाने में कोताही न करो। वरना अजाब नाजिल होगा। चुनान्चे हजरते सालेह ने कौम को कहा कि अल्लाह के हुजूर तौबा करो और बुत परस्ती को छोड कर एक खुदा पर ईमान लाओ। क्यूं कि अल्लाह तआला हर एक की तौबा कुबूल करने वाला है। कुरआने पाक में हजरते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने कौम को जैल के अल्फाज से तौबा करने ले लिये कहा : فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾

पस बख्शिश मांगो अपने परवर दिगार से फिर उसी तरफ तौबा करो बेशक अल्लाह तआला सब के करीब और दुआओं को कुबूल करने वाला है। (पारह 12, सूरए हूद, आयत : 61)

हजरते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की कौम ने हक को तस्लीम न किया और तौबा न की। हजरते सालेह की कौम दो गिरौहों में बट गई थी। आप ने अपनी कौम को कहा कि तुम अल्लाह की रहमत की बजाए अजाब क्यूं मांगते हो ? तो अल्लाह ने अजाब के जरीए उन की बस्तियों को तबाह कर दिया।

आप ने कौम से कहा : لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۶﴾

तुम अल्लाह से इस्तिगफार क्यूं नहीं करते ? ताकि तुम पर रहम किया जाए। (पारह 19, सूरए नम्ल, आयत : 46)

10 तौबा के रास्ते की रुकावटें

बेशुमार ऐसे अस्बाब और वुजूहात हैं जो इन्सान को तौबा की तरफ आने नहीं देते और इन्सान मादियत में इस तरह उल्झा हुवा है कि उसे तौबा का कभी एहसास ही पैदा नहीं होता वोह अस्बाब जो तौबा के रास्ते में रुकावट हैं वोह मुन्दरजा जैल हैं ..।

(1) शैतान

तौबा के रास्ते में शैतान सब से बडी रुकावट है जो येह नहीं चाहता कि इन्सान कहीं अल्लाह के हुजूर तौबा कर के फलाह न पा जाए क्यूं कि शैतान इन्सान का दुश्मन है। शैतान दर अस्ल बुराई का मुब्दा है और एक सिफ्ली ताकत है। जो इब्लीस नामी नारी मख्लूक के साथ वाबस्ता है। जिस तरह रहमानी ताकत दुन्या में हर जगह मौजूद है इसी तरह शैतानी कुव्वत भी तमाम दुन्या में हर जगह पाई जाती है। और येह कुव्वत इन्सान को गुमराह करने पर तुली हुई है। और इन्सान को अल्लाह तआला की तरफ से हटा कर गैरुल्लाह की तरफ लाने में मस्रूफ है।

शैतान और इन्सान की दुश्मनी अजल से है और इन्सानी दुश्मनी शैतान की ऐने फितरत है चुनान्चे हमेशा वोह इन्सान पर अपनी शैतानियत के जाल डालता है क्यूं कि वोह चाहता है कि मख्लूक कत्अन अल्लाह तआला की फरमां बरदारी और इताअत की तरफ न जाए और इन्सान के ईमान को जाएअ करे, शैतान उन लोगों के साथ भी मुखालिफत पर कमरबस्ता रहता है जो उस के साथ मुखालिफत नहीं करते। बल्कि उस के रास्ते पर चल रहे होते हैं जैसे कुफ्फार, गुमराह और फासिक लोग। मगर वोह लोग जो अल्लाह के खास बन्दे होते हैं और अल्लाह के रास्ते पर चलते हैं उन के साथ शैतान की दुश्मनी बहुत शदीद होती है। चुनान्चे अल्लाह के मख्सूस गिरोह के साथ उस की मुखालिफत भी खुसूसी है।

बचपन और जवानी में हकीकी शुऊर का बेदार होना जरा मुश्किल है, उम्र के इस दौर में इन्सान इताअत और इबादत की तरफ बहुत कम

रुजूअ करता है, शैतान ने इन्सानों के इर्द गिर्द ऐसे जाल फेलाए हुए हैं कि वोह इन्सान को गुनाह ही में घेरे रखते हैं। अल्लाह की इबादत के लिये तौबा सब से पहली सीढी है कि इन्सान अपने साबिका गुनाहों पर तौबा करे और उन को आइन्दा न करने का अल्लाह से वा'दा कर के इबादत की तरफ रागिब हो जाए चुनान्चे शैतान इन्सान को इस पहली सीढी की तरफ भी आने से रोकता है और कहता है कि तौबा कर के अल्लाह के रास्ते पर चलोगे तो गरीब हो जाओगे, दुख, रंज और गम उठाना पडेगा चुनान्चे येह इब्लीस इन्सान की इस तरह आंखें बन्द करता है कि उसे तौबा की तरफ आने ही नहीं देता। हत्ता कि बारगाहे रब्बुल इज्जत से इन्सान को बुलावे का वक्त आ जाता है और तौबा करने का वक्त गुजर जाता है तो इन्सान की आंख खुलती है। वोह देखता है कि उस के आ'माल नामे में सिवाए गुनाह के और कुछ भी नहीं मगर अब पछताने से क्या हो सकता है। शैतान ने अपने लश्कर तय्यार कर रखे हैं जिन में जिन्नात का खासा रोल है कि वोह इन्सान के इर्द गिर्द इहाता किये हुए होते हैं। जो हर हीले और बहाने से सिराते मुस्तकीम पर आने से रोकते हैं।

(2) खौफे खुदा का फुक्दान

अल्लाह का खौफ इन्सान को गुनाहों और लग्जिशों से बचाता है क्यूं कि जब इन्सान को किसी मालिक और आका से डर और खौफ हो कि अगर मुझ से काम खराब हो गया या मैं ने न किया तो मुझे आका से सजा मिलेगी बिऐनिही इन्सान के दिल में जब अल्लाह का डर हो कि मैं बुरा काम करने लगा हूं और अल्लाह तआला मुझे देख रहा है और मुझे येह बुरा काम करने पर सजा मिलेगी तो इन्सान येह खयाल कर के खौफ खा जाता है कि मैं अपने आप को क्यूं मुब्तला करूं। तो इस तरह खौफे खुदा की बिना पर इन्सान गुनाहों में आलूदा होने से बच जाता है।

अल्लाह से डरने वालों के बारे में इर्शाद है कि उन लोगों के लिये जो अपने रब से डरते थे। हिदायत और रहमत थी। खुदा से उस के वोही

बन्दे डरते हैं जो इल्म रखते हैं अल्लाह उन से खुश रहेगा और वोह अल्लाह से खुश रहेंगे और उस के लिये जो अपने रब से डरता है।

रसूले पाक ने खौफे खुदा के बारे में बेशुमार मौकओं पर फरमाया :

आप ने फरमाया कि खौफे खुदा इल्मो हिक्मत का खजाना है।

आप ने फरमाया कि मैं खौफ या दो तहफ्फुज एक बन्दे में जम्आ न करूंगा या'नी अगर बन्दा दुन्या में अल्लाह से डरता रहेगा तो मैं कियामत के दिन उसे महफूज रखूंगा और अगर किसी ने दुन्या में खौफ न खाया तो कियामत के दिन उसे मुब्तलाए खौफ रखा जाएगा।

जो हक तआला से डरता है उस से सारी दुन्या डरती है और सारा जमाना खौफ खाता है और जो खुदा से नहीं डरता वोह हर शै से खाइफ रहता है और फिर फरमाया : तुम में से खाइफ तरीन वोही है आकिल तरीन वोही है जो अल्लाह से सब से जियादा खौफ खाता है वोही सब से जियादा आकिल है।

फिर फरमाया कि वोही मोमिन है कि आंसू का एक कतरा उस की आंख से निकले, ख्वाह मख्खी के सर के बराबर ही क्यूं न हो। और बेहता हुवा उस के चेहरे पे आ ढलके और उस पर आतिशे दोजख हराम न हो जाए।

और फरमाया कि जब खौफे खुदा से बन्दे के रोंगटे खडे हो जाते हैं तो गुनाह उस के जिस्म से इस तरह अलग हो जाते हैं जिस तरह पत्ते दरख्तों से झड जाया करते हैं।

और फरमाया : जो शख्स खौफे खुदा से डरता है, दोजख की आग उस के करीब नहीं जा सकती, ऐसे ही जैसे कि पिस्तान का निकला हुवा दुध वापस पिस्तान में नहीं जा सकता।

खौफे खुदा की बे पनाह फजीलत है और खौफ के जेरे असर सब्र और तौबा का जुहूर होता है लेकिन मौजूदा दौर में लोगों के तौबा की तरफ माइल न होने की सब से बडी वज्ह जरा नहीं सोचते कि अल्लाह की जात उन को देख रही है। अक्सर आंखें बन्द किये गुनाह पर गुनाह किये जा रहे

हैं। इन्सान को हर वक्त अल्लाह से डरना चाहिये और अल्लाह की तरफ लौट आना चाहिये।

येह खयाल कि आखिरत में नेक आ'माल पर इन्आम मिलना महज एक वा'दए फर्दा है। लेकिन दुन्यवी जिन्दगी में नूरी फाएदा नजर आता है लिहाजा वोह इस नूरी मफाद को तरजीह देता है। हालांकि दुन्यवी फाएदा आरजी और थोडे अर्से के लिये है उस के मुकाबले में आखिरत का फाएदा जियादा बेहतर है और हमेशा बाकी रहने वाला है।

(3) नफ्स

तौबा करने के रास्ते में नफ्स भी एक बहुत बडी रुकावट है, जो इन्सान को नेकी की तरफ नहीं आने देता। इन्सानी नफ्स ख्वाहिशात की आमाजगाह है और उस कि वज्ह से इन्सान के दिल तरह तरह के बेशुमार जाइज और नाजाइज तमन्नाएं और आरजूएं पैदा होती हैं। नफ्स माद्दी जिस्म को जियादा से जियादा सहूलत और तन आसानी पहुंचाने की कोशिश करता है दुन्यावी सुकून खूब हासिल होता है जाहिरन कोई खास मसाइब और आलाम नहीं होते तो नफ्से इन्सान में खुद सरी गुरूर पैदा करता है तो फिर अल्लाह की इताअत छोड कर सरकशी की तरफ आ जाता है। तन आसानी के लिये नफ्से इन्सान को गैर शरई उमूर या'नी शराब जिना की तरफ माइल कर देता है खाने पीने की तरफ खूब तवज्जोह देता है। अपने आप को दूसरों के मुकाबले में आ'ला और बुलन्द खयाल करने लगता है मगर नफ्स को जब कोई जरासी तक्लीफ पहुंचती है तो रोने लग जाता है, अल्लाह पर शिक्वा करता है तक्दीर को बुरा भला कहता है।

नफ्स एक ऐसा चोर है जो इन्सानी दिल में अपना मकाम रखता है। मिस्ल मश्हूर है कि घर का भेदी लंका ढाए लिहाजा इस से बचना बहुत मुश्किल हो जाता है दूसरे येह एक ऐसा दुश्मन है कि हमारा महबूब है तो जिस से महब्बत होती है तो उस के ऐब नजर नहीं आते मगर इन्सान को मा'लूम होता कि इन्सान के साथ अदावत और नुक्सान रसानी में मसरूफ है और इन्सान को नफ्स गुमराह कर देता है।

तारीखी हालात में जब हम बडे बडे जाबिर शहन्शाहों की जिन्दगियों को देखते हैं कि नफ्स ने उन को किस तरह तबाह किया और जितने रोज अव्वल से ले कर इन्सान पर जिल्लत आफत और मुसीबत वाकेअ होती है वोह सब नफ्स के बाइस होती है। बा'ज बुराइयां तो सिर्फ नफ्स की वज्ह से होती हैं और बा'ज में नफ्स बुराइयों की मुआवनत करता है।

नफ्स को उलमाए हक ने तीन तरह दबाया है, नफ्स को शहवत परस्ती से रोका जाए और उस शहवत को कम करने का इलाज भूक है। फिर नफ्सकुशी के लिये जियादा से जियादा इबादत की जाए और फिर अल्लाह तआला से हर वक्त नफ्स के शरो फसाद से महफूज करने के लिये तौफीक तलब की जाए। कुरआन में है नफ्स तो हमेशा बुराइयों का हुक्म देता है। हां ! जिस पर अल्लाह का रहम हो वोही महफूज रहता है। जब नफ्स को दबाया जाए तो नफ्स तौबा की तरफ रुजूअ करता है।

शहवात का गल्बा। कुछ लोग दुन्यादारी की रंगरेलियों में इस कदर महव और मश्गूल हो जाते हैं कि उन से लहवो लअब को छोडने की सलाहियत ही मफ्कूद हो जाती है। चुनान्चे वोह अल्लाह तआला से इस कदर गाफिल हो जाते हैं कि उन का तौबा करना मुहाल हो जाता है। गफ्लत सब बुहाइयों की जड है।

﴾4﴿ नफ्सानी ख्वाहिशात की तक्मील

गुनाहों में आलूदगी की एक वज्ह शहवत परस्ती है और इन्सान इस गुनाह में इस तरह महव है कि उस की तवज्जोह तौबा की तरफ नहीं जाती। इन्सान की शहवत ने इन्सान को इस तरह मग्लूब कर रखा है कि उस को तर्क करने की इन्सान में हिम्मत और जुरअत दिन ब दिन कम होती जा रही है। दुन्यावी लज्जतें इस तरह इन्सान पर सवार हैं कि इन्सान के दिल से अल्लाह का खौफ ही नहीं रहा और येही ख्वाहिशात इन्सान को

दुन्या के हुसूल की तरफ इतना महव कर देती हैं कि इन्सान अल्लाह और उस के दीन की तरफ से गाफिल हो जाता है।

रसूले पाक ने फरमाया कि हक तआला ने जब अव्वल अव्वल दोजख को बनाया तो हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि जरा देख लो। जिब्रईल ने झांक कर देखा तो कहा तेरी इज्जत की कसम ! कौन शख्स होगा जो इसे देखना तो दर किनार बल्कि इस का नाम सुन कर वहशत जदा हो जाएगा। इस की तरफ आने से गुरेज न करे और इस से बचने के लिये हर मुम्किन कोशिश अमल में लाए। फिर हक तआला ने दोजख के इर्द गिर्द ख्वाहिशात और शहवात को पैदा किया और जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से देखने को कहा, तब उन्हों ने कहा कि शायद ही कोई शख्स ऐसा निकले जो दोजख में जाने से बच रहे। फिर जन्नत की तख्लीक के बा'द वोही हुक्म दिया तो जिब्रईल का जवाब येह था कि कौन ऐसा शख्स है जो इस की सिफत की तरफ दौडने न लगे तब हक तआला ने मक्रूहात, तल्खियों, दुश्वारियों और दो खट घाटियों को जो बिहिश्त की राह में हाइल हैं, बिहिश्त के गिर्दों पेश में पैदा कर के हजरते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से वोही बात कही तो उन का जवाब येह था कि तेरी इज्जत की कसम ! कोई शख्स इस में न जा सकेगा क्यूं कि येह तकालीफ जो इस राह में हाइल हैं, दुश्वार ही नहीं बल्कि इतनी खौफनाक हैं।

11 गुनाह

तौबा हमेशा गुनाहों से की जाती है लिहाजा इस के बारे में जानना जरूरी है। इसे जाने बिगैर तौबा की तरफ रुजूअ मुम्किन नहीं। तकाजाए अब्दियत येह है कि इन्सान अल्लाह की इताअत और बन्दगी करे। सिर्फ वोह काम करे जिन्हें अल्लाह ने करने का हुक्म दिया है। और ऐसे आ'माल को तर्क कर दे जिन से अल्लाह तआला ने रोक दिया है मगर आम इन्सानों में बयक वक्त इताअत और नाफरमानी का माद्दा मौजूद है क्यूं कि जब येह हजरते इन्सान खुदा की इताअत पर आता है तो फिरिश्ते हेच हो जाते हैं कि उस नाम पर अपने आप को मिटा देता है उस के लिये अपने सर को कटा लेता है, कहीं अपनी खुदी को उस के आगे सज्दा रेज कर देता है कहीं अपना मालो मताअ उस की राह में लुटा देता है। मगर जब येही इन्सान उस की नाफरमानी पर आता है तो अपने ही हाथ से तराशीदा बुतों को उस का हमसर बना देता है और कदम कदम पर उस के हुक्म की नाफरमानी और सरकशी करता है हत्ता कि शद्दाद और फिरऔन के रूप में खुद ही खुदा बन बैठता है और उस से बडा गुनाह क्या होगा।

कुरआने पाक में गुनाह के लिये असम और फुस्क का लफ्ज इस्ति'माल किया गया है। असम के मा'नी कोताही के हैं मगर येह लफ्ज इस्तिलाहन इस फे'ल या काम पर इस्ति'माल होता है कि इन्सान अपने रब की इताअत और फरमां बरदारी में कुदरत और इस्तिताअत रखने के बावुजूद उस की इताअत और फरमां बरदारी न करे। शरीअते इस्लामिया एक मुकम्मल जाबितए हयात है। इस जाबिते के तहत इन्सान की जिन्दगी ए'तिकादात और आ'माल से वाबस्ता है, येह ए'तिकादात और आ'माल किताबुल्लाह और सुन्नते नबिये अकरम عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत हैं हमारे सामने मौजूद हैं। अहकामाते खुदावन्दी में कुछ ऐसे है जिन को करने का हुक्म

दिया गया है और वोह अवामिर कहलाते हैं और जिन से रोक दिया गया है उन्हें नवाही कहा जाता है।

चुनान्चे उन अवामिर को अदमन तर्क कर देना और नवाही को अमदन अपनाना गुनाह है। चुनान्चे जाबिते की खिलाफ वर्जी करते हुए जो शख्स अल्लाह की हुदूद को काइम नहीं रखता बल्कि उन से तजावुज कर जाता है तो वोह गुनाह में मुब्तला हो जाता है लेकिन इन्सान के किसी फे'ल को उस वक्त तक गुनाह नहीं कहा जा सकता जब तक इन्सान अपने फे'ल के जरीए से उन हुदूद को तोड न दे जिन को अल्लाह तआला ने काइम रखने का हुक्म दे रखा है।

सवाब और गुनाह का येही तसव्वुर अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बरों के जरीए आस्मानी किताबों की सूरत में हजरते इन्सान तक पहुंचाया है और उस की तक्मील कुरआन की सूरत में हमारे सामने मौजूद है। चुनान्चे कुर्रए अर्ज पर बसने वाले तमाम इन्सानों के लिये जरूरी है कि वोह कुरआनी सवाब और गुनाह के तसव्वुर को अपनाएं और शरीअते मुहम्मदिया पर अमल कर के दोनों जहानों में फलाह पाएं।

ऐ अल्लाह के बन्दे ! तुझे मा'लूम होना चाहिये कि आम इन्सानी खमीर मुख्तलिफ अनासिर से मिल कर बना हुवा है उन अनासिर को साइन्स की जबान में बेशुमार नाम दिये गए हैं लेकिन उसे आम जबान में आग, पानी हवा और मिट्टी कहते हैं। उन की बिना पर इन्सान चार वस्फ पैदाइशी तौर पर मौजूद हैं। जो रबूबियत, शैतानियत, हैवानियत और सबई हैं लिहाजा इन चार वस्फों की बिना पर इन्सान में मुख्तलिफ किस्म के तबई रुजहानात पैदा होते हैं उन में जितना कोई वस्फ जियादा गालिब हो जाता है तो वैसी ही खुसूसियात उस में नुमाया हो जाती है।

सिफते रबूबियत की बिना पर इन्सान फख्र, बडाई जाबिरियत, मदहे सनाई, नफ्स, तवंगरी, महब्बतो नफरत के अफ्आल सरजद होते हैं अगर इन औसाफ में जियादती हो जाए और वोह हद्दे ए'तिदाल से आगे बढ जाएं तो वोह इन्सान को गुनाह की तरफ ले जाते हैं। येह खुसूसियात

पैदा होने की बिना पर इन्सान में ऐसे ऐसे गुनाह जनम लेते हैं कि लोगों को उन की खबर तक भी नहीं होती हैं।

इन्सानी बनावट में दूसरा माद्दा हरारत का है जिस की वज्ह से इन्सान में शैतानी वस्फ का मम्बअ नफ्स मौजूद होता है जिस की बिना पर इन्सान में हसद, सरकशी, हीला, मक्रों फरेब, धोका, झगडा, बुरी बात का हुक्म देना, निफाक, बिदअत की तरफ बुलाना और गुमराही जैसे बुरे औसाफ पाए जाते हैं।

इन्सानी खमीर में तीसरी कुव्वत हैवानी कुव्वत है जिस की बिना पर इन्सान में शहवते नफ्स की ख्वाहिशात या'नी जिना, गैर फित्री फे'ल हिर्स और तम्अ वगैरा के अफआल जनम लेते हैं, इन्सानी खमीर की चौथी सिफत सबई है जिस की बिना पर इन्सान में गुस्सा, गजब कीना, मारपीट, गाली गलोच, कत्ल वगैरा की हरकात पाई जाती हैं।

इन्सान जब इस माद्दी जिस्म की परवरिश के लिये गिजा खाता है और उस में कुव्वत वाले अज्जा की जियादती करता है जैसे घी, गोश्त, मसाला जात और तरह तरह की हराम और हलाल गिजाएं, तो उस से इन्सानी जिस्म में बे हमिय्यत का जोर जियादा हो जाता है तो फिर येह सारी कुव्वतें मिल कर इन्सानी अक्ल पर गल्बा हासिल कर लेती हैं और जब अक्ल मग्लूब हो जाती है तो अक्ल अल्लाह का रास्ता छोड कर उलट सोचना शुरूअ कर देती है और हक की तरफ से भटक कर शैतान की तरफ रागिब हो जाती है। फिर जब इस शैतान का जोर हो जाए तो इन्सान शैतान के ईमान पर ऐसे आ'मालो अफआल कर गुजरता है जो अल्लाह की नाफरमानी पर मब्नी होते हैं और जिन्हें गुनाह कहा जाता है।

गर्ज कि इन चारों औसाफ की बिना पर हम में फित्री तौर पर गुनाह की तरफ जाने और गुनाह में लज्जत महसूस करने वाली रगबत मौजूद है। चुनान्चे उस रगबत को काबू में रखने के लिये जरूरी है कि अल्लाह की काइम कर्दा हुदूद के मुताबिक जिन्दगी को मन्जबत किया जाए। और इस तरह की जिन्दगी बसर की जाए जिस तरह कि अल्लाह के रसूल ने नमूना पेश किया।

गुनाह की मुख्तलिफ किस्में

गुनाह कुछ छोटे हैं और कुछ बडे इन के मुतअल्लिक अल्लाह तआला का इर्शाद है कि

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا۝

अगर तुम कबीरा गुनाहों से बचो, जिन से तुम्हें मन्अा किया गया है तो हम तुम्हारे सगीरा गुनाह मुआफ कर देंगे और तुम्हें इज्जत के मकाम में दाखिल कर देंगे। (पारह 5, सूरए निसा, आयत : 31)

एक और जगह इर्शादे बारी तआला है कि

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ

जो लोग गुनाहे कबीरा और बेहयाइयो से बचते रहते हैं बजुज छोटे गुनाहों के। (पारह 27, सूरए नज्म, आयत : 32)

इन आयाते करीमा से पता चला कि कबीरा गुनाह, अल्लाह तआला की सख्त नाराजगी का बाइस होते हैं, अगर उन कबीरा गुनाहों से दामन बचाया जाए तो अल्लाह तआला ने वा'दा फरमाया है कि सगीरा गुनाहों को मैं मुआफ कर दूंगा। लिहाजा इन आयात से मा'लूम हुवा कि गुनाह दो तरह के होते हैं या'नी कबीरा और सगीरा।

﴾1﴿ गुनाहे कबीरा

कबीरा के मा'ना बडे के हैं मगर शरई इस्तिलाह में इस का इत्लाक उस गुनाह से है जिस के बारे में शरीअते इस्लामिया ने रोक दिया हो और उस को किसी कुरआनी नस्स या सुन्नत से हराम करार दे दिया हो और उस के करने पर किताबुल्लाह में कोई सजा मुकर्रर हो या मरने के बा'द ऐसे गुनाहों पर वईद की गई हो या उस के करने को ला'नत करार दिया है। या उस के मुर्तकिबीन पर नुजूले अजाब की खबर दी गई हो। या जिन कामों को शरीअत में फर्ज करार दिया गया है, उन को तर्क कर दिया हो। क्यूं कि अल्लाह की फर्ज कर्दा इबादत को तर्क करना भी गुनाहे कबीरा है।

गुनाहे कबीरा से ईमान जाएअ नहीं होता क्यूं कि ईमान बुन्यादी तौर पर ए'तिकादी बातों पर यकीन और इकरार का नाम है अलबत्ता ईमाने कामिल की रूह मफ्कूद हो जाती है उस पर इस्लामी फिक्ह का मुत्तफिका फैसला है कि गुनाहे कबीरा करने वाला मुसलमान ही रहता है और दाइरए इस्लाम से खारिज नहीं होता। गुनाहे कबीरा की ता'दाद के तअय्युन के बारे में इख्तिलाफ है। किसी ने तीन, किसी ने चार, किसी ने सात और किसी ने ग्यारा ता'दाद बताई है। इब्ने अब्बास ने सुना कि हजरते उमर ने कबीरा गुनाहों की ता'दाद सात बताई। अबू तालिब मक्की के नज्दीक उन की ता'दाद सतरह है और इमाम गजाली ने भी उन की पैरवी की है लेकिन मेरे नज्दीक कबीरा की ता'दाद सतरह से कहीं बहुत जियादा है।

कबीरा गुनाहों के बारे में जानना हर शख्स के लिये जरूरी है ताकि हर इन्सान उन गुनाहों से बच सके और तौबा करे। आम इन्सानों के लिये कबीरा और सगीरा गुनाहों में इम्तियाज करना जरा मुश्किल मस्अला है लेकिन कबीरा गुनाहों से तौबा की जाए तो बहुत से सगीरा गुनाह अल्लाह तआला मुआफ फरमा देता है। इस लिये हर मुसलमान के लिये लाजिम है कि उसे मा'लूम हो कि कबीरा गुनाह कौन कौन से हैं ? मेरे नज्दीक कबीरा गुनाहों की मुन्दरजा जैल सूरतें हैं।

﴾1﴿ ए'तिकादी कबीरा गुनाह

पहली किस्म के ए'तिकादी गुनाहे कबीरा वोह हैं जिन का तअल्लुक इन्सान के अकाइद से है और अकाइद का मर्कज इन्सानी दिल है अगर इन्सान के दिल में अल्लाह तआला की जात को मा'बूद न मानने का अकीदा हो या सिफाते इलाही का इन्कार हो या जातो सिफात में किसी को शरीक ठहराने का माद्दा हो तो येह सब से बडा गुनाह है। जिसे कुफ्र और शिर्क कहा जाता है अल्लाह तआला की रहमत से मायूस होना या अल्लाह के अजाब का इन्कार करना या आखिरत के हिसाबो किताब का इन्कार करते हुए खुद ही कहना कि मैं तो बख्शा हुवा हूं। तौहीद के बा'द मलाइका, नुबुव्वत, रिसालत, जन्नत दोजख यौमे आखिरत, मौत, जजा

सजा की हकीकत के बारे में दिल से यकीन काइम न करना, या शक का इज्हार करना गुनाहे कबीरा है।

गुनाह के जनम लेने की जगह निय्यत और दिल है अगर कोई गुनाह को गुनाह ही तसव्वुर न करे तो येह बहुत बडी कम अक्ली है। चुनान्चे ए'तिकादी लिहाज से निय्यतन गुनाह से बचना जरूरी है लिहाजा अपने ए'तिकाद में ऐसे मुश्तबेह खयालात को जगह नहीं देनी चाहिये जिन की बिना पर इन्सान से ए'तिकादी गुनाहों के होने का खतरा हो।

(2) कौली गुनाहे कबीरा

अकाइद के बा'द वोह गुनाह हैं जिन का तअल्लुक इन्सान के कौल से है। इन्सान की जबान से अगर ऐसे अल्फाज निकलें, जिन को अल्लाह तआला ने न निकालने का हुक्म दिया है तो वोह गुनाहे कबीरा हो जाएंगे।

कुव्वते गोयाई या'नी जबान से बोलने की कुव्वत एक लाजवाल ने'मत है और इसी ने'मत की बिना पर हजरते इन्सान दूसरी मख्लूकात से बुलन्दो बरतर है। चुनान्चे इन्सान का येह फर्ज है कि इन्सान अपनी जबान से ऐसी गुफ्तगू न करे जिस को अल्लाह ने रोक दिया है और गुनाह करार दिया है बल्कि इन्सान के जिम्मे लाजिम है कि वोह अपनी जबान को अल्लाह की काइम कर्दा हुदूद के अन्दर इस्ति'माल करे। चुनान्चे ऐसे गुनाह जो इन्सान की जबान की कुव्वते गोयाई से तअल्लुक रखते हैं, कौली गुनाह कहलाते हैं।

जबान से मुतअल्लिक कौली गुनाहों में सब से बडा कौली गुनाह झूट है जिस को अल्लाह तआला ने कत्अन पसन्द नहीं किया, झूट एक ऐसा गुनाह है जो इन्सानी अजमत पर एक सियाह धब्बा है। जिस कौम में झूट की आदत हो उस की बुन्याद खोखली हो जाती है। झूट की बजाए सच बोलना इन्सान का फर्ज है जो न सिर्फ गुनाह से बचाता है बल्कि सवाब का मुस्तहिक ठहराता है। झूटी गवाही देना और सच्ची गवाही को

छुपाना, झूटी कसमें खाना, गीबत करना, जादू करना, या किसी पर बोहतान तराशी करना सब कौली गुनाह से तअल्लुक रखते हैं।

﴾3﴿ फे'ली गुनाहे कबीरा

येह वोह गुनाहे कबीरा हैं जिन का तअल्लुक इन्सान के अमली फे'ल से है कुरआन और सुन्नत ने उन की मजम्मत की है और उन से बचने की ताकीद की है उन में ऐसे गुनाह हैं जिन का तअल्लुक इन्सान के मुख्तलिफ आ'जा से है जिन से वोह गुनाह सरजद होते हैं। येह हस्बे जेल हैं :

﴾1﴿ पेट के मुतअल्लिक गुनाह

येह वोह गुनाह हैं जिन का तअल्लुक ऐसी अश्या के खाने से जिन्हें शरीअत ने मन्अ किया है मसलन शराब नोशी, इस में हर नशा आवर चीज दाखिल है। सुअर का गोश्त, यतीम का माल जुल्म से हासिल कर के हज्म कर जाना, सूद खाना या जूए का माल खाना।

﴾2﴿ शर्मगाह से मुतअल्लिक गुनाह

येह वोह गुनाह हैं जिन का तअल्लुक नफ्सानी ख्वाहिशात से है। इन में जिना, लवातत, या किसी गैर फित्री फे'ल से जिमाअ करना शामिल हैं।

﴾3﴿ हाथों से मुतअल्लिक गुनाह

हाथों से सरजद होने वाले गुनाहों में कत्ल, चोरी, डाका रिश्वत, कम तोलना, बेईमानी, और खयानत शामिल हैं।

﴾4﴿ पाऊं से मुतअल्लिक गुनाह

कुफ्फार के मुकाबले में मैदाने जंग से पीठ दिखा कर भागना या'नी इस हालत में भाग जाए कि एक मुसलमान, दो काफिरों के मुकाबले से दस मुसलमान बीस काफिरों के मुकाबले से। इस का मतलब येह है कि अगर कुफ्फार मुकाबले में मुसलमानों से दूगने से जियादा हों तो भागना गुनाहे कबीरा नहीं।

﴾5﴿ पूरे जिस्म से मुतअल्लिक गुनाह

मां बाप की नाफरमानी कबीरा गुनाह है या'नी वालिदैन अगर किसी बात पर कसम खाएं तो औलाद पूरा न करे। कोई शै तलब करें तो इन्कार करे, अगर भूके हों तो उन को खाना न दे और बुरा कहें तो उन को मारे या तक्लीफ पहुंचाए।

﴾2﴿ गुनाहे सगीरा

हर वोह अम्रे मानेअ जो बुराई और बदी के जुमरे में आता हो और शरीअते इस्लामिया में उस से बचने का हुक्म हो, गुनाहे सगीरा है। येह एक वाजेह हकीकत है कि तमाम कबीरा गुनाहों के इलावा जितने भी गुनाह हैं वोह सगीरा हैं। इस लिये सगीरा गुनाह बेशुमार हैं और उन की कोई मुकर्रर ता'दाद नहीं है। और न-ही कोई ऐसा तरीका है जिस से ब आसानी येह शनाख्त हो सके कि येह गुनाह सगीरा है। शरई तौसीक और बसरियत से उन की शनाख्त की जाती है और शरीअत का मक्सद भी सिर्फ येही है कि इन्सान गुनाहों को तर्क कर के अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जेह रहे और उसे जाते इलाहिया का कुर्ब हासिल रहे। सगीरा गुनाहों की मिसाल येह है कि किसी खूब सूरत औरत या मर्द का जिन्सी रगबत के तहत एक दूसरे को देखना या उस का बोसा लेना या उस के साथ बैठना या लेटना। मगर जिमाअ न करना जिन्सी ख्वाहिशात के तहत किसी गैर महरम मर्द या औरत का सेरो तफरीह करना। फोहश अदब का मुतालआ करना, उरयानी को फरोग देना। किसी को बुरा भला कहना। ख्वाह म ख्वाह मारना, फिल्म बीनी करना। मगर फिल्म बीनी ऐसी हो जो इन्सान की जिन्सी ख्वाहिशात को उभारे और बुराई की तरफ ले जाए। किसी की दिल आजारी करना। जानवर को ईजा देना वगैरा सब गुनाहे सगीरा हैं।

जैसा कि पहले अर्ज किया जा चुका है कि इर्शादे बारी तआला है कि अगर तुम गुनाहे कबीरा से इज्तिनाब करोगे तो तुम्हारी छोटी बुराइयां या'नी सगीरा गुनाह हम खुद ही मुआफ कर देंगे। इस आयत से येह तो

जाहिर होता है कि अगर इन्सान गुनाहे कबीरा से ताइब हो जाए तो उस के सगीरा गुनाह खुद ब खुद मुआफ हो जाएंगे लेकिन तौबा करते वक्त बेहतर येही है कि इन्सान अपने तमाम सगीरा गुनाहों की मुआफी तलब करे।

हजरते अनस बिन मालिक से रिवायत है कि एक मैदान में जहां लकडियां मौजूद न थीं और न कोई और चीज थी। वहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबए किराम के साथ डेरा लगाया। हुजूर ने लकडियां जम्आ करने का हुक्म दिया। सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह लकडियां तो नजर ही नहीं आती हैं, फरमाया किसी चीज को हकीर न जानो जो चीज मिले उसे ले आओ ! चुनान्चे सहाबए किराम इधर उधर गए और कुछ न कुछ उठालाए और एक जगह जम्अ कर दिया। चुनान्चे एक बडा ढेर बन गया। उस वक्त आप ने फरमाया क्या तुम को मा'लूम नहीं कि येही हाल उस खैरो शर का है जिस को हकीर समझा जाता है। छोटे छोटे, बडे से बडा और खैर से खैर और शर से शर मिल कर खैर अम्बार हो जाता है। इस हदीस से येह जाहिर होता है कि इन्सान अगर छोटे छोटे गुनाहों की परवा न करे तो वोह मिल कर बहुत जियादा हो जाएंगे और उन की जियादती फिर गुनाहे कबीरा की सूरत इख्तियार कर लेगी।

इन्सान को येह भी जेहन में रखना चाहिये कि बा'ज औकात ऐसा होता है कि एक गुनाह को इन्सान हकीर या'नी छोटा तसव्वुर करता है मगर अल्लाह के हां वोह बडा होता है और बा'ज औकात बन्दा उस को बडा जानता है लेकिन अल्लाह के हां वोह छोटा होता है लेकिन बन्दए मोमिन का गुनाहे सगीरा को बडा गुनाह समझ कर अल्लाह से डरना अल्लाह के कुर्ब का बाइस बनता है।

﴾3﴿ सगीरा गुनाहों का कबीरा बनना

सगीरा गुनाह जिन्हें इन्सान मा'मूली तसव्वुर करते हुए नजर अन्दाज कर देता है। बा'ज वुजूहात की बिना पर कबीरा बन जाते हैं। वोह वुजूहात मुन्दरजा जैल हैं

﴾1﴿ इस्रारे गुनाह

पहला सबब येह होता है कि आदमी गुनाहे सगीरा पर इस्रार करता रहे। जैसे हमेशा गीबत करता रहे या रेशमी लिबास को मुस्तकिल तौर पर जैबे तन करने का आदी हो जाए या समाअ की आदत बतौरे लहवो लअब और तस्कीने नफ्स के लिये इख्तियार करे। इस किस्म का गुनाह जो मुतवातिर किया जाए उस का दिल की तारीकी में बडा हाथ होता है इस लिये हुजूर ने फरमाया कि अच्छा काम वोही होता है जो नेक होने के इलावा हमेशा किया जाए। चाहे वोह मा'मूली सी नेकी ही क्यूं न हो।

इस की मिसाल यूं दे सकते हैं कि कत्रा कत्रा पानी अगर मुतवातिर पथ्थर पर गिरता रहे, तो उस में सुराख कर देता है हालांकि वोही पानी अगर यक्बारगी उस पथ्थर पर डाल दिया जाए तो उस पर कुछ भी असर न होगा। पस जो शख्स गुनाहे सगीरा में मुब्तला हो उसे चाहिये कि उस के तदारुक के लिये हमेशा इस्तिगफार करता रहे, उस का गम खाए और परेशानी व पशेमानी का इज्हार किया करे और दिल में ठान ले कि आइन्दा उस के करीब नहीं जाएगा। बुजुर्गों का कहना है कि इस्तिगफार करते रहें तो कबीरा भी सगीरा बन जाते है और इस्रार करते रहें, तो सगीरा भी कबीरा हो कर रह जाता है।

﴾2﴿ गुनाह को मा'मूली तसव्वुर करना

दूसरा सबब येह है कि आदमी गुनाह को बिल्कुल मा'मूली चीज समझ कर उसे अहमियत ही न दे और हकारत से देखे कि येह यूंही एक शुगुल है। इस में क्या धरा है इस तरह तो ख्वाह म ख्वाह छोटा गुनाह बडा बन कर रहेगा। गुनाह को बडा खयाल किया जाए तो वोह कम हो जाता है क्यूं कि उसे बडा खयाल करना खौफे खुदा और ईमान की सलामती की वज्ह से होता है और येह जज्बा गुनाह की तारीकी से दिल को बचाने में मददगार साबित होता है और उस का जिक्र जियादा नहीं होने देता। उस के बर अक्स गुनाह को हकीर और मा'मूली खयाल करने

की वज्ह येह होती है कि दिल को गुनाह के साथ खास उन्स और लगाव पैदा हो चुका होता है और येह दलील इस अम्र की होती है कि दिल का गुनाह के साथ करीबी रिश्ता है और दोनों की बाहमी निस्तब पुख्ता हो चुकी है। इस लिये हर अम्र के मुतअल्लिक तो दिल ही से है जिस शै की तासीर को दिल कुबूल करे उस का नतीजा उसी के मुताबिक बर आवर हो कर रहता है। पस अगर दिल को गुनाह ही मरगूब हो तो वोह गुनाह ही के इर्तिकाब में खुशी महसूस करेगा।

हदीस में है कि मुसलमान के नज्दीक तो गुनाह एक पहाड से कम नहीं होता और उसे हमेशा खौफ लाहिक रहता है कि कहीं येह पहाड उस के सर पर फट न जाए और दूसरी तरफ मुनाफिक के नज्दीक गुनाह की हैसियत एक मख्खी से जियादा नहीं जो नाक पर बैठ जाए और उड जाए इस लिये कि वोह उस से खाइफ ही नहीं होता।

बुजुर्गों का कहना है कि जिस गुनाह की बख्शिश नामुम्किन है वोह येही है कि जिसे आदमी मा'मूली जाने, सहल समझे और हकीर खयाल करे और कहे कि ऐ काश ! क्या ही अच्छा होता अगर सभी गुनाह ऐसे ही होते। एक पैगम्बर पर वही नाजिल हुई कि गुनाह की छोटाई पर मत जाओ बल्कि हक तआला की बडाई पर निगाह रखो कि कहीं उस के हुक्म की खिलाफ वर्जी तो नहीं कर रहे हो। जिस कदर कोई शख्स जलाले हक तआला को पहुंचता है उतनाही वोह छोटे गुनाहों को बडा तसव्वुर करता है।

एक सहाबी का कहना है कि ऐ लोगो ! तुम बहुत बडे बडे गुनाह कर गुजरते हो और समझते हो उन्हें बाल बराबर, हालां कि हमारे नज्दीक उन में हर काम पहाड के बराबर होता है क्यूं कि हम उस राज को पाते हैं कि कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस में हक तआला का गजब पोशीदा न हो और जितना बडा गुनाह होगा उतना ही जियादा कहरे इलाही उस में पिनहां होगा और हो सकता है कि जिसे तुम आसान तरीन तसव्वुर कर रहे हो वोही हक तआला के कहरो गजब का बाइस हो जैसा कि इर्शाद हुवा है कि

तुम उस को तुम इस को हल्की बात समझ रहे थे। हालांकि वोह अल्लाह के नज्दीक बहुत भारी थी।

﴾3﴿ गुनाह में खुशी महसूस करना

तीसरा सबब येह है कि गुनाह में आदमी खुशी महसूस करे और इर्तिकाबे गुनाह को एक कारनामा और काबिले तस्खीर फत्ह तसव्वुर करने लगे ऐसे लोगों को अक्सर फख्रिया अन्दाज में कुछ इस किस्म की बातें कहते सुना जा सकता है कि मसलन फुलां को मैं ने ऐसा फरेब दिया कि मजा आ गया या उसे मैं ने खूब रगीदा कि याद करेगा। या हम ने उस का मालो अस्बाब जो कुछ लूट लिया और ऐसी गालियां दीं कि सात पुश्तें न छोडीं या मैं ने उसे बेहद शर्मिन्दा किया, या मुनाजरे में फुलां को ऐसा दक किया कि गुस्से से बल खाने लगा। अब खयाल कीजिये कि ऐसी बातें कहने वाला अगर उलटा उन पर फख्रो नाज का इज्हार करने लगे तो उस के दिल की सियाही में क्या शुबा बाकी रह जाता है और येही चीज उस को हलाकत के गडे में धकेल देगी।

﴾4﴿ खुली छुट्टी समझना

चौथा सबब येह है कि हक तआला उस के गुनाहों की पर्दापोशी करे और वोह समझे कि अब तो हक तआला भी मुझ पर महरबान है अब गुनाह से क्या डरना कि उस की तो खुली छुट्टी खुद हक तआला ने मुझे दे दी कि येह इनायत मेरे हाल पर है गुनाहों की मोहलत ही तो है और इस तरह अपनी हलाकत का सामान खुद कर बैठे।

﴾5﴿ गुनाहों को आम करना

पांचवां सबब येह है कि हक तआला की पर्दापोशी पर उस का शुक्र अदा करने के बजाए उस पर्दे को अपने ही हाथों से उठा दे कि हो सकता है दूसरे लोग भी उस की वज्ह से गुनाह से वैसी ही महब्बत और रगबत जाहिर करने लगें। ऐसी सूरत में दूसरों के गुनाह और रगबते गुनाह

का सारा वबाल उसी की गर्दन पर होगा। और अगर तरगीब देने का वोह काम खुल्लम खुल्ला अन्जाम दे और गुनाह के अस्बाब और जराए भी फराहम करने लगे यहां तक कि दूसरे उन अस्बाब से वाकेई मुतअस्सिर हो कर वोही तौर तरीके इख्तियार कर लें तो वबा दूगना हो जाएगा। इसी लिये बुजुर्गाने सलफ ने कहा है कि उस से बडा गजब और क्या ढाया जा सकता है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमानों की नजर में गुनाह को आसान बना दे।

﴾6﴿ आलिमों का गुनाह में उल्झाव पैदा करना

छट्टे येह कि आलिम और मुक्तदा हो कर गुनाह में उल्झा रहे और दूसरे उस को देख कर बेबाकाना गुनाह करने लगें और कहें कि अगर फुलां बात न करने की होती या'नी नाजाइज होती तो वोह आलिम और मुक्तदा भला क्यूं कर उस का इर्तिकाब कर सकता था मसलन कोई आलिम रेश्मी लिबास जेबे तन करे और दरबारों के चक्कर काटा करे और बादशाह के हुजूर हाजिर रहा करे और उन से मालो जर एंठता रहे या मालो जाह फिरावानी पर फरेफ्ता हो और उस पर नाजां भी हो। मुनाजरे में वाहियात बातें करता रहे, अपने हमसरों और मुआसिरीन को ता'नो तश्नीअ का निशाना बनाए रखे वगैरा और उस के शागिर्द भी वोही सीख जाएं और फिर जब वोह उस्ताद बन जाएंगे तो आगे उन के शागिर्द उन से वोही बातें सीख जाएंगे और यूं येह सिल्सिला जारी व सारी रहे और उन में से हर कोई एक बस्ती की वीरानी व बरबादी का सबब बन जाए क्यूं कि उन में से हर कोई एक न एक शहर या मकाम का मुक्तदा तो बन जाएगा और उसी सूरत में लामुहाला सभी के गुनाहों का वबाल उस मुक्तदा की गर्दन पर होगा। इसी लिये कहा गया है कि खुश बख्त है वोह शख्स कि वोह मर भी जाए, और उस के गुनाह भी उस के साथ मर जाएं। वरना कोई बदबख्त ऐसा भी होता है कि खुद तो मर जाए मगर उस के गुनाह उस के बा'द भी हजारों साल तक जिन्दा रहें या'नी उस के शागिर्द और फिर उन के शागिर्द उस में मुब्तला रहते हैं। बनी इस्राईल के उलमा में से एक

आलिम ने गुनाह से तौबा की तो पैगम्बरे वक्त को वही नाजिल हुई कि उस से कह दो कि अगर गुनाह सिर्फ मेरे और तेरे दरमियान होते तो मैं तुझे बख्श देता। लेकिन अब उस को क्या कहेगा कि तू खुद तौबा कर रहा है और पूरी कौम जो तेरे हाथों बरबाद हो चुकी बदस्तूर तबाह हाल है। उस की तबाही का जिम्मेदार कौन है ? और उस का क्या बनेगा ? पस येही वज्ह है कि गुनाह का खतरा उलमा के लिये दूसरों की निस्बत बहुत बडा है, उन का एक गुनाह हजारों गुनाहों के बराबर है। क्यूं कि हजारों लोग उन की तक्लीद करते हैं उसी तरह उन की इबादत का सवाब भी बहुत बडा होता है और उन की एक इबादत हजारों इबादतों का अज्र दे जाती है क्यूं कि जो लोग उन की मुताबअत करते हैं उन की इबादत में से उस आलिम को भी सवाब मिलेगा, लिहाजा आलिम पर गुनाह न करना वाजिब है और अगर उस से कोई गुनाह सरजद हो भी जाए तो पोशीदा होना चाहिये बल्कि अगर कोई मुबाह किस्म की लग्जिश भी हो तो दूसरों को मा'लूम न होना चाहिये कि लोग गफ्लत के सबब कहीं गुनाह पर दिलैर न हो जाएं लिहाजा उस से हरज करना जियादा अच्छा है।

जोहरी कहते हैं कि कभी हम भी हंसा करते थे और खेल कूद में भी मश्गूल रहा करते थे लेकिन मुक्तदा हो गए तो तबस्सुमो मुस्कुराहट भी हमें जेबा नहीं। आलिम की गलती या लग्जिश दूसरों के सामने दोहराना बजाए खुद बहुत बडा गुनाह है क्यूं कि येह रिवायत ही बेशुमार लोगों की गुमराही का मुवज्जिब बन जाती है और लोग गुनाह बेबाकी से करने लगते हैं। पस तमाम लोगों के लिये गुनाह से परहेज वाजिब और उलमा के लिये वाजिब तर है और उसी तरह हर किसी की खताओं पर पर्दा डालना जरूरी और उलमा की खताओं को पोशीदा रखना इन्तिहाई जरूरी है। (कीमियाए सआदत)

﴾4﴿ नुक्सानाते गुनाह

गुनाह बुरी चीज है बल्कि बुराइयों का दूसरा नाम गुनाह है लिहाजा जो इन्सान गुनाह में मुब्तला हो गया। गोया वोह अल्लाह का

नाफरमान हो गया और गुनाहों की बिना पर इन्सान दीनो दुन्या में जलील हो जाता है और अल्लाह की रहमत से दूर हो जाता है और इन्सान लईन बन जाता है। शैतान के पहले गुनाह ही ने उसे अल्लाह की रहमत से दूर कर दिया। बल्कि लईनो मर्दूद करवा दिया और हमेशा के लिये बारगाहे रब्बुल इज्जत से रांदा गया। नाफरमानी की वज्ह से इब्लीस को आस्मानों से जमीन पर आना पडा और आदम ने भी गुनाह किया जिस की बिना पर उसे जन्नत से निकलना पडा और जमीन पर मुसीबत उठाना पडी। गुनाहों की बिना पर कौमे नूह पर तूफान लाया गया और अल्लाह के अहकामात की नाफरमानी की बिना पर कौमे लूत की बस्तियों को उलट दिया गया और उन पर पथ्थरों की बारिश की गई। वोह भी गुनाह ही था जिस ने फिरऔन को लश्कर समेत गर्क करवाया। वोह भी गुनाह ही था जिस ने कारून को जमीन में धंसाया, येही वोह नाफरमानी थी जिस की बिना पर बनी इस्राईल पर तरह तरह के मसाइब नाजिल हुए, कभी कत्ल हुए कभी कैद किये गए कभी उन के घर उजाडे गए और कभी उन्हें जालिम बादशाहों का जुल्म बरदाश्त करना पडा। कभी गुलामी की ला'नत में गिरफ्तार हुए। कभी बन्दर और सुअर की शक्ल में तब्दील किये गए। इस नाफरमानी ने बडी बडी सल्तनतों को उजाड डाला। केसरो कसरा को सफ्हे हस्ती से मिटा डाला। गोया कि कुरआने पाक में बेशुमार ऐसे वाकिआत बायान किये हैं जिन से हमें सबक हासिल होता है कि जो कौम गुनाह में मुब्तला रहे उसे कभी दवाम नहीं रहता।

अल्लाह तआला के अहकामात से सरकश और बागी कौमों को अल्लाह तआला दुन्या में जलीलों ख्वार कर देता है। आज मुसलमान कौम अल्लाह की हाकिमियत को तस्लीम करते हुए भी अमलन गुनाह के गढों में गिरी हुई है। कौनसा ऐसा गुनाह है जिस में हम मुब्तला नहीं। हमारे गुनाहों की शामत है कि हमारी कौम का रिज्क तंग और दुन्या के अख्लाकी मे'यार में पस्त है और अमली तौर पर हम पर दूसरी कौमों की गुलामी मुसल्लत है। आए दिन हमारी कौम पर तरह तरह के मसाइब

आते रहते हैं और येह सब हमारे गुनाहों की कस्रत का नतीजा है अक्सर औकात हम पर जालिम हुक्मरान मुसल्लत कर दिये जाते हैं। येह तो गुनाह के इज्तिमाई नुक्सानात थे और अब एक मुसलमान के गुनाहों में मुब्तला होने के इन्फिरादी नुक्सानात का जाइजा लीजिये।

गुनाहों में मुब्तला इन्सान अल्लाह तआला के इस्रारे बातिनी को कभी भी हासिल नहीं कर सकता। जब तक कि वोह गुनाहों से तौबा न करे, गुनहगार नूरे बातिनी से हमेशा मेहरूम रहता है।

हकीकी इल्म जो अल्लाह तआला का अताकर्दा है गुनहगार उस से भी दूर रहता है क्यूं कि अल्लाह तआला का इल्म तब हासिल होता है जब कि इन्सान गुनाहों से तौबा कर के पाकीजा हो जाए। पाकीजगी से इन्सान में लताफत पैदा होती है। गुनाहों से लताफत पैदा नहीं होती। अगर किसी के पास अल्लाह के रास्ते की लताफत हो भी तो गुनाह में मुब्तला होने से खत्म हो जाती है। जिस से बातिनी नूर जाएअ होता है।

गुनाहों में मुब्तला होने से इन्सान को अल्लाह की इबादत में लज्जत हासिल नहीं हो सकती और जज्बो मस्ती शौक हासिल नहीं हो सकते। लोगों में येह आदत अक्सर पाई जाती है कि वोह नेक काम भी कर लेते हैं और फिर गुनाह भी साथ साथ करते चले जाते हैं जैसे लोग कहते हैं कि नमाज अपनी जगह पर और फिल्म अपनी जगह पर, लेकिन नमाज काइम करने का मतलब येह है कि गुनाह को अमली जिन्दगी से तर्क किया जाए।

गुनाहों के असरात चेहरों पर जाहिर होते हैं। जब इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक दाग पर जाता है हत्ता कि वोह इतने गुनाह करता है कि वोह बिल्कुल सियाह हो जाता है फिर दिल की तारीकी इन्सान के चेहरे पर जाहिर होती है और गुनाहों की सियाही और चेहरे की सियाही का मुशाहदा मुआशरे के ऐसे लोगों के चेहरों पर ब आसानी नजर आता है जो लोग इश्को महब्बत और नफ्सानी जज्बात और फहाशी का शिकार होते हैं उन की आंखों के गिर्द सियाह हल्के अक्सर नुमाया हो जाते हैं और खास तौर पर टेलीविजन, और फिल्म बीनी के असरात भी खासे हैं।

आंखों पर जब गुनहगारी के असरात जाहिर हो जाते हैं तो चेहरे का बाकी हिस्सा भी असरात कुबूल करता है और इन्सान के माथे पर सियाही नुमायां होना शुरूअ हो जाती है और जूं जूं इन्सान मजीद गुनाहो से आलूदा होता जाता है उस के चेहरे पर गुनाहों की सियाही नुमायां जाहिर हो जाती है। खास कर झूट बोलने और धोका देने, रिश्वत लेने, हराम खाने, बद दियानती करने और गीबत करने वालों के चेहरों पर येह असरात बहुत नुमायां होते हैं।

अल्लाह के नेक बन्दों के चेहरे इस सियाही से बिल्कुल मुबर्रा होते हैं और उन के चेहरों पर अल्लाह की रहमत का नूर नुमायां नजर आता है और अगर उन को आम गुनहगारों में खडा कर दिया जाए तो वोह नुमायां नजर आएंगे। वोह पीर जिन्हों ने सिर्फ जाहिर का लुबादा औढा हो और रूहानियत उन के पास न हो तो उन के चेहरों पर भी आम दुन्यादारों की तरह गुनाहों की सियाही नजर आती है। गुनाह करने वाला ख्वाह कितना ही खूब सूरत क्यूं न हो मगर उस के चेहरे पर कभी नूरानी रोनक नहीं आती।

रसूले पाक ने फरमाया है कि जब बन्दा गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता पैदा हो जाता है। अगर वोह गुनाह से बाज न आए और तौबा न करे तो रफ्ता रफ्ता उस की सियाही तमाम दिल को घेर लेती हे और आखिर यहां तक नोबत पहुंची है कि उस के दिल पर वा'ज और नसीहत का कुछ असर नहीं होता।

गुनाह दिल में भी बुजदीली पैदा करता है और गुनाह करने वाले हकीकी कुव्वत से खाली होते हैं अगर्चे गुनाह करने वाले जाहिरन बडी दिलैरी का काम करते जाते हैं मगर वोह सब कुछ शैतानियत के उक्साने पर होता है। मगर अल्लाह के नेक बन्दों के मुकाबले में उन को राहे हक पर इस्तेहकाम हासिल नहीं होता क्यूं कि इस्तेहकाम का सारा दारो मदार नेक काम करने, गुनाहों से बचने, इबादत में कसरत करने और निय्यत दुरुस्त रखने पर है मगर उस के बर अक्स नेक कामों से जी चुराने, बुरे कामों पर

डटे रहने और हर वक्त गुनाहों में मस्रूफ रहने की वज्ह से इन्सान का दिल कमजोर हो जाता है, दिल की कमजोरी जिस्म के दूसरे आ'जा पर असर अन्दाज होती है जिस का नतीजा येह निकलता है कि गुनाह से इन्सान में हौसला और हिम्मत कम हो जाती है। जुरअत और दिलैरी दूर भागती है। नाउम्मीद और बुजदिली आ जाती है गुनाह से बचने वाले नेक लोगों का दिल मजबूत होता है उन में बेपनाह हिम्मत और हौसला होता है उन के अज्म पथ्थर की चट्टानों की तरह होते हैं। सहाबए किराम, बुजुर्गाने दीन, सूफियाए इजाम जिस्मानी लिहाज से आम इन्सानों ही तरह थे बल्कि बा'ज में उन में बहुत दुब्ले पत्ले और कमजोर होते थे, उन की ता'दाद भी दुन्या के मुकाबले में बहुत कम होती थी मगर वोह अल्लाह के रास्ते पर मिटे और उन्हों ने अल्लाह की अताकर्दा रहमत से अपने आप को गुनाहों से बचाया फिर उन में कुव्वते ईमानी और गुनाहों से बच कर तौबा के रास्ते पर चलने से इतनी दिलैरी जुरअत और हौसला था कि उन्हों ने बडी बडी सल्तनतों के तख्त उलट दिये, बडे बडे जाबिर हाकिमों के सामने कलिमए हक सुनाया और उन को रूबा बना दिया उन की कामयाबी का राज सिर्फ येही था कि वोह गुनाहों से बचे, अल्लाह की इताअत की और जानिसारे रसूल बने। मगर आज मुस्लिम कौम दिन रात इतनी ला ता'दाद गुनाहों में मुब्तला है और इन्सानियत सोज मजालिम डूबी हुई है। चुनान्चे हमें चाहिये कि अल्लाह की नाफरमानी और सरकशी को छोड कर मुत्तकी और परहेजगार बनें क्यूं कि अल्लाह के बन्दे हमेशा बहादुर और गयूर होते हैं।

गर्ज कि वक्ती तौर पर इन्सान गुनाह में मुब्तला हो कर नफ्स को मुत्मइन करने की कोशिश करता है लेकिन उस से उस की रहमत और ने'मत दूर हो जाती है। मुसीबतें अड आती हैं अल्लाह की अजमत दिल से निकल जाती है, नफ्स और शैतान गालिब हो जाता हैं। अक्ल में फुतूर और फसाद आ जाता है। गुनाह करने का सब से बडा नुक्सान येह होता है कि इन्सान की आकिबत खराब हो जाती है। अजाबे कब्र, दोजख की

आग और तरह तरह की सजाएं भुगतना पडेंगी। इस के इलावा गुनाह में खसारा ही खसारा है लिहाजा गुनाह से बचने के लिये हर इन्सान को पूरी कोशिश करनी चाहिये। येह कोशिश सिर्फ अल्लाह पाको बरतर से मदद मांगने से मिल सकती है।

शुक्राना खत्म शुद

"मेरे अल्लाह का एहसान मन्द और शुक्र गुजार हूं कि उस की अताकर्दा तौफीक से येह किताब पाए तक्मील को पहुंची अल्लाह तआला इसे अपनी बारगाह में कुबूल फरमाए और हर पढने वाले को सच्ची तौबा की तौफीक अता फरमाए" आमीन

आलम फकरी

14 **रमजानुल मुबारक हिजरी** 1398

अल्लाह तआला की अता से हमें इस किताब को हिन्दी रस्मुल खत में तय्यार कर के छपवाने का मौकअ मयस्सर आया है।

मौला तआला इसे अपनी बारगाह में कुबूल फरमाए और आइन्दा भी नेक काम करते रहने की तौफीके रफीक अता फरमाए। आमीन

मोहसिने आ'जम मिशन

इब्राहीम भाई वडीयावाला

किताब "अल्लाह मेरी तौबा" की छपाई में मदद करने वाले डोनर के नाम

1) हाजी इम्तियाज भाई पोरबन्दर वाले
2) हाजी इरफान भाई ओक्स फर्ड [oxford] बोरसद
3) पीरे तरीकत खलीफए शैखुल इस्लाम सय्यिद हसन अली बापू नापाडवाले बरोडा
4) हाजी अब्दुल कादर हाजी नूर मुहम्मद वडीयावाला
5) हाजी हारून हाजी अब्दुल कादर वडीयावाला
6) हाजी आरीफ इब्राहीम वडीयावाला
7) हाजी जुनैद इब्राहीम वडीयावाला
8) हाजी साबिर इब्राहीम वडीयावाला
9) हाजी युसूफ हाजी नूर मुहम्मद हमजानी
10) हाजी सिद्दीक भाई हाजी कासम भाई चोक्सी बोरसद
11) डॉक्टर हाजी इब्राहीम भाई अशरफी बीलीमोरा
12) हाजी अब्दुल हमीद नूरानी
13) हाजी अब्दुल रज्जाक भाई नूरानी
14) हाजी मुजक्कीर अली शैख पेटलाद वाले
15) हाजी फारूक भाई सुपर वडीयावाला
16) हाजी मक्बुल हुसैन भाई डोई हिम्मतनगर
17) मर्हूम हाजी मुनीरुद्दीन जहीरुद्दीन भाई बोरसद
18) मर्हूमा खतीजा बीबी अजीमुद्दीन मलेक बोरसद
19) मोहसिने आ'जम मिशन वावडी महोल्ला बोरसद
20) मोहसिने आ'जम मिशन राजा महोल्ला बोरसद
21) मोहसिने आ'जम मिशन डभोई
22) मोहसिने आ'जम मिशन मोडासा
23) मोहसिने आ'जम मिशन धोलका
24) मोहसिने आ'जम मिशन सूरत
25) हाजी अब्दुर्रज्जाक केलेवाले नूरे मा'रूफ मस्जिद
26) हाजी इरफान भाई मेमन रोनक ज्वेलर्स, हिम्मतनगर
27) हाजी अब्दुल गनी हाजी इब्राहीम भाई डोई हिम्मतनगर

मिशन का मक्सद कौम की खिदमत

मोहसिने आ'जम मिशन सेन्ट्रल कमिटी उन तमाम हजरात का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती है, जिस ने इस कारे खैर में जो भी हिस्सा लिया है ।

अम्नो महब्बत की छांव में खिदमत सुब्हो शाम करे, आओ हम सब मिल जुल कर पैगामे नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आम करे.

“अल्लाह की रस्सी को मजबूत थाम लो, सब मिलकर”

-अल-कुर्आन

Mohsin e Azam Mission